कब्जियत की शिकायत दूर हो जाती है और बुखार का दुबारा हमला होनेका भय नहीं रहता।

केमोमिला ६ या १२–बच्चों को दाँत निकलने के समय बुखार आने पर तथा बेचैनी, चिड़चिड़ाहट, रोते रहना इत्यादि लक्षण दिखाई देने पर इसे देना चाहिए।

पल्सेटिला ६ या ३०–घीमें पके हुए या देरी से हजम होनेवाले पदार्थ खानेके कारण बुखारका आना, आधे शिरमें दर्द, प्यासका न होना, कै या मिचली, मुँह बेस्वाद खानेकी इच्छा न होना इत्यादि।

एन्टिम क्रूड ६ या ३०–बदहजमी के कारण बुखार, भूख न लगना, अरुचि, जी मिचलाना जीभ पर सफेद लेप. रोगी का दुःखी रहना, छूने से चिढ़ उठना।

अर्निका ६ या ३०–चोट या मार लगनेके कारण बुखार आने पर इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ३० या २००–तेज प्यास पर थोड़ा-थोड़ा पानी पीना रोगी सुस्त और उदास, शरीरमें जलन दोपहर या आधी रातको रोगका बढ़ना कमजोरी, जीभ साफ लसदार पसीना इत्यादि।

विशेष सूचना–यह बुखार आसानीसे आराम हो जाता है। दिनमें ३-४ बार दवा देनी चाहिये। २४ घण्टे में एक दवा से फायदा न होने पर दूसरी दवा चुननी चाहिये। गरम कर

आहार विहार, बहुत परिश्रम, मादक पदार्थों का सेवन, रातमे ठंढ और ओस लगना, बरसात या शरद ऋतु आदि इसके उत्तेजक कारण माने जाते हैं।

इस देश में मैलेरिया बुखार कई तरह का दिखायी देता है। कभी-कभी रोगी को बुखार चढ़कर वह पूर्णरूप से उतर जाता है और कुछ समयका अन्तर देकर फिर चढ़ आता है। ऐसे बुखार को सविराम ज्वर (Intermittent Fever) कहते हैं। कभी-कभी बुखार अच्छी तरहसे नहीं उतरता-केवल कुछ समय के लिये उसकी तेजी घट जाती है और फिर वह ज्योंका त्यों हो जाता है। ऐसे बुखार को स्वल्पविराम ज्वर (Remittent Fever) कहते हैं। कुछ लोग इनको एक दूसरे से पृथक मानते हैं, परन्तु इनके लक्षण और इनकी चिकित्सामें कोई विशेष अन्तर न होने के कारण हमने दोनों की चिकित्सा एक साथ ही लिखी है। इनके अलावा सांघातिक मेलेरिया नामक मैलेरियाका एक भेद और माना गया है। इसे अंग्रेजी में Pernicious Malarial Fever कहते हैं और कुछ लोग इसे भी पृथक ज्वर मानते हैं।

साधारणतः मेलेरिया में रोगी को पहले जाड़ा लगता है फिर बुखार चढ़ता है, बाद को पसीना आकर बुखार उतर जाता है। बहुत दिनों तक इस रोग से पीड़ित रहने पर रोगी की तिल्ली और यकृत बढ़ जाते हैं तथा और भी कई [illegible] पैदा हो जाती हैं। कभी-कभी ऐसे भी रोगी पाये जाते हैं

जिन्हें जूड़ी या बुखार आदि नहीं आने और बाहर से मेलेरिया का कोई भी लक्षण दिखायी नहीं देता, फिर भी उनके शरीर में मैलेरियाका विष मौजूद रहता है और उनकी तिल्ली तथा यकृत बढ़े हुए पाये जाते हैं। ऐसे रोगी भी मेलेरिया की ही दवा से आराम होते हैं, इसलिये यह भी मेलेरिया का ही एक भेद माना जाता है। इसे छिपा हुआ मेलेरिया (Masked Malarious Fever) कहते हैं। कभी-कभी बहुत दिनों तक मेलेरिया से पीड़ित रहने पर यकृत और तिल्ली के अलावा कमला,स्नायु शूल,पाकाशय की गड़बड़ी आदि शिकायतें पैदा हो जाती हैं। यह भी मैलेरिया के ही अन्तर्गत होने के कारण इसका इलाज भी मैलेरिया के ही ढंग से किया जाता है।

लक्षण।

जूड़ी बुखार और पसीना—ये तीनों मेलेरिया के प्रधान लक्षण हैं। जूड़ी की अवस्था में रोगी को जाड़ा लगता है, हाथ पेर ठंढे हो जाते हैं और रोगी काँपने लगता है। कभी-कभी जाड़ा इतना तेज होता है, कि कई रजाई ओढ़ाने पर भी रोगी को आराम नहीं मिलता। इस अवस्था में रोगी का चेहरा पीला पड़ जाना, दाँत कटकटाना, तेज श्वास-प्रश्वास, बार बार थोड़ा-थोड़ा पेशाब, नाड़ी शुद्ध, कठिन और तेज, जीभ पर सफेद लेप, चेहरा सूखा, प्यास, मिचली

ज्वर के आदि लक्षण भी प्रकट होते है। कुछ समय तक यह अवस्था रहने के बाद जाड़ा एकदम छूट जाता है और १०३ से लेकर १०५ डिग्री या इससे भी अधिक बुखार चढ़ आता है। इस अवस्था मे चेहरा लाल सूखा और गरम हो जाता है. जोरो की प्यास लगती है, शिर मे दर्द होता है, रोगी बेचैनी के कारण छटपटाता है और प्लीहा, यकृत तथा कमर आदि स्थानोंमें पीड़ा होती है। कई घंटे यह अवस्था रहने के बाद पसीना आना शुरू होता है। पसीना पहले कपाल और हाथ पैर मे तथा बाद को समूचे शरीर से आता है। पसीना आने से बुखार उतर जाता है और निश्चित समय के बाद फिर इसी तरह जाड़ा लगकर बुखार आता है। बुखार आने के पहले हड़फूटन, हाथ पैर और पीठमे दर्द, शिरमे दर्द, जंभाई आदि लक्षण भी दिखायी देते है। बुखार पुराना हो जाने पर रोगीको जाड़ा नहीं लगता। यह भी नहीं मालूम होता कि बुखार किस समय आयेगा। एकाएक किसी समय बुखार आ जाता है और कुछ घण्टे के बाद पसीना आकर उतर जाता है। धीरे-धीरे रोगी कमजोर हो जाता है यकृत और प्लीहा बढ़ जाते है, शरीर का खून घट जाता है और रोगीके हाथ पैर सूख कर पेट बाहर निकल आता है।

यह बुखार कभी चौबीस घंटेमे एक बार कभी एक दिन का अन्तर देकर, कभी दो दिनका अन्तर देकर और कभी

विरिड. विरेट्रम एल्बम, लाइको पोडियम, सिड्रन, मर्क्युरियस, हायोसायमस, कक्युलस, कोफिया इत्यादि।

स्वल्प विराम ज्वर—एकोनाइट, बेलेडोना, जेलसिमियम, आर्योनिया, ,बेप्टीसिया, रसटक्स, युपेटोरियम पर्फो, इपीकाक, विरेट्रम विरिडि, एन्टिमक्रूड, आर्सेनिक, हायोसायमस, नक्सवोमिका, पल्सेटिला, ओपियम, साइना, कल्केरिया-कार्ब, कार्बोवेज, चायना, हेलिबोरस, लेकेसिस, म्युरेटिक-एसिड, स्ट्रेमोनियम, सल्फर, एन्टिमटार्ट, फोस्फरस, फोस्फरिक एसिड, लाइकोपोडियम इत्यादि।

सांघातिक ज्वर—एकोनाइट, बेलेडोना, ब्रायोनिया, कैम्फर, कार्बोवेज, युपेटोरियम, .पोडोफाइलम, रसटक्स, विरेट्रम विरिडि, ओपियम, आर्सेनिक, फोस्फरस, क्रोटेलस, केक्टस, हेमामेलिस, इत्यादि।

जंगली स्थानों में—आर्निका, आर्सेनिक, कार्बोवेज, सिंकोना, साइना, फेरम, इपीकाक, नेट्रमम्यूर, रसटक्स विरेट्रम।

सरदी और जाड़े में—कल्केरिया, कार्बोवेज, सिकोना, लेकेसिस, नक्स मस्केटा, पल्सेटिला, सल्फर, विरेट्रम।

वसन्त और ग्रीष्म में—एन्टिम क्रूड, आर्सेनिक, बेलेडाना, केप्सीकम, कार्बोवेज, साइना, इपीकाक, लेकेसिस, नेट्रमम्यूर, नक्सवोमिका, पल्सेटिला, सल्फर, विरेट्रम।

पतझड़ के दिनों में—ब्रायोनिया, सिकोना, नक्स-वोमिका, रस, विरेट्रम।

अधिक क्वीनाइन खाने के कारण—अर्निका, आर्सेनिक, वेलेडोना, कल्केरिया, केप्सीकम, कार्बोवेज, साइना फेरम, इपीकाक, लेकेसिस, मर्क्युरियस, नेट्रमम्यूर, नक्स-मस्केटा, नक्सवोमिका, पल्सेटिला सल्फर, विरेट्रम।

प्रति दिन आने पर—एकोनाइट, आर्सेनिक, वेलेडोना, ब्रायोनिया, कल्केरिया, केप्सीकम, कार्बोवेज, सिकोना, इग्नेशिया, इपीकाक, लेकेसिस, नेट्रमम्यूर, नक्सवोमिका पल्सेटिला, रस, सल्फर, विरेट्रम।

एक दिन के अन्तर से (तिजरा)—एन्टमक्रूड, अर्निका आर्सेनिक, वेलेडोना, ब्रायोनिया कल्केरिया, केप्सीकम, कार्बोवेज, केमोमिला, सिकोना, इपीकाक, लेकेसिस, नेट्रम-म्यूर, नक्स मस्केटा, नक्सवोमिका, पल्सेटिला, रस, विरेट्रम।

चौथे दिन (चौथिया) आने पर—एकोनाइट, अर्निका, आर्सेनिक, कार्बोवेज, इग्नेशिया, नक्समस्केटा पल्सेटिला विरेट्रम।

दो दो सप्ताह में—आर्सेनिक।

प्रति वर्ष आने पर—आर्सेनिक, कार्बोवेज, लेकेसिस।

केवल बुखार, जाड़ा नहीं के बराबर और पसीना नदारद—एकोनाइट, आर्सेनिक, बेलेडोना, ब्रायोनिया, कल्केरिया, कोफिया इपीकाक, लेकेसिस नक्सवोमिका, ओपियम, पल्सेटिला, सल्फर, विरेट्रम।

केवल बुखार और पसीना (जाड़ा नहीं)—एकोनाइट, आर्सेनिक, बेलेडोना ब्रायोनिया, केप्सीकम कार्बोवेज, केमोमिला, सिकोना, साइना, कोफिया, हिपर, इग्नेशिया, इपीकाक, नक्सवोमिका, ओपियम, पल्सेटिला, रस, विरेट्रम।

पसीना बहुत अधिक—एकोनाइट, आर्सेनिक, बेलेडोना, ब्रायोनिया, कल्केरिया, कार्बोवेज, साइना, हिपर, मर्क्युरियस नेट्रमम्यूर पल्सेटिला, रस सेम्बुकस, सल्फर, विरेट्रम।

जाड़ा बुखार और पसीना एक समान—एकोनाइट आर्सनिक बेलेडोना ब्रायोनिया केप्सीकम केमोमिला सिंकोना साइना हिपर इग्नेशिया, इपीकाक नक्सवोमिका, पल्सेटिला, रस सल्फर विरेट्रम।

पहले जाड़ा फिर बुखार—एकोनाइट आर्निका ब्रायोनिया बेलेडोना, केप्सीकम कार्बोवेज सिंकोना साइना हिपर हायोसायमस इग्नेशिया इपीकाक नेट्रमम्यूर नक्स वोमिका पल्सेटिला रस सल्फर विरेट्रम।

पहले बुखार, फिर जाड़ा—बेलेडोना, ब्रायोनिया कल्के-रिया, केप्सीकम, नक्सवोमिका पल्सेटिला, सल्फर।

जाड़ा और बुखार पारी पारी से--आर्सेनिक, बेलेडोना, ब्रायोनिया, कल्केरिया, सिकोना मर्क्युरियस, नेट्रमम्यूर, नक्सवोमिका, सल्फर विरेट्रम।

जाड़ा और बुखार एक साथ--एकोनाइट, आर्सेनिक, बेलेडोना, ब्रायोनिया, कल्केरिया, केमोमिला, सिकोना, इग्नेशिया, इपीकाक, मर्क्यूरियस, नक्सवोमिका, पल्सेटिला, रस, सल्फर, विरेट्रम।

बाहर से बुखार अन्दर से जाड़ा—एकोनाइट, आर्सेनिक, बेलेडोना, कल्केरिया, कोफिया इग्नेशिया लेकेसिस, नक्सवोमिका, सल्फर।

अन्दर से बुखार बाहर से जाड़ा—आर्निका, ब्रायोनिया सिकोना, मर्क्युरियस, पल्सेटिला, रस, विरेट्रम।

जाड़े के साथ ही पसीना आना—आर्सेनिक, कल्केरिया नक्सवोमिका, पल्सेटिला, सल्फर।

बिना बुखार के ही जाड़े के बाद पसीना—ब्रायोनिया, केप्सीकम, रस, विरेट्रम।

पसीना और बुखार एक साथ—एकोनाइट, बेलेडोना, ब्रायोनिया केप्सीकम, केमोमिला, सिकोना, साइना, हिपर,

इग्नेशिया, इपीकाक, मर्क्युरियस, नक्सवोमिका, ओपियम, रस, विरेट्रम।

बुखार के बाद पसीना—आर्सेनिक, ब्रायोनिया, कार्बोवेज, कैमोमिला, सिकोना, साइना कोफिया, हिपर, इग्नेशिया, इपीकाक, ओपियम, पलसेटिला, रस, सल्फर, विरेट्रम।

बुखार के पहले प्यास—आर्निका, सिंकोना, पलसेटिला, सल्फर।

जाड़े के समय प्यास—एकोनाइट, एन्टिमक्रूड, आर्निका आर्सेनिक, कल्केरिया, केप्सीकम कार्बोवेज, कैमोमिला, सिकोना, साइना, हिपर, इग्नेशिया, इपीकाक, नेट्रमम्यूर नक्सवोमिका रस, सल्फर, विरेट्रम।

प्यास जाड़े के बाद, लेकिन बुखार के पहले—आर्सेनिक सिकोना पलसेटिला।

प्यास और बुखार एक साथ—एकोनाइट, बेलेडोना, ब्रायोनिया कल्केरिया, केप्सीकम कैमोमिला, सिकोना, हिपर इग्नेशिया लेकेसिस मर्क्युरियस नेट्रमम्यूर, नक्सवोमिका पलसेटिला रस सल्फर विरेट्रम।

बुखार के समय प्यास का न होना—आर्सेनिक बेलेडोना केप्सीकम कार्बोवेज सिकोना इग्नेशिया इपीकाक

लेकेसिस, मर्क्युरियस, नक्सवोमिका, नक्समस्केटा, पल्सेटिला, रस, सेम्बुकस, सल्फर, विरेट्रम।

बुखार के बाद प्यास--सिकोना, नक्सवोमिका, ओपियम, पल्सेटिला।

पसीने के समय प्यास--आर्सेनिक, केमोमिला, सिकोना हिपर, मर्क्यूरियस, नेट्रमम्यूर, पल्सेटिला, रस, विरेट्रम।

पसीने के बाद प्यास--नक्सवोमिका।

खास खास शिकायतें।

शरीर में दर्द--आर्सेनिक, सिकोना, नेट्रमम्यूर, नक्सवोमिका, रस, विरेट्रम।

बहुत कमजोरी--आर्सेनिक, सिकोना, फेरम, हायासायमस, लेकेसिस, नेट्रमम्यूर, नक्सवोमिका, रस।

शोथ के लक्षण--आर्सेनिक, सिकोना, फेरम।

तन्द्रालुता और निद्रालुता--बेलेडोना, कार्बोवेज हायासायमस, लेकेसिस, ओपियम, पल्सेटिला, रस।

जाड़े के समय नींद--नेट्रमम्यूर, नक्समस्केटा।

बुखार के समय नींद--इग्नेशिया।

जाड़े के बाद नींद--आर्सेनिक।

बहुत दुर्बलता और मानसिक उत्तेजना—एकोनाइट आर्सेनिक, बेलेडोना, ब्रायोनिया, केमोमिला, कोफिया, इग्नेशिया, नक्सवोमिका, पल्सेटिला।

शिर में रक्ताधिक्य—एकोनाइट, बेलेडोना, ब्रायोनिया, कार्बोवेज, ग्लोनाइन हायोसायमस, लेकेसिस, नक्सवोमिका, ओपियम, पल्सेटिला, रस।

जोरों का सर दर्द—अर्निका, आर्सेनिक, बेलेडोना सिकोना ग्लोनाइन, इग्नेशिया, लेकेसिस, नेट्रमम्यूर, नक्स वोमिका, पल्सेटिला, रस।

पाकाशय में गोलमाल—एन्टिमक्रूड, आर्सेनिक बेलेडोना, ब्रायोनिया, केमोमिला, सिकोना, इग्नेशिया, इपीकाक, नेट्रमम्यूर, नक्सवोमिका, पल्सेटिला सल्फर।

कै होने पर—एन्टिम क्रूड आर्सेनिक ब्रायोनिया, सिकोना, लाइना, इग्नेशिया नक्सवामिका, पल्सेटिला।

जाड़े के समय कै—ब्रायोनिया इग्नेशिया।

जाड़े के बाद कै—आर्सेनिक नक्सवोमिका।

बुखार के समय कै—नक्सवोमिका।

जीभ पर सफेद लेप—एन्टिम क्रूड ब्रायोनिया नक्स मस्केटा।

जीभ कड़ी और सूखी जाड़े के समय—ब्रायोनिया।

पतले दस्त—अर्निका, आर्सेनिक, कैमोमिला, सिकोना, इपीकाक, पल्सेटिला, रस, विरेट्रम।

कब्जियत—आर्सेनिक, ब्रायोनिया, मर्क्यूरियस, नक्स-वोमिका।

तिल्ली में कड़ापन—नक्स मस्केटा।

तिल्ली में दर्द—कैप्सीकम।

यकृत में दर्द और सूजन—आर्सेनिक, सिकोना, मर्क्यूरियस, नक्सवोमिका।

जुकाम के लक्षण—एकोनाइट, वेलेडोना, ब्रायोनिया, सिकोना, हिपर, लेकेसिस, मर्क्यूरियस, नक्सवोमिका, पल्सेटिला, रस, सल्फर।

छाती में तकलीफ और श्वासकष्ट—एकोनाइट, एन्टिम-क्रूड, अर्निका, आर्सेनिक, ब्रायोनिया, सिकोना, फेरम, हिपर, इपीकाक, लेकेसिस, नक्सवोमिका, पल्सेटिला, सल्फर।

उपरोक्त शिकायतें बुखार आने के पहले—अर्निका, आर्सेनिक, वेलेडोना कल्केरिया कार्ब, कार्बोवेज, सिकोना साइना इग्नेशिया, इपीकाक, नेट्रमम्यूर, नक्सवोमिका, पल्सेटिला, रस, सल्फर।

उपरोक्त शिकायतें जाड़े के समय—अर्निका आर्सेनिक, ब्रायोनिया, कल्केरिया, कैप्सीकम, कार्बोवेज सिकोना,

साइना, हिपर, इग्नेशिया, इपीकाक, लेकेसिस, मर्क्यूरियस, नेट्रमम्यूर, नक्स मस्केटा, नक्सवोमिका, पल्सेटिला, रस, विरेट्रम।

उपरोक्त शिकायतें बुखार के समय—एकोनाइट, आर्सेनिक, ब्रायोनिया, बेलेडोना, कल्केरिया, केप्सीकम, कार्बोवेज, कैमोमिला, सिकोना, कोफिया, हायोसायमस, इग्नेशिया, इपीकाक, लेकेसिस, मर्क्यूरियस, नेट्रमम्यूर, नक्सवोमिका, ओपियम, पल्सेटिला, रस, सल्फर, विरेट्रम।

उपरोक्त शिकायतें पसीने के समय—एकोनाइट, आर्सेनिक, ब्रायोनिया, कैमोमिला, लेकेसिस, मर्क्यूरियस, नक्सवोमिका, ओपियम, पल्सेटिला, रस, सल्फर, विरेट्रम।

उपरोक्त शिकायतें बुखार उतर जाने पर—आर्सेनिक, ब्रायोनिया, कार्बोवेज, कोफिया, इग्नेशिया, लेकेसिस, नक्सवोमिका, पल्सेटिला, रस।

नाड़ी में बीच बीच में रुकावट—आर्सेनिक, सिकोना, लेकेसिस, मर्क्यूरियस, नेट्रमम्यूर, नक्सवोमिका, ओपियम।

नाड़ी कठिन—एकोनाइट, बेलेडोना, ब्रायोनिया, हायोसायमस, नक्सवोमिका, सल्फर।

नाड़ी छोटी—एकोनाइट, आर्सेनिक, बेलेडोना, हायोसायमस, लेकेसिस, मर्क्यूरियस, [illegible], ओपियम, विरेट्रम।

बढ़ना. जाड़ेके समय प्यास का बिलकुल ही न होना या बहुत कम होना. लेकिन गरमी (बुखार) के समय बहुत ज्यादा प्यास. जीभ साफ अथवा उसपर हलका सा पीला लेप. जम्हाई और अँगड़ाई आना. हरा या पीला बदबूदार दस्त. पेट फूला हुआ या पेट में दर्द. मुँह कडुआ, खानेकी चीजोंका स्वाद भी कड़ुवा मालूम होना इत्यादि। इसका ३० क्रम दिया जाता है। क्वीनाइन के अपव्यवहार के कारण आनेवाले बुखार मे और पुराने मैलेरिया में भी इससे अच्छा लाभ होता है।

आर्सेनिक एलम्ब ३x ६,३०या२००—नये और पुराने दोनों प्रकार के मैलेरिया की यह एक अच्छी दवा है। दिनको १२ से २ और रातको १२ से २ बजे के बीचमें बुखार आना. जाड़ा गरमी और पसीना तीनो अवस्थाओं का साफ-साफ न मालूम होना अथवा किसीका कम और किसीका अधिक होना अथवा जाड़ा या पसीना इन दोनोमें से एकका न होना, पाकाशयमें ज्वालाकर वेदना. शरीर में असह्य पीड़ा, बहुत अस्थिरता नाड़ी तेज और कोमल. तेज प्यास बार-बार पानी पीना. लेकिन एक साथ अधिक पानी न पी सकना हृदय मे धड़कन मिचली और कै जोरोंका शिरदर्द.बुखार के बाद भी शिरदर्द का बना रहना बुखार के समय सब शिकायतों का बढ़ जाना पिलही और यकृतका बढ जाना श्वास कष्ट जीभ साफ बुखार छूटने पर बहुत कमजोरी इत्यादि मे इसे

कम पड़ जाना, बहुत देर तक पसीना, कभी कभी पतले दस्त रह रह कर जाड़ा और कपकपी. पैर बरफ जैसे ठंडे, रात में ठंढा पसीना. यकृत और पिलही का बढ़ जाना, पुराना बुखार, शरीर का पाला पड़ जाना इत्यादि ।

आर्निका मोन्ट ६ या ३०—सुबह या दोपहर के पहले जाड़ा लगना. जाड़े के पहले प्यास और जम्हाई, बुखार के पहले जोरो की हड़फूटन, रोगी को किसी हालत में चैन न पड़ना और उसके कारण बारंबार करवट बदलते रहना, शिर और चेहरा गर्म, दूसरे अंग ठंढे, पसीना बिलकुल न आना अथवा खट्टा और बदबूदार आना. श्वास प्रश्वास में भी बदबू, बहुत कमजोरी, बेचैनी के कारण ओढ़ना वगैरह फेंक देना, भीतर जाड़ा, बाहर गरमी. पानी पीने से जाड़े का बढ़ना इत्यादि ।

विरेट्रम एल्बम३X या ३०—सुबह छः बजे बुखार आना. बुखार के पहले प्यास और जाड़ा. बहुत देर तक जाड़ा लगना, चेहरा और समूचा शरीर ठंढा. पारी पारीसे जाड़ा और गरमी मालूम होना, कब्जियत अथवा पतले दस्त, जी मिचलाना और कै होना, जांघ और पीठमें दर्द, कपालमें ठंढा पसीना. पसीने के समय चेहरा फीका. कमजोरी और सुस्ती ।

विरेट्रम विरिडि १Xया३X—नाड़ी पूर्ण, कठिन, तेज और लम्फनशील शरीर बहुत गरम, कलेजे में धड़कन,

दर्द, तीसरे पहर बुखार का चढ़ना इत्यादि। प्राय. प्रथम सप्ताह में ही इसका प्रयोग होता है।

साइना ३० या २००—यह दवा बच्चों के मैलेरिया में, खास कर जब उनके पेट में कृमि होते हैं, बड़ा फायदा करती है। चिड़चिड़ा स्वभाव, सदा रोते रहना, चीज माँगना लेकिन मिलने पर फेंक देना, छूने से भी चिल्ला उठना, बुखार के पहले,बुखार के समय अथवा बुखारके बाद कै और राक्षसी भूख,जूड़ी या बुखार के समय प्यास, सदा नाक खुजलाते या रगड़ते रहना, पेट में दर्द, कब्जियत, नींद में चिल्ला उठना. पेशाब सफेद या गँदला, पेशाब के अन्त में चूने का सा पानी निकलना, नींद में दाँत किड़किड़ाना, बहुत जाड़ा लगना इत्यादि लक्षणों में इसे अकेले या दूसरी दवा के साथ पर्याय क्रम में देना चाहिये।

इग्नेशिया ६, १२ या ३०—शीतावस्था में प्यास. बुखार चढ़ आने पर प्यास का न होना. बाहरी गरमी से जाड़े का घटना, शरीरके कुछ अंग गरम और कुछ ठंडे—कहीं जाड़ा और कहीं गरमी मालूम होना, केवल बाहर से गरमी, जाड़े के समय पेटमें दर्द, बादको बुखार. बुखारके समय कमजोरी और निद्रालुता।

रसटक्स ६ या ३०—शामके करीब बुखारका हमला जाड़ा बहुत तेज, शरीरके कुछ अंग ठंडे और कुछ गरम आधीरात या सुबहके करीब पसीना, गरमी की अवस्था में

वेग मालूम होना पर दस्त साफ न होना इत्यादि। नित्य आगे बढ़कर आने वाले बुखार में इससे अधिक लाभ होता है।

केमोमिला १२ या ३०—बच्चों के लिये यह विशेष उपकारी है। दाँत निकलने के समय बुखार आना, बच्चेका चिड़चिड़ा स्वभाव, गोदीमें ही चढ़े रहने की इच्छा, बेचैनी, एक गाल लाल और गरम, दूसरा फीका और ठंढा, गरमी और पसीने की अवस्था में तेज प्यास, जाड़ा, थोड़ा बुखार और पसीना अधिक, पतले दस्त, बच्चेका सदा रोते रहना।

पल्सेटिला ६, १२ या ३०—पाकाशय में जरा भी गोल माल होते ही छूटे हुए बुखार का फिर आ जाना, तीसरे पहर १ से ४ बजे तक में बुखार, प्यास का बिलकुल न होना अथवा केवल गरमी की अवस्था में होना, बुखार और जाड़ा एक साथ, मुहका स्वाद कडुआ पित्त या कफकी खट्टी या कड़वी कै हर हालत में जाड़ेकी शिकायत, शरीर की एक ओर खास कर बायीं ओर पसीना जाड़ेका अधिक देर तक और बुखारका कम देर तक ठहरना, ठंढी खुली हवा में आराम, भोजन के बाद नींद, जीभ पर सफेद या पीला लेप और रूखी इत्यादि। नित्य रोगलक्षणों का बदलते रहना—आज कुछ लक्षण दिखायी दें और कल कुछ—ऐसे बुखार में पल्सेटिलासे बहुत लाभ होता है।

अवस्था में शिर दर्द का बढ़ जाना सुबह करीब दस बजे जाड़े का शुरू होना और बहुत देरतक ठहरना, गरमी की अवस्था में कुछ कुछ बेहोशी, होठ और खास कर मुंहके किनारों पर, छाले पड़ जाना, बुखार उतरने पर बहुत सुस्ती और पसीना, हाथ पैरकी उंगलियों या कमर से जाड़ेका शुरू होना, नाखून और होठों का रंग नीला हो जाना, पसीने के समय आराम मालूम होना, हृदय की धड़कन के साथ शरीर का कॉपना, शरीर एकदम शीर्ण, यकृत और पिलही का बढ़ जाना, क्वीनाइन या आर्सेनिक के अपव्यवहार के कारण आने वाला बुखार इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं। यह नये और पुराने दोनों प्रकार के बुखारों में काफी फायदा करता है।

लेकेसिस ३० या २००—दोपहर के बाद बुखार का आना, साथ ही कमर और पीठमें भयकर वेदना, शिरमें जोरों का दर्द और चेहरा लाल, गरमी की अवस्था में अनवरत बातें करते रहना, अथवा बाहर से सर्दी और अन्दर से गरमी चेहरे का रंग पीला या मटमैला नींद खुलने के बाद ही सब उपसर्गों का बढ़ना रागन के पसीने में लहसुन की गन्ध, बुखार के समय शरीरका नीला रंग, पसीना आने पर आराम मालूम होना पसीना ठंढा और पीला या लाल, शराबी और स्त्रियों के रजस्राव के समय जाड़ा बुखार इत्यादि। क्वीनाइन खाने से दबा हुआ बुखार फिर उभड़ने प

खट्टी चीजें खाने के कारण बुखार लौटने पर अथवा प्रतिवर्ष वसन्त में ही बुखार आने पर इससे विशेष लाभ होता है। लेकेसिस के बाद पलसेटिला देने से बहुत फायदा होता है।

बेलेडोना ६ या ३०—चोबीस घंटेमें दो तीन बार बुखार का हमला होने पर बेलेडोना से अधिक फायदा होता है। जाड़ा धीमा, बुखार बहुत तेज अथवा बुखार धीमा और जाड़ा बहुत तेज, कब्जियत या खड़िया मिट्टी जैसे पतले दस्त। कभी कभी शिरमें जोरोंका दर्द, चेहरा लाल, मस्तिष्क-विकार और सुस्ती आदि लक्षण भी दिखायी देते हैं। जाड़े के समय प्यास नहीं रहती। पसीना बहुत कम आता है।

हायोसायमस ३० या २००—बेलेडोना से ही मिलते जुलते लक्षणों के साथ रातमें सूखी खाँसी, लेटने पर खाँसी का बढ़ जाना और बैठने पर आराम मालूम होना, [illegible] अथवा गरमी के समय बेहोशी, अनिद्रा, [illegible] पसीना इत्यादि।

[illegible] ६ या ३०—[illegible] लोग, केवल [illegible] [illegible] नींद, [illegible] आराम मालूम होना [illegible] [illegible] का दर्द करने [illegible]

हिपर सल्फर ३० या २००—सर्दी के कारण बुखार सिर और छाती में सर्दी का असर, मुँह में कड़ुआ स्वाद, जाड़े के समय प्यास, बाद को बुखार और निद्रालुता, शाम को छः सात बजे बुखार का हमला, गरमी के साथ ही खट्टा और बदबूदार बहुत पसीना, हवा बरदास्त न कर सकना, होठों पर छाले, जाड़े के समय आमवात जैसा इरेप्शन, उसमें खुजली और डंक मारने जैसा दर्द इत्यादि। वेलेडोना के बाद इसे देने से विशेष लाभ होता है।

ग्लोनाइन ६ या ३०—शिर की ओर रक्त का दौड़ना ऐसा मालूम होना मानो आमाशय से एक लपट सी निकल कर शिर की ओर जा रही है, शिर में ठनक, चेहरे पर ठंडा पसीना, गरम पसीना आने पर बुखार का उतरना इत्यादि।

मर्क्युरियस ६ या ३०—शाम के समय या रात का बुखार का आक्रमण, बिछौने पर पड़ने से अधिक ठंड मालूम होना, बेचैनी के साथ शीघ्रतापूर्वक पारी पारी से जाड़े और गरमी का उपस्थित होना, प्यास हृदय में धड़कन चिकना और बदबूदार बहुत पसीना, कपड़े पर पसीने का पीला दाग लगना, बहुत प्यास, पसीना निकलने पर भी आराम न मालूम होना इत्यादि।

सल्फर ३० या २००—शाम को जाड़ा लग कर रात को बुखार और सुबह पसीना आना हृदय में धड़कन जाड़े

कार्बोवेज ६ या ३०—दाँत और हाथ पैर में दर्द के साथ बुखार का हमला, बुखार आने का समय अनिश्चित. केवल जाड़े की अवस्था में प्यास, गरमी के समय शिर में चक्कर, चेहरा लाल और पाकाशय में गोलमाल, बायें हाथ से ठंड का शुरू होना और समूचे शरीर का ठंढा पड़ जाना, बायाँ हाथ और बायाँ पैर ठंढा पसीना अधिक, खट्टा और बदबूदार।

एकोनाइट ३ X या ६—जाड़ा और बुखार दोनों बहुत तेज, अथवा दोनों का एक साथ उपस्थित होना, बाहर से गरम. बहुत प्यास, बहुत अस्थिरता और घबराहट, मृत्यु भय इत्यादि। केवल रोग के प्रारम्भ में ही इन लक्षणों के मौजूद होने पर यह दिया जाता है।

ओपियम ६ या ३०—बड़ी उम्र के आदमी और बच्चों को सविराम ज्वर में इससे विशेष लाभ होता है। तन्द्रा और गहरी नींद खुर्राटे लेना शिर में रक्ताधिक्य चेहरा लाल अंगों का फड़कना नाड़ी पूर्ण और मन्द, प्यास का न [illegible]ना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

यूपेटोरियम पर्फ ६ या ३०—अन्तरायों के साथ पाट से जाड़ा लग कर बुखार का आना जाड़े पहले से लेकर जाड़े की अवस्था तक प्यास, पानी पीने से कै या पित्त का कै [illegible] के बाद थोड़ा पसीना [illegible] और [illegible] से [illegible] फिर

२१—स्त्री-रोग।

पेट और छाती से शुरू होकर पीठ तक जाड़े का फैल जाना, बन्द जगह में अधिक जाड़ा मालूम होना. सर गर्म, कभी बहुत पसीना, छाती मे भार. पसीने की अवस्था में नींद. सूखा और रूखा शरीर. प्रलाप. थोड़ा पेशाब, सूजन, जीभ फूली हुई जाड़े के समय थोड़ी प्यास, पुराने बुखार में पसीने का न आना इत्यादि ।

एरेनिया ६ या ३० ठीक किसी बंधे समय पर ही बुखार का आना. तेज जाड़ा और कपकपी. रात दिन २४ घंटे जाड़ा ही लगते रहना. गरमी और पसीना न होना. प्यास का न होना. भीगने या गीली जगह में रहने के कारण बुखार. पिलही का बढ़ जाना इत्यादि ।

बेप्टीसिया ६ या ३०—पाखाने आदि की तेज बदबू हवाल में जाने या गन्दा पानी पीने के कारण बुखार. दो ही एक दिन मे रोगी का बहुत कमजोर हो जाना, जाड़े का पीठ से शुरू होकर ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर को फैलना. सर में तेज दर्द. बकझक करना. पेशाब कम. दस्त काले या स्लेट के रंग के, रोगी को ऐसा मालूम होना मानो उसका शरीर कई टुकड़ों मे बँट गया है, उन टुकड़ों को जोड़ न सकने के कारण कष्ट. अस्थिरता इत्यादि ! मैलेरिया अगर टायफा-इड के रूप में परिणत हो रहा हो तो इसे ही देना चाहिये ।

कैम्फर ३० या २००—तेज जाड़ा. शरीर ठंढा. हाथ पैर और चेहरा नीला. असह्य जाड़े के कारण दाँतों का कट-

सा दर्द. यकृत और पीठ में दाहिने कन्धे के नीचे दर्द, तेज जाड़ा. जाड़े के समय मिचली. नींद के समय पसीना, चमड़ा पीला इत्यादि।
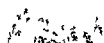
लाइकोपोडियम ३० या २००—शाम को ३ से लेकर ८ बजे तक जाड़ा, पीठ से शुरू होकर समूचे शरीर मे जाड़े का फैल जाना, जम्हाई. मिचली. प्यास का न होना, शाम को ७ बजे नींद, नींद में स्वप्न और पसीना, पसीने से शरीर का ठंढा पड़ जाना. पसीने के बाद प्यास, खट्टी के, कै के बाद जाड़ा. गरमी और बायें अंगों में पसीना, पेशाब में लाल तली जमना, भूख अधिक पर बहुत कम खा सकना, पेट में वायु की शिकायत, कब्जियत, यकृत के स्थान में दर्द, जलन, पेट फूलना. आठ बजे तक बुखार का उतर जाना इत्यादि।

मैलेरिया आफिनेलिस ३ X या २००—क्वीनाइन के अपव्यवहार, बुखार के दब जाने या बुखार का स्वाभाविक रूप समझ न पड़ने पर यह दिया जाता है। नीची जमीन-वाले स्थानों में बुखार आने पर इसे व्यवहार करना चाहिये।

सियेनोथस १X—बुखार छूट जाने पर जब केवल पिल्ही बड़ी होने की ही शिकायत रह जाय, बुखार बिलकुल न आता हो, यकृत में भी दर्द न मालूम होता हो, तब इसे देना चाहिये।

सीपिया १२ या ३०—पुराना बुखार, मासिक बुखार, गर्भावस्था का बुखार, हिलने डोलनेसे बहुत तेज जाड़ा इत्यादि ।

केक्टस १—दोपहर के समय दिन में केवल एक बार बुखार का आना, जाड़े के बाद बुखार, पीछे जलन जैसी दाह और तेज साँस, बाद को बूँद-बूँद पसीना, तेज प्यास, तलहत्थी बरफ की तरह ठंडी ।

यूक्लिप्टस ग्लोब मदर टिञ्चर—लक्षण स्पष्ट न होनेपर होमियोपैथी के कई आचार्यों ने इसे देने की सलाह दी है। तेज बुखार, हृदय में धड़कन, पीव मिला कफ निकलना, पाकाशय में गोलमाल, मूत्रग्रन्थि का प्रदाह, पाकाशय में दर्द, सुस्ती, खूनकी खराबी इत्यादि लक्षणों में भी यह लाभ करता है ।

मिनिएन्थिस ३ या ३०—तेज जाड़ा, प्यास या [illegible] तलपेट हाथ, पैर और नाकका अगला भाग बरफ की तरह ठंडा, पेशियों का संकोचन, चौथे दिन आनेवाला चौथिया बुखार ।

वल्केरिया आर्स ६ विचूर्ण—यकृत और पिल्ही का बढ़ना, इलाज बाद, हृदय में धड़कन विषम ज्वर ।

फेरम आर्स ६—बुखार, पिल्ही का बढ़ना [illegible] [illegible] [illegible] विषम ज्वर [illegible] [illegible] में दोष इत्यादि ।

बुखार उतर जाने पर ही तीन-तीन घंटे के अन्तर से यह दवा देनी चाहिये। नये बुखार में इससे विशेष लाभ होता है। पुराने बुखार में, पिलही और यकृत बढ़ जाने पर और केवल गरमी या जाड़े की अवस्था में बहुत जोरों की प्यास होने पर इसे न देना चाहिये। पुराने बुखार में ऐसे ही लक्षणों में आर्सेनिक अधिक लाभ करता है।

यहाँ हम इस चिकित्सा प्रणाली के प्रेमियो को यह याद दिला देना चाहते हैं कि कुनैनाइन ही वह दवा है, जिसके कारण होमियोपैथी का आविष्कार हुआ है। कुनैनाइन अधिक मात्रामे खानेसे अवश्य हानि होती है, परन्तु थोड़ी मात्रा में खाने से मैलेरिया बुखार को यह आराम करती है। अन्यान्य होमियोपैथिक दवाओ की भाँति इसके भी सूक्ष्म से सूक्ष्म क्रम तैयार किये गये हैं, फिर भी होमियोपैथी के धुरन्धर आचार्यों का मत है, कि जहां इसके लक्षण ठीक मिलते हों, जहाँ जाड़ा गरमी या पसीने की अवस्था में उलट पलट या कमी बेशी न हो वहां एक निश्चित परिमाण में कुनैनाइन दी जा सकती है। संभव है कि इसे कुछ लोग होमियोपैथी के विरुद्ध बतलायें परन्तु होमियोपैथी के आचार्यों को यह स्वीकार करना पड़ा है कि जहां कुनैनाइन के लक्षण ठीक ठीक मिलते हों वहां अधिक मात्रामें और जरूरत हो तो मिक्श्चर के रूप मे कुनैनाइन देकर रोगी को

बुखार जंगल फीवर, मेलिग्नेन्ट फीवर, कंजेस्टिव फीवर, ट्रापीकल टायफाइड आदि नामों से भी पुकारा जाता है।

यह सविराम या स्वल्प विराम किसी भी ज्वरके रूप मे दिखायी देता है। वास्तव में साधारण ज्वरका प्रकोप बढ़ जाने पर जब वह बहुत उग्र रूप धारण कर लेता है, तब वह सांघातिक मैलेरिया कहलाता है। लक्षणानुसार यह सात भागों में विभक्त किया गया है (१) अचैतन्यता प्रधान या comatose (२) प्रलाप प्रधान या Delirious (३) उदरामय प्रधान या Diarrhoeic (४) हिमांग प्रधान या Algid (५) पसीना प्रधान या Colliquative (६) पित्त प्रधान या Ictrous और (७) रक्तस्राव प्रधान या Hæmorrhagic।

अचैतन्यता प्रधान में रोगी के मस्तिष्क पर रोगका आक्रमण होता है और रोगी बेहोश हो जाता है। बुखार १०५ से १०७ डिग्री. शिरदर्द, शिरका घूमना, उदासी, बोल न सकना इत्यादि लक्षण भी प्रकट होते है। प्रलाप प्रधान ज्वरमे रोगी बहुत बक झक करता है। तेज सरदर्द, कान में भों भों आवाज, बेचैनी आदि लक्षण भी दिखायी देते है। बादका शरीर ठंढा पड़ जाता है और कभी कभी उसी हालत में मृत्यु हो जाती है। उदरामय प्रधान ज्वरमें हैजेकी तरह दस्तोंके दस्त होते है और पेटमे दर्द बहुत प्यास अकड़न ऐंठन कष्ट, शरीर का ठंढा पड़ जाना इत्यादि लक्षण दिखायी देते है।

ज्वर—केम्फर, कार्बोवेज ३०, विरेट्रम एल्ब ६ या ३०, मिनिरे न्थिस ३०। पसीना प्रधान ज्वर—चायना ६, जेबोरेन्डी ३, फोस्फरस ६। पित्त प्रधान ज्वर—ब्रायोनिया ३, युपेटोरियम पर्फ १X और क्राटेलस ३। रक्त स्राव प्रधान ज्वर—इपीकाक ३X या ३, कैक्टस ३X, हेमोमेलिस १X।

बुखारकी शीतावस्थामे केम्फर, एकोनाइट या जेल्सी-मियम से और गरमी की अवस्थामें एकोनाइट और वेलेडोना से अधिक लाभ होता है। बुखार उतर जाने पर रोगी की अवस्थानुसार (१० से ५० ग्रेन तक) कुनीनाइन देने से बुखार चढ़ने नहीं पाता और साधारण आकार धारण करता है। यह डाक्टर हैम्पेल, नेचेल, कास्टिल, सेन्डस मिलस आदिकी राय है। डाक्टर मजूमदार साधारण अवस्था में उच्चक्रम का आर्सेनिक और निम्न क्रमका नक्सवोमिका देने को तथा ज्वर के प्रकोप में एकोनाइट, वेलेडोना या विरेट्रम विरिडि व्यवहार करने को सलाह देते हैं। शीत अवस्था में रोगी के हाथ पैर सेंकने चाहिये। रोगी सुस्त हो जाने पर ब्राण्डी या व्हिस्की का सेवन कराने से लाभ होता है। साधारण अवस्था मे गरम पानी और तेज प्यास में बरफ के टुकड़े चूसनेको देने चाहिये।

मैलेरिया बुखार में पथ्य—नये बुखार मे जब बुखार बहुत तेज हो, रोगी को गरम पानी के सिवा और कुछ न देना चाहिये। बुखार उतर जाने पर साबूदाना अरारोट खाना

जाते है। युक्लीप्टस तेल सूंघने से मैलेरिया से बचाव होता है। बुखार के दिनों में ठण्डे जल से बहुत नहाना, ठण्डी हवा का लगना, रात में अधिक जागना, दिन में सोना, अधिक परिश्रम करना आदि हानिकारक है। बुखार छूटने पर सर्दी लगने से पुनः बुखार आ जाने का डर रहता है।

मैलेरिया में पाण्डुरोग या कमला, लीवर और पिलही का बढ़ जाना, न्युमोनिया और ब्रोङ्काइटिस आदि लक्षण प्रकट होने पर उन्हीं को ध्यान में रखकर इलाज करना चाहिये। स्वल्प-विराम ज्वर में कभी-कभी टायफाइड ज्वर के लक्षण दिखायी देते हैं, इसे टायफो-मैलेरिया कहते है। इसके लिये टायफाइड रोग की दवाएं देखनी चाहिये॥
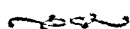
जुकाम या सर्दी का बुखार।

(CATARRHAL FEVER)

जुकाम के साथ जो बुखार आता है, उसे सर्दी का बुखार कहते हैं। सर्दी लगना, पानी में भीगना, पसीने की हालत में ठण्डी हवा का लगना रातमें ओस खाना पेट का गरम होना एकायक गरमी से सर्दी में जाना दही खटाई आदि कफ वर्धक चीजें अधिक परिमाण में खाना, इत्यादि कारणों से जुकाम या सर्दी हो जाता है और कभी-कभी इसके साथ ही हरारत या बुखार भी आ जाता है। सारे बदन में [illegible] दर्द, आंख नाक से पानी जैसा कफ गिरना [illegible]

शिर में दर्द, शिर भारी, पीठ और हाथ पैर में दर्द, प्यास, कब्जियत इत्यादि लक्षणों में ब्रायोनिया ६। कब्जियत, बुखार, नाक के एक या दोनों छिद्रों का कफ भर जाने के कारण बन्द हो जाना आदि में नक्सवोमिका ३०। छींक आये, नाक से जलन पैदा करने वाला पानी जैसा कफ निकले तो आर्सेनिक ६। पीला पीला कफ निकलना, सर्दी का पक जाना, कै या मिचली, कफ निकलते निकलते नाक में दर्द, मुँह का स्वाद कडुआ इत्यादि लक्षणों में मर्क्युरियस सल ६ या ३०। बायीं ओर तेज दर्द, फीका चेहरा आदि में स्पाइजिलिया ६ या ३०। लक्षणानुसार रसटक्स, नक्समस्केटा, युफ्रेशिया और सल्फर आदि दवाएं भी दी जा सकती हैं।

आवश्यक सूचना—चुनी हुई दवा २४ घण्टे में तीन चार बार से अधिक न देनी चाहिये। रोगी को सर्दी से बचाना चाहिये। शरीर पर सदा कुछ कपड़े पहन या ओढ़ रखने चाहियें। पीने के लिये सुसुम पानी काम में लाना चाहिये। नाक बन्द हो जाने पर नाक और छाती पर कडुआ तेल मालिश करना चाहिये। जिन्हें हमेशा सर्दी हो जाया करती हो, उन्हें स्वस्थ अवस्था में तेल लगाकर ठण्डे पानी से अच्छी तरह नहाने की आदत डालनी चाहिये। बुखार के समय साबूदाना आदि हलकी चीजें और बुखार आराम हो जाने पर रोटी आदि खाने को देना चाहिये।

इन्फ्लुएञ्जा' रोग और उसकी चिकित्सा देखना

आर्स आयोड ३ X, मर्क्युरियस ६. नेट्रमम्यूर ३० सियोनोथस १X,फेरमफस ३ X फोस्फरस ६, लाइकोपोडियम ६ या ३० सीपिया ३०, सिमिसिफ्यूगा ३ X और रसटक्स ६ या ३० आदि दवाएँ लक्षणों के अनुसार देनी चाहिये।

आवश्यक सूचना—रोगी को अलग रखना चाहिये और उसके मलमूत्र को सावधानी से फेंकना चाहिये। खाने को हलकी चीजें देनी चाहिये। रोगी को गरम पानी से नहलाया जा सकता है। बुखार १०५ डिग्री से अधिक हो जाय, तो ठण्डे पानी से बदन पोछा जा सकता है। क्वीनाइन इस बुखार मे फायदा नहीं करती।

काला बुखार।

(BLACK FEVER)

मैलेरिया की तरह एक जीवाणु से ही यह ज्वर भी उत्पन्न होता है। श्वास प्रश्वास और खाने पीनेकी चीजो के अलावा खटमल द्वारा भी इसका विष एक शरीर से दूसरे शरीर मे प्रवेश करता है। चीन और मिश्र देश मे इसका बहुत प्रसार है। भारत मे लका और आसाम में ही यह पाया जाता था। आज कल मेलेरिया की तरह यह भी बगाल में फैल गया है।

लक्षण–इसके अधिकांश लक्षण मैलेरिया मे मिलते जुलते होते है। विशेषता यह है कि मैलेरिया की अपेक्षा इसमे यकृत और पिलही बहुत जल्दी जल्दी बढ़ते है। रोगी

एन्टिम टार्ट ६ या ३०—काले बुखार की यह भी बढ़िया दवा है। इसके सेवन से बहुत रोगी अच्छे हुए हैं।

नाइट्रिक एसिड ६ या ३०—तीसरे पहर या शामको बुखार, हमेशा जाड़ा लगना, बहुत पसीना, हाथ पैर ठण्डे, यकृत बढ़ा हुआ, रातमें बहुत गरमी मालूम होना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

लेकेसिस, फेरम आयोड, फेरम आर्स, फेरम सियेनेट्रम आदि दवाएं भी लक्षणानुसार देने से फायदा करती है।

आवश्यक सूचना—निम्नक्रम की दवा दिन में दो तीन बार और उच्चक्रम की दो एक दिन के अन्तर से एक बार [illegible]। अन्यान्य बुखारों की तरह इसमें भी पथ्य और परहेज़ के नियमों का पालन करना चाहिये। एक डाक्टर ने [illegible] और इन्जेक्शन से अधिकांश रोगी आराम किये थे। [illegible] के इन्जेक्शन और क्वीनाइन के [illegible] है। [illegible]

पीला बुखार (YELLOW FEVER)

[illegible]

कमला के से जो लक्षण दिखायी देते हैं और जिस तरह रोगी की आँखें आदि पीली हो जाती हैं, उसी तरह इसमें भी रोगी का रंग पीला हो जाता है और इसी लिए इसका नाम पीला बुखार पड़ा है। इसका स्थिति काल ७–८ दिन है।

लक्षण—इस बुखार की चार अवस्थाएं दिखायी देती हैं। प्रारम्भिक अवस्था में जी मिचलाना, भूख न लगना और सुस्ती आदि लक्षण प्रकट होते हैं। दो–चार दिन के बाद दूसरी अवस्था उपस्थित होती है और जाड़ा, कपकपी, तेज बुखार, उदासी, शरीर में दर्द, शिरदर्द, कब्जियत, थोड़ा पेशाब, समूचे शरीर में दर्द, नाड़ी तेज आदि लक्षण प्रकट होते हैं। एक या दो दिन के बाद तीसरी अवस्था उपस्थित होती है। इस अवस्था में शरीर का दर्द बन्द हो जाता है और बुखार भी उतर जाता है। यदि अच्छी तरह इलाज होता है तो फिर रोग बढ़ने नहीं पाता और रोगी चंगा हो जाता है। अच्छी तरह इलाज न होने पर इस अवस्था में भी अनिद्रा अजीर्ण या राक्षसी भूख, और कमजोरी आदि लक्षण बने रहते हैं। धीरे–धीरे चौथी अवस्था आती है। इसमें रोगी पीला पड़ जाता है और मिचली या बहुत क़, गले या पेट में जलन, काली कै कुछ काले खून के साथ कफ मिले दस्त काला पेशाब रक्तस्राव, शरीर ठण्डा पेशाब बन्द बहुत सुस्ती बकझक, हिचकी ऐंठन और बेहोशी आदि लक्षण उपस्थित होकर रोगी की मृत्यु हो जाती है। यह रोग बहुत सांघातिक

माना जाता है और आरम्भ में [illegible] होने पर रोगी की मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सा।

प्रथमावस्था की दवाएँ—कार्बोवेज १० या २००, इपिकाक ३, आर्सेनिक ६।

दूसरी अवस्था की दवाएँ—क्युप्रम [illegible], एकोनाइट ३ x, सिमिसिफ्युगा ३, आर्सेनिक ३, जेल्सीमियम [illegible] इपीकाक ३।

तीसरी अवस्था की दवाएँ—कॉफिया ६, मर्क्यूरियस ६, आर्सेनिक ३ या ३०।

चौथी अवस्था की दवाएँ—क्रोटेलस २ या ६, कैडमियम सल्फ ३ या ३० आर्सेनिक ३ x या ६।

कार्बोवेज ३० या २००—यह इस रोगकी सबसे बढ़िया दवा है। अनेक बार इसकी केवल एक ही खुराक देने से फिर दूसरी दवा देनेकी जरूरत नहीं पड़ती।

एकोनाइट ३X—बदन गरम, चमड़ा रूखा, चेहरा लाल, सर में दर्द, प्यास, अस्थिरता इत्यादि।

बेलेडोना ६—छाती या शिरमें रक्ताधिक्य, हिलने डालने से रोग लक्षणों का बढ़ना, चेहरा और आँखें लाल, शिरदर्द, प्रलाप, दाँत कटकटाने की इच्छा इत्यादि। बेलेडोना और [illegible] कोना २—पर्याय क्रम में देने से भी बहुत लाभ होता है।

विषय पृष्ठ | विषय पृष्ठ

क्रोटेलस ३ या ६—आँख, नाक, कान, आदि से खून बहना, बहुत बक झक करना, चेहरा लाल और फूला हुआ, खूनका पसीना के रूपमे निकलना, रोगकी चौथी या पतनावस्था।

लेकेसिस ६ या ३०—यह भी रोग की चौथी अवस्था-में बहुत फायदा करता है। स्नायुदोष, काला खून बहना, जीभ सूखी और काँपती हुई, प्रलाप, काले रंगका पेशाब, रातमे प्रलाप का बढ़ना, बायीं करवट सो न सकना, सोने के बाद तकलीफों का बढ़ना इत्यादि।

अर्निका ३ या ६—बहुत सुस्ती, मुँहसे बदबू निकलना, हालत खराब होने पर भी तबियत के बारे में पूछने पर रोगीका यही कहना कि "अच्छी है"।

आर्सेनिक ३ या ३०—बहुत बेचेनी, ज्वालाकर वेदना, जी मिचलाना, हिचकी, काले पदार्थों की कै, बदबू-दार खूनी दस्त, प्यास, श्वासकष्ट, रोगकी चौथी अवस्था।

आर्सेनिक हाइड्रो ६ या ३०—चमड़ा पीला, मिचली, हिचकी, मूत्रस्थली में दर्द, कुछ खाने पीने से कै, हाथ पैर ठंडे।

कैडमियमसल्फ ३ या ६—चेहरा ठंडा पेट मे जलन और कतरने जैसा दर्द, पीले और काले रंगकी खट्टी कै, श्वास-कष्ट पैदा करने वाली मिचली इत्यादि।

आर्जेन्टम नाइट ६ या ३०—शिरमें दर्द और चक्कर शिरका पीछेकी ओर लटक पड़ना, मस्तिष्क विकार।

ब्रोयोनिया ६ या ३०—पाकाशय में गोलमाल, समूचे शरीरमें दर्द, शिरदर्द, स्थिर रहने से आराम मालूम होना। इत्यादि। आर्जेन्टम और बेलेडोना के बाद इसे देने से अधिक लाभ होता है,

एन्टिमटार्ट ६X—निद्रालुता, मुर्च्छा, बहुत सा ठंडा पसीना, नाड़ी क्षीण और तेज, कै या कष्टकर मिचली।

कैन्थरिस ३ X—पेशावका बन्द हो जाना या तकलीफ के साथ पेशाव होना। आर्सेनिक से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

फोस्फरस ३—रक्तास्राव और कमला जैसे लक्षणों में क्रोटेलस तथा लेकेसिस से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

सिकेली ३X—गर्भवती स्त्रियों को यह रोग होने पर गर्भ गिर जानेकी आशंका हो तब इसे देना चाहिये।

कोफिया ६—रातमें बहुत बेचैनी और नींद न आना।

स्पिरिट कैम्फर—रोगके आरंभ में बहुत देर तक ठहरने-वाले तेज जाड़े और कपकपी के लक्षणों में। (दस-दस पन्द्रह पन्द्रह मिनट के अन्तर से एक-एक बूँद)

सिमिसिफिउगा ६—शिर, हाथ, पैर पीठ आदि स्थानों में गठिया जैसा दर्द।

इपीकाक ३—बहुत कै या मिचली।

जेल्सीमियम ३X—२४ घंटेके अन्दर बुखार जराभी कम न होने पर इसे देना चाहिये।

मर्क्युरियस सल ६—दस्तमें खून, मलद्वारमें दर्द, बदन का पीला पड़ जाना।

आवश्यक सूचना—रोगी को साफ सुथरे स्थानमे रखना चाहिये और उसका मलमूत्र कहीं दूर लेजाकर गाड़ देना चाहिये। यह अछूत बीमारी है, इसलिए लोगों को रोगवाले स्थानसे दूर रहना चाहिये। रोगी का बदन गरम पानी से पोछ देना अच्छा है। कब्जियत में साबुन पानी की पिचकारी देनेसे लाभ होता है। बुखार की हालत में केवल पानी या नारङ्गी का रस और बुखार उतर जाने पर साबूदाना, बार्ली, पानी मिला दूध आदि देना चाहिये। रोगीकी अन्तिम अवस्था में रोगी एक दम सुस्त हो जाय तो व्हिस्को, शेम्पेन या ब्राण्डी आदि देने से लाभ होता है। जहाँ यह बुखार फैला हो वहाँ प्रतिदिन वप्टीशिया मदर टिञ्चर १X या सिमिसिफिउगा३या ६ की एक खुराक खाने से रोग नहीं होता। डाक्टर हेरिङ्ग का कथन है कि रोगीके मल-मूत्र, कपड़े-बिछौने, रहने के स्थान तथा वहाँकी सभी चीजों पर कोयले का चूरा छिड़कने और डालते रहने से यह बीमारी फैलने नहीं पाती। कोयला इसके विषको नष्ट कर देता है।

स्कारलेटीना या लाल बुखार

(SCARLATINA)

यह भी एक भयंकर और सांघातिक बीमारी है, परन्तु पीले बुखारकी तरह इसका भी इस देशमें अधिक प्रसार नहीं है। इसकी भी उत्पत्ति एक प्रकार के जीवाणुओं से होती है और यह भी संक्रामक तथा स्पर्शाक्रमक या लरछुत रोग है।

इस बुखार में चमड़े का रंग चमकीला, लाल या पीली आभा लिये हुए लाल रंगका हो जाता है। चमड़े पर कोदवा माता जैसे दाने निकलते हैं। कुछ दिनों में दाने मुरझाने लगते हैं और आठ नौ दिनमें चमड़ा उड़ने लगता है। इसका आरम्भ मिचली या कै से होता है। इसके बाद थोड़ा जाड़ा या कपकपी होती है और फिर समूचा शरीर बहुत गरम हो जाता है। प्यास, शिर दर्द, सुस्ती और प्रलाप आदि लक्षण भी प्रकट होते हैं। दाने पहले शरीर के उस भागमें निकलते हैं जो हमेशा ढका रहता है। बादको समूचे शरीर में निकल आते हैं। चेहरे का रंग भी लाल हो जाता है। जीभ पर सफेद लेप रहता है, लेकिन लाल दाने स्पष्ट दिखलायी देते हैं। गले पर इस रोग का बहुत बुरा असर पड़ता है। गलेका रङ्ग खाकी, सफेद, पीला या नीला हो जाता है और साँस लेने में तकलीफ होती है। टान्सिल भी बढ़ जाते हैं। कभी-कभी

गर्दन और जबड़े के नीचेकी गिल्टियाँ सूज जाती है और आँख, नाक, कान आदिसे पीव बहने लगता है। कभी-कभी समूचे शरीर में दाने नहीं निकलते, लेकिन मुँह और चेहरे पर इसके लक्षण स्पष्ट दिखायी देते हैं। रोग कठिन होने पर गलेमें दर्द और जलन, जीभमें सूजन, बहुत सुस्ती, रक्तस्राव, कमजोरी आदि लक्षण प्रकट होते हैं और हाथ, पैर, चेहरा तथा पलकों पर सूजन दिखायी देती है। इसमें बुखार १०४ से १०६ डिग्री तक और सांघातिक अवस्था में १०० डिग्री तक चढ़ता है। नाड़ी की गति प्रति मिनट १२० से १६० तक रहती है। अनेक बार बच्चों को यह रोग होने पर उनके कान बहने लगते हैं और इसके फलस्वरूप वे बहरे तक हो जाते हैं।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ X—यह दवा एकदम शुरूकी हालत में, जब दाने भी न निकले हों तब देना चाहिये। तेज बुखार, तेज नाड़ी, माथा गरम, हाथपैर ठंडे, प्यास इत्यादि लक्षणों में इस से लाभ होता है।

वेलेडोना ३ या ६—साधारण लाल बुखार की यह अच्छी दवा है। दोनों का रंग चमकीला लाल गले और जीभ में जलन तथा सूखापन तेज प्यास लेकिन पानी न पी सकना, गला और जीभ का रंग भी चमकीला लाल

टान्सिल में सूजन, गर्दन और जबड़े का अकड़ जाना, प्रलाप इत्यादि । बुखारवाले स्थानों में बुखार रोकने के लिए यह प्रतिषेधक दवाके रूप में भी व्यवहार किया जाता है

मर्क्युरियस कर ३-गॉठें सूजी, गलेमें जखम, बहुत लार गिरना, साँसमें बदबू, सुस्ती, मूत्र ग्रन्थि में भी सूजन इत्यादि लक्षणों में और बेलेडोना से लाभ न होने पर यह अधिक फायदा करता है

ब्रायोनिया ६ या ३०--अगर दाने अच्छी तरह न निकलें और सूखी खाँसी, छाती में सुई चुभोने जैसा दर्द, बहुत पसीना, जीभ सूखी, कब्जियत, हिलने डोलने से तकलीफ का बढ़ना आदि लक्षण दिखायी दे तो इसे देना चाहिये ।

रसटक्स ६ या ३०--दानों का रङ्ग बैंगनी, उनमें खुजली होना, शरीर में दर्द, नाकसे पीला कफ निकलना, जीभ सूखी, बहुत बक झक करना, बारबार करवट बदलते रहना इत्यादि ।

पल्सेटिला ६ या ३०--बहुत अस्थिरता, हाथ पैर में दर्द और अनिद्रा, इत्यादि ।

लेकेसिस ६ या ३०--गलेमें खराब जख्म, गलेकी गाँठें सूजी हुई, निगलते समय गलेमें छिपथीरिया रोगकेसे लक्षण, सोनेके बाद तकलीफ का बढ़ना इत्यादि ।

लाइको पोडियम ३०—लेकेसिससे लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३०—तेज बीमारी. रोगीका बहुत सुस्त हो जाना, दानोंका देर से निकलना, निकल कर दब जाना या उनका रंग नीला हो जाना. अस्थिरता, गले के जख्म में सड़न, मृत्यु भय. बहुत गरमी, बदबूदार दस्त. तेज प्यास लेकिन अधिक पानी न पीना इत्यादि।

एपिस ६ या ३०—दानोंका दब जाना. पेशाब कम. सबसे पहले जननेन्द्रिय मे सूजन होना. जीभ लाल. गलेमें जख्म. नाकसे सफेद या रक्त मिला बदबूदार स्राव, जीभ मे फफोले या दाने. तेज बुखार, रोगीका झूमना इत्यादि।

फाइटोलेक्का १X सल्फर ३०, क्युप्रम एसेटिकम ३X, एसिड म्यूर २X, कोटेलस ३, एकिनेसिया मदर टिंक्चर, हिपर ३०, एमोनिया कार्ब ३० आदि दवाएं भी लक्षण के अनुसार दी जा सकती हैं। सांघातिक बीमारी में आर्सेनिक, लाइको पोडियम और फास्फारिक एसिडसे बहुत फायदा होता है। चुनी हुई दवा दिन मे तीन चार बार देनी चाहिये। रोगी को चार पांच सप्ताह तक दूसरो के संसर्ग मे न आने देना चाहिए और रोग आराम हो जाने पर कईदिन बहुत बचना चाहिये। यह रोग साधारणतः अधिक से अधिक पन्द्रह दिनमे अच्छा हो जाता है। यदि घातक हुआ तो दाने निकलनेके पहले ही तेज बुखार के कारण रोगी की मृत्यु हो जाती है।

बाद पतले दस्त या अन्यान्य उपसर्ग होने पर रोगीको आराम होने में अधिक समय लग जाता है। साधारण बीमारी में बिना दवा खाये केवल उपवास करने से ही फायदा हो जाता है। दवाकी जरूरत हो तो निम्नलिखित दवाएं प्रयोग करनी चाहिये।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३X—तेज बुखार, शरीर और हड्डियों में तेज दर्द, अस्थिरता, प्यास इत्यादि।

ब्रायोनिया ३, ६ या ३०—सूखी खाँसी, छाती में दर्द, हिलने-डोलनेसे तकलीफ का बढ़ना, जोड़ों पर साधारण लाली, जीभ पर सफेद लेप, पेट में गोलमाल, बहुत प्यास, कब्जियत इत्यादि। ब्रायोनिया और एकोनाइट पर्यायक्रम में भी दिये जाते हैं।

बेलेडोना ३ या ६—रोगके आरम्भ में तेज बुखार और सिर दर्द, चेहरा लाल, दकमक करना, दिमाग में विकार, जोड़ों में दर्द, बिजलीकी तरह समूचे शरीर में दर्द का दौड़ना, जोड़ों में सूजन और लाली इत्यादि।

यूपेटोरियम पर्फ ३ या ६—समूचे शरीर में खास करके पाँव और कलाई में तेज दर्द जीभ पर पीला लेप प्यास पानी पीने पर कै पहुत और आमाशय में दबाने से दर्द मालूम होना।

रसटक्स ६—समूचे शरीर में, खास कर जोड़ों में दर्द, हिलने डोलने से आराम मालूम होना।

जेल्सीमियम ६ या ३०—यह इस रोग की प्रधान दवा है। बहुत सुस्ती, रोगी का चुपचाप पड़े रहना, निद्रालुता, आँखें भारी और जलपूर्ण शरीर पर दाने निकलना, मांस पेशियों में वात जैसा दर्द, जीभ पर सफेद या पीला लेप इत्यादि।

कल्चीकम ३ या ६—छोटे जोड़ों में दर्द होने पर इसे देना चाहिये।

रसवेनिनेटा ३ या ६—कर्ण-मूल में जलन, बगल की गिल्टियों का बढ़ना और उनमें जलन, काले दाने निकलना, जोड़ों में दर्द, गरम प्रयोग से आराम मालूम होना इत्यादि। एकोनाइट के बाद इसे देने से अधिक लाभ होता है।

पल्सेटिला ६ या ३०—दर्द का स्थान बदलते रहना, शाम को, रात में और बन्द स्थान में रोग लक्षणों का बढ़ना, खुली हवा में आराम, जीभ सूखी और मैली, रात में पतले दस्त, मुँह का स्वाद कड़ुआ, प्यास का न होना इत्यादि। इसे बुखार की विराम अवस्था में देना चाहिये।

आवश्यक सूचना—जिस समय डेंगू बुखार जोर से फैल रहा हो, उस समय बहुत सावधान रहना चाहिये। सरदी, जाड़ा और ठण्डी हवा से बचना चाहिये। शरीर में

इति

दर्द मालूम होते ही प्रति दिन रसटक्स ६ की एक खुराक देनी शुरू कर देनी चाहिये। खटाई खाने से हानि होती है। चुनी हुई दवा तीन-तीन चार-चार घण्टे के अन्तर से देनी चाहिये। बुखार के समय साबुदाना, बार्ली या आरारोट देना चाहिये। पेट मे गोलमाल न होने पर दूध और तबीयत अच्छी हो जाने पर अन्न दिया जा सकता है।

पौनः पुनिक ज्वर।

रिलेप्सिङ्ग फिवर (RELAPSING FEVER) एक प्रकार के जीवाणु से ही यह रोग भी उत्पन्न होता है और चेचक आदिकी तरह संक्रामक होता है। इसमे जाड़ा और कपकपी के साथ १०४ या १०५ डिग्री तक बुखार चढ़ता है और उसके साथ शिर दर्द, शिरमें चक्कर, प्यास, कब्जियत, जीभ पर सफेद या पीला लेप, पित्तकी के, स[illegible] शरीर और गलेमे दर्द, पेटमे दर्द, भूख न लगना, के में खून गिरना, मस्तिष्कमे कुछ विकार चमड़ा सूखा और [illegible] पिलही और यकृत का बढ़ जाना और उनमें दर्द [illegible] लक्षण प्रकट होते है। दो तीन दिनमें बहुत पसीना [illegible] बुखार धीमा पडता है, रोगीकी आंखे और मुंह बैठ [illegible] आँखों के नीचे काले दाग पडते है और हृदय की [illegible] गड़बड़ी पैदा हो जाती है। कभी कभी लाल दाने भी [illegible] [illegible] रोगी खून की कै तथा दस्तो के कारण [illegible]

मस्तिष्क--मेरु मज्जीय ज्वर।

(CEREBRO-SPINAL FEVER)

यह बुखार भी एक प्रकार के संक्रामक विषके ही कारण होता है। बुखार के पहले कोई खास शिकायत नहीं होती। एकाएक किसी दिन जाड़ा और कम्पके साथ बुखार आ जाता है। कभी-कभी यह बुखार १०३ से लेकर १०७ डिग्री तक जा पहुँचता है। और शरीर में ऐंठन, जोरोंका सरदर्द, शिरमें चक्कर, पेटमें दर्द, पित्तमिली कै, सख्त बेचैनी, आँख की पुतली फैली हुई इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। धीरे-धीरे शिरका दर्द, गर्दन के पीछे और रीढ़ तक पहुंचता है। मांस-पेशियों में ऐंठन के कारण रोगी शिर पीछेको ओर झुकाये रहता है, इसलिये वह धनुष्टङ्कारके रोगी की तरह टेढ़ा हो जाता है। इसके साथ-साथ दाँत लग जाना, श्वासकष्ट, टेढ़ी नजर, आँखें खुली होने पर भी उनसे दिखायी न देना, पेशियों संकोचन, बहुत सुस्ती, बेहोशी में बकते या सोते रहना ... सुनायी न देना; शिर, पैर और रीढ़में तेज दर्द, चुपचाप पड़े रहना, तन्द्रा, स्नायुका लकवा, फेफड़े का प्रदाह प्रभृति लक्षण प्रकट होते हैं। इसमें ५० प्रतिशतसे अधिक रोगियों की मृत्यु हो जाती है। यदि बुखार धीरे-धीरे घटता गया और रोगी होशमें आता गया तो वह अच्छा भी हो जाता है। रोग के आरम्भ में रक्तस्राव होना और शरीर पर लाल-लाल दाग

दिखायी देना बहुत बुरा लक्षण माना जाता है। बच्चे और प्रौढ़ावस्था के मनुष्य इसके अधिक शिकार होते हैं। रोग के आरम्भ में मृत्युका जितना भय रहता है, उतना बादको नहीं।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३x—जाड़ा और कम्प, बेचेनी, तेज बुखार, चमड़ा सूखा, बहुत प्यास घबड़ाहट, मृत्युभय इत्यादि।

साइक्यूटा ३ या ६—यह इस रोगको बहुत बढ़िया दवा है। पीठकी ओर या एक ओर को शरीर झुक जाने पर इससे अवश्य लाभ होता है। बेहोशी, द्वित्वदृष्टि, आँख तथा हाथ पैर में दर्द या चमक, बहरापन, लकवा इत्यादि।

हेलीबोरस३x—मन बहुत सुस्त, शिर और गर्दन के पीछे बहुत तेज दर्द।

सिमिसिफिउगा ३x—शिरमें बेहद दर्द, आंख और बदन में दर्द, गर्दनका अकड़ जाना, बेहोशी में बिजली जैसा आदि दिखायी देना इत्यादि। पेशियोंकी ऐंठन दूसरी दवाओंसे बन्द न होने पर इसे आजमाना चाहिये।

एगन कार्ब २००—कान के नीचे और पीठ ... का दर्द।

जेल्सीमियम३x—कसकर बाँध रखने की तरह शिर दर्द, अधिक पेशाब होने से दर्द में कमी, कमजोरी के कारण शरीर का काँपना, लकवा बहरापन आदि रोग के बाद के उपसर्ग।

एसिडहाइड्रो ३x—साधारण अवस्था से रोग का एकायक घातक रूप धारण करना, शरीर का ठंडा पड़ जाना इत्यादि।

ग्लोनाइन ३ या ६—शिरमें तेज दर्द, बेहोशी और मिचली के साथ आँखों से दिखायी न देना, चेहरा पीला, रीढ़ में दर्द इत्यादि।

सिलिका ६—बहरापन दूर करने के लिये इसे देना चाहिये।

इन दवाओं के अतिरिक्त मेनिङ्गोकाक्किन, कल्केरिया कार्ब, सल्फर, फेरम आयोड, एपिस, आर्स आयोड, बयुफ्रन एसेट, डिजिटेलिस, मर्क्युरियस कैलकेरिया रसटक्स, लाइको पोडियम कैनाबिस इन्डिका आजन्टम नाइट्रिकम आदि दवाएं भी लक्षणानुसार दी जाती है।

आवश्यक सूचना—रोगी को जिस स्थान में रक्खा जाय वह हवादार तो अवश्य हो पर वहाँ बहुत प्रकाश या शोरगुल न होना चाहिये। रोगी के शरीर को गरम पानी से पोंछना लाभदायक है पथ्यादि अन्य बुखारों की तरह ही देना चाहिये।

सप्ताह तक मौजूद रहता है। इसके साधारण लक्षण नीचे दिये जाते हैं:—

प्रथम सप्ताह—बुखार आनेके पहले सुस्ती, कमर में दर्द, निरुत्साहिता, शिरदर्द, कमजोरी, भूख न लगना, अच्छी तरह नींद न आना, हमेशा जाड़ा सा लगना इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। इसके बाद बुखार आ जाता है, यह बुखार पहले सप्ताहके अन्तर तक नित्य एक डिग्री के हिसाब से बढ़ता रहता है। सुबह जितना बुखार होता है,शामको उससे दो डिग्री बढ़ जाता है, लेकिन दूसरे दिन सुबह एक डिग्री घट कर शामको फिर दो डिग्री बढ़ता है। इस तरह सप्ताह के अन्त में १०५ डिग्री तक बुखार हो जा सकता है। सुबह कुछ समयके लिये बुखार धीमा पड़ जाता है। इसके अतिरिक्त जीभ पर सफेद लेप, जीभ सूखी और अगला भाग लाल जीभका काँपना, प्यास का न होना, पहले कब्जियत, बादको दस्त, पेट दबाने से दर्द मालूम होना, पेट दबाने पर आँतों का बोलना पेट में गड़गड़ाहट इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। कभी-कभी आदि से अन्त तक कब्जियत ही बनी रहती है। इस सप्ताह में रोगी अधिक बक-झक नहीं करता।

द्वितीय सप्ताह--इस सप्ताहके आरम्भ में और कभी कभी प्रथम सप्ताह के अन्त में ही रोगी की छाती और पेट पर छोटे-छोटे लाल दाने निकल आते हैं। रोगके सभी लक्षण

सान्निपातिक ज्वर।

(TYPHOID FEVER)

एक प्रकार का जीवाणु शरीर में घुस जाने से यह बुखार होता है। आयुर्वेद शास्त्र में यह सान्निपातिक ज्वर के नाम से सम्बोधित किया गया है, क्योंकि इसमें वात, पित्त और कफ–खास कर वात और कफका प्रकोप होता है। इसमें आँतें खराब हो जाती हैं, इसलिये यह आन्त्रिक ज्वर के नाम से भी पुकारा जाता है। अंग्रेजी में इसे एन्टेरिक या टाइफाइड फीवर कहते हैं। इसमें पेट की शिकायत प्रधान रूपसे मौजूद रहती है। अंग्रेज चिकित्सकोंने टाइफस फीवर को भी इसीके अन्तर्गत माना है, परन्तु उसमें पेट के बजाय मस्तिष्क विकार की प्रधानता रहती है। गन्दे पाखाने, मोरी, पनाले और सड़े हुए कूड़े से इसका विष उत्पन्न होता है। रोगी के मल-मूत्र में भी इसके जीवाणु रहते हैं और उसे इधर उधर फेंकने से चारों ओर फैलते हैं। यह संक्रामक रोग माना जाता है।

लक्षण।

इस रोग के लक्षण भिन्न–भिन्न प्रकार के होते हैं और वे बड़ी शीघ्रता से बदलते रहते हैं। इसका स्थितिकाल प्रायः तीन सप्ताह है, पर कभी–कभी यह कु-

सप्ताह तक मौजूद रहता है। इसके साधारण लक्षण नीचे दिये जाते हैं:—

प्रथम सप्ताह—बुखार आनेके पहले सुस्ती, कमर में दर्द, निरुत्साहिता, शिरदर्द, कमजोरी, भूख न लगना, अच्छी तरह नींद न आना, हमेशा जाड़ा सा लगना इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। इसके बाद बुखार आ जाता है, यह बुखार पहले सप्ताहके अन्तर तक नित्य एक डिग्री के हिसाब से बढ़ता रहता है। सुबह जितना बुखार होता है,शामको उससे दो डिग्री बढ़ जाता है, लेकिन दूसरे दिन सुबह एक डिग्री घट कर शामको फिर दो डिग्री बढ़ता है। इस तरह सप्ताह के अन्त में १०५ डिग्री तक बुखार हो जा सकता है। सुबह कुछ समयके लिये बुखार धीमा पड़ जाता है। इसके अतिरिक्त जीभ पर सफेद लेप, जीभ सूखी और अगला भाग लाल जीभका कॉपना, प्यास का न होना, पहले कब्जियत, बादको दस्त, पेट दबाने से दर्द मालूम होना, पेट दबाने पर आंतो का बोलना पेट में गड़गड़ाहट इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। कभी-कभी आदि से अन्त तक कब्जियत ही बनी रहती है। इस सप्ताह में रोगी अधिक बक-झक नहीं करता।

द्वितीय सप्ताह--इस सप्ताहके आरम्भ में और कभी कभी प्रथम सप्ताह के अन्त में ही रोगी की छाती और पेट पर छोटे-छोटे लाल दाने निकल आते है। रोगके सभी लक्षण

तेजी का घट जाना और अधिक समय तक विरामावस्था का रहना, बक-झक, पेट का फूलना, प्यास इत्यादि मैंक मी आदि शुभ लक्षण माने जाते हैं।

यह बुखार बहुत ही बुरा होता है। साधारण बुखार होने पर दो सप्ताह मे रोगी अच्छा हो जाता है। कठिन होने पर तीसरे या चौथे सप्ताह में या तो रोगी अच्छा होता है या मर जाता है।

ऊपर यह बतलाया जा चुका है कि टाइफस बुखार के लक्षण भी टायफाइड के समान ही होते है। लक्षणों की इस समानता के कारण इन दोनों को पहचानना कठिन हो पड़ता है और इससे चिकित्सा करने मे कठिनाई पड़ती है। पाठकों की जानकारी के लिये हम इन दोनो का भेद नीचे अंकित करते हैं:—

(१) टायफाइड स्पर्शाक्रमक नहीं होता टाइफस स्पर्शाक्रमक होता है। २ टायफाइड मे दस्त आते हैं, टाइफस में दस्त नहीं आते पर मस्तिष्क-विकार की प्रधानता रहती है (३) टायफाइड बहुत छोटे बच्चे और बूढ़ों को नहीं होता, टाइफस सभी उम्र के मनुष्यों को होता है ४ टायफाइड के लक्षण धीरे धीरे बढ़ते .. टाइफस रोगी को एक दम धर दबोचता है (५) टायफाइड कम से कम तीन सप्ताह ठहरता है टाइफस दो सप्ताह से अधिक नहीं ठहरता। ६ टायफाइड मे रोगी की मृत्यु दो सप्ताह के पहले नहीं होती टाइफस

उतारने की चेष्टा न करनी चाहिये। इसमें बहुत ही खतरा रहता है।

चिकित्सा।

बप्टीशिया १ X या ३ X–बेचेनी या बेहोशी, बक झक करना, श्वास-प्रश्वास, पसीना और मलमूत्र में बदबू, शिर और शरीर में तेज दर्द, रोगीको ऐसा मालूम होना कि उसके बदन के कई टुकड़े हो गये हैं,उन टुकड़ों को जोड़ने की चेष्टा करना, होठ और जीभ सूखी, कै या मिचली, स्लेट जैसे रंग के दस्त, बात करते करते नींद सी आजाना, बिछौना कड़ा या काँटे जैसा मालूम होना इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं। अनेक चिकित्सक इसे टायफाइड की बढ़िया दवा मानते हैं। उनका कहना है कि शुरूमें इसे देनेसे रोग बढ़ने नहीं पाता।

टायफाइडिनम २००–यह इस रोगकी प्रतिषेधक दवा है। जहाँ यह रोग फैला हो वहाँ किसीको बुखार आते ही इसकी दो एक खुराकें खिला देने से रोग आगे नहीं बढ़ने पाता। रोगकी अन्यान्य अवस्थाओं में भी यह काफी फायदा करता है।

ब्रायोनिया ६ या ३०–हिलने डोलने से तकलीफ का बढ़ना, अरुचि, मुहका स्वाद तीता, शिर, छाती और शरीर में दर्द, भूख न लगना, प्यास, खूब पानी पीना खाँसी, खाँसते समय छातीमें दर्द होना और उसके कारण छाती को पकड़

लेना, स्वभाव चिड़चिड़ा, हमेशा बड़बड़ाने या बकते रहना इत्यादि लक्षणों में ब्रायोनिया देना चाहिये। यदि और उपसर्ग न दिखायी दें तो शुरूसे अन्त तक केवल यही दवा देते रहना चाहिये। उपसर्ग बदलने पर दवा बदलनी चाहिये।

बेलेडोना ३, ६ या ३०—तेज शिरदर्द, चेहरा और आँखें लाल, बहुत ज्यादा बक-झक करना, जीभ सूखी, लाल और फटी हुई, साधारण पसीना, बुखार का दिनमें दो बार बढ़ना, दिनमें नींद, रातमें अनिद्रा, आँखकी पुतलियों का फैल जाना, रोशनी से डर इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं। शुरू शुरूमें बुखार बहुत तेज होने पर और बादको बक-झक या प्रलाप और उठकर भागना आदि मस्तिष्क विकार के तेज लक्षणों में इससे काफी लाभ होता है।

जेल्सोमियम ३ x या ६—बेलेडोना से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये। जो बुखार न तो धीमा पड़ता है,न उतरता है बल्कि सदा एकसा बना रहता है, उसमें यह अधिक लाभ करता है। कमजोरी, चुपचाप पड़े रहना, बदन में दर्द, तेज बुखार, साथही जाड़ा मालूम होना, मिचली, जीभका काँपना निद्रा, शिरमें चक्कर इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं।

रसटक्स ६ या ३०—तेज बीमारी के साथ पतले दस्त आते हों तो इसे देना चाहिये। छटपटाना, पेटमें गड़गड़ाहट, अनिद्रा, स्वप्न देखना, कमर में अधिक दर्द बदबूदार और खून मिले दस्त, प्यास, बेहोशी, जीभ लाल और सूखी,

ब्रोङ्काइटिस या न्युमोनिया बहुत खाँसी इत्यादि लक्षणों में इससे लाभ होता है। यह ब्रायोनिया के साथ पर्याय क्रमसे भी दिया जाता है।

आर्सेनिक ६ या ३०—बहुत बेचैनी, रोगी हाथ पैर हिलाये. पर शरीर न हिला सके एकायक सुस्त हो जाना. शरीर में जलन अनजानमे पेशाब. तेज प्यास. लेकिन एक साथ अधिक पानी न पी सकना. आधी रातके बाद रोगका बढ़ना, भूरे, खून मिले, बदबूदार या काले दस्त नाड़ी कमजोर. पसीना ठंडा. पानी पीनेसे पेटमे दर्द या कै हो जाना. पेट फूलना बहुत बक-झक करना, बेहोशी. बिछौना नोचना, गलेका बैठ जाना, श्वास कष्ट इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। रोगकी तेजीके समय या अन्तिम अवस्था में दस्तोंका जोर बढ़ने पर और रोगीके बहुत सुस्त हो जाने पर इससे बहुत फायदा होता है।

फोस्फोरिक एसिड ३, ६ या ३०—बहुत कमजोरी शारीरिक और मानसिक शक्तिका बहुत घट जाना बेहोशी. सभी बातोंमे उदासीनता उदरामय पेटमे गड़गड़ाहट, बहुत पसीना इत्यादि। प्रथमावस्थामें साधारण दस्त [illegible], पतले दस्त और कमजोरी के लिये और अन्तिम अवस्थामें बहुत कमजोरी के लिये यह दवा व्यवहार की जाती है।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०-घबराहट [illegible] कारण नींद न आना [illegible] सिर में दर्द [illegible]

हायोसायमस ६ या ३०—बेहोशी, बहुत बकझक, जागते में भी बड़बड़ाते रहना, बिछौना नोचना, उदासीनता, चारों ओर आँखें घुमाना, हाथ पेर पटकना, अनजान मे पाखाना पेशाब, जीभ लाल, सूखी और फटी हुई निर्लज्जता पूर्ण बातें करना, कम सुनना, बोलते समय जीभ का लड़खड़ाना, पेशाब बन्द इत्यादि। दूसरे सप्ताह के अन्त और तीसरे सप्ताह के आरम्भ की अवस्था तथा प्रलाप की यह बढ़िया दवा है।

लाइको पोडियम ६ या ३०—मुँह में बदबू, मिचली भौंह का लटक पड़ना, तन्द्रालुता, पेट फूलना, बड़बड़ाना, कब्जियत, नाक बन्द होने के कारण मुँह से साँस लेना पेट में बहुत गड़गड़ाहट, पेशाब में तली जमना इत्यादि इसके प्रधान लक्षण है। दूसरे सप्ताह के अन्त मे भी अच्छी तरह दाने न निकलने पर इसे देना चाहिये।

मर्क्युरियस मल ६ या ३०—जीभ पर मेला पीला लेप या जीभ का साफ होना, मुंह में खट्टा या तीता स्वाद, जीभ पर दांतो के दाग पडना पतले दस्त, दस्तों में रुई सी दिखायी देना बारम्बार पेशाब, अनिद्रा बदबूदार बहुत पसीना पर उससे आराम न मालूम होना कपड़े पर पसीने के दाग लगना, कमजोरी, नाक से खून गिरना प्रलाप नहीं के बराबर, चपलता लार बहना तेज प्यास इत्यादि।

नाइट्रिक एसिड ६ या ३०—जीभ पर सफेद मोटा लेप, हरे रङ्गके कफ मिले दस्त, आंतोंमें जख्म और उनसे ताजा खून निकलना, मुंह और गलेमें जख्म, गलेमें कफ इकट्ठा होना, थूकमें खून, मृत्युभय, चूना और खड़ी मिट्टी खानेकी इच्छा, शरीर में बारम्बार दर्द इत्यादि। खूनी दस्तों में इससे बहुत लाभ होता है।

पाइरोजिनम ३०—तेज बुखार, खून खराब हो जानेके लक्षण और उसीके कारण बुखार आना, तेज प्रलाप इत्यादि सेप्टीसिमिया के बाद इसे देनेसे अधिक लाभ होता है।

जिंकम ६ या ३०—मस्तिष्क का आक्रान्त होना, पूरी बेहोशी, हाथ की पेशियों का काँपना, प्रलाप, एक ही ओर ताकते रहना, किसी को पहचान न सकना, बिछौने से सरक जाना और उठने की चेष्टा करना, हाथ पैर बरफ की तरह ठंढे, हाथ उठाकर हिलाते रहना इत्यादि।

फेरमफास ३x या ६x—मैलेरिया और टायफायड बुखार के सम्मिलित लक्षणों में इससे लाभ होता है। खून सुर्खी, जाड़ा लग कर बुखार आना, बुखार के साथ बहुत कमजोरी, मिचली और कै, नाक से खून गिरना, पाखाने में खून के छींटे दिखाई देना इत्यादि।

केलीफास ६—खून का खराब हो जाना, श्वास प्रश्वास मल और सभी तरह के स्रावों में बहुत बदबू, दाँतों के दर्द;

होमियोपैथिक चिकित्सा

बिछौने पर पड़े-पड़े उसकी कमर और कूलोंमें जख्म हो जाते हैं। यही शय्याक्षत कहलाते हैं। उन्हें आराम करने के लिये लेकेसिस ६ का सेवन और हाइड्रेस्टिस या केलेण्डुला धावन का बाह्य प्रयोग करना चाहिये। हाइड्रेस्टिस या केलेण्डुला मदर टिंचर १ भागमें ४० भाग साफ पानी मिलाने से इनके धावन तैयार होते हैं।

आवश्यक सूचना—इन दवाओं के अतिरिक्त मैलेरिया बुखार की दवाएं भी लक्षणानुसार दी जा सकती है। न्युमोनिया आदि भयंकर उपसर्गों के लिये न्युमोनिया रोगकी दवाएं देखनी चाहिये। रोगके समय रोगीको ठंढा पानी, साबूदाना, बार्ली, आरारोट आदि हलकी चीजें देनी चाहिये। बहुत कमजोरीमें प्लेजमन आरारोट या थोड़ासा दुध दिया जा सकता है। रोगीको अकेला भी न छोड़ना चाहिये और उसके कमरे में भीड़ भी न लगानी चाहिये। रोगीके कपड़े और बिछौना साफ सुथरा रहे। रोगीका मलमूत्र सावधानी से फेंकना चाहिये। शय्याक्षत से बचाने के लिये रोगीको करवट बदलाते रहना चाहिये। स्वास्थ्य रक्षाके अन्यान्य नियमों का भी समुचित पालन होना चाहिये।

मृत्यु हो जाती है। यदि रोग आराम होनेका होता है तो दूसरे सप्ताह के अन्त मे पसीना या दस्त आकर बुखार उतर जाता है और अन्य लक्षण भी घट जाते हैं। आराम होनेके समय रोगी के केश झड़ जाते हैं और कानों से कम सुनायी देता है। जीभ सूखी, पेट फूलना, हिचकी पेशाब का बन्द हो जाना और बेहोशी बुरे लक्षण माने जाते हैं। रोग बढ़ने पर कभी २ न्युमोनिया आदि फेफड़े की बीमारी भी हो जाती है।

चिकित्सा।

यह बुखार भी टायफाइड के समान ही होने से टायफाइड की दवाएँ इसमें भी दी जा सकती हैं। बेप्टीशिया, ब्रायोनिया, इपीकाक, युपेटोरियम आर्सेनिक, नक्सवोमिका, फास्फरिक एसिड, एकोनाइट, एपिस, बेलेडोना हायोसायमस, लेकेसिस, ओपियम, रसटक्स, स्ट्रेमोनियम, आदि इसकी प्रधान दवाएँ है। इनके लक्षण टायफाइड और मेलेरिया के अध्याय में लिखे जा चुके है। मेलेरिया रोग की दवाओं मे से भी इसकी अन्यान्य दवाएँ चुनी जा सकती हैं। चुनी हुई दवा रोग की अवस्थानुसार तीन-तीन चार-चार घण्टे के अन्तर से देनी चाहिये। पथ्य और परहेजी आदि के नियम टायफाइड तथा मेलेरिया आदि ज्वरों की तरह ही पालन करने चाहियें।

पायमिया और सेप्टीसीमिया ।

(Pyoemia And Septicoemia)

प्लेग, टायफाइड, पेचिश, जख्म इत्यादि के समय बाहर से कोई जीवाणु रक्त में प्रवेश कर जाने पर खून खराब हो जाता है और उसके कारण बुखार, विकार, पसीना, ग्रन्थियों में पीब भर जाना, खून का काला पड़ जाना इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। इसे सेप्टीसीमिया कहते हैं। बाहर से कोई विष या जीवाणु प्रवेश न करने पर भी कभी-कभी शरीर के अन्दर ही पीब आदि जमा होने के कारण उसमें विष पैदा हो जाता है और उसके कारण खून खराब होकर सेप्टीसीमिया की तरह ही बुखार आदि लक्षण पैदा हो जाते हैं, इसे पायमिया कहते हैं। इसमें शरीर के बाहरी तथा भीतरी अंशों में भयंकर फोड़े और जख्म हो जाते हैं।

इस तरह खून खराब होने के प्रधान कारण तीन हो सकते हैं (१) खून में कोई रासायनिक सड़न पैदा करने वाला पदार्थ मिल जाना (२) बाहर से किसी जीवाणु का खून में मिल जाना और (३) शरीर के किसी भीतरी यन्त्र में भीतर ही भीतर फोड़ा आदि के कारण पीब का जमा हो जाना और उसके कारण खून खराब हो जाना। रात में पसीना, ठंढ लगना, शरीर की गरमी का बहुत बढ़ जाना, नाड़ी की गति क्षीण और तेज इत्यादि लक्षण देखते ही साव-धान हो जाना चाहिये और इलाज शुरू कर देना चाहिये।

सेप्टीसीमिया और पायमिया में कोई विशेष अन्तर न होने के कारण दोनों की चिकित्सा एक साथ ही नीचे लिखी जाती है।

चिकित्सा ।

रसटक्स ६ या ३०—बहुत बेचैनी, कमजोरी, बड़बड़ाना, चमड़े पर नीले दाग, शरीर की ग्रन्थियों का आक्रान्त होना ।

किनिनम सल्फ ३ X—बहुत कमजोर बनाने वाला, हलका, धीमा तथा बहुत दिन रहनेवाला बुखार।

कार्बोवेज ६—जीवनी शक्ति का ह्रास, हाथ पेर ठण्डे, ज्वालाकर वेदना इत्यादि।

एसिड म्यूर ६—बहुत सुस्ती, जीभ सूखी, दांतों मे मैल इत्यादि।

ब्रायोनिया ६ या ३०-हिलने डोलने से दर्द का बढ़ना इसका प्रधान लक्षण है।

बेप्टीशिया ३ X—टायफाइड बुखार जैसे लक्षणों में इसे देना चाहिये।

लेकेसिस ६ या ३०-खून का खराब हो जाना, जख्मों का सड़ना कमजोरी तन्द्रा रोगी का बक बक करना इत्यादि।

मर्क्यूरियस सल ६–सड़ने का लक्षण, बहुत पसीना निकलना पर उससे आराम न मालूम होना ।

आर्निका ३ X–किसी तरह की भी चोट, मार, जख्म या चीरफाड़ के बाद यह रोग होना, प्रसव के बाद प्रसूती को यह रोग हो जाना ।

आर्सेनिक ६ या ३०–बेचैनी, छटपटाहट, जलन पैदा करनेवाला दर्द, बुखार के समय सुस्ती, जख्म में सड़न, तेज प्यास, किसी स्थान से खून निकलना या चमड़े पर नीले दाग पड़ जाना, पुराने खून की खराबी इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये । यही इस रोग की प्रधान दवा है ।

इनके अतिरिक्त फाइटोलेक्का, एसिड कार्बोलिक, केन्थरिस जेल्सीमियम, फोस्फरस, साइलीसिया, विरेट्रमविर, आर्गटोन, पाइरोजेन इत्यादि दवाएं भी लक्षणानुसार देने से लाभ होता है ।

आवश्यक सूचना–शरीर में कहीं भी पीब जमा होने पर उसे निकाल देना चाहिये और उस स्थान को अच्छी तरह धोते रहना चाहिये । कब्जियत हो तो जुलाब देना चाहिये । गर्म पानी में नहाना और हवादार स्थान में रहना चाहिये । रोगी को पुष्टिकर पतले पदार्थ खानेको देना चाहिये । यदि कहीं फोड़ा हो गया हो और वह अपने आप न फूटे तो उसे चिरवा देना चाहिये । तेज बुखार, बेहोशी, पतले दस्त, रक्त-स्राव आदि बहुत बुरे लक्षण हैं । इनसे सावधान रहना चाहिये ।

ग्रन्थिल ज्वर।

(GLANDULAR FEVER)

नीचे की भौंह के नीचे गले में दाहिनी और वायीं दोनों ओर कुछ गॉठे हैं, जिन्हें अंग्रेजी में ग्लैण्ड कहते हैं। इन्हीं गॉठों में सूजन या प्रदाह उत्पन्न होकर जो बुखार आता है, उसे ग्रन्थिल ज्वर कहते हैं। यह बीमारी लरछुत होती है और प्रायः छोटे बच्चों को ही होती है। बुखार बहुत तेज—१०३ डिग्री तक आता है और यकृत तथा पिलही का बढ़ जाना, भूख का न लगना इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। बुखार अधिक दिनों तक नहीं रहता, परन्तु गॉठों की सूजन १५-२० दिन तक बनी रहती है। जिन लोगों को बाल्यावस्था में यह बीमारी होती है,उन्हें बड़ी उम्रमें क्षय होने का खतरा रहता है।

चिकित्सा।

बेलेडोना ६—गॉठें सूजी हुई और लाल, बुखार, आँखें और चेहरा लाल, दप दप वेदना, शिर दर्द इत्यादि।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—मोटे ताजे थुलथुले शरीर के और जिन्हें शीघ्र ही पसीना आ जाता है या जिनके शरीर का पोषण अच्छी तरह नहीं होता उन्हें इससे विशेष लाभ होता है।

हिपर सल्फर ६—गॉठों में पीब उत्पन्न होने पर इसे देने से गॉठें फूट कर पीब बह जाता है।

सिलिका ६ या ३०—[illegible] ग्लैंड के पक जाने [illegible] गले जख्मों को भर कर चंगा करता है।

फाइटोलेका ६ या ३०—बुखार छूट जाने पर भी गांठों की सूजन का दूर न होना और उनमें पीड़ा रहना।

इनके अतिरिक्त पुरानी बीमारी में मर्क्युरियस, [illegible] [illegible], कैल्क [illegible] और बेलाडोना आदि दवाएं लक्षणानुसार दी जा सकती हैं।

आवश्यक सूचना—बच्चों को अच्छी और पुष्टिकर चीजें खाने को देनी चाहिये। स्वास्थ्य के अन्यान्य नियमों का भी पालन करना चाहिए। गांठों में पीब पड़ जाने पर जब तक जख्म भर न जायें, तब तक उन्हें कैलेण्डुला लोशन (कैलेण्डुला मदर टिंचर १ भाग और पानी ८ भाग) से धोते रहना चाहिये।

इनफ्लुएञ्जा (Influenza)

इनफ्लुएञ्जा सर्दी या जुकाम से मिलती जुलती एक बीमारी है, परन्तु साधारण जुकाम की अपेक्षा इसका प्रकोप बहुत भयंकर और व्यापक होता है। इसकी उत्पत्ति एक प्रकार के जीवाणु से मानी गयी है। यह जीवाणु स्वस्थ शरीर में प्रवेश करने पर दो एक मिनट के बाद जुकाम सा हो जाता है और बुखार आदि भयकर उपसर्ग उत्पन्न हो जाते हैं। यह बीमारी इस देश में युरोप से आयी है। वहाँ पहले पहल यह नयी

शताब्दि में दिखायी दी थी। बाद को और भी कई बार इसका प्रादुर्भाव हुआ। सन् १९१८ में, वार फीवर के नाम से यह स्पेन में दिखाई दिया और वहाँ से समस्त संसार में फैल गया। एक स्थान में इसका प्रकोप होने पर यह छुआछूत से बहुत थोड़े समय में चारों ओर फैल जाता है। कभी कभी तो एक ही मनुष्य का एक से अधिक बार यह बीमारी होती है। सन् १९१८-१९ में थोड़े समय के अन्दर इस बीमारी ने भारत और अन्यान्य देशों में जितने मनुष्यों के प्राण लिए, उतने शायद और किसी बीमारी ने न लिये होंगे।

लक्षण—इस रोग के जीवाणु शरीर में प्रवेश करने पर पहले दो एक दिन तक तबियत कुछ अनमनी सी मालूम होती है। बाद को बारंबार जाड़ा लग कर १०० डिग्री से लेकर १०५ डिग्री तक बुखार चढ़ आता है। इसके बाद जुकाम की तरह छींक नाक से पानी बहना आँखो से पानी बहना, गले मे दर्द गला बैठ जाना कष्ट कर खाँसी, श्वासकष्ट, समूचे शरीरमे तेज दर्द, मुँह बेस्वाद, अरुचि भूख न लगना, शारीरिक और मानसिक कमजोरी, पेशियों की कमजोरी इत्यादि लक्षण प्रकट होते है। कभी कब्जियत दिखायी देती है, कभी पतले दस्त आते है। किसी किसी रोगी को बहुत नींद आती है। कभी-कभी नाक से खून भी गिरता है। कै या मिचली, गर्दन का अकड़ जाना, जीभ मैली, अनिद्रा बहुत सुस्ती आदि लक्षण भी दिखायी देते है।

आर्सेनिक ६ या ३०—प्यास, बुखार, कमजोरी, शरीर में जलन, खाँसी, आधी रात के बाद रोग-लक्षणों का बढ़ना, अस्थिरता, बहुत कमजोरी, शरीर को ढक रखने की इच्छा मृत्यु भय, ठंढा पसीना, श्वास कष्ट, नाक से पतला और गरम जलन पैदा करनेवाला कफ निकलना इत्यादि। डाक्टर ह्यूज के मतानुसार इनफ्लुएञ्जा की यह सर्व प्रधान दवा है।

ब्रायोनिया ६ या ३०—सूखी खाँसी, खाँसने और छींकते समय छाती में सुई चुभाने का सा दर्द, साँस लेते समय भी छाती में दर्द, शिर में दर्द, बुखार, कब्जियत, शरीर के दर्द के कारण हिल डोल न सकना, हिलने डोलने से दर्द का बढ़ना, मुँह का स्वाद कड़ुआ, बहुत प्यास इत्यादि।

बेप्टीशिया १X या ३ X—बहुत सुस्ती, आलस्य, एक ओर ताकते रहना, आँख और शिर में भार मालूम होना, काले और पतले दस्त, अस्थिरता, रोगी का यह समझना कि उसके शरीर के कई टुकड़े हो गये हैं और उन टुकड़ों को जोड़ न सकने के कारण कष्ट अनुभव करना इत्यादि। आरंभ में यह दवा देने से अनेक बार दूसरी दवा देने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती।

रसटक्स ६ या ३०—पानी में भीगने या सर्दी लगने के कारण यह रोग होता है, समूचे शरीर में दर्द, हिलने डोलने से आराम मालूम होना, जीभका अगला हिस्सा लाल, बहुत

बेचैनी, सूखी खाँसी, कमर आदि में वात की तरह दर्द, सान्निपातिक ज्वर के से लक्षण इत्यादि।

नक्सवोमिका ३०—लम्बे शरीर में जाड़ा सा लगना नाक का बन्द हो जाना, कब्जियत और पेट में दर्द चिड़चिड़ा स्वभाव, अरुचि, भूख न लगना, सिर में दर्द, जी मिचलाना दिन को कफ निकलना, रात को सूखी खाँसी।

जेल्सीमियम ६ या ३०—अमेरिकन डाक्टर आरम्भ में यही दवा देने की सलाह देते हैं। अल्पविराम ज्वर, चेहरा लाल, आँख नाक से पानी निकलना, छींक आना, नाक बन्द ऐसा मालूम होना मानों सिर को किसी ने कसकर बाँध दिया है, गले और हाथों में दर्द वात जैसा दर्द, पैरों का [illegible] बने रहना इत्यादि।

एन्टिम टार्ट ६—श्वास प्रश्वास के साथ [illegible] घड़घड़ खाँसी, सिर और पीठ में दर्द, कफ [illegible] निकलने से आराम मालूम होना [illegible]

मर्क्युरियस ६—नाक से पतले पानी [illegible] पीला कफ निकलना [illegible] गले में दर्द [illegible] पसीना निकलना [illegible] होना, रात के [illegible] इत्यादि।

इपीकाक ६ या ३०—छाती में साँय साँय आवाज या कफ की घड़घड़ाहट, श्वाँस रोकने वाली खाँसी, खाँसते खाँसते के हो जाना इत्यादि ।

युपेटोरियम पर्फो ३ या ६—हाथ पैर और हड्डियों में तेज दर्द, सरदी, छींक, खाँसी, जी मिचलाना, पित्त की के इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये ।

डाल्केमारा ६—वर्षा ऋतु में पानी में भीजने के कारण यह रोग होने पर इससे बहुत लाभ होता है ।

युफ्रेशिया ३ या ६—नाक और आँख से बहुत पानी गिरना और आँख के पानी से छाले पड़ जाना ।

एलियम सिपा ३—बहुत छींक आना, नाक से पानी गिरना और उसके कारण छाले पड़ जाना ।

लेकेसिस ६ या ३०—सोने के बाद सब तकलीफों का बहुत बढ़ जाना, गले में दर्द, कड़ी चीज निगलने में कष्ट ।

सेङ्गुनेरिया ३ X या ६—खाँसी, नाक से पानी गिरना में दाहिनी ओर दर्द, कफ निकलने में कष्ट, निकल जाने . मालूम होना ।

फाइटोलेका १X—शिर दर्द, पीठ में वेदना, समूचे शरीर में वात का सा दर्द, तालुमूल बढ़ा हुआ और उसमें वेदना ।

चायना ३X—कै और मिचली, कमजोरी, साथ ही पतले दस्त इत्यादि।

फोस्फ़ोरस ६—कष्टकर खाँसी, स्वर नाली और फेफड़े का प्रदाह. (न्युमोनिया). दायीं करवट सोने से खाँसी का बढ़ना. कफ पीला या सफेद और सूत की तरह कड़ा. कमजोरी, कफ न निकाल सकना. खून मिला या पाव जैसा कफ, शाम से लेकर आधी रात तक रोग लक्षणों का बढ़ना स्वरभंग इत्यादि।

हाइड्रोसियानिक एसिड ३—लगातार खाँसी आये, जरा देर के लिये भी बन्द न हो तो इसे देना चाहिये अथवा ड्रोसेरा ३X या रूमेक्स ६ का प्रयोग करना चाहिये।

पल्सेटिला ६ या ३०—भूख और प्यास नदारद, मुँह का स्वाद कड़ुआ. शाम के समय रोग लक्षणों का बढ़ना. सूखी खाँसी, सिर को कसकर बाँधने से आराम मालूम होना स्वाद या गन्ध न मालूम देना इत्यादि।

नेट्रम सल्फ १२ विचूर्ण—तर और ठंडी हवा लगकर यह रोग होना, रोग आराम होने पर भी कमजोरी और बहुत सर्दी मालूम होना इत्यादि।

इनके अतिरिक्त युपेटोरियम, स्टिक्टा, जेलसिमियम, कार्बो वेजी. मेलीलोटस बेसिलिनम, सेनेगा इत्यादि दवाएँ लक्षणानुसार दी जा सकती हैं। न्युमोनिया, ब्रोंकाइटिस आदि के लिये उन्हीं रोगों की दवाएँ देनी चाहिये।

आवश्यक सूचना—रोगी का कमरा साफ़, सूखा और हवादार होना चाहिये। रोगीको हमेशा गरम कपड़े से ढक रखना चाहिये, ताकि उसे सरदी न लग सके। शिर खुला रखना चाहिये। रोगीको बिछौने से उठने न देना चाहिये। ठंडे पानी से हाथ पैर धोना या नहाना और कफ पैदा करने वाली चीजें खाना मना है। पानी मिला दूध, नारंगी, केला शहद, मीठा अनार, गरम करके ठंडा किया हुआ पानी आदि सुपथ्य है। रोगी की सेवा करने वालों को खूब सावधान रहना चाहिये। रोगी के थूक पर हमेशा चूनेका चूरा डालते रहना चाहिये। जहाँ यह रोग फैला हो वह स्थान खाली कर देना चाहिये। ऐसा न किया जा सके तो स्वास्थ्य के नियमों का पालन करते हुए प्रतिषेधक दवाओं का व्यवहार करना चाहिये।

जहरवात या विसर्प।

(Erysipelas)

शरीर में कहीं चोट लगने या छिल जाने पर उस मार्गसे एक प्रकार का जीवाणु शरीर में प्रवेश कर चमड़ा या श्लैष्मिक झिल्ली में प्रदाह उत्पन्न कर देता है। इस प्रदाह युक्त ज्वरका नाम ही जहरवात या विसर्प है। कभी-कभी यह अपने आप धातुगत दुर्बलता आदि के कारण से भी उत्पन्न होता है।

प्रकृति भेदसे विसर्प आठ प्रकार का दिखायी देता है—

(१) सिम्पल-इसका असर केवल चमड़े पर होता है (२) मिलिअरी-इसमें छोटे-छोटे छाले पड़ते है (३) फिलक्टेनस-इसके छाले वड़े होते हैं (४) इडिमेटस-इसमें सूजन भो रहती है (५) फ्लेगमोनस-यह चमड़े के नोचे गहराई में होता है और इससे पीव निकलता है (६) ग्रेंग्रीनस-इसके जख्म में सड़न दिखायी देती है (७) इराटिक या वनडरिङ्ग-यह एक स्थानसे दूसरे स्थानमें घूमता रहता है (८) मेटस्टेटिक-यह एक स्थान मे छिपकर दूसरे स्थान मे प्रकट होता है। इस में तकलीफ कम होती है पर यह दूसरो की अपेक्षा अधिक दिन मे आराम होता है।

साधारण विसर्प में चमड़े का प्रदाह, सूजन, दर्द और जलन इत्यादि लक्षण प्रकट होते है। कम्प, तेज शिरदर्द, जी मिचलाना और के, बुखार इत्यादि लक्षण भी दिखायी देते हैं। रोगवाले स्थान में प्रदाह, दपदपी, जलन और सूजन होती है। कभी-कभी वहाँ छाले या फफाले पड़ जाते हैं और उनसे पानी जैसा पाव वहता है। रोग भयकर या सांघातिक होनेपर तेज बुखार, भूख न लगना, नाड़ी तेज, प्रलाप तथा मस्तिष्क विकारके अन्यान्य लक्षण प्रकट होते है। साधारण रोग जल्दी आराम हो जाता है, लेकिन कमजोरी बहुत दिनों तक बनी रहती है। कठिन रोग जल्दी आराम नहीं होता। सिर और चेहरे पर यह रोग होने पर यह बहुत ही भयंकर

रूप धारण करता है। होठ फटने पर यदि वहाँ से यह रोग प्रकट होता है, तो वह बहुत खतरनाक होता है।

यह रोग शरीरके किसी स्थान में प्रकट होकर चारों ओर फैलने लगता है। रोगी के संसर्ग में जो लोग आते हैं, उन्हें भी यह रोग हो जाता है और कभी-कभी यह बाप दादों से उनकी सन्तान को वीरासत में मिलता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ X या ६—प्रदाह के कारण बुखार, चेहरा लाल, नाड़ी पूर्ण और तेज, अस्थिरता मृत्युभय, होठ सूखे, आक्रान्त स्थान में बहुत दर्द और जलन, प्यास, चमड़ा सूखा।

बेलेडोना ३या ६—यह साधारण विसर्प की बढ़िया दवा है। आक्रान्त स्थान गरम, लाल और कुछ सूजा हुआ, गोली लगने कासा दर्द, जोरोंका शिरदर्द, खींचन इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं। यह चेहरे के विसर्प में बहुत अधिक फायदा करता है, खास कर जब चेहरा सूज गया हो, सूजन के कारण आँखें बन्द हो गयी हों, चेहरा पहचान में न आता हो, साथ ही शिर दर्द, प्यास, उत्ताप चमड़ा सूखा अस्थिरता और बक-झक आदि मस्तिष्क विकार के भी लक्षण मोजूद हो।

रसटक्स ३ या ६—पीली या नीली आभा लिये हुए लाल रंगकी सूजन, अस्थिरता, बहुत दर्द, चेहरा लाल और

फूला हुआ, आक्रान्त स्थान में खुजली. खुजलाने पर जलन होना इत्यादि। छोटी या बड़ी रसभरी फुंसियाँ या छाले पड़ जाने पर साथ ही मस्तिष्क विकार होने पर इससे विशेष लाभ होता है। बेलेडोना के बाद इसे देना चाहिये।

ग्रेफाइटिस ६—छालेदार या एक स्थान से दूसरे स्थान में घूमने वाले विसर्प में इससे बड़ा लाभ होता है। रसटक्स से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये। जिन्हे बार-बार विसर्प होता हो उन्हे यह दवा देनेसे उसका पुनराक्रमण नहीं होता।

ब्रायोनिया ६ या ३० जोड़ों पर विसर्प, जरा भी हिलने डोलने से तकलीफ का बढ़ जाना। दाने अच्छी तरह न निकलने पर या निकल कर दब जाने पर इसे देना चाहिये।

सल्फर ६ या ३०—ब्रायोनिया के बाद कभी-कभी सल्फर की जरूरत पड़ती है। ब्रायोनिया से पूरा लाभ न होने पर सल्फर उसका काम पूरा कर देता है।

लेकेसिस ६ या ३०—चेहरे पर खास कर बायीं ओर विसर्प होने के बाद तकलीफ का बढ़ जाना शिर में एक ही ओर दर्द इत्यादि। छालों में नीलापन दिखायी देने पर इससे विशेष लाभ होता है।

पल्सेटिला ६ या ३०—रसटक्स के बाद इससे भी काफी फायदा होता है घूमने वाला विसर्प एक स्थानसे

लाली घटकर दूसरे स्थान में विसर्पका प्रगट होना, त्वचा का रंग नीलापन लिये हुए लाल कान का विसर्प, आहार के दोषसे विसर्प का होना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३०—दर्द भरे काले रंग के छाले, छालोमें पीव, सड़ने का लक्षण, सुस्ती, कमजोरी, प्यास, बेचेनी, बुखार और सान्निपातिक उपसर्गों में इसे देना चाहिये।

कार्बोवेज ६—पीव भरे छालों में आर्सेनिकके बाद कार्बोवेज देने से अधिक लाभ होता है।

एपिस ३ या ६—चोट के कारण विसर्प, खुजली, बहुत जलन, सूजन, चेहरे का विसर्प, आँखों की पपनी में सूजन, रोगी हाथसे छूने भी न दे, गरम स्थान में रहना असह्य इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

केन्थरिस ६—नाककी जड़से शुरू होकर आँखके चारों ओर विसर्पका फैल जाना, प्रदाह फफोले, उनसे रस निकलना, प्यास, तेज दर्द।

युफोर्बिया ६—तेज बुखार, शिर और चेहरे पर पीले पीले फफोले, उनमें दर्द और जलन, छूने या ठंढी हवा लगने से दर्दका बढ़ना, सड़ने का खतरा।

हिपर सल्फर ३०—पारेके अपव्यवहार के कारण यह रोग होना और स्पर्श बरदास्त न होना। यदि छालोमें पीव

भरा हो और उसे बहाने की जरूरत हो या छालोंको पकाना हो तो इसे देना चाहिये।

ओपियम ६—बहुत निद्रालुता दिखायी दे तो बीच-बीच में इसे देना चाहिये।

अर्निका ३ या ६—चोटके कारण विसर्प, बहुत धीरे धीरे बढ़ना, आक्रान्त स्थान सूजा हुआ, फूला, गरम, लाल, दर्द और छालोंसे पूर्ण, सड़ने के लक्षण।

बोरेक्स ३ या ६—चेहरे का साधारण विसर्प, हंसने बोलने में तकलीफ मालूम होना।

एमन कार्ब—बुड्ढोंको यह रोग होना, दाहिनी आँखसे लेकर बायीं आँख तक विसर्प का फैलना, मस्तिष्क विकार इत्यादि।

एइलेन्थस ६ या ३०—विसर्प के साथ टायफाइड केसे लक्षण दिखायी दें तो इसे देना चाहिये।

क्रोटेलस ६—सड़न शुरू होने पर इसे देना चाहिये। विसर्पवाले स्थानमें सूजन, चमड़े का रंग बैंगनी, रोगीका निस्तेज हो जाना, बदबूदार पतले दस्त इत्यादि।

आवश्यक सूचना—रोगकी तेजीमें रोगीको साबूदाना, बार्ली आदि हलकी चीजें खानेको देनी चाहिये। ३-४ बूंद रसटक्स मदर टिंचर गरम पानी में मिलाकर सेंकने से लाभ होता है। छालों पर मठा लगाने से भी तकलीफ घटती है।

होमियोपैथिक चिकित्सा

प्रकाशक

भार्गव पुस्तकालय

सरल

होमियोपैथिक चिकित्सा

१—उपक्रमणिका ।

महात्मा हनीमैन

होमियोपेथी क्या है, इसका कितना महत्त्व है और इस
अद्वितीय चिकित्सा-प्रणालीका मूलाधार क्या है, इत्यादि
बातें जाननेके लिये सर्वप्रथम इसके आविष्कारक महात्मा
सेमुएल हनीमैनका जीवन-चरित्र पढ़ना परमावश्यक है।
इस महापुरुषका जन्म जर्मनी स्थित सेक्सनी प्रदेशके मेसेन
नामक गाँव मे ता० १० अप्रैल सन् १७५५ ईस्वीको हुआ था।
इसके पिता चीनी मिट्टीके एक कारखानेमें बर्तनोंपर चित्र-
कारी करनेका काम करते थे अतएव उन्होंने अपने इस
होनहार पुत्रको भी यही कला सिखानेकी चेष्टा की परन्तु
हनीमैनके भाग्यमें तो दूसरा ही सुयश प्राप्त करना बदा था
अतएव उन्हें यह पसन्द ही न आया। वे तो पुरायकी वि

प्रकट होते हैं। बुखार साधारणतः १०१ या १०२ डिग्री तक चढ़ता है, रोग विकट होने पर १०८ तक पहुँचता है।

बुखार आनेके दो-तीन दिन बाद अमौरी जैसे लाल लाल दाने निकलने शुरू होते हैं। यह सबसे पहले चेहरे पर, फिर गर्दन और छाती, इसके बाद समूचे शरीर पर दिखायी देते हैं। दानों पर उंगली रखने से उनकी लाली गायब हो जाती है। उंगली उठा लेने पर वे फिर लाल हो जाते हैं। तीन चार दिन के बाद यह दाने मुरझा जाते हैं और बुखार आदि लक्षण भी धीरे-धीरे घट कर गायब हो जाते हैं। अन्त में दानोंकी छाल निकल जाती है और रोगी आराम हो जाता है।

यह साधारण हामज्वर के लक्षण हैं। कभी-कभी बीमारी बहुत विकट रूप धारण करती है। ऐसी अवस्था में बुखार १०३ से १०८ डिग्री तक चढ़ता है और निद्रालुता, भूख न लगना, मिचली के, कब्जियत या पतले दस्त, गलेमें दर्द, खांसी, श्वासकष्ट, बहुत कमजोरी, हाथ पैर ठंडे, जीभ सूखी, दांतों पर मैल, बकझक, बेहोशी, रक्तस्राव, ब्रांकाइटिस और न्युमोनिया आदि लक्षण प्रकट होते हैं। दानोंका आरम्भ में मिल जाना या बढ़ जाना और उनका रंग बैगनी या काला हो जाना भी बुरा लक्षण है। कभी-कभी बीमारी साधारण होने पर भी आराम होनेके समय रोगीको सर्दी लग जानेके कारण ब्रोंकाइटिस या न्युमोनिया हो जाता है और इसके कारण उसकी मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सा ।

साधारण अवस्था में दवा न देनेसे भी काम चल सकता है । दाने यथा समय निकल कर आप ही आप मुरझा जायेंगे और रोगी आराम हो जायगा । यदि दवा देनेकी आवश्यकता प्रतीत हो तो लक्षणानुसार निम्नलिखित दवाएं देनी चाहिये ।

एकोनाइट ३ या ६—बहुत तेज बुखार, चमड़ा सूखा और गरम, शिरमें गरमी, आँखें लाल, प्यास, अस्थिरता, बहुत कमजोरी, सूखी खाँसी, छींकें आना और नाकसे पानी बहना ।

बेलेडोना ६ या ३०—गलेमें सूजन, दर्द, निगल न सकना, प्यास, सूखी खाँसी, रातमें खाँसी का बढ़ना, दाने न-निकलना, आँखों पर बहुत सूजन चेहरा लाल, बड़बड़ाना या बकझक करना ।

युफ्रेशिया ३ या ६—जब खाँसी, आखों पर सूजन और आँख तथा नाकसे ज्वालाकर पानी बहना आदि सर्दीके लक्षण बहुत प्रबल हो तब इसे देना चाहिये ।

इपीकाक ६ या ३०—मिचली और कै बन्द करने की यह बढ़िया दवा है । खाँसी, श्वासकष्ट, गलेमे कफ घड़घड़ाना, दाने निकलने में देरी इत्यादि लक्षणोंमें भी इसे देना चाहिये ।

आर्सेनिक ६ या ३०—इपीकाक देनेसे श्वासकष्ट और कै की शिकायत दूर न हो तो इसे देना चाहिये । तेज प्यास,

अस्थिरता, सुस्ती, पतले दस्त और सान्निपातिक लक्षणों में भी इससे लाभ होता है।

ब्रायोनिया ६ या ३०—सूखी खाँसी, छातीमें सुई चुभोने जैसा दर्द, श्वासकष्ट, कब्जियत, बिछौने से उठ बैठने पर जी मिचलाना ठंडा पानी पीनेकी इच्छा, दानोंका बैठ जाना या अच्छी तरह न निकलना।

पल्सेटिला ३ या ६—एकोनाइट से बुखार घट जाने पर पल्सेटिला देनेसे बहुत लाभ होता है। छातीमें ढीला कफ, रातमें खाँसीका बढ़ना, बारंबार छींकें आना स्वाद और गन्ध न मालूम होना आँखसे पानी गिरना, पतले दस्त खुली हवामें आराम मालूम होना। यह इस रोगकी सर्वोत्कृष्ट और प्रतिषेधक दवा है।

रसटक्स ६ या ३०—हाथ पैर और कमरमें दर्द हिलने डोलने और करवट बदलने से आराम मालूम होना अस्थिरता सन्निपातिक ज्वरके से लक्षण।

एपिस ६ या ३०—दानेके साथ शरीर के किसी स्थानमें या आँखके पपोटेमें सूजन दिखायी दे तो इसे देना चाहिये।

जेल्सीमियम ६ या ३०—बेहोशी, [illegible] दर्द रहना, तेज बुखार, निद्रालुता सरदी, खाँसी दाने निकलने मे देरी होना या दानोंका बैठ जाना।

मर्क्युरियस ६ या ३०—[illegible] फैलना, मुँह में जख्म, बुखार, सूखी खाँसी बार-बार थूक के साथ कफ निकलना।

सल्फर ३०—रोग आराम होने के समय दो एक रोग के उपसर्गों से छुटकारा मिलता है। फेफड़े के प्रदाह में भी इसे देना चाहिये।

केली बाइक्रोम ६—खाँसी और ब्रोंकाइटिस के लक्षण में इसे देना चाहिये।

लेकेसिस ६ या ३०—गलकोषरोग आक्षेपयुक्त खाँसी, गले में पीड़ा, सोने के बाद रोग लक्षणों का बढ़ना।

चेलीडोनियम ३ या ६—दाम के साथ न्युमोनिया, श्वास प्रश्वास के समय नाक से पंखे की सी आवाज।

फोस्फरस ६ या ३०—बेहोशी, टायफाइड जैसे लक्षण गले में घुड़घुड़ाहट, सूखी खाँसी, स्वर भंग, शाम से लेकर आधी रात तक रोग लक्षणों का बढ़ना, रोग घटने पर भी सूखी खाँसी का मौजूद रहना।

ड्रोसेरा ६—अनवरत आक्षेपिक खाँसी में इससे बहुत लाभ होता है।

एन्टिमटार्ट ६—गले में कफ का घड़घड़ाना लेकिन ९९ न निकलना, न्युमोनिया या ब्रोंकाइटिस के लक्षण दिखायी देना।

क्युप्रम ६—हाथ के दाँतों का बैठ जाना और उसके कारण ऐंठन होना ।

क्रोटेलस ६—नाक और मुँह से पानी जैसा पतला खून निकलना ।

कान के प्रदाह में फेरमफस, कान से पीब होने पर क्लेरिया पाइकोडा, सूखी कष्टकर खाँसी में स्टिक्टा, पाकस्थली के गोलमाल में एन्टिमक्रूड. बदबूदार बिना दर्द के पानी जैसे दस्तों में पोडोफिलाम. दस्त के साथ वायु निकलने और पट पट आवाज होने पर एलोज, टायफाइड जैसे लक्षणों में आर्सेनिक. ब्रायोनिया. फोसफरस और रसटक्स, बीमारी बढ़ जाने पर कैम्फर, आर्सेनिक. पलिटम्बर फोसफरस वेलेडोना और रसटक्स—यह दवाएं लक्षणानुसार देनी चाहिये ।

आवश्यक सूचना—यह पहले ही [illegible] जा चुका [illegible] कि रोग आराम होने पर [illegible] सर्दी से [illegible] चाहिये । गडनाला धातुवाले [illegible] [illegible] की गाँठें प्रदाहित होने से [illegible] आँखों में कोई असाध्य बीमारी हो जाना [illegible] [illegible] पड़ती है । रोग आराम होने बाद [illegible] निकालना या बिल्कुल साधारण [illegible] निकालने [illegible]

चेचक दो प्रकार का होता है—असंयुक्त और संयुक्त। असंयुक्त चेचक की गोटियाँ अलग अलग होती है और संयुक्त चेचक की गोटियाँ एक दूसरे से मिली रहती है। संयुक्त चेचक मे गोटियाँ अधिक निकलती है, बुखार भी तेज आता है और रोगियो की मृत्यु भी अधिक होती है। अन्यान्य लक्षण दोनों मे प्रायः समान ही होते है।

लक्षण—चेचक का विष शरीर में प्रवेश करने पर पहले कई दिन तक कुछ भी मालूम नहीं होता। इसके बाद शिर और पीठ में जोरो का दर्द, जाड़ा और कम्प इत्यादि लक्षणो के साथ बुखार आ जाता है। चेचक का बुखार बहुत तेज होता है। साधारणतः १०३ या १०४ डिग्री और कभी कभी १०७–१०८ तक बुखार चढ़ता है। कभी कभी तो बुखार की तेजी के ही कारण रोगी की मृत्यु हो जाती है। बुखार के समय बदन में बहुत दाह और मिचली या कै, शिर मे चक्कर, श्वास प्रश्वास तेज, चेहरा लाल, कब्जियत, अस्थिरता, अनिद्रा, समूचे शरीर में दर्द, कभी-कभी प्रलाप आदि लक्षण भी दिखायी देते है।

बुखार के तीसरे या चौथे दिन पहले पहल चेहरे पर गोटियाँ दिखायी देती है। बाद को समूचे शरीर मे निकल आती है। पहले गोटियाँ लाल लाल दाग जैसी मालूम होती है। बाद को वे मसूर की तरह बड़ी और कड़ी हो जाता है

मजबूर किये जाते हैं। परन्तु अब धीरे-धीरे इस टीका के विरुद्ध लोग आवाज उठाने लगे हैं। अनेक वैज्ञानिकों का कहना है कि इससे जैसा चाहिये वैसा लाभ नहीं होता। कभी-कभी तो इससे हानि भी होती है, क्योंकि अन्तमें यह एक तरह का विषही है जो स्वस्थ शरीरमें प्रवेश कराया जाता है।

खैर, यह सब होने पर भी अभी टीका बिलकुल अनावश्यक नहीं प्रमाणित हुआ। बच्चों को जहाँ तक हो सके, दाँत निकलने के पहले ही टीका लगवा देना चाहिये (टीका लगवाने के समय क्या-क्या करना चाहिये, यह "बाल-रोग" के अध्याय में देखिये) यदि किसी कारण से टीका न लगे तो होमियोपैथिक दवाएँ खिलाकर भी वही काम निकाला जा सकता है, जो टीका लगवाने से निकलता है। बच्चेको वेक्सीनिनम 6X विचूर्ण की एक खुराक खिला देने से ही टीके का काम निकल जाता है और बीमारी का खतरा नहीं रहता। वेक्सीनिनम ३०, वेरियोलिनम ३० या मेलेन्डिनम ३० इन तीन में से एक दवा दिनमें दोबार के हिसाब से करीब दो सप्ताह तक खिलानेसे भी टीके का काम निकल जाता है। यह दवाएँ खानेके कारण जब बच्चे को बुखार आजाय या कोई बीमारी हो जाय, तब दवा बन्द कर देनी चाहिये और समझ लेना चाहिये कि टीके का काम पूरा हो गया।

उपरोक्त तीनों दवाएं इस रोग को रोकनेवाली (प्रति-षेधक) दवाएं मानी जाती हैं। जहाँ शीतला का प्रकोप हो वहाँ स्वस्थ बच्चों को इस रोग से बचाने के लिये इन तीन में से एक दवा सप्ताह में कमसे कम एक बार अवश्य खिला देनी चाहिये। गधीके दूध में भी शीतला रोकने का गुण है। स्वस्थ बच्चों को प्रतिदिन इसके कई बूँद देने से बीमारी का खतरा कम रहता है।

चिकित्सा।

आरंभ में बुखार को एकानाइट, बेलेडोना, बेप्टीशिया, जेलसिनिया, विरेट्रम विरिडि अच्छी दवाएं हैं। इनसे तकलीफ घटती है। बुखार तो किसी दवा से नहीं उतरता। गोटियाँ निकलने पर एन्टिम टार्ट, थूजा मदर टिञ्चर, मर्क्युरियस सल, वेक्सीनिनम, मेलेन्ड्रिनम पीव होने पर मर्क्युरियस सल, हिपर सल्फर, मेलेन्ड्रिनम, लेकेसिस और गोटियाँ सूखने पर सल्फर—यह इस रोग की चुनी हुई दवाएं हैं। कुछ दवाओं के विशेष लक्षण नीचे दिये जाते हैं:—

एकोनाइट ३ X—रोग के आरंभ में बुखार आने पर और बुखार बना रहे तो सभी अवस्थाओं में इससे लाभ होता है। शरीर सूखा और गरम शिरदर्द, तेज बुखार, नाड़ी तेज, बहुत अस्थिरता मृत्युभय कमर और पाठमें दर्द, मिचली और कै इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं।

बेलेडोना ६ या ३०—गोटियाँ निकलने के पहले रोगी का बड़बड़ाना या बक झक करना, शिरमें दर्द, चेहरा लाल, आँखों की सूजन, उत्कंठा, आवाज बरदास्त न कर सकना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। गोटियां निकलने पर यदि उनका रंग बहुत लाल हो, गोटियाँ बैठ जानेके लक्षण दिखाई दें या गोटियाँ सूख जाने पर बहुत खुजली होती हो तो उस हालत में भी इससे लाभ होता है।

ब्रायोनिया ६—बुखार के समय बेलेडोना से फायदा न होने पर और शिर तथा कमर में दर्द, खाँसी, छाती में तकलीफ, कब्जियत, गोटियों के निकलने में देरी होना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

मर्क्युरियस सल ६ या ३०—गोटियाँ निकलने और पकने पर-दोनों अवस्थाओं में इसका व्यवहार होता है। गले में जख्म, पेटमें दर्द, पतले दस्त, बहुत पसीना, बहुत लार बहना, श्वास प्रश्वास में बदबू इत्यादि।

आर्सेनिक ६ या ३०—तेज बीमारी मे रोगी का बहुत सुस्त हो जाना, शरीर मे दाह, अस्थिरता, बहुत प्यास, जीभ सूखी, टायफाइड के लक्षण, शरीर पर काले या नीले दाग, स्पर्शाधिक्य, बकझक करना, पतले दस्त इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

भाषाओं और चिकित्सा-शास्त्रमें पारगत होना चाहते थे। पिताकी आर्थिक अवस्था ऐसी न थी, कि वे इसके लिये यथेष्ट सहायता दे सकें। दूसरी ओर हनीमेन भी ऐसे मनुष्य न थे, जो हताश होकर बैठ जाते। बीस वर्षकी अवस्थातक वे मेसेनके ही एक विद्यालयमें अध्ययन करते रहे। इस समय उन्हें कैसी कठिनाइयोंका सामना करना पड़ता था, यह केवल इस बातसे समझा जा सकता है, कि जलानेके लिये उन्हें स्वयं अपने ही हाथसे एक दीपक तैयार करना पड़ा था और उसीके प्रकाशमें वे अपनी अध्ययन-लालसा तृप्त किया करते थे।

इसके बाद वे मेसेन से लिपज़िग चले गये और वहाँ चिकित्सा-शास्त्रका अध्ययन करने लगे। यहाँ अध्ययनके साथ-साथ फ्रेञ्च और जर्मन भाषाके ग्रन्थोंका अंग्रेजीमें अनुवाद करनेका काम भी करते रहे। सन् १७७९ अर्थात् चौबीस वर्षकी अवस्थामें उन्होंने विश्वविद्यालयसे एम.डी. की उपाधि प्राप्त की। इस समयतक उन्होंने फ्रेञ्च, अंग्रेजी और जर्मन भाषाके अतिरिक्त ग्रीक, हिब्रू, अरबी, लेटिन, इटेलियन, स्पेनिश और सिरियन प्रभृति भाषाओंका भी अभ्यास कर लिया था।

एम.डी. की उपाधि प्राप्त करनेके बाद दस वर्षतक वे कई स्थानोंमें एलोपैथिक मतानुसार डाक्टरी कर अपना जीवन-निर्वाह करते रहे। इन दस वर्षोंमें उन्होंने देखा कि एलो-

सल्फर ३०—गोटियों में जब रस भरने लगे या सूखते समय जब बहुत खुजली हो तब इसे व्यवहार करना चाहिये।

एन्टिम टार्ट ६ या ३०—मिचली या कै, आक्षेप, निद्रालुता, प्रलाप, पतले दस्त, खाँसी, गले में घड़घड़ाहट इत्यादि लक्षणों में, गोटी निकलने के समय, गोटियाँ धीरे धीरे निकलने पर, गोटिया काली पड़ जाने पर तथा आरंभ में चेचक निकलने का निश्चय हो जाने पर इसे देने से विशेष लाभ होता है।

हिपर सल्फर ६ या ३०—पीबकी अधिकता या पीब का बिलकुल न होना, खाँसी और सर्दी इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। इसे देने से अधिक पीब होनेका डर नहीं रहता।

सेरासिनिया ३—रोगकी प्रथमावस्था में इससे विशेष लाभ होता है। यह भी प्रतिषेधक दवा का काम करता है।

रसटक्स ६ या ३०—चेहरा नीलापन लिये हुए लाल, जीभके आगे भागमें त्रिकोण दाग, पीठ में दर्द, हिलने डोलने से आराम, संयुक्त चेचक, टायफाइड कीसी हालत, इत्यादि।

बेप्टीशिया १ x—यह भी प्रथमावस्था में ही अधिक काम करता है। बहुत कमज़ोरी, मिचली और कै, अस्थिरता, श्वासकष्ट, श्वास प्रश्वास, मलमूत्र, पसीना आदि में बदबू, बहुत लार बहना, टायफाइड की सी हालत।

थोड़ा बहुत लाभ करती है और रोग की तेजी तथा खतरा घटाती है।

फोस्फरस ६ या ३०—चेचक के साथ न्युमोनिया होने पर इसे देना चाहिये।

इनके अलावा विरेट्रम विरिड, सिमिसिफिउगा, स्ट्रेमानियम, जेल्सीमियम, जिङ्कम, हेमामेलिस, कोफिया, ओपियम, नाइट्रिक एसिड, कार्बोवेज आदि दवाएँ भी लक्षणानुसार दी जा सकती हैं।

आवश्यक सूचना—रोगी का कमरा साफ सुथरा और हवादार होना चाहिये। रोगी को चेचक खुजलाने न देना चाहिये। गोटियाँ सूखते समय जो खुजली होती है, उसे दूर करने के लिये सुसुम पानी में जरा सा कार्बोलिक एसिड मिला कर उससे रोगी का शरीर धोकर पोंछ देना चाहिये। तेल लगाकर सुसुम जल से स्नान करने पर छाल निकल जाती है। घी वेसलिन या मक्खन में मेदा मिलाकर उक्त स्थानों पर लगाने से खुजली नहीं होती और चमड़े पर चेचक के दाग नहीं पड़ते। रोगी का करवट बदलते रहना चाहिये। मुंह और गले में जख्म होने पर बर्फ का टुकड़ा चूसने को देना चाहिये। रोगी को [illegible] बार बार [illegible] रहना चाहिये। रोगी आराम हो जाने पर [illegible] कपड़े जला देने से रोग फैलने का डर नहीं रहता [illegible]

के तेल में मलाई मिला कर क्षतस्थानों में लगाने से भी चमड़े पर दाग नहीं पड़ते। रोग के समय रोगी को बार्ली, साबूदाना, सिंघाड़े, नारंगी, अनार अंगूर आदि चीजें खाने को और ठंढा पानी मिश्री का शर्बत, नींबू का रस, लेमनेड, सोडावाटर आदि पीने को दिया जा सकता है। आराम होने पर पुष्टिकर चीजें खाने को देना चाहिये। माँस मछली और सेम खाना मना है।

जलचेचक या पनसाहा।

(Chicken Pox)

यह बीमारी चेचक के समान होने पर भी इसकी उत्पत्ति एक दूसरे ही विषसे होती है। यह भी संक्रामक रोग है, पर चेचक जितना नहीं। यह उसके समान भयंकर और मारक भी नहीं है। यह बीमारी भी बच्चों को ही अधिक होती है। इसका बुखार उतना तेज नहीं होता। इसकी गोटियाँ चिपटी न होकर ऊपर को उठी हुई और नुकीली होती है। तीन चार दिन बाद गोटियों में पानी जैसा रस भर जाता है और वे फूलकर छाले जैसी दिखाई देने लगती हैं। इसके बाद छठें और सातवें दिन से गोटियाँ फूट कर अथवा बिना फूटेही सूखने लगती हैं। सूखते समय उनमें खुजली होती है। आठ नौ दिन के अंदर-अंदर उनकी पपड़ी

भी गिर जाती है और चमड़े पर कोई दाग तक नहीं रह जाता । इसमें रोगी के प्राण जाने का भय नहीं रहता । सर्दी लगने पर खाँसी आदि साधारण उपसर्ग उत्पन्न हो सकते है । साधारण बीमारी में इलाज करने की भी जरूरत नहीं । बहुत तकलीफ होने पर लक्षणानुसार किसी दवा की दो तीन खुराकें देना काफी है । अधिक दवा देना ठीक नहीं ।

चिकित्सा ।

एकोनाइट ३X—तेज बुखार, अस्थिरता, प्यास, मृत्युभय, चमड़ा सूखा और गरम इत्यादि ।

रसटक्स ६—यह इस रोग की बढ़िया दवा है । केवल इसी से रोग की प्रत्येक अवस्था में काफी लाभ हो सकता है।

एन्टिम टार्ट ६—रसटक्स से फायदा न होने पर इसे देना चाहिये ।

बेलेडोना ६—जोरों का शिरदर्द चेहरा और आंख लाल गले में दर्द, प्यास, प्यास के कारण गले का सूखना इत्यादि ।

एपिस ३—गोटियां निकल आने पर यदि उनमें बहुत खुजली हो तो उसे देना चाहिये ।

जल्सीमियम १X—शरीर में बहुत दर्द, शिर में भार कपकपी, रोगी का चुपचाप पड़े रहना इत्यादि ।

इस रोगका कारण आज तक ठीक नहीं किया जा सका। कोई एक प्रकार के संक्रामक विषको, कोई एक प्रकार के जीवाणु को, कोई जमीन से निकलने वाली गन्दी भाप को और कोई चूहों को इसका उत्पादक कारण मानते है।

लक्षण—इस रोग का विष शरीर में प्रवेश करने पर पहले कई दिनो तक तनमन की सुस्ती के सिवा और कोई लक्षण दिखायी नहीं देते। इसके बाद रोग का प्रबल आक्रमण होता है और सान्निपातिक बुखार की तरह जाड़ा, कपकपी, तेज बुखार १०४ से १०७ डिग्री तक—शिर दर्द, हाथ पैर मे पेठन, मिचली और कै, जीभ फूली हुई, लाल और कम्पन युक्त, नाड़ी क्षीण, तेज प्यास, अनिद्रा, तेज श्वास प्रश्वास, लाल पेशाब, हृदय, यकृत और प्लीहा का प्रदाह, प्रलाप या बकझक, बेहोशी, कमजोर बनाने वाला पसीना, शरीर के किसी यंत्र से खून बहना इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। इन लक्षणो के साथ तुरन्त या दो चार दिनके बाद बगल गर्दन या जॉघ के पट्ठे मे दर्द पैदा होकर गॉठ या गिल्टी निकल आती है। इसके बाद किसी यंत्र से खून बहना, शरीर के भीतर यंत्रो मे खराबी पैदा हो जाना न्युमोनिया या फेफड़े का प्रदाह कै दस्त और पेट की बीमारी, सन्निपात इत्यादि कठिन उपसर्ग पैदा होकर रोगी की मृत्यु हो जाती है। शरीर पर काले दाग, पतले दस्त, रक्तस्राव गिल्टी का सड़ना

निकलना, नाड़ी का लोप हो जाना, शरीर का नीला पड़ जाना, शुरूसे ही दिमाग का खराब हो जाना, ऐसा मालूम होना मानो शीघ्र ही हृदय की गति बन्द हो जायगी इत्यादि लक्षणों में रामबाण सा काम करती है। यह रोगकी अन्तिम या विकट अवस्था की दवा है। रोगीकी मरणासन्न अवस्था में हाइपोडार्मिक पिचकारी द्वारा रोगीके शरीर में यह दवा पहुंचायी जाती है और उस अवस्था में भी यह अपना चमत्कार दिखलाती है।

क्रोटेलस ३X विचूर्ण या ६—किसी गिल्टी का प्रदाहित होना, बकझक करना, बेहोशी, श्वासकष्ट, चेहरा फीका, हृदय में धड़कन इत्यादि। शरीर के किसी यंत्र या अंगसे खून निकलने पर इससे अधिक लाभ होता है।

कार्बोलिक एसिड ३ या ६—एकायक बेहोश होजाना चेहरे पर ठंढा पसीना, आँखें स्थिर, नाड़ी तेज, कमजोर और सविराम कै, श्वास प्रश्वास में घड़घड़ाहट, इत्यादि।

रसटक्स ६ या ३०—तेज बुखार, हाथ पैर और शरीर में दर्द, बेचैनी, खाँसी, निद्रालुता, पतले दस्त, मस्तिष्कविकार गर्दन की गिल्टीका फूल उठना इत्यादि।

ब्रेप्टीशिया १X ६ या ३०—सन्निपातिकबुखार प्रलाप, पतले दस्त, सवाल का जवाब देते देते सो जाना, रोगीका यह

समझना कि उसके शरीर के कई टुकड़े हो गये हैं और उन टुकड़ो का जोड़ने की चेष्टा करना ।

पाइरो जिनम ६ या ३०—बेहद तेज बुखार खूनका खराब हो जाना, प्रलाप, कब्जियत आँत पाकाशय और फेफड़े में विकार के लक्षण ।

लेकिसिस ६ या ३०—रोगकी अन्तिम अवस्थामें सुस्ती, बेहोशी, श्वासकष्ट, कमज़ोरी, सड़न का उपक्रम, बायीं ओर गिल्टी, सोनेके बाद रोग लक्षणों का बढ़ना, गर्मी से आराम मालूम होना ।

फोस्फरस ६x या ३०—श्वास कष्ट, चिकना खून मिला कफ, फेफड़े से खूनका निकलना प्रलाप, टायफाइड जैसे लक्षण और न्युमोनिक प्लेग के साथ न्युमोनिया हो पर इसे देना चाहिये ।

आर्सेनिक ६ या ३०—जाघक पुट्ठे में सुई चु... जैसा दर्द और जलन बहुत बेचैनी, बार बार करवट ब... तेज प्यास किन्तु थोडा-थोड़ा पानी पीना रातमें प्र... और दस्त, पेट में जलन श्वासकष्ट ठंडा पसीना ... या बहुत कम चेहरा मुरदा तरह फीका शरीर ... पर भी कपड़ा न उतारना मृत्युभय इत्यादि आर्से... का यह बढ़िया दवा है ।

शोथ या फूलन।

(Dropsy)

शरीर के किसी अंगमें या समूचे शरीर में जलीय पदार्थ जमा होनेके कारण उस स्थानमें फूलन आ जाती है। इसे ही शोथ कहते हैं। यह कोई स्वतंत्र रोग नहीं है। प्रायः शरीरके किसी अंगमें कोई बीमारी या विकार होनेके कारण ही शोथ उत्पन्न होता है। [illegible] बढ़ जाना, आर्सेनिक का अधिक सेवन, लाल बुखार, कालाज्वर, अधिक परिमाण में रक्तस्राव, मूत्र-यन्त्रकी बीमारी आदि कारणों से समूचे शरीर में और हृत्पिण्ड, यकृत, मूत्रकोषकी बीमारी, रक्तहीनता, शराबखोरी और दुर्बलता इत्यादि कारणों से पेटमें शोथ उत्पन्न होता है। पेट के शोथको उदरी या जलोदर भी कहते हैं। शरीर के अन्यान्य अंगोंका शोथ उन्हीं अङ्गोंके नामसे पुकारा जाता है।

लक्षण—आक्रान्त स्थान फूल उठता है। उँगली से दबाने पर वहाँ गढ़ा हो जाता है, उगली उठा लेने पर कुछ देर तक गढ़ा बना रहता है, बाद को भर जाता है। चमड़ा फीका, उज्ज्वल और ठंढा मालूम होता है। साथ ही कमजोरी, भूख न लगना, अरुचि, प्यास, उदरामय, पेशाब थोड़ा या लाल अथवा एकदम नदारद इत्यादि लक्षण उपस्थित होते हैं और रोग कठिन होने पर हृदय की गति बन्द होकर रोगी की मृत्यु हो जाती है।

पैथिक चिकित्सा-प्रणाली बहुत ही अधूरी और दोष-पूर्ण है। उन्होंने इसके विषयमें बहुत कुछ खोज और छान-बीन की, परन्तु किसी तरह उन्हें संतोष न हुआ। अन्तमें उन्होने विरक्त होकर सन् १७६० ईस्वीमें डाक्टरीका काम छोड़ दिया और वैज्ञानिक तथा साहित्यिक अन्वेषण एवम् फ्रेञ्च तथा इंग्लिश भाषाके ग्रन्थोंका जर्मन भाषामें अनुवाद करनेके काममे अपना समय अतिवाहित करने लगे।

सन् १७६० में डाक्टर कालेनकी मेटीरिया-मेडिकाका अनुवाद करते समय उन्होने देखा, कि सिंकोना बार्क या क्वीनाइन नामक दवामें ज्वरनाशक और ज्वरोत्पादक दोनो. शक्तियाँ हैं। इससे इनका माथा ठनका और उन्होंने निश्चय किया कि क्वीनाइन किस प्रकार ज्वर उत्पन्न करती है तथा किस प्रकार ज्वरका नाश करती है यह आजमाना चाहिये। निदान, उन्होने क्वीनाइन खानी शुरू कर दी। खाते-खाते जब उसकी काफी मात्रा पेटमें पहुंच गयी, तब उन्हे एक दिन जाड़ा देकर मेलेरिया बुखार जैसा ज्वर आ गया। बादको उचित मात्रामें क्वीनाइन ही खाकर उन्होने अपना यह ज्वर आराम भी कर लिया। बस, यहाँसे होमियोपैथीकी नींव पड़ी और उसके मूलमंत्र Similia Similibus curentur अर्थात् 'समः समं शमयति' सूत्रका आविष्कार हुआ।

इस घटनाके बाद हनीमैनने सोचा कि अन्यान्य औष-धियोंमे भी इसी तरह रोगोत्पादक और रोगनाशक शक्ति

चिकित्सा।

इस रोगकी चिकित्सा करते समय इसके कारण पर ध्यान रखना चाहिये और जिस यंत्रकी बीमारी या दोष से यह रोग हुआ हो, उसका पहले इलाज करना चाहिये। सर्वाङ्गीन शोथ में आर्सेनिक, एपिस, डिजिटेलिस, ब्रायोनिया, एपोसाइनम, उदरी में आर्सेनिक, एपोसाइनम, चायना, क्रोटन, मस्तिष्क के शोथ में एपिस, बेलेडोना, हेलीबोरस, मर्क्युरियस, वक्षस्थल के शोथ में आर्सेनिक, ब्रायोनिया, डिजिटेलिस, हेलीबोरस, हृदय के शोथ में डिजिटेलिस, स्पाइजिलिया, आर्सेनिक और अण्डकोष के शोथ में आयोडियम, रोडोडेन्ड्रन, पल्सेटिला तथा ग्रेफाइटिस—यह दवाएं विशेष रूपसे व्यवहार की जाती हैं। प्रधान दवाओं के लक्षण नीचे दिये जाते हैं:—

आर्सेनिक ६ या ३०—पेट, हाथ पैर या समूचे शरीर का शोथ, चेहरे का चमड़ा फीका और नीली या हरी आभा लिये हुए, बहुत कमजोरी, रातमें श्वासकष्ट, अस्थिरता, तेज प्यास, अनिद्रा, मृत्युभय इत्यादि। हृदय, यकृत और पिलही की खराबी या क्वीनाइन के अपव्यवहार के कारण होने वाले शोथमे इससे विशेष लाभ होता है।

एपिस ३x या ३०—किसी खास अंग या समूचे शरीर का शोथ, ज्वालाकर वेदना, जलन के साथ थोड़ा पेशाब श्वासकष्ट, प्यासका न होना प्रलाप और कड़मड़ाना, सिर

ब्रायोनिया ६ या ३०—पैर, छाती, आँखके पपटे या समूचे शरीरका शोथ, दिनको शोथका बढ़ना और रात को कम हो जाना, हृदयमें सूई चुभोने जैसा दर्द, बहुत प्यास, थोड़ापेशाब. चिड़चिड़ा स्वभाव, सूखा और कड़ा मल।

हेलीबोरस ३—मस्तिष्क, पेट तथा अन्य स्थानों के नये शोथमें इससे लाभ होता है। पतले दस्त, थोड़ा और मैला पेशाब, बहुत कमजोरी, पेटमें दर्द, लेटनेसे श्वास कष्ट, इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं।

सल्फर ६ या ३०—शोथमें जलन, शरीर पर नीले दाग, चर्मरोग बैठ जानेके कारण शोथका होना।

फेरम ६ या ३०—रक्त हीनता, बहुत कमजोरी, कब्जियत, भोजनके बाद जी मिचलाना इत्यादि लक्षणों के साथ शोथ होनेपर इसे देना चाहिये।

चायना ६ या ३०—चेहरा फीका, कमजोरी, यकृत और पिलही की खराबी इत्यादि। मैलेरिया बुखार, अधिक रसरक्त का स्राव और वृद्धावस्थाके कारण यह रोग होने पर इससे विशेष लाभ होता है।

किनिनम आर्स १२ X विचूर्ण या ३०—चायनासे लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

फेरम आर्स ३०—शोथके साथ बहुत ज्यादा कमजोरी हो तो इसे देना चाहिये।

[illegible] एसिड ६—शरीरके निचले भाग [illegible] शोथ, प्यास, [illegible], मूत्रमें पानी [illegible], [illegible], बहुत पसीना, शरीर दुर्बल, चमड़ा फीका ।

कल्चीकम ६ या ३०—कमकर थोड़ा पेशाब, पेशाब पीला और फूला हुआ, चमड़ा सूखा और ठंढा, पैरोंका शोथ, हृदय में धड़कन, कमकर थोड़ा पेशाब इत्यादि ।

लाइकोपोडियम ६ या ३०—शरीर का ऊपरी भाग सूखा, निचला भाग शोथयुक्त, एक पैर ठंढा दूसरा गरम, थोड़ा पेशाब और उसमें बालू जैसी सफेद तली जमना, शराबियों की बीमारी इत्यादि ।

स्ट्रोफेन्थस १ X—हृदय के दोषसे शोथ, श्वासकष्ट,गलेके अन्दर और पेटमें जलन, पतले दस्त, मिचली या कै इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये ।

पल्सेटिला ६—स्त्रियोंके ऋतुमें गोलमाल होनेके कारण उन्हें शोथ होने पर इससे लाभ होता है ।

स्कुइला २ X—नये शोथमें पेशाब रुक जाने पर इसे देना चाहिये ।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—रक्त प्रधान धातुवाले मनुष्योंका शोथ, खूनमे सफेद कणोंका बढ़ जाना, नहाने के बाद शोथका बढ़ना ।

आवश्यक सूचना-सर्द और गीले स्थानोंमें न रहना चाहिये। खानेकी चीजें हलकी और पुष्टिकर होनी चाहिये। यकृत की खराबीमें इसे अधिक न देना चाहिये। कब्जियत हो तो मांस खाना मना है। दस्त न आते हो तो रोटी दी जा सकती है। पीनेको ठंडा पानी दिया जा सकता है। मूत्र-यंत्रकी बीमारी हो तो पानीके बदले दूध पिलाना चाहिये। गरम पानी से नहाना लाभदायक है।

बेरी बेरी (Beri Beri)

बेरी बेरी शोथ का ही एक प्रकार का भेद है। इसमें पैरों की सूजन के अलावा साधारण बुखार, दस्त, हृदय में गोल-माल, थोड़ा पेशाब, रक्तस्वल्पता, कै, श्वासकष्ट, प्यास इत्यादि लक्षण भी प्रकट होते है। इस रोग का जिस समय प्रकोप होता है, उस समय यह जोरों से चारों ओर फैल जाता है। इसीलिये इसे Epidemic Dropsy या बहुव्यापक शोथ भी कहते हैं।

यह बीमारी प्रायः वर्षा के अन्त में होती है, इसलिये सर्दी या वर्षा इसको उत्तेजक कारण मानी जाती है। इसके अलावा फल मूल, सर्दी वाले गुदामो का चावल, मिलावट वाला सरसो का तेल आदि चीजों के आहार से भी यह बीमारी होती है। इस बीमारी के समय भात खाना तो बहुत ही हानिकर माना गया है।

चिकित्सा।

आर्सेनिक ६ या ३०—इस रोग की प्रधान दवा है। रक्त स्वल्पता, शोथ, मेदना, शरीर के अंगों का बेकार सा हो जाना इत्यादि लक्षणोंमें तथा सभी तरह के बेरी बेरीमें इससे लाभ होता है। चायना भी अच्छी दवा है। इनके अतिरिक्त रसटक्स, फेरमफास, जेल्सीमियम, फेरम आर्स, फेरम मेट, फासफरस, कैक्टस, नेट्रम सल्फ, कैल्मिया, डिजिटेलिस, लेकेसिस, कैलोफस, सीपिया, [illegible], लाइको पोडियम, इलेटेरियम, एमिल नाइट्रेट, इत्यादि दवायें भी लक्षणानुसार प्रयोग की जाती हैं। इनमें से अधिकांश दवाओं के लक्षण शोथ की चिकित्सा में लिखे जा चुके हैं।

आवश्यक सूचना—साधारण रोग होने पर आसानी से आराम हो जाता है। रोग कठिन होने पर हृदय में खराबी पैदा होती है। उस हालत में रोगी के प्राण का भय रहता है। रोग के समय बुखार की तरह पथ्य देना चाहिये। गरम स्थान में रहना, गरम कपड़े पहनना आदि लाभदायक है। ठंडे पानी से नहाना मना है।

गण्डमाला (Scrofula)

यह एक धातुगत रोग है, जो बच्चों को माता पिता की ओर से वीरासत में मिलता है या अपने आप होता है। इसमें खून खराब हो जाता है और गला, गर्दन, बगल या जाँघ के पट्टे में बड़ी बड़ी गिल्टियाँ निकल आती हैं। इन गिल्टियों में कुछ पकती हैं और कुछ नहीं पकती। जो पकती हैं उनमें से पीब निकलता है और जख्म बहुत दिनो तक सूखने नहीं पाता। जो नहीं पकतीं, वे पत्थर जैसी कड़ी बनी रहती हैं। कभी-कभी छाती, नाक, कान, आँख इत्यादि स्थानोंमें घाव हो जाते हैं और लगातार कष्ट भोगने के कारण रोगी कमजोर हो जाता है।

माता पिता को गण्डमाला या गरमी की बीमारी होना, इन रोगों से ग्रसित स्त्री का दूध पीना, अस्वास्थ्यकर स्थान में रहना, पुष्टिकर भोजन न मिलना, मादक पदार्थों का सेवन, आलस्यमय जीवन व्यतीत करना इत्यादि कारणो से यह रोग होता है।

गण्डमाला धातु का रोगी कई लक्षणो से शीघ्रही पहचाना जा सकता है। थोड़ी उम्र में ही बुद्धि की परिपक्वता, रोगी चेहरा, आँखें नीली, पुतली फ़ैली हुई, शिर बड़ा शिर मे रूसी या फुन्सियाँ होना केश कड़े और रुखड़े, पेट बड़ा शरीर का मास कोमल और थुलथुला, उपला होठ और नाक

सल्फर ३० या २००—गण्डमाला धातुवाले रोगीकी सभी बीमारियोंमें इससे लाभ होता है। गिल्टियों का बढ़ना, कड़ा हो जाना और उनमे पीव भरना, जरामें ही सर्दी लगना, रोगी चेहरा, अस्वस्थ शरीर, शारीरिक और मानसिक कमजोरी, बच्चे का चल न सकना इत्यादि।

साइलीसिया ३०—शिर बड़ा, शिरके ऊपरी जोड़ (ब्रह्म-तालु) का न भरना, सभी गिल्टियोंमें सूजन और पीव, हड्डीका क्षय, कब्जियत, मल कठिन और उसका कष्टके साथ निकलना शरीरमें फोड़ा या पीव होना। नासूर जैसे जख्म।

कल्केरियाफस १२x विचूर्ण—गण्डमालाके रोगीको गठियाकी बीमारी हो तो इसे देना चाहिये। यह इस रोगकी बढ़िया दवा है।

आयोडिन ३०—सदा भूखे बने रहना, खाया पिया शरीर मे न लगना, दिन पर दिन रोगियाते जाना।

कष्टिकम ३०—गण्डमाला धातु के कारण स्नायु मण्डल का अच्छी तरह परिपोषण न होना।

लेपिस एल्बस ६—शरीरके किसी भी स्थानकी गिल्टियो का सूज जाना या बाघी निकलना।

इथियप्स एन्ट २x या ६x विचूर्ण—डाक्टर गोलन इसे गण्डमाला रोगीकी सर्वोत्कृष्ट दवा मानते हैं। यह दवा दिनमें दो बार दो-दो तीन-तीन ग्रेन देनी चाहिये।

रक्त हीनता या एनिमिया

(Anoemia).

स्वस्थ्य मनुष्य के रक्त में फी हजार १३० भाग लाल कण होते हैं। इन लाल कणों की कमी हो जाना और खून में नमक का अंश या सफेद कणों का बढ़ जाना ही रक्त हीनता रोग कहलाता है।

इस रोग के अनेक कारण होते हैं। पेट का गोलमाल अच्छी तरह भोजन हजम न होने के कारण कमजोरी, पेट भर खाने को न मिलना, भोजन का खराब या अपुष्टिकर होना, अनियमित जीवनचर्या, रस रक्त का अधिक क्षय, बहुत खून निकलना, किसी जख्म आदि से दीर्घ काल तक पीव का बहते रहना, बहुत दिनों तक दस्त की बीमारी रहना, बुखार, यकृत और पिलही का बढ़ जाना, क्वीनाइन का अधिक सेवन, बवासीर आदि से खून का अधिक निकलना, स्त्रियों को प्रदर की बीमारी या अधिक बच्चे होना, अस्वास्थ्यकर स्थान में रहना, स्त्रियो का बहुत दिनों तक बच्चों को स्तन पान कराते रहना, कठिन रोगों के कारण बहुत दिनों तक शैय्या सेवन करना इत्यादि कारणों से यह रोग होता है।

इस रोग में शक्ति की कमी, भूख न लगना, बदहजमी, शरीर में खून की कमी, शिर में दर्द या चक्कर, शरीर की गरमी में कमी, शरीर दुबला, मलीन और पीला, आलस्य

और सुस्ती, श्वासकष्ट, कलेजे में धड़कन, चेहरे पर सूजन, सूखी खाँसी, नाक से खून गिरना, पतले दस्त, हाथ पैर ठंडे, पैरों में सूजन, चेहरा, आँखें और होठ आदि का रक्तशून्य हो जाना, नाड़ी निस्तेज, थोड़े परिश्रम में ही थक जाना इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं और धीरे-धीरे कठिन उपसर्ग उत्पन्न होकर रोगी की मृत्यु हो जाती है। जवान स्त्रियों को और कभी-कभी पुरुषों को यह रोग अपने आप हो जाया करता है। उस समय यह हरित रोग के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

चिकित्सा।

फ़ेरम मेट ६ या ३०—यह इस रोग की बढ़िया दवा है। गरमी [illegible] लगते रहना, शाम के वक्त हरारत या हलका बुखार, चेहरा फीका, भोजन के बाद के, शरीर दुबला इत्यादि।

फ़ेरम आर्स ३०—फ़ेरम मेट से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३०—बहुत सुस्ती, कलेजे का धड़कना, थोड़ी [illegible] और थोड़ा पीने की इच्छा, अस्थिरता [illegible]

चायना ६ या ३०—रक्त या वीर्य आदि का [illegible]

अधिक रज स्राव, संग्रहणी इत्यादि के कारण इस रोग का होना। शिर में भार, दृष्टि हीनता, मूर्च्छा, कान में गुनगुनाहट, खट्टी डकार, मन्दाग्नि, भूख का लगना इत्यादि लक्षणो में इसे देना चाहिये।

पल्सेटिला ६ या ३०–स्त्रियो को यह रोग होने पर खास कर ऋतु के गोलमाल के कारण।

कल्केरिया कार्ब–गण्डमाला धातु वाले रोगयो को यह रोग होने पर इससे विशेष लाभ होता है।

हेलोनियस ३ X–यह भी स्त्रियों की रक्त हीनता में अधिक फायदा करता है। जरायु से रक्त स्राव, ऋतु का गोलमाल इत्यादि लक्षणो में इसका प्रयोग होता है।

नेट्रमम्यूर ३० या २००-मैलेरिया के कारण यह रोग होना, पेट बड़ा, कब्जियत, चित्त का दुखी रहना इत्यादि।

एन्टिमक्रूड ६ या ३०–पेट का गोलमाल, जीभ पर सफेद लेप, भूख का न लगना, डकार आना इत्यादि।

एसिडफस १ X–कमजोरी, रज या वीर्य का अधिक क्षय, अधिक इन्द्रिय सेवा के कारण यह रोग होना।

इनके अतिरिक्त फोस्फरस, नक्सवोमिका, सीपिया, नेट्रम सल्फ, केली आर्स, वेसिलिनम, आर्जेनाई, हाइड्रेस्टिस, मर्क्युरियस वाइवस, क्युप्रम, स्तन्नम, पपिस, पिकरिक

चिकित्सा।

कल्केरिया कार्ब–मोटा और थुलथुला शरीर, जरामें ही सर्दी लग जाना, जरासेही परिश्रम से थक जाना और हाँफने लगना, हाथ पैर ठंडे और उनसे पसीना निकलना इत्यादि।

कल्केरिया आर्स–स्त्रियोकी बीमारी में इससे विशेष लाभ होता है। हृदय की कमजोरी, हृदय का धड़कना, जाड़ा लगना इत्यादि।

एन्टिमक्रूड ६ या ३०–पाकाशय में गालमाल, भूख का न लगना, क्रोधी स्वभाव, दिनों दिन चर्बी का बढ़ते जाना।

लाइको पोडियम ३०–नम्र प्रकृति के स्त्री पुरुष या वृद्धों को यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

बेराइटाकार्ब ६ या १२ x–गण्डमाला धातुवाले रोगियों को यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

ग्रेफाइटिस ३ x या ६–चर्मरोग कब्जियत जरा में ही सर्दी लगना इत्यादि लक्षणों के साथ मेदाधिक्य, ऋतुस्राव में विलम्ब, स्त्रियो की बीमारी।

इनके अतिरिक्त गण्डमाला रोग की दवाओं से भी लाभ होता है।

आवश्यक सूचना–इस रोग में अधिक दिनों तक औषधि सेवन करना पड़ता है। बीच-बीच में दवा बन्द रखने

से अधिक लाभ होता है। शारीरिक परिश्रम और व्यायाम करना, घी, मक्खन, चर्बी और मिठाई की चीजें जहाँ तक हो सके कम खाना, फल मूल अधिक खाना इत्यादि लाभदायक है।

क्षय या राजयक्ष्मा।

(Phthisis)

यह बहुत ही भयंकर और प्राणनाशक रोग है। इसमें शरीर क्षय होता जाता है, इसलिये इसे क्षय कहते हैं। अंग्रेजी में इसे थाइसिस के अलावा ट्युबरक्युलोसिस और कन्जम्पशन भी कहते हैं। यह रोग बच्चों को शायद ही होता है। युवक और वृद्ध ही इसके अधिक शिकार बनते हैं।

यद्यपि यह रोग वंशगत नहीं है और यह जरूरी नहीं है कि माता पिता को यह रोग होने पर उनके बच्चों को भी यह रोग होना ही चाहिये फिर भी ऐसे माता पिता के बच्चों को यह रोग होने की अधिक सम्भावना रहती है। साधारणतः अधिक मानसिक परिश्रम, खराब भोजन, अधिक स्त्री सङ्ग, हस्त मैथुन, अस्वास्थ्यकर स्थान में रहना, शारीरिक परिश्रम न करना, पारे का अपव्यवहार, गरमी या गण्डमाला की बीमारी होना, इत्यादि कारणों से शरीर कमजोर हो जाने पर, यह रोग होता है। परन्तु इसका प्रधान कारण तो ट्युबरकल बेसिलस (Tubercle-bacillus) नामक एक जीवाणु है। यह

जीवाणु कमजोर शरीर मे प्रवेश करने पर भिन्न-भिन्न यंत्रों में छोटी २ गाँठें पैदा हो जाती हैं। इन गाँठों को अंग्रेजी में ट्युबर-कल कहते हैं। बाद को यह गाँठें अधिकाधिक बढ़ती जाती हैं और फूट-फूट कर वहाँ जख्म होते जाते हैं। यह गाँठें मस्तिष्क, जरायु, हड्डी, पाकाशय, आँत, यकृत और फेफड़ा आदि अनेक स्थानों में पैदा हो सकती हैं। यह जिस स्थान में पैदा होती हैं वहीं से क्षय की बीमारी शुरू होती है। हमारे देश में फेफड़े का क्षय सबसे अधिक पाया जाता है। आँत और हड्डी का क्षय भी होते देखा जाता है। आँत के क्षय में आँत और पाकाशय की क्रिया में विकृति, दस्त इत्यादि लक्षण पैदा होते हैं। हड्डी के क्षयमें शरीर के विभिन्न स्थानों में फोड़े हो जाते हैं, उनसे पीब बहता है और रोगी घुल घुलकर अन्त में मर जाता है।

लक्षण—इस रोग का आक्रमण बहुत धीरे-धीरे और गुप्त रूप से होता है। इसलिये आरंभ में यह निर्णय करना कठिन हो पड़ता है, कि रोगी को क्षय की बीमारी हुई है। कुछ दिनों के बाद बीमारी प्रबल हो जाने पर इसके स्पष्ट लक्षण दिखायी देते हैं। पहले सूखी, बाद को तर खाँसी, कफ में पीब या खून, शरीर का क्षय, शाम के वक्त हलका बुखार और रात को पसीना यह इस रोग के प्रधान लक्षण हैं। इनके साथ साथ शारीरिक शक्ति की कमी, अजीर्ण, मन्दाग्नि, नाड़ी

यह दवा नीचे क्रम की ओर बारंबार न देनी चाहिये। ऊँचे क्रम की दवा महीने मे एक दो बार देना काफी है। बीमारी के आरंभ में इससे विशेष लाभ होता है, वैसे किसी भी अवस्था में दी जा सकती है। बेसिलिनम और ट्युबरक्युलिनम दोनों दवाओं का गुण समान है। कोई एक देना चाहिये।

एकालिफाइन्डिका ६ या ३०—बीमारी के आरम्भ में सूखी और कष्टकर खाँसी, कफ में खून, छाती में सदा दर्द मालूम होना, सुबह शाम खाँसी का बढ़ना, धीरे-धीरे रोगियाते जाना, खून का रंग सुबह लाल, शाम को चमकीला काला इत्यादि।

फोस्फरस ३० या २००—क्षय रोग की यह भी एक बढ़िया दवा है। छाती में घुड़घुड़ाहट, सरल और सूखी खाँसी, बोलने हँसने, पढ़ने और खुली हवा मे घूमने पर खाँसी का बढ़ना, स्वरभंग कमजोरी, कब्जियत, भूख न लगना, शाम को धीमा बुखार, रात का पसीना, छाती में दर्द इत्यादि।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—गण्डमाला युक्त धातु ठंढा हवा बरदास्त न होना, सुबह खाँसी का बढ़ना, धक्का-धक्का पीब या खून मिला ढेले या हरे रंग का कफ, सिर में चक्कर, सीढ़ी चढ़ने पर हाँफना, सुबह खाँसी का बढ़ना।

कल्केरिया आर्स ३०—कल्केरिया कार्ब से फायदा न होने पर इसे दें, शाम को धीमा बुखार, दुबला शरीर रह

वतलाया गया था। सन् १८१० में उनका आर्गेनन या स्वास्थ्य-साधन नामक ग्रन्थ प्रकाशित हुआ। इसमें होमियोपैथीके मूल सिद्धान्त तथा एलोपैथीके दोषोका विशद वर्णन किया गया है।

इस समयतक महात्मा हनीमैनकी कीर्ति चारों ओर फैल चुकी थी। उन्हें लिपज़िगके विश्वविद्यालय में होमियोपैथीके आचार्यका स्थान भी मिल गया था, जहाँसे वे नित्य ही अपने शिष्यगणोको इस नयी चिकित्सा-प्रणालीका शुभ सन्देश सुनाया करते थे। धीरे-धीरे होमियोपैथीका प्रचार वढ़ चला। साथ ही उनके शत्रुओंकी संख्या भी वढ़ गयी। इसका कारण समझना सहज है। होमियोपैथीके प्रचारसे एलोपैथीके उपासकोंकी ही केवल निन्दा न होती थी, वल्कि उनके व्यवसायको भी गहरा धक्का लगता था। वे जिस तरह हो, हनीमैनको नीचा दिखाने और उनकी चिकित्सा-प्रणालीको मिट्टीमें मिलानेकी चेष्टा करने लगे। इसके लिये न जाने कितने षडयंत्र रचे गये। अन्तमें उनका एक षडयंत्र सफल हुआ और सन् १८२१ में हनीमैनको लिपज़िगसे निर्वासित होना पड़ा।

परन्तु जिसके हृदयमें अदम्य उत्साह भरा होता है, वह पीछे पैर हटाना नहीं जानता। हम पहले ही वतला चुके हैं कि महात्मा हनीमैन हताश होनेवाले मनुष्य न थे। वे लिपज़िगसे फ्रान्स चले गये और वहाँके कोटेन नामक नगरमें

छाती मे दर्द. हिलने डोलने से दर्द का बढ़ना, शाम और सुबह खाँसी का बढ़ना, हॉफना. हरा या नमकीन कफ निकलना, उत्कण्ठा इत्यादि।

ड्रोसेरा १x या ३–तेज और लगातार खाँसी, खाँसते-खाँसते खून आ जाना, खाँसी के कारण छाती में दर्द इत्यादि।

फेरममेट ६ या ३०–फेफड़े से खून निकलना, हाथ पैरों में सूजन, अतिसार, शरीर का सूख जाना, सूखी खाँसी, छाती में दर्द, खून निकलना, खायी हुई चीजों की कै, श्वास कष्ट।

बेलेडोना ६–सूखी खासी, शाम को बुखार, अधिक समय तक खाँसने पर खून मिला कफ निकलना, सोने के वक्त छाती में दर्द, साथ ही खाँसी का बढ़ना, गण्डमाला धातुवाले बच्चो की बीमारी।

इपीकाक ३० –दमा जैसी श्वास कष्ट युक्त खाँसी, कै या मिचली. चमकीला लाल खून निकलना।

सिलिका ३० –रात को बहुत पसीना पीब जैसा कफ, खाँसी पहले सूखी बाद्को तर.जख्म और उनमें पीब इत्यादि।

सेङ्गइनेरिया ६ वा ३०–शाम को चार बजे से बुखार का बढ़ना श्वास और कफ मे बदबू हाथ पैर ठडे छाती में जलन रात में अधिक पसीना सोने से खांसी का ५ इत्यादि।

लाइकोपोडियम १२ या ३०—पाखाना और पेशाब में [illegible], दस्त का बन्द हो जाना, भूख न लगना, नमकीन कफ, सूखी खाँसी, फेफड़े में जलन, डकार में [illegible], पेट का फूलना, पेट में गड़गड़ाहट इत्यादि।

हिपर सल्फर ६ या ३०—गले का बैठ जाना, साधारण खाँसी, सूखी ठंढी हवा लगने से खाँसी का बढ़ना, खून या पीब मिला कफ निकलना, सोते समय श्वास कष्ट। गंडमाला धातुवाले युवक-युवतियों को इससे विशेष लाभ होता है।

आयोडियम ६ या ३०—गले में सुड़सुड़ाहट के साथ लगातार खाँसी, शरीर की समस्त ग्रन्थियों का बढ़ जाना, लेकिन स्तनों का सूख जाना, अधिक ऋतुस्राव, सुबह पसीना, राक्षसी भूख, खाया पिया शरीर में न लगना, साफ कफ इत्यादि।

सल्फर ३० या २००—पुरानी बीमारी में इसे बीच-बीच में देने से विशेष लाभ होता है। सूखी खाँसी, कभी-कभी बहुत कफ निकलना, रात में पसीना, पसीने में बदबू, हाथ पैर के तलवों में जलन, शरीर सूखा, कमजोरी, फेफड़े में कफ का घड़घड़ाना, सुबह बिछौने से उठते ही पाखाने को दौड़ना इत्यादि लक्षणों में इससे विशेष लाभ होता है।

स्टेनम ६ या ३०—छाती बहुत कमज़ोर, बोलने और खाँसने के बाद छाती खाली मालूम होना, रात में पसीना,

मीठा कफ, पीले या हरे रंग का कफ, साधारण हिलने से भी खाँसी बढ़ना।

एसिडफस १x—रस, रक्त या वीर्य आदि का अधिक क्षय होने के कारण यह रोग होना, कमजोरी इत्यादि।

चायना ३०—जिन्हे कई बार न्युमोनिया हुआ हो उन्हें यह रोग होने पर इसे देना चाहिये। रसरक्त का अधिक स्राव, बहुत दिनों तक बच्चे को अधिक दूध पिलाना, प्रदर इत्यादि के कारण स्त्रियों को यह रोग होना।

नेट्रमम्यूर ३० या २००—बुखार, खून की कमी, दुबलापन, नमकीन चीजे खाने की प्रबल इच्छा इत्यादि।

हाइड्रेस्टिस मदरटिञ्चर—भोजन मे अरुचि के सिवा कोई दूसरा लक्षण न दिखायी देने पर दिन में तीन बार तीन-तीन बूँद देना चाहिये।

आर्स आयोड ३xया ६ x—गहरी सुस्ती, नाड़ी तेज, दिन में बुखार, रात में पसीना, बहुत दुबलापन, खून की कमी, इन्फ्लुएञ्जा के बाद इस रोग का होना इत्यादि। इसे भोजन के बाद खाना चाहिये।

लेकेसिस ६ या ३०—सोने के बाद खाँसी का बढ़ना, कष्ट के साथ कफ निकलना, मल में दर्द, बाँगी का रोग बढ़ना में मुँह मे जख्म इत्यादि।

इनके अलावा कल्केरिया आयोड, ड्रोसेरा, कल्केरिया-फस हेमामेलिस, प्लाटिनम, नेट्रम आर्स सिलिफोलियम

गेलिक एसिड, इरीजिरन जेरानियम, थाइरो, मेलेन्ड्रिनम, कार्बोवेज, बालसम पेरू, कोक्कस केक्टाई इत्यादि दवाएँ भी लक्षणानुसार देने से काफी लाभ करती हैं। बुखार की हालत में वेप्टीशिया, सेंगुइनेरिया, फेरमफस, चायना, किनिनम आर्स, एकिन्नेसिया, पाइरो, बहुत पसीना आने पर कल्केरिया कार्व, जेवरेन्डी, एगारिकस, एसिडफस और सिलिका, अतिसार में आर्स आयोड, किनियम आर्स, एसिडफोस, रक्त निकलने पर जिरेनियम, एकालिफा, मिल्लिकोलियम, इपीकाक ट्रिलियम, फोस्फरस, हेमामेलिस, फेरमएसेट, आर्निका, लेकेसिस, फेफड़े की सूजन में एपिस, एपोसाइनम, आर्स आयोड, सेङ्गुइनेरिया, खाँसी तेज होने पर फोस्फरस, वेलेडोना, ड्रोसेरा, ब्रायोनिया, हायोसायमस, कोनायम, स्टेनम, एन्टिमटार्ट, केली बाइक्रोम, केलीकार्ब और श्वासकष्ट में आर्सेनिक, एन्टिमटार्ट, स्ट्रिकनिया तथा नाइट्रिक एसिड-यह दवाएँ विशेष रूप से आजमानी चाहिये।

आवश्यक सूचना—जिन्हें यह रोग होने की संभावना उन्हें आहार विहार में बहुत नियमित और सावधान चाहिये। रहने का स्थान साफ सुथरा और हवा-होना चाहिये। जलवायु के परिवर्तन और निर्मल वायु सेवन से विशेष लाभ होता है। बकरी का दूध, बकरी का और बकरे का मांस खाना, बकरियों के साथ रहना लाभ-

दायक है। काडलिवर आइल के सेवन से भी लाभ होता है। रोगी को जो चीजें खाने को दी जायें वे पुष्टिकर और हलकी होनी चाहिये। मांस का शोरवा बहुत लाभदायक होता है। रात को जागना, सर्दी अधिक परिश्रम आदि मना है। स्त्रियों को रोग होने पर उन्हें स्वामी-सहवास एकदम बन्द कर देना चाहिये। इसी तरह पुरुषों के लिए स्त्री संग घातक है। रोगी के साथ रहना उनके व्यवहार में आयी हुई चीजें काम में लाना, उसके साथ खाना पीना आदि मना है। क्षय-रोगी के लिये समुद्र तट का रहना लाभदायक माना जाता है।

हैजा या कालेरा।

(Cholera)

हैजा एक बहुत ही भयंकर संक्रामक रोग है। [illegible] का विषाक्त जीवाणु इस रोग का [illegible] है। खाने पीने की चीजों के साथ [illegible] के पेट में पहुँचने पर [illegible] बीमारी [illegible] [illegible]

प्यास, ठंढा पसीना, आँखें और मुँह का बैठ जाना, ओंठों और चेहरे का नीला हो जाना, बेचैनी, पेशाब का बन्द हो जाना इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। यदि रोग आराम होने लगता है तो दस्तों का रंग बदल कर पीला या हरा हो जाता है, वर्ना रोग की तीसरी अवस्था उपस्थित होती है। एकोनाइट, इपीकाक, रिसिनस, आर्सेनिक, विरेट्रम, क्युप्रम, क्युप्रम आर्स, सिकेली, टेबेकम, केन्थरिस, रसटक्स, इलाटेरियम, मर्क्युरियस, और क्रोटन टिग इत्यादि इस अवस्था की प्रधान दवाएँ हैं।

(३) पतनावस्था—पहले बहुत कै दस्त, बाद को उनमें कमी, पानी पीते ही तुरन्त कै हो जाना, आँखों के किनारे कालिमा, शरीर का रंग क्रमशः नीला हो जाना, आँखों की ज्योति का घट जाना और उनका गढ़े में घुस जाना, शरीर बरफ की तरह ठंढा, रोगी का छटपटाना, चेहरे पर पसीने के बूँद, शरीर से बहुत अधिक ठंडा पसीना निकलना, शरीर में जलन, स्वर भंग, बहुत कमजोरी, अनजान में थोड़ा थोड़ा दस्त होना या एकदम दस्त और पेशाब का बन्द हो जाना, पेट का फूल जाना, श्वासकष्ट इत्यादि इस अवस्था के लक्षण हैं। इसमें शरीर बरफ की तरह ठंडा हो जाता है, इसलिये इसे हिमाङ्ग अवस्था भी कहते हैं। अधिकांश रोगियों की मृत्यु इसी अवस्था में होती है। एकोनाइट, आर्स

एकोनाइट ३ x या ६—हैजे का आरम्भ [illegible] के दस्त, पके हुए तरबूज जैसे रंग, [illegible] मालूम होना, [illegible] भय, प्यास, बेचैनी, पित्त मिले हरे दस्त, पेट में तेज दर्द इत्यादि लक्षणों में रोगी की आरम्भावस्था में तथा पतनावस्था में समूचा शरीर ठंडा हो जाने पर इसका प्रयोग करना चाहिये।

आर्सेनिक एल्ब ६—अधिक फल मूल खाने या जल पीने पर यह रोग होना, बिना दर्द के पानी जैसे बदबूदार दस्त, मृत्युभय, बहुत बेचैनी, तेज प्यास किन्तु एक बार अधिक पानी न पीना, आधी रात के बाद लक्षणों का बढ़ना बहुत कमजोरी, कै के बाद पेट में जलन, कष्टकर श्वास प्रश्वास, स्वरभंग, व्याकुलता इत्यादि। हैजे की किसी भी अवस्था में बहुत बेचैनी, व्याकुलता, सुस्ती, तेज प्यास और मुर्दे का सा चेहरा—इन लक्षणों में इसका प्रयोग किया जा सकता है।

क्रोटनटिग ३ या ६—जोर के साथ पिचकारी की तरह पानी जैसे पीले रंग के दस्त, पानी पीने के बाद कै, दस्तों का बढ़ना, पेट में नाभी के चारों ओर खींचने की तरह दर्द—इन लक्षणों के हैजे की यह अव्यर्थ औषधि है।

आइरिस ३—खून मिले, पानी जैसे, पीले, कफ मिले, काले, हलके हरे या अजीर्ण के दस्त, मुह से लेकर मल-द्वार तक जलन, पिछली रात में रोग का हमला, डकार, मिचली.

खट्टी कै, दस्त में खट्टी गन्ध इत्यादि। रोग की प्रथमा और द्वितीयावस्था में यह दवा व्यवहार की जाती है।

एलोज ३ X या ३०—सुबह बिछौने से उठते ही हड़बड़ा कर पतला दस्त होना, दस्त में अजीर्ण पदार्थ, दस्त के समय वायु निकलने के कारण पट पट आवाज।

चायना ६ या ३०—पीले और पानी जैसे अजीर्ण के दस्त, साथ ही बहुत कमजोरी, गरमी के दिनों में अतिसार, मल में बदबू, दस्त के पहले पेट में दर्द, पेट का फूलना, वायु निकलना, डकार आने पर आराम मालूम होना, रात में और भोजन करने के बाद तकलीफ का बढ़ जाना इत्यादि।

नक्सवोमिका ६ या ३०—शराब पीने, स्त्री-संग करने, रात का जागने, मसालेदार चीजें खाने या अम्ल रोग के कारण यह रोग होना, वारंवार दस्त का वेग मालूम होना, पर खुलकर दस्त न होना पेट फूला हुआ, बदबूदार और पित्त मिले दस्त।

इपाकाक ६ या ३०—रोग की किसी भी हालत में बहुत जी मिचलाना और कै इसका प्रधान लक्षण है। दस्त और फेना जैसे दस्त पेट में दर्द खूनी दस्त इत्यादि लक्षणों में भी इससे लाभ होता है। [illegible] दूसरी दवाओं के साथ यह दवा पर्याय क्रम में दी जाती है।

रहकर होमियोपैथीका प्रचार और चिकित्सा करने लगे। यहाँ उन्होंने एक राजाका असाध्य रोग आराम कर उसके दरबारमें राजवैद्यका पद प्राप्त किया। और भी न जाने कितने रोगियोंको आराम किया। फलतः उनकी कीर्ति और होमियोपैथीका प्रचार बढ़ता ही गया। इस नगरमें १ चौदह वर्ष रहे और यहांसे सन् १८२८ में उनका सुप्रसिद्ध ग्रन्थ "क्रानिक डिज़िज" (पुराने रोगोंका निराकरण) प्रकाशित हुआ।

प्रत्येक सत्कार्यमें विघ्न-बाधायें तो हुआ ही करती हैं, परन्तु इसके बाद समय और विचारशील जनताने महात्मा हनीमैनका साथ दिया और उन्होंने संसारको अपना अभिनव सन्देश सुनानेके साथ-साथ यश और धनोपार्जन भी किया। महात्मा हनीमैनका पहला ब्याह सन् १७८२ में हुआ था। इस पत्नीका स्वर्गवास होनेपर ८० वर्षकी अवस्थामें उन्होंने दूसरा ब्याह किया। इस दूसरी स्त्रीके उद्योगसे उन्हें फ्रान्सकी राजधानी पेरिसमें डाक्टरी करनेकी सनद मिल गयी और जीवनके शेष आठ वर्ष उन्होंने वहीं डाक्टरी करते हुए आराम से व्यतीत किये। दूसरा ब्याह करनेपर उन्होंने अपने लिये केवल तीस हजार रुपये रखकर शेष लाखों रुपयेकी सम्पत्ति अपनी पहली स्त्रीके लड़कोंको बाँट दी थी। ता० २ जुलाई सन् १८४३ को इस महापुरुषने अपनी इहलोक-लीला समाप्त की। मरनेके समय भी वे

फोस्फरस ६—मलद्वार का ठीक से बन्द न होना, अनजान में दस्त, बिना दर्द के हरे या कफ मिले दस्त, गरम दस्त, गरम कै, गरम चीजें खाने पीने या बायीं करवट लेटने पर रोग लक्षणों का बढ़ना ।

बेलेडोना ३ या ६—शिर गरम, हाथ पैर ठण्डे, शिर में दपदपी, बदन सूखा या गरम पसीना, तन्द्राभाव, बुखार, चेहरा और आँखें लाल, बदबूदार दस्त, बड़बड़ाना, मस्तिष्क-विकार इत्यादि । धूप में या आग के सामने काम करने पर हैजा हो अथवा हैजा के साथ बुखार हो तो इसे अवश्य आजमाना चाहिये ।

ब्रायोनिया ६—पतला और कुछ लाली लिये हुए दस्त, अजीर्ण का दस्त, सड़ा या बदबूदार दस्त, मुँह सूखा, बहुत पानी पीने की इच्छा, मुँह का स्वाद तीता, हरे या पीले रंग की तीती के पेट में दर्द, बकझक बुखार मिला हैजा ।

कैमोमिला १२—दस्त पतला दस्त में सड़े अण्डे का सा बदबू [illegible] अथवा बच्चों को दाँत निकलने के समय यह रोग होना ।

का[illegible] ६ या ३०—रक्तस्राव, खून मिले दस्त पेट फूला हुआ [illegible] लम्बे शरीर और [illegible] से ठंडक इत्यादि लक्षण [illegible] देना चाहिये बहुत [illegible]

मलाई, सड़ी मछली या मांस, बासी तरकारी * आदि खाने के कारण यह रोग होने पर इससे विशेष लाभ होता है।

सिकेली ३—शरीर बाहर से ठंडा, पर अन्दर में जलन मालूम होना, ठण्डा पानी पीने की इच्छा, शरीर का कपड़ा उतार फेंकना, मलद्वार का बन्द न होना, अनजान में दस्त होते रहना, हाथ पैर की उंगलियों का पीछे की ओर अकड़ जाना।

ओपियम ३—दस्त और पेशाब का बन्द हो जाना, पेट का फूल जाना, श्वासकष्ट, मृत्युकाल जैसे लक्षण।

कोब्रा या नेजा ३—चेहरा मुर्दे की तरह बिगड़ा हुआ और बदरंग, शरीर बरफ की तरह ठंडा, नाड़ी गायब, निगल न सकना इत्यादि। आर्सेनिक से श्वास कष्ट कम न होने पर इससे लाभ होता है।

हाइड्रोसियेनिक एसिड ३ या ६—सूखा हैजा, बिना के दस्त हुए ही आंख मुंह का बैठ जाना, चेहरा नीला, मुर्दे की सी हालत, ठण्डा पसीना, नाड़ी लोप, समूचा शरीर ठंडा, आंखें अधखुली, बेहोशी, श्वासकष्ट इत्यादि।

लेकेसिस ६—हैजे का हमला होते ही रोगी का बेहोश होकर गिर पड़ना, बाद को अनजान में के दस्त होना इत्यादि।

एगेरिकस ६—बहुत तेज हिमाङ्ग अवस्था, पेशाब बन्द, पेट का फूल जाना, बिछौने से उठने की चेष्टा करना इत्यादि।

माइक्यूटा ६—श्वासकष्ट, पेट का फूल जाना, हिचकी, अकड़न के कारण रोगी का धनुष की तरह टेढ़ा हो जाना इत्यादि ।

विरेट्रम एल्बम ३ या ६—भात के पानी की तरह अचानक बहुत सा दस्त होना, कै, हरबार दस्त के बाद रोगी का सुस्त हो जाना, कै और दस्त का एक साथ होना, अस्थिरता, हाथ पैर का अकड़ जाना, पेट में जलन, तेज दर्द, पानी पीने के बाद ही कै होना, चेहरा ठंडा और नीला, दस्त के समय कपाल पर ठण्डा पसीना, स्वरभंग इत्यादि ।

रिसिनस ३ या ६—बारम्बार बिना दर्द के पानी जैसे दस्त, प्यास, कै, कै के साथ अन्न नाली और पाकस्थली में जलन, पाकस्थली में अकड़न इत्यादि । दस्त प्रधान हैजे में इससे विशेष लाभ होता है ।

क्युप्रम मेट ६ या ३०—अकड़न की यह बढ़िया दवा है । समूचा शरीर ठण्डा और हाथ पैरों में अकड़न, पानी जैसे सफेद या लाल दस्त, पेट में दर्द, प्यास, पित्तकी कै, पानी पीने से आराम मालूम होना, नाड़ी गायब, बेहोशी इत्यादि । अकड़न के लिये विरेट्रम के साथ यह पर्याय क्रम में भी दिया जाता है । सिकेली की अकड़न में उंगलियां बाहर की ओर झुक जाती है, क्युप्रम में भीतर को ओर । यह भेद ध्यान में रखना चाहिये ।

इथ्यूजा ६—बच्चों की बीमारी, खूब पतला दस्त, डकार, दही की तरह फटी फटी कै, कै के बाद ही बच्चे का सुस्त हो जाना या सो जाना, सोकर उठते ही खाने को माँगना इत्यादि।

केलीब्रोम ३ × विचूर्ण—बच्चों को यह रोग होने पर बहुत सुस्ती, शरीर ठण्डा और नीला, नाड़ी गायब, पैंठन या अकड़न आदि तीव्र लक्षणों में इसे देना चाहिये।

बेप्टीशिया १ × ६—साँस और पसीने में बहुत बदबू, शरीर में दर्द, सुस्ती, बकझक, बोलते बोलते सो जाना, दर्द होने पर भी काँखना, पेट का बैठ जाना, बुखार मिला हैजा इत्यादि।

मर्क्युरियस वाइवस ६ × विचूर्ण—खून और आँव मिले दस्त काँखना, मुँह से लार बहना इत्यादि।

रसटक्स ६—बुखार मिला हैजा, पेट में गड़गड़ाहट, बेहोशी जैसा नींद, कम्पकर सपने अरुचि, तेज प्यास, ठंडा पानी या ठण्डा दूध पीने की इच्छा, प्रलाप खून मिले, पीले कफ मिले या पतले और बदबूदार दस्त।

कुप्रम आर्स ६ ×—पेट में जोरों का दर्द साथ ही पैंठन या अकड़न। बच्चों के हैजे में इससे विशेष लाभ होता है।

मर्क्युरियसकर ३ या ६—मूर्ना दस्त, मूर्ना कै, मूर्ना पेशाब, साधारण दस्तों के बाद हैजा हो जाना, पेट में बहुत काँखना इत्यादि लक्षणों में इससे लाभ होता है।

केलीसियेनेटम ३ X विचूर्ण—श्वासकष्ट में हाइड्रोसियेनिक एसिड से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये। साँस करीब-करीब बन्द, बीच-बीच में हाँफने फूलने के सिवा जीवन का और कोई लक्षण न दिखायी देना।

टेरीबिन्थीना ६—पेशाब का बन्द हो जाना और पेट का फूला रहना इसके प्रधान लक्षण हैं। कैन्थरिस से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

साइना ३ X या २००—पेट में क्रिमि होने के कारण हैजा होना या रोग आराम होने के बाद क्रिमि के कारण उसका फिर पलटा खा जाना।

प्रतिक्रियावस्था के विविध उपसर्ग।

रोग कुछ कुछ आराम होकर फिर बढ़ने लगे तो लक्षणानुसार उपरोक्त दवाएँ ही पहले की अपेक्षा ऊँचे क्रम की प्रयोग करनी चाहिये। प्रतिक्रियावस्था में अथवा रोग आराम होने के बाद जो उपसर्ग दिखायी देते हैं उनकी दवाएँ नीचे लिखी जाती हैं:—

पेशाब का बन्द हो जाना—बारंबार वेग मालूम होने पर भी पेशाब का न होना, प्रलाप, आक्षेप, निद्रालुता आदि लक्षणों में केन्थरिस ३ या ६। केन्थरिस से लाभ न हो, साथ ही पेट कुछ फूला हुआ हो तो टेरीबिन्थीना ६। अस्थिरता और बेचैनी हो तो आर्सेनिक ३०। मूत्रस्थली में वेदना होने पर नक्सवोमिका ३०। बूँद बूँद पेशाब होने पर केनेबिस सेट ३ या ६। केन्थरिस और टेरीबिन्थीना से लाभ न होने पर नाइट्रिक इथर पाँच सात बूँद छटाक डेढ़ छटाक पानी में मिलाकर दो तीन बार देना चाहिये।

हिचकी—विरेट्रम ३० या आर्सेनिक ३० इसकी अच्छी दवा है। जोरों की हिचकी, हिचकी के समय शरीर का काँप उठना या बिछौने से उठ बैठना आदि लक्षणों में बेलेडोना ६। बेहोश की तरह पड़े रहना, बीच बीच में जोरों की हिचकी आये तो साइक्यूटा ३। हिचकी के समय पेशाब निकल पड़े, कै, ऐंठन और पेट में गड़गड़ाहट हो तो हायोसायमस ६। हिलने से हिचकी, हिचकी के कारण सुस्ती, अधमुदी आँखें आदि में कार्बोवेज ६। भोजन के बाद या बीड़ी आदि पीने के समय हिचकी आये तो पल्सेटिला ६। खाने के बाद हिचकी आने पर इग्नेशिया ६ या ३० से भी बहुत लाभ होता है। निद्रालुता, मिचली बारबार मिचली इत्यादि में स्टेफीसेग्रिया ६ या ३० भोजन के बाद पाकस्थली में भार, साथ ही

हिचकी होने पर फोस्फरस ६। इनके अतिरिक्त गन्धिमदार, आर्सेनिक, क्युप्रम, सिकेली, परिसडफस, साइना आदि से भी काफी लाभ होता है।

मिचली या कै—इपीकाक इसकी सर्वप्रधान दवा है। नक्सवोमिका से भी काफी लाभ होता है। पानी पीने के कुछ समय बाद ही कै हो तो फोस्फरस ३०। इपीकाक और नक्स-वोमिका से लाभ न होने पर पोडोफिलाम ३ या ६। ठंडा पानी पीने के बाद कै होने पर युपेटोरियम ३।

पेट में कृमि—पेट में कृमि होने पर मुंह में पानी भर आना, पेट में एंठन, दर्द, सोते समय दाँत कड़मड़ाना, नाक खुजलाना, मल द्वार में सुड़सुड़ाहट या खुजली, बुखार मालूम होना, कफ मिले दस्त इत्यादि लक्षण दिखायी देते हैं। साइना ३ X या २०० इसकी बढ़िया दवा है। साइना से लाभ न हो तो सेन्टोनाइन १ X या ३ X विचूर्ण। इनके अलावा चायना ३ या ६, सिक्यूटा ३ और ट्युक्रियम ३ X से भी काफी लाभ होता है।

हैजे के बाद बुखार—साधारण बुखार अपने आप ही १०७ हो जाता है। अच्छा न होने पर एकोनाइट, आर्सेनिक, ..., रसटक्स या ज्वर को अन्यान्य दवाएं लक्षणानुसार प्रयोग करनी चाहिये।

आँव मिले दस्त—आँव मिले दस्त साथ ही बुखार हो तो एकोनाइट ३ X या ६। खून मिले दस्त, पेट में दर्द आदि लक्षणो में मर्क्युरियसकर ३ या ६। मिचली, कै, साधारण खून या आँव मिले दस्त आदि मे इपीकाक ३ या ६। बारंबार दस्त का वेग पर दस्त न होना या थोड़ा थोड़ा होना, दस्त में खून के छींटे आदि मे नक्सवोमिका ३ या ६।

पतले दस्त—साधारण दस्तों में दवा की जरूरत नहीं पड़ती, पेशाब होने पर दस्तो की शिकायत दूर हो जाती है। दवा की जरूरत हो तो पीले दस्त, कमजोरी आदि में चायना ३ या ६। पित्त मिले दस्त, सुबह के दस्त, अधिक तादाद में दस्त आदि मे पोडोफिलाम ३ या ६। फोस्फरिक एसिड से भी बाद के दस्तों मे काफी लाभ होता है।

पेट का फूलना—आँतों की जड़ता और यकृत दोष के कारण पेट फूलने पर नक्सवोमिका ३०। पेट में दस्त, बदबू-दार मल आदि में एसाफिटिडा ३ या ६। निद्रालुता और कब्जियत में ओपियम ६। पेट में वायु के कारण गड़गड़ाहट, बदहजमी आदि में चायना ६ या ३०। पेट फूलना साथ ही पतले दस्तो मे कार्बोवेज ६ या ३०। पेट फूलना साथ ही कब्जियत मे लाइकोपोडियम ६ या ३०।

हैजे के बाद जखम—शैय्याक्षत में मर्क्युरियस सल ६, लेकेसिस ३०, कार्बोवेज ३०। मुँह के जख्म मे नाइट्रिक

एसिड ६, मर्क्युरियस ६। मसूढ़े से खून निकलने पर नाइट्रिक एसिड ६, कार्बोवेज ३, हिपर सल्फर ६। आँखों में जख्म होने पर मर्क्युरियस ६, पल्सेटिला ६ और युफ्रेशिया लोशन का वाह्य प्रयोग। फोड़ा होने पर हिपरसल्फर ६। फोड़े से पीव बहने पर सिलिका ३०। कान की गिल्टियाँ फूलने पर बेलेडोना ६, लेकेसिस ६, सिलिका ३०। सड़ा जख्म होने पर आर्सेनिक ६, लेकेसिस ६, कार्टेलस ६।

मस्तिष्क विकार—पेशाब न होने पर प्रलाप, निद्रालुता, तन्द्रा, इत्यादि मस्तिष्क विकार के लक्षण प्रकट होते हैं। धीमा प्रलाप, तन्द्राभाव, जननेन्द्रिय खुजलाना और खींचना आदि में केनेबिस इन्डिका ३। स्थिर दृष्टि, अधमुंदी आँखें, तन्द्रा, आक्षेप, हिचकी आदि में सिक्यूटा ६। चेहरा और आँखें लाल, प्रलाप आदि में बेलेडोना ६। अधिक बकझक, बिछौने से उठना, काटने दौड़ना आदि में स्ट्रेमोनियम ६ या ३०। बेलेडोना और स्ट्रेमोनियम के लक्षणों से भी तेज लक्षण, जोरों का विकार आदि में हायो सायमस ६ या ३०। प्रलाप, तन्द्रा, मस्तिष्क की अवसन्नता, कब्जियत, बेहोशी, पेट का फूलना आदि में ओपियम ६। बीच बीच में सल्फर ३० देने से विशेष लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—रोग बहुत तेज हो तो जल्दी जल्दी घंटे में दो तीन बार दवा देनी चाहिये। साधारण बीमारी में

घंटे या दो घंटे के अन्तर से और दवा से फायदा हो रहा हो तो और भी देरी से देना चाहिये। दो तीन खुराक दवा देने पर फायदा न हो तो दूसरी दवा चुननी चाहिये।

रोगी का कमरा साफसुथरा और हवादार होना चाहिये। रोगी का मल मूत्र दूर फेकना चाहिये। जमीन में गाड़ देना सब से अच्छा है। पाखाने के स्थान मे चूने का चूरा छिड़कते रहना चाहिये। हाथ पैर मे जहाँ अकड़न हो वहाँ नमक या बालू की पोटली या फ्लानल से सेंक देना चाहिये। पीने के लिये खूब गरम पानी देना चाहिये। बरफ के टुकड़े भी चूसने को दिये जा सकते हैं। गरम पानी में नमक मिला कर पिलाना बहुत लाभदायक होता है। रोग की पहली, दूसरी और तीसरी अवस्था में खाने को कुछ भी न देना चाहिये। रोग की तेजी घट जाने पर प्रतिक्रियावस्था मे आरारोट या बार्ली का पानी देना चाहिये। जब तक मल गाढ़ा और पीला या हरा न हो जाय, तब तक किसी तरह का पथ्य देना ठीक नहीं। बाद को ज्यो ज्यो अवस्था सुधरती जाय त्यों त्यो क्रमशः पानी का साबूदाना, दूध का साबूदाना, चावल का माँड़, मूंग की दाल का पानी और पुराने चावल का भात आदि चीजें देनी चाहिये। पथ्य देने मे जल्दी न करनी चाहिये और बहुत सोच समझ कर पथ्य देना चाहिये। जिन्हें बदहजमी या दस्त की बीमारी हो उन्हें हैजा के रोगी की

शुश्रूषा न करनी चाहिये। खाली पट भी रोगी के पास ज
ठीक नहीं।

पिछली रात में हैजे का होना, शीघ्र ही सुस्त हो जाना बारबार अनजान में कै या दस्त का होना, श्वास कष्ट, नाड़ी लोप, शरीर की गरमी का बहुत घटना या बढ़ना, पेट में दर्द खूनी कै दस्त, पित्त का न निकलना, पेशाब न होना, ऐंठन का बन्द न होना, बहुत बकझक, निगल न सकना, बेहोशी, पैर पर पैर चढ़ा कर सोना, सन्निपात, गर्भवती स्त्री, शराबी, अफीमची, छोटे बच्चे, वृद्धे या कमजोर आदमी को यह रोग होना आदि अशुभ लक्षण है। इन लक्षणों में प्राण का भय रहता है। लेकिन लक्षण बुरे होने पर भी रोगी से कोई ऐसी बात न कहना चाहिये, जिससे वह डर जाय या दहशत खा जाय। गर्भवती स्त्री को हैजा होनेसे उसका गर्भ गिर जाता है।

चेहरे की कान्तिका खराब न होना, पेशाब का बन्द न होना, श्वास कष्ट न होना, ऐंठन और प्यास का कम होना, कै दस्त अधिक न होना, दस्त का रंग पीला या धुमैला, शरीर की गरमी का न घटना, शीघ्रतापूर्वक प्रतिक्रिया के लक्षण प्रकट होना आदि अच्छे लक्षण है। रोगी का इलाज बहुत सावधानी के साथ, किसी चतुर चिकित्सक से ही कराना चाहिये।

आर्सेनिक ३ या ३०—बवासीर में दर्द होने पर इसे देना चाहिये।

बेराइटाकार्ब ६ या ३०—सभी तरह की बवासीरों में, खास कर गले की बवासीर में यह अधिक फायदा करता है।

—⁂—

३—वात रोग।

वात या बाई (Rheumatism)

वात रोग या बाई प्राणघातक न होने पर भी एक बहुत ही कष्टदायक बीमारी है। यह रोग अनेक कारणों से होता है। यकृत की खराबी, धातु दोष, अधिक तादाद में माँस मछली और दूध आदिक पुष्टिकर चीजें खाना, परिश्रम न करना, सूजाक या गरमी की बीमारी होना, सर्दी लगना, सर्दी-वाले स्थान में रहना, इत्यादि कारणों से यह रोग होता है।

इसमें शरीर के बड़े जोड़—कंधा, केहुनी, घुटना आदि फूल उठते हैं। वहाँ लाली, दर्द, और उत्ताप दिखायी देता है। बीमारी के पहले, पीछे या साथ ही बुखार भी आता है। रात को दर्द बढ़ जाता है। पेशाब थोड़ा, लाल और बदबूदार, पसीना, अरुचि आदि लक्षण भी प्रकट होते हैं। नयी बीमारी शीघ्र आराम हो जाती है। बारबार इसका हमला होना,

साथ ही पेशाब की बीमारी, हृदय की खराबी, पेशाब से युरिक एसिड का न निकलना आदि बुरे लक्षण है। पुरानी बीमारी शायद ही अच्छी होती है। अच्छे इलाज से उसकी तेजी अवश्य घट जाती है। पुरानी बीमारी में बुखार नहीं रहता। शेष सभी लक्षण मौजूद रहते है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ X—नयी बीमारी, तेज बुखार, बेचैनी. आक्रान्त स्थान सूजा हुआ, लाल और प्रदाह युक्त, जाड़े में ठण्डी हवा लगने के कारण रोग होना, प्यास, कतरने या. चिलकने जैसा दर्द।

ब्रायोनिया ६ या ३०—हिलने डोलने से दर्द का बढ़ना, कब्जियत, बुखार, पसीना, बहुत कमजोरी आदि लक्षणों में एकोनाइट के साथ पर्यायक्रम में या एकोनाइट के बाद इसे देना चाहिये।

सल्फर ३०—हमेशा गरमी मालूम होना, शरीर के कपड़े उतार डालना, हाथ पैर के तलवों में गरमी मालूम होना, पसीने में खट्टी गन्ध, बायें अंग मे अधिक दर्द, रात का दर्द का बढ़ना इत्यादि। यह नये और पुराने तथा सभी किस्म के वात रोग मे फायदा करता है। बीच बीच में इसे देने से दूसरी दवाएं अधिक लाभ करती हैं। पर इसे अधिक मात्रामें या अधिक समय तक सेवन करना हानिकर है।

रसटक्स ६—हिलने डोलने मे आराम मालूम होना, सेंकने से रोग का घटना, विश्राम करने पर, रात में, सुबह उठने के समय या बिछौने की गरमी से रोग का बढ़ना, बहुत बेचैनी, ठंडी हवा बरदास्त न होना, वर्षाऋतु में या ठण्डी हवा लगने पर वात रोग होना, दूसरे स्थानों की अपेक्षा कमर में अधिक तकलीफ (कटिवात) इत्यादि में इसे देना चाहिये।

बेलेडोना ६—आक्रान्त स्थान में सूजन और लाली, सुई चुभोने जैसा या टपटप होनेवाला दर्द, शरीर सूखा और गरम, प्यास, शिर दर्द, बुखार, निद्रालुता, शाम को तीसरे पहर तकलीफ का बढ़ना इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—घुटने और हाथ पैर की छोटी छोटी संधियों में वात, दर्द का एक जोड़ से दूसरे जोड़ में घूमते रहना, तीसरे पहर, शाम को और रात में दर्द का बढ़ना, खुली हवा मे आराम, गरमी में रोग का बढ़ना ठंडी में घटना, स्त्रियोंको ऋतु की गड़बड़ीके कारण वातरोग होना।

सेलिसिलिक एसिड ६ या ३०—नये वात रोग मे तेज बुखार और दर्द होने पर इससे भी बहुत लाभ होता है।

सिमिसिफिउगा ३ X या ६ X—पेशियों का वात, छाती का वात, वात के कारण शरीर मे खोचा मारने या बिजली की लहर सी दौड़ने जैसा दर्द दर्द के कारण बेचैनी।

कोलोफाइलम ३ या ६—उंगलियों के जोड़ और मणि-बन्ध का वात, कन्धे और पीठ में दर्द, तेज बुखार, श्वास कष्ट इत्यादि ।

केलमिया ३ या ६—दोनों हाथ, खासकर दाहिने हाथ और कलेजे का वात, एक स्थान से दूसरे स्थान में दर्द का घूमना ।

लिडम ३ या ६—जाँघ के जोड़ में वात, नीचे से ऊपर की ओर वात का बढ़ना, शाम से लेकर आधीरात तक और हिलने डोलने या बिछौने की गरमी से रोग का बढ़ना ।

कस्टिकम ६ या ३०—पेशियों में दर्द, जोड़ों का अटक जाना, रात में अस्थिरता, दर्द के कारण हिलना डोलना, पर आराम न मालूम होना, बायें हाथ का वात ।

बेन्जोइक एसिड ३ या ६—आक्रान्त स्थान में सूजन और लाली, दर्द के कारण वहाँ हाथ न लगाया जा सके. पेशाब में घोड़े के पेशाब जैसा तेज बदबू इत्यादि ।

डालकेमारा ६—पानी में भीगने के कारण वात होने पर इसे देना चाहिये ।

आर्जेन्टम मेटालिकम ६—घुटने या केहुनी में खोचा मारने जैसा दर्द लेकिन जलन या सूजन का न होना ।

कल्चीकम ३ या ६—सुई चुभने, काटने या निशान मारने जैसा दर्द, रात में दर्द का बढ़ना, पेशाब में सफेद तली भोजन की गन्ध से जी मिचला उठना, आक्रान्त स्थान में कट-कट आवाज होना, इत्यादि।

मर्क्युरियस सल ३ या ६—आक्रान्त स्थान में सूजन और दर्द, बहुत पसीना आना पर उससे आराम न मालूम होना, ठंडी हवा और रात में रोग लक्षणों का बढ़ना, गरमी से आराम मालूम होना इत्यादि। गर्मी या उपदंश का दोष हो तो मर्क्युरियस बिन आयोड देना चाहिये।

रोडोडेन्ड्रन ३ या ६—बैठ रहने से दर्द का बढ़ना हिलने डोलने से आराम मालूम होना, वर्षा में रोग का बढ़ना पेशी और गर्दन का वात।

अर्निका ३ x या ६—चोट लगने के बाद वात रोग का होना, गर्मी से दर्द बढ़ना, आक्रान्त स्थान में झुनझुनी या जख्म जैसा दर्द।

कल्केरिया कार्ब ३०—जोड़ों में सूजन, ऋतु परिवर्तन के समय रोग का बढ़ना, रोगी के दोनो पैर ठंडे और गीले रहना, मोटे और थुलथुले शरीरवालों को यह रोग होना।

फाइटोलेक्का ६ या ३०—सरदी के समय पेठन जैसा दर्द, पेशाब लाल, कपड़े में लगने से लाल दाग पड़ना,

आक्रान्त स्थान में सूजन और लाली. गरमी और बरसात में रोग का बढ़ना ।

केलीहाइड्रो १X निचूर्ण या ३०—तेज बीमारी,बारंबार रोग लक्षणों का बदलना, जोड़ो की कमजोरी, चलने की शक्ति न होना, उपदंश के कारण वातरोग ।

सेनाइना ६ या ३०—गरम स्थान मे रह न सकना, ठंडी जगह में आराम मालूम होना, स्त्रियो को जरायु की बीमारी के साथ यह रोग होना ।

आयोडियम ६ या ३०—पुराना वात रोग, सन्धियों में सूजन न होने पर भी रात के समय भयंकर दर्द ।

केल्क सल्फ ६ या ३०—एक स्थान से दूसरे स्थान में रोग का आक्रमण, पहले स्थान में रोग का कोई लक्षण मौजूद न रहना इत्यादि ।

लेकेसिस ६ या ३०—रोग का दाहिने अंग से बायें अंग मे बढ़ना, सोने के बाद रोग लक्षणों की वृद्धि, आक्रान्त स्थान में स्पर्श बरदास्त न होना, हृदय में वात रोग,सूजन मे नीलापन इत्यादि ।

लाइको पोडियम ३०—दाहिने अंग में वात की शिका- यत, खट्टी डकार, सुबह जी मिचलाना, पेट फूलना इत्यादि । ब्रायोनिया के बाद इससे विशेष लाभ होता है ।

सैङ्गुइनेरिया ६ या ३०—कन्धे का वात रोग, जिसके कारण हाथ का अकड़ जाना और ऊपर न उठ सकना।

थूजा ३० या २००—टीका के विष या सूजाक के कारण वात रोग का होना, वात या गठिया रोग का ठीक तरह इलाज न होने के कारण रोग का बढ़ जाना, पेशाब में दोष, लिङ्गमुण्ड या मलद्वार में छोटे छोटे जख्म या मसे।

गुयेकम ६ या ३०—गरमी, पारा या सूजाक के दोष से यह रोग होना, अङ्गों का विकृत हो जाना, जोड़ और पेशियों में खिंचन और अकड़न, हिलाने से दर्द का बढ़ना इत्यादि। कास्टिकम के बाद इससे विशेष लाभ होता है।

नक्सवोमिका ३० या २००—शराबियों को यह रोग होना, सुबह रोग लक्षणों का बढ़ना, आलसी स्वभाव, काम करने की इच्छा न होना, मल का वेग मालूम होने पर भी दस्त का साफ न होना।

रूटा ६ या ३०—कलाई, पैर या कमर के वात रोग में इससे विशेष लाभ होता है। रोगी के पसीने में खट्टी बदबू आना इसका खास लक्षण है।

जिङ्कम ६ या ३०—छोटे छोटे जोड़ों का वात या गठिया, पैरों में तकलीफ मालूम होने के कारण सदा हिलाते रहना, नींद में आक्षेप इत्यादि।

आर्सेनिक ६ या ३०—जोड़ों मे सूजन, जलन और दर्द, बहुत कमजोरी और बेचैनी, आधी रात में रोग का बढ़ना, गरमी के प्रयोग से रोग लक्षणों का घटना इत्यादि।

इनके अतिरिक्त एमन फस, एन्टिम क्रूड, एपिस, एपोसाइनम, केक्टस, नेफेलियम, लेकनेन्थिस, लिथियम, मेङ्गनम, मेग्नेशिया कार्ब, सिलिका, एक्टिया स्पाइकेटा, मेक्रोटिन नेट्रम सल्फ, अरममेट, फोस्फरस, लेक्टिकएसिड, केली बाइक्रोम, क्लिमेटीज, मेडोरिनम, सिफिलिनम आदि दवाएं भी लक्षणानुसार दी जा सकती हैं।

आवश्यक सूचना-आक्रान्त स्थान में बहुत सूजन और दर्द हो तो बालू की पोटली या फ्लालेन से सेंक देना चाहिये और उस स्थान को सदा गरम कपड़े आदि से ढक रखना चाहिये। ठंडी हवा, और पानी में भींगने से बचना चाहिये। रसटक्स या ब्रायोनिया के मदर टिंचर में आठगुना तेल मिला कर मालिश करने से बहुत लाभ होता है। रोग के आरंभ में बुखार होने पर साबूदाना, बार्ली आदि हलकी चीजें खाने को देना चाहिये। बुखार न होने पर साधारण भोजन और पके फल देने में कोई हानि नहीं। खटाई मिर्च, गुड़, तेल, मांस आदि चीजों के सेवन से हानि होती है।

अर्निका ३ X या ३—भारी चीज उठाने या चोट लगने के कारण यह रोग होना । रसटक्स के बाद इसे देने से विशेष लाभ होता है ।

सिमिसिफिउगा ३ या ३०—पेशियों का वात, साथ ही अनिद्रा, बहुत दर्द और बहुत बेचैनी आदि लक्षणों मे इससे लाभ होता है ।

मेक्रोटीन १ X—पेशी वात में सिमिसिफिउगा से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये ।

मर्क्युरियसवाइवस ६—ठंडी हवा में और रात के समय तकलीफ का बढ़ना, बहुत पसीना आना, पर उससे आराम न मालूम होना ।

एन्टिम टार्ट ६ या १२—पीठ, पीठ की हड्डियों और कमर में दर्द, ठंडा और लसदार पसीना, कभी-कभी खींचन, हिलने डोलने पसीना निकलने या कै होने पर दर्द का बढ़ना लगातार दर्द का होते रहना इत्यादि ।

सल्फर ३० या २००—पुराने रोग में बीच-बीच मे इसे देना चाहिये ।

इनके अलावा वा रोग की दवाओं मे से भी दवाएं चुनी जा सकती हैं ।

तिनिसिफिउगा ३—इससे भी इस रोग में काफी लाभ होता है।

चेलीडोनियम ३X—गर्दन की दाहिनी ओर तकलीफ, आक्रान्त स्थान कड़ा और वेदना पूर्ण।

मेगनेशिया फस ६ X विचूर्ण—नयी और पुरानी दोनों तरह की बीमारी में इससे लाभ होता है।

ब्रायोनिया ३—आक्रान्त स्थान में तेज दर्द, दबा रखने से आराम मालूम होना, हिलने-डोलने से दर्द का बढ़ना।

रसटक्स ६ या ३०—पानी में भीगने या तर हवा लगने के कारण यह रोग होना, हिलने डोलने से कुछ आराम मालूम होना इत्यादि।

आवश्यक सूचना—ठंढी हवा और सर्दी से बचना चाहिये। गर्दन पर गुलूबन्द लपेट रखना, सेंकना और मालिश करना लाभदायक है।

गठिया ([illegible])

यह भी वात रोग या बाई का ही एक भेद है। [illegible] के जोड़ों के अलावा जब पैर का अंगूठा, उंगलियां [illegible] आदि छोटे जोड़ों में भी यह रोग होता है, [illegible] कहलाता है। पेशाब में [illegible] एसिड का पदार्थ [illegible]

नेट्रमम्यूर ३०—जोड़ों में दर्द, सदा जाड़ा सा मालूम होना।

रूटा ६ या ३०—समूचे शरीर और पैर की हड्डियों में घिसने जैसा दर्द, उसके कारण जोर से चल न सकना, वर्षा और जाड़े में रोग का बढ़ना।

लिथियम ६ या ३०—टेहुना और पैर की उंगलियों में सूजन और दर्द, चलने समय घुटने में दर्द, पेशाब में युरिक एसिड की तली जमना, कलेजे मे दर्द।

लिडम ३ या ६—हाथ पैर की सन्धियो में सूजन, आक्रान्त स्थान छूने से ठंडे मालूम होना, तनाहट और कट जाने जैसा दर्द, अंगूठे मे दर्द, रात मे दर्द का बढ़ना, शराबियों की बीमारी इत्यादि।

लाइकोपोडियम ३०—उंगलियों की सन्धियो मे दर्द पेटमें गोलमाल, यकृत में दर्द, पेशाब में लाल तली जमना इत्यादि।

एब्रोटेनम ६—उंगली की सन्धिमें युरिक एसिड का जमा होना, बुखार, रातमें, तूफान और वर्षामें तथा जाड़ेमें दर्दका बढ़ना, हृदय पर रोग का हमला, पुराना रोग इत्यादि।

बेंजोइक एसिड ३ या ६—हाथ की उंगलियोंमें बातका होना, सचरण शील वेदना, अंगूठे का बात।

आर्सेनिक ६ या ३०—किसी निश्चित समय पर ही दर्द होना, दर्दके साथ जोरोंकी जलन, गर्म प्रयोग से तकलीफ का घटना ।

नेट्रम सल्फ १२ X चूर्ण—आगे की ओर झुककर वैठने या वैठने के वाद उठने पर जोरका दर्द मालूम हो तव इसे देना चाहिये ।

रसटक्स ६ या ३०—तरी या सरदीके कारण राग होना, चलने फिरने से आराम मालूम होना ।

एमन म्यूर ३ या ६—वैठने पर दर्दका वढ़ना और चलने फिरने या लेटने पर दर्दमें कमी मालूम होना ।

इनके अतिरिक्त जेन्थकसाइलम, सिमिसिफिउगा, सिनिसिओ, मेग्नेशिया फस, कार्वोनियम सल्फ, सल्फर, वेलेडोना, ब्रायोनिया, मर्क्युरियस, कल्केरिया तथा वात रोगकी अन्यान्य दवाएँ भी लक्षणानुसार फायदा कर सकती हैं ।

अंगोंमें अकड़न ।

(Cramp in the Limbs)

इस रोगमें हैजाकी तरह शरीर के विभिन्न अंगोंमें, खास कर पड़ी और हाथ पैरके तलवों में खीचन या अकड़न पैदा होती है और उसके कारण वड़ी तकलीफ मालूम देती है। स्त्रियोको गर्भावस्थामे भी यह रोग हुआ करता है ।

चिकित्सा ।

सीपिया ६ या ३०–रात में बिछौने पर पैरमें अकड़न, गर्भावस्थामें भी स्त्रियोंको यह रोग होना ।

नक्सवोमिका ६ या ३०–पैर सिकोड़ने के समय उनमें ऐंठन, कब्जियत, शराबियो को यह रोग होना ।

सिकेली या क्युप्रम ३—यह भी इस रोगकी अच्छी दवाए हैं । हाथ पैरकी उंगली भीतर की ओर झुक जाने पर क्युप्रम और बाहर की ओर झुक जाने पर सिकेली देना चाहिये ।

कार्बोवेज ६ या ३०—शामके वक्त लेटने पर पैरमें अकड़न, पैरके तलवे में बहुत पसीना ।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०–गठिवाला धातुवाले मनुष्यों को रातमें यह बीमारी होना ।

अन्यान्य वात रोग ।

इस परिच्छेद में प्रधान-प्रधान वात रोगों की [illegible] चिकित्सा लिखी जा चुकी है । इनके अतिरिक्त इस [illegible] सम्बन्ध में कुछ और बात भी जान रखना आवश्यक [illegible] नीचे [illegible] —

[illegible]

[illegible]

प्राय बिजली की चमक जैसा या चोट लगने जैसा होता है। कन्धे में भी ऐसा ही वात होता है। वात रोग और पैरों वात की दवाएँ इनमें भी फायदा करती हैं। पार्श्व वात में रेननक्युलस वल्व ३ या ३० से विशेष लाभ होता है।

(२) सूजाक या धातुगत रोग के कारण जो वात होता है वह प्रमेहजनित वात या गोनोरियल रिउमेटिज्म Gonorrhaeal Rheumatism कहलाता है। इसमें साधारण वात, गृध्रसी वात और गठिया आदि सभी तरह के वात जैसी शिकायतें पैदा होती हैं। लक्षणानुसार पल्सेटिला, मर्क्युरियस, फाइटोलेक्का, केली आयोड, सल्फर, सार्सापरीला, आदि दवाएं दी जाती हैं और इनसे थोड़ा बहुत लाभ भी होता है, परन्तु जब तक धातु दोष दूर नहीं होता तब तक कोई भी दवा जैसा चाहिये वैसा फायदा नहीं करती। धातु दोष दूर करने के लिये थूजा २०० या १०० दीर्घकाल तक सेवन कराना चाहिये।

(३) बहुत दिनों तक शरीर के किसी जोड़ में प्रदाह रहने पर वहाँ की हड्डी और बन्धन आदिमें भी खराबी पैदा हो जाती है। इससे जोड़ टेढ़ामेढ़ा अथवा मोटा या पतला हो जाता है। इसमें बीमारी नयी होने पर पल्सेटिला, एको-नाइट और ब्रायोनिया। पुरानी होने पर गुयेकम, कल्चीकम, सल्फर, रसटक्स, मर्क्युरियस, रोडोडेन्ड्रेन और सिलिका, स्त्रियों को यह रोग होनेपर पल्सेटिला, सेवाइना, सिमिसिफि

लक्षण प्रकट होते हैं । यदि किसी बीमारीमें ऐसे लक्षण दिखायी दें तो आर्सेनिककी सूक्ष्ममात्रा देनेसे वह बीमारी अच्छी हो जाती है। जैसे लक्षण दिखायी दें वैसे ही या उससे मिलते-जुलने लक्षणोंकी दवा देनेका नाम ही होमियोपैथी या सदृश विधान चिकित्सा है।

यहाँ हम अपने पाठकोंको एक बात और बतला देना चाहते है। होमियोपैथी कहने से कुछ लोग यह समझते हैं कि अगर आर्सेनिक खानेसे ही रोगीको कै, दस्त और प्यास-की शिकायत हुई हो तो उसे आर्सेनिक देना चाहिये। पर यह कोई जरूरी बात नहीं है, कि रोगीने कोई वैसी चीज खायी हो तभी उसे वैसी दवा दी जाय। होमियोपैथीका मूल-मंत्र है, " Similia Similibus Curontur " अर्थात् सदृश-सदृशको आराम करता है। सदृश (Similar) और सम (Equal) शब्दमें कुछ अन्तर है। सम अर्थात् ज्योंका-त्यों—ठीक एक समान, और सदृश का अर्थ है—मिलता-जुलता। यदि किसी रोगीको कै, प्यास और दस्त आदिकी शिकायत हो तो यह जरूरी नहीं है कि उसने आर्सेनिक खाया ही हो। लेकिन आर्सेनिक खानेसे भी इसीसे मिलते-जुलते लक्षण प्रकट होते है इसलिये उन रोगीको आर्सेनिक दिया जा सकता है। रोग स्वाभाविक होना चाहिये और रोग तथा दवाके लक्षण मिलते-जुलते होने चाहिये। इसीका नाम है होमियोपैथी या सदृश विधान-चिकित्सा।

डगा और कोलोफाइलम से विशेष लाभ होता है। सुबह शाम सेंकना और काडलिवर आइल की मालिश करना भी फायदेमन्द है।

४—स्नायुमण्डलके रोग।

मस्तिष्क या दिमाग और समस्त शरीर के स्नायु जालका एकत्र नाम स्नायुमण्डल या नर्वस सिस्टम (Nervous System) है। इसकी शक्ति दो भागो में विभक्त है-(१) ज्ञानशक्ति (२) सञ्चालन शक्ति। ज्ञान शक्ति से हमें स्पर्श, चोट, ठंढ, गरम आदि बातो का ज्ञान या बोध होता है। सञ्चालनशक्ति से शरीर के विविध अंग और यन्त्रों का सञ्चालन होता है। इन शक्तियो मे खराबी उत्पन्न होने से शरीर मे अनेक प्रकारके रोग पैदा होते है जो स्नायुमण्डल के रोग कहलाते हैं। इस परिच्छेद में हम इन्हीं रोगों का विवरण अंकित करते हैं। मस्तिष्क स्नायुमण्डलके अन्तर्गत होने पर भी पाठको की सुविधा के लिये उसके रोग हम एक स्वतन्त्र अध्याय में अंकित करेंगे।

उन्माद या पागलपन।

(Insanity)

शराब, गांजा और भांग आदि नशे की चीजो का सेवन, अधिक मानसिक उत्तेजना, मानसिक परिश्रम, शोक, दुःख,

हायोसायमस ६ या ३०—रोगी को ऐसा मालुम होना मानो उसे विष दे दिया जायगा या कोई ठग लेगा अथवा उसे भूत लगा है। आँखें फाड़-फाड़ कर इधर-उधर देखते रहना, कपड़े फाड़ना, नंगे हो जाना, बकझक और उपद्रव करना इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—नम्र स्वभाव के रोगियों को और स्त्रियों को इससे विशेष लाभ होता है।

अरम मेट ६ या ३०—आत्महत्या करने की प्रबल इच्छा, धर्मान्धता, संगम की प्रबल इच्छा, शिर में रक्ताधिक्य, जी का बहुत दुःखी रहना, सब चीजों का आधा हिस्सा ही नज़र आना।

कोफिया ३० या २००—अनिद्रा, मनमें तरह तरहके विचार उठना और जरा भी नींद का न आना, कब्जियत, हमेशा डरते रहना, वृद्धों की बीमारी।

इग्नेशिया ६ या ३०—प्रेममें निराशा, सदा दुःखी रहना, लम्बी साँसे लेना, चुपचाप रोना और काल्पनिक या मानसिक पाप के लिये पछताते रहना।

प्लेटिना ६ या ३०—कामोन्माद और अहंकार, मृत्यु और भूत का भय दृष्टिविभ्रम।

सीपिया ६ या ३०—आत्महत्या करने की इच्छा मन उदास काम में जी न लगना किसी पर माया ममता न रहना स्त्रियों का जरा सी बात के साथ पर रोने लगना।

आवश्यक सूचना—रोगी को हमेशा ठंडे जल से स्नान कराना चाहिये। उसपर क्रोध करना या उसे मारना ठीक नहीं। उसे प्रेमपूर्वक रखना और सान्त्वना देना चाहिये। ठण्डी या तर और हलकी चीजें खाने को देना चाहिये।

लकवा या पक्षाघात।

(Paralysis)

शरीर के किसी आधे या समूचे अंग की सञ्चालन और स्पर्शशक्ति का नष्ट हो जाना लकवा कहलाता है। यह लकवा कई तरह का होता है। किसी लकवे में केवल संचालनशक्ति नष्ट होती है, किसी में केवल स्पर्शशक्ति नष्ट होती है, किसी में दोनों शक्ति नष्ट हो जाती है और किसी में कम्प पैदा हो जाता है। यह कभी-कभी समूचे शरीर में, कभी आधे शरीर में, कभी शरीर के किसी खास अंग में और कभी चेहरे में ही होता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३X—मेरुदण्डमे रक्ताधिक्य,आक्रान्त स्थान में झुनझुनी, नयी बीमारी।

बेलेडोना ६ या ३०—शिरमे रक्ताधिक्य, चेहरे का लकवा, एक तरफ लकवा, दूसरी तरफ आक्षेप, मुँह टेढा हो जाना इत्यादि।

डल्कमारा ६ या ३०—ठंड लगने या पानीमें भीगने के कारण लकवा, हाथ पैर और जीभका लकवा, यह अंग बरफ की तरह ठंडे मालूम होना इत्यादि।

कक्युलस ३ या ६—जीभ, चेहरा और पैरका लकवा, हाथ पेर ठंडे, पैरके पंजेमें सूजन, नयी बीमारी इत्यादि। कमजोरी, मूर्च्छा और हृदय की धड़कनवाले रोगियों को इससे विशेष लाभ होता है।

चायना ६ या ३०—बहुत रसरक्त के स्रावके कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

नक्सवोमिका ६ या ३०—शराबियों को यह रोग होना, हाथ पैर और चेहरे के कुछ अंशका लकवा साथही शिरमें चक्कर, कब्जियत, आलसी स्वभाव इत्यादि।

कस्टिकम ६ या ३०—आधे शरीर या चेहरा और जीभका लकवा, शिरमे चक्कर, आँखोंसे कम दिखायी देना, कमजोरी जोड़ोंका अकड़ जाना इत्यादि। पुराने रोगमे अधिक दिनो तक सेवन करने से काफी लाभ होता है।

बराइटा कार्ब ३० और कोनायम ३०—बूढ़ोंके पक्षाघात में इन दवाओं से विशेष लाभ होता है।

ओपियम ६ या ३०—सन्यास रोग के बाद यह रोग होना, खास कर बूढ़ों को. साथ ही कब्जियत, पेशाब में भी रुकावट।

अर्निका ६ या ३०—चोट या वात रोग के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

रसटक्स ६ या ३०—पानी में भीगने, अधिक परिश्रम करने या वात रोग के कारण लकवा होना, आक्रान्त स्थान कड़ा और उसमें दर्द।

प्लम्बम ६ या ३०—समूचे शरीर या किसी विशेष अंग में लकवा, आक्रान्त अंग का सूख जाना, उसमें ऐंठन होना, कम्प के बाद यह रोग होना।

जेल्सीमियम ६ या ३०—किसी अंग की संचालन शक्ति का नष्ट हो जाना, लेकिन ज्ञानशक्ति का मौजूद रहना, जीभ और आँख के पपटे का लकवा, शरीर के निचले अंगों का लकवा, आक्रान्त स्थान में ऐसा मालूम होना मानो कीड़ा रेंग रहा है।

लेकेसिस ६ या ३०—शरीर के बायें अंगोंमें लकवा, लटपटाकर मतवालों की तरह चलना।

फोस्फरस ६ या ३०—अधिक इन्द्रिय सेवा या प्रसवके बाद यह रोग होना, आधे चेहरे का लकवा, पीठसे दर्दका शुरू होना और नीचेकी ओर बढ़ना।

टेरन्टयुला ६ या ३०—कपकपी लिये हुए लकवाकी यह बढ़िया दवा है।

जिङ्कम ३०-लिखते समय हाथ काँपता हो तो इसे देना चाहिये। जेल्सीमियम से भी इसमें लाभ होता है।

इनके अतिरिक्त सीपिया, मर्क्युरियस, स्पाइजिलिया, स्ट्रेमोनियम, आयोडियम, एलुमिना, आर्जेन्टम नाइट, आर्सेनिक, अरममेट, फफर, लेथाइरस, मर्क्युरियस, एन्टिम, टार्ट, एगरिकस, केनेबिस इन्डिका और रूटा आदि दवाएँ भी लक्षणानुसार दी जा सकती है।

आवश्यक सूचना-आक्रान्त स्थान में मालिश करते रहना लाभदायक है। सरदी से बचना चाहिये। बिजली के इलाज से भी अच्छा लाभ होता है, बशर्ते कि किसी चतुर चिकित्सक द्वारा कराया जाय। रोगी को हलके और पुष्टिकारक पदार्थ खाने को देना चाहिये।

मृगी या अपस्मार।

(Epilepsy)

मृगी रोग का वास्तविक कारण अभी मालूम नहीं हो सका, लेकिन दुःख, शोक, भय, क्रोध आदि मानसिक आवेग अधिक इन्द्रिय सेवा हस्त मैथुन आदि दुराचार, मादक पदार्थों का सेवन और माता पिता का यह रोग होना आदि इसके उत्तेजक कारण माने जाते हैं।

इसमे रोग का हमला होने के पहले कभी-कभी शिर में चक्कर, अस्थिरता, शिर मे भार, चेहरा फीका, तबियत ठीक

न मालूम होना आदि लक्षण प्रकट होते हैं। इसके बाद और कभी-कभी अचानक ही रोगी चिल्लाकर जमीन पर गिर पड़ता है, बेहोश हो जाता है और उसके शरीर में खींचन होने लगती है। दाँती बँध जाना, श्वास कष्ट, चेहरा बिगड़ जाना, आँख की पुतलियों का ऊपर चढ़ जाना और घूमते रहना, आँखें खुली रहना, मुँह से फेन निकलना आदि लक्षण भी प्रकट होते हैं। पाँच से लेकर बीस मिनट तक या कभी कुछ अधिक समय तक यह अवस्था रहती है। बाद को रोगी स्वस्थ होता है। कभी-कभी खींचन आदि बन्द हो जाने पर भी रोगी होश में नहीं आता, और कुछ समय तक चुपचाप नींद में पड़े रहने के बाद वह स्वस्थ होता है। यह रोग सांघातिक नहीं होता, लेकिन आग या पानीके पास रोग का अचानक हमला होने पर वह आग में जल मरता है या पानी में डूब जाता है। पेड़ पर चढ़नेवालों को पेड़ पर भी मृगी आती है और वे नीचे गिर कर मर जाते हैं या उनके हाथ पैर टूट जाते हैं।

चिकित्सा।

क्युप्रममेट ३०—यह इस रोग की बढ़िया दवा है। एकाएक चिल्लाकर गिर पड़ना, निश्चित समय पर आक्षेप या खींचन, श्वास कष्ट, हाथ पैर से खींचन का शुरू होना, अनजान मे पेशाब, भय, मानसिक उत्तेजना और पूर्णिमा को रोग का बढ़ना।

बेलेडोना ६ या ३०—चेहरा और आँखें लाल, शिर गरम, कम्प के साथ पीछे की ओर झुक पड़ना, शिर में रक्त-संचार, आँख की पुतली फैली हुई।

कल्केरिया कार्ब ३०—रोग का हमला होने के पहले चिबाने की तरह मुँह चलाना, कलेजे में धड़कन, शिर मे पसीना, भय के कारण, पुराना चर्म रोग दब जाने के कारण या ठंडा पेय पीने के कारण रोगका होना। बच्चों की बीमारी मे इससे विशेष लाभ होता है।

अर्निका ६ या ३०—चोट लगने के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

इनेन्थी क्रोकेटा ३ या ६—जवान आदमियों की नयी बीमारी मे खींचन, मुँह से फेन निकलना, शरीर का अकड़ जाना, दाँतों का बन्द हो जाना, हाथ पैर ठंडे आदि लक्षणों में इससे काफी लाभ होता है।

प्लम्बम ३०—क्युप्रम से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

ओपियम ३ या ६—कभी बेहोशी, कभी होश में रहना नींद के समय रोग का हमला होना, श्वास प्रश्वास मे घड़घड़ाहट इत्यादि।

कस्टिकम ६ या ३०—श्वास कष्ट, भागमाग के समय नाक से खून गिरना, शिर का एक ओर झुक जाना, जीभ काटना, अनजान में पेशाब इत्यादि।

सिउफो ६—हस्त मैथुन के कारण मृगी रोग होने पर तथा पुराने रोग में इससे बहुत लाभ होता है।

इग्नेशिया ६ या ३०—शोक दुःख आदि मानसिक कारणों से रोग, नयी बीमारी, बीमारी के समय होश रहना, ज्वर भाव और आक्षेप।

साइक्यूटा ६—बच्चों की बीमारी, जोड़ों की खींचन, चेहरा नीला और फूला हुआ, एक ही ओर ताकते रहना इत्यादि।

आर्टिमेसिया १ X—बारंबार जल्दी-जल्दी रोग का आक्रमण होने पर इसे देना चाहिये।

एसिड हाइड्रो ३ X—नयी बीमारी, एक ही ओर तेज दृष्टि से देखते रहना, चिल्लाकर गिरना, बेहोश हो जाना और मुँह से फेन निकलना।

केनेबिस इन्डिका ३—इस रोग के साथ पाकाशय, मूत्र यन्त्र और जननेन्द्रिय के रोगों की शिकायत हो तो इसे आजमाना चाहिये।

एमिल नाइट्रेट—इस दवा को रोग के समय सुंघाना चाहिये।

होमियोपैथिक दवाएँ।

यह पहले ही बतलाया जा चुका है कि महात्मा हनीमैनने जिस समय होमियोपैथीका प्रचार आरंभ किया, उस समय केवल सत्ताईस दवाओंकी ही परीक्षा की थी। बादको और दवाओंकी भी परीक्षा की गयी। अब भी यह काम बराबर जारी है। होमियोपैथीके बड़े-बड़े आचार्य नित्य नयी दवाओं-की खोज किया ही करते हैं। इस समय होमियोपैथिक दवाओंकी संख्या दो हजारके करीब जा पहुँची है परन्तु यह सब दवाएं न तो यहाँ मिलती ही हैं, न कोई चिकित्सक इन सबोंका उपयोग ही करता है। खास-खास चुनी हुई दवाएं ही यहां अक्सर काममें लायी जाती हैं और वे दवा बेचने-वालोंके यहां आसानीसे मिल भी जाती हैं। ऐसी दवाओं-की संख्या दो-ढाई सौ से अधिक नहीं है।

होमियोपैथिक दवाओंका मूल अर्क इंग्लैण्ड, अमेरिका और जर्मनीमें तैयार होता है। वहाँसे यहाँके बड़े-ब व्यवसायी मगाकर बेचा करते हैं। मूल अर्कमें स्पिरिट आदि मिला कर भिन्न-भिन्न शक्ति या नम्बरकी दवा तैयार की जाती है। यह काम बहुधा यहीं कर लिया जाता है। ऐसा करनेसे दवा बहुत सस्ती पड़ती है। अमेरिका या जर्मनीसे एकदम बनी बनायी दवा मगानेपर वह तेज पड़ती है।

होमियोपैथिक दवा चार तरह के पदार्थोंसे तैयार की जाती है। यथा-(१) उद्भिज्ज अर्थात् पौधे, वृक्ष तथा जड़ी

कोलो फाइलम ३ या ६—ऋतुस्राव के समय स्त्रियों को यह रोग होना ।

चायना ६ या ३०—हस्तमैथुन, रस रक्त का स्राव, स्नायविक दुर्बलता, कमज़ोरी आदि कारणों से रोग होने पर इसे देना चाहिये। डिजिटेलिस और फोस्फरस भी इसी अवस्था में लाभ करते हैं।

इनके अलावा नयी बीमारी में केलीब्राम, एवसिन्थियम, स्ट्रेमोनियम, आर्जेन्टम नाइट्रिकम, हायोसायमस और जिंजिया तथा पुरानी बीमारी में जिङ्कम, फोस्फरस, सल्फर और सिलिका आदि दवाएं भी लाभ करती है। केलोम्यूर १२X, केलीफस १२X चूर्ण और केलीसल्फ १२X चूर्ण भी आजमाना चाहिये।

आवश्यक सूचना—यह रोग होने पर हिस्टीरिया का भ्रम हो सकता है। हिस्टीरिया में मृगी की तरह रोगी पूर्ण रूप से बेहोश नहीं होता न बेहोश होने के पहिले चिल्लाता ही है। पूरी बेहोशी, बेहोशी के पहले चिल्लाना और बेहोशी में खींचन का मौजूद रहना—इन लक्षणों से मृगी का पार्थक्य किया जा सकता है। रोग के समय रोगी के दांतों में लकड़ी का एक टुकड़ा या कोई दूसरी चीज रख देना चाहिये वर्ना जीभ कट जाने का भय रहता है। रोग के समय उसके दूर

आदि से बचाना चाहिये। उसे अकेले कहीं न जाने देना चाहिये। ठंडे जल में स्नान, व्यायाम, खुली हवा में घूमना और स्वास्थ्य के नियमों का पालन करना लाभदायक है।

हिस्टीरिया या गुल्मवायु।

(Hysteria)

यह रोग प्रायः स्त्रियों को ही होता है। कोई आकस्मिक दुर्घटना, द्वेष, आलसी स्वभाव, विलास प्रियता, जरायु दोष, प्रेम में बाधा, शोक, दुःख आदि कारणों से स्नायविक उत्तेजना होने के कारण यह रोग होता है। कभी-कभी दूसरी स्त्रियों को रोग के समय देखने से भी स्वस्थ स्त्रियों को यह रोग हो जाता है। पुरुषों को यह रोग शायद ही होता है।

इस रोग में स्त्रियाँ बेसिलसिले की बातें करती हैं और हँसकर या चिल्लाकर बेहोश हो जाती हैं। बेहोशी में दाँती लग जाना, हाथ पैर पटकना, मुँह से फेन निकलना। हाथ पैर का अकड़ जाना आदि लक्षण प्रगट होते हैं। रोगिनी का पेट में एक गोला ऊपर की ओर उठता मालूम होता है। इसी लिये इसे गुल्मवायु या वायुगोले की बीमारी भी कहते हैं। इसमें पूर्ण रूप से बेहोशी नहीं आती। आँखें अधखुली, पुतली फैली हुई, अनियमित और दीर्घ श्वास-प्रश्वास आदि लक्षण

भी प्रकट होते हैं। हमारे देश में अज्ञानी मनुष्य इसे भूत व्याधि मानकर झाड़ फूँक और गण्डा तावीज से इसे आराम करने की चेष्टा करते हैं, परन्तु इससे लाभ के बदले उलटी हानि ही होती है।

चिकित्सा।

प्लेटिना ६ या ३०—उदासी, बेचेनी, अधिक ऋतुस्राव या रजस्राव बन्द होजाने के कारण यह रोग होना इत्यादि। जो स्त्रियाँ दूसरो के सामने हमेशा अपना दुखड़ा रोया करती हैं उन्हे इससे विशेष लाभ होता है।

इग्नेशिया ६ या ३०—भय, शोक, दुःख आदि मानसिक आवेगोंके कारण यह रोग होना, श्वास कष्ट, पेट से गले तक गोला उठता मालूम होना, आक्षेप या खींचन, आँखें जलपूर्ण, कभी खुशी और कभी उदासी आदि लक्षणों में इसे देना चाहिये। जो स्त्रियां दूसरों के निकट अपना दिल नहीं खोलतीं और भीतर ही भीतर दुःख से घुला करती हैं, उन्हे इससे विशेष लाभ होता है।

पल्सटिला ६ या ३०—रज बन्द होने या ऋतु के समय दर्द के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये। इसी अवस्था में सेवाइना सिमिसी और कक्युलस से भी काफी लाभ होता है।

एसाफिटिडा ६ या ३०—पेट से लेकर गले तक गोले का उठना साफ-साफ मालूम होना, पेट में गड़गड़ाहट और शूल जैसा दर्द, अधोवायु निकलने से आराम, रोगिणी का खुशी के साथ हँसना इत्यादि ।

बेलेडोना ३ या ३०—बहुत बकझक, मस्तिष्क विकार, सोने की इच्छा होने पर भी सो न सकना, नींद में गों गों करना, पुरानी बातें याद करना और पानी में डूब मरने की इच्छा करना ।

सिमिसिफिउगा ३ या ६—बायें स्तन के नीचे दर्द, चिड़चिड़ा स्वभाव, जी में दुःखित रहना, जरायु दोष से यह रोग होना ।

हायोसायमस ६ या ३०—बेवकूफ और पागलों के जैसे लक्षण, हँसना, गाना, रोना, चिल्लाना, नंगे हो जाना, इत्यादि ।

वेलेरियाना ६-रोग के समय ऊटपटांग बातें करना, प्रलाप या बकझक इत्यादि ।

अरममेट ६ या ३०—फिट या बेहोशी के समय पारी-पारी से हँसना और रोना, आत्महत्या करने की प्रबल इच्छा, भय, अधिक रजस्राव आक्षेप इत्यादि ।

नक्समस्केटा ६ या ३०—भली बुरी सभी बातों में हँसना, अपने आप बड़बड़ाते रहना, मुँह सूखा होने पर भी प्यास का न होना, भोजन के बाद पेट का फूलना, निद्रालुता।

केम्फर—मूर्च्छा के समय से सुँघाने से रोगिणी होश आ जाती है।

मस्कस—इसका मदर टिंचर सुँघाने और १ या ३ क्रम सेवन कराने से लाभ होता है।

इनके अलावा कस्टिकम,नक्सवोमिका, केमोमिला, केने-बेस इन्डिका, कोफिया, टेरेन्टयुला, जिङ्कमफस, सीपिया, कोनायम, कोलोफाइलम, आर्सनिक और लेकेसिस आदि दवाएं भी लक्षणानुसार देने से लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—हिस्टीरिया के रोगी को ठंडे और स्वास्थ्यकर स्थान में रखना चाहिये। फिट या वेहोशी के समय कपड़े ढीले कर देने चाहिये या निकाल देने चाहिये। मुँह और आँखों पर ठण्डे पानी का छींटा देना और हवा करना लाभदायक है। गरम और उत्तेजक पदार्थ खाने को न देना चाहिये। ठण्डे पानी से नित्य नहाना, परिश्रम करना, खुली हवा का सेवन, स्वास्थ्यकर नियमों का पालन आदि लाभदायक है।

मूर्च्छा (Fainting)

किसी तरह के मानसिक आवेग, शरीर के भीतरी यन्त्रों की खराबी या किसी शारीरिक कष्ट के कारण मूर्च्छा या वेहोशी हुआ करती है। इसमें कुछ समय के लिये चेतना-

शक्ति लोप हो जाती है, दाँत बँध जाते हैं, श्वास प्रश्वास की गति मन्द हो जाती है और रोगी चुपचाप पड़ा रहता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ X-किसी दर्द के कारण या डर जाने के कारण बेहोश हो जाने पर इसे देना चाहिये।

ओपियम ६ या ३०-केवल भय के कारण मूर्च्छा आने पर इससे भी काफी लाभ होता है।

इग्नेशिया ६ या ३०-शोक, दुःख, भय, क्रोध आदि मानसिक आवेगों के कारण मूर्च्छा आना।

चायना ६ या ३०-कमजोरी, रसरक्त का अधिक स्राव होने के कारण यह रोग होना।

अर्निका ३ या ६-गिर पड़ने या किसी तरह की चोट लगने के कारण बेहोश हो जाना।

विरेट्रम एल्ब ६ या ३०-किसी घोर निराशा के कारण मूर्च्छा, शिर में ठंडा पसीना।

इनके अतिरिक्त डिजिटेलिस, कार्बोवेज, सल्फर, कैमोमिला और लैकेसिस आदि दवाएं भी आजमायी जा सकती हैं।

आवश्यक सूचना-मूर्च्छा आने पर रोगी को खुली हवा में सुलाना चाहिये या हवा करना चाहिये। चेहरे पर ठंडे

पानी के छींटे देना चाहिये और शरीर के कपड़े निकाल देना चाहिये। कपूर, एमोनिया या कस्तूरी सुंघाने से मूर्च्छा शीघ्र दूर हो जाती है। तेज बीमारी में १५–२० मिनट के अन्तर से और लाभ होने पर देरी से दवा देना चाहिये। यदि रोग का कोई खास कारण मौजूद हो तो उसका इलाज करना चाहिये ताकि रोग का पुनराक्रमण न हो।

संन्यास रोग।

(Apoplexy)

अपरिमित आहार, मादक पदार्थों का अधिक सेवन, भय दुःख, शोक आदि मानसिक आवेग चिन्ता अधिक, मानसिक परिश्रम, अधिक इन्द्रिय सेवा, बवासीर के रक्त या रजःस्राव का एकायक बन्द हो जाना, धूप या चोट लगना आदि कारणों से मस्तिष्क में रक्ताधिक्य, जलसंचय या धमनी में [illegible] होनेपर इस रोग का आक्रमण होता है।

रोग का आक्रमण होने के पहले कभी-कभी सिर में चक्कर, निद्रालुता सिरदर्द बोलने में तकलीफ आदि लक्षण प्रकट होते हैं परन्तु साधारणतया बिना किसी पूर्व लक्षण के ही रोगी एकायक बेहोश होकर गिर पड़ता है। इस अवस्था में रोगी का चेहरा लाल [illegible] श्वास प्रश्वास घड़घड़ाहट [illegible] [illegible] जाना [illegible] [illegible] ठंडा हो जाना चेहरा [illegible] [illegible] हुए आदि लक्षण प्रकट [illegible] [illegible]। प्रायः [illegible] दिन [illegible] [illegible] [illegible]

हिमाङ्गावस्था उपस्थित होकर रोगी की मृत्यु हो जाती है। यदि बीमारी साधारण हुई तो रोगी को कुछ-कुछ होश बना रहता है और वह दो तीन दिन के बाद होश में आ जाता है। परन्तु ऐसा बहुत कम होता है। यदि रोगी आराम भी हुआ तो उसके आधे शरीर में लकवा हो जाता है, बोलने की शक्ति नष्ट हो जाती है और मस्तिष्क भी खराब हो जाता है। यह रोग प्रायः बड़ी उम्र के पुरुषों को ही होता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ X या ६—शिर गरम, आँखें, और चेहरा लाल, आँखें स्थिर, जीभ का लकवा और कम्पन, साफ साफ न बोल सकना, निगलने में कष्ट, बहुत बेचैनी इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

आर्निका ६ या ३०—शिर में रक्त-संचय या चोट लगने के कारण यह रोग होना।

बेलेडोना ६ या ३०—बेहोशी, बोल न सकना, चेहरा और हाथ पैरों में खींचन या लकवा, चेहरे पर रक्ताधिक्य के लक्षण, अनजान में पेशाब इत्यादि लक्षणों में इससे काफी लाभ होता है।

ओपियम ६ या ३०—घोर निद्रालुता या बेहोशी, आँखें अधखुली, श्वास कष्ट, हाथ पैर में खींचन, रोगी का

गो गों करना, दीर्घ श्वास, या श्वास में घड़घड़ाहट, चेहरा भर्राया हुआ और लाल, हाथ पेर ठंडे इत्यादि लक्षणों में घण्टे-घण्टे पर यह दवा देने से लाभ होता है।

वेराइटाकार्ब ६—बूढ़े और शराबियों को यह रोग होने पर इसे देना चाहिये। जीभ और दाहिने अंग के लकवा में इससे अधिक लाभ होता है।

नक्सवोमिका ६ या ३०—शिर में रक्त संचय होने या शिर से रक्त निकलने के कारण अथवा रात्रि जागरण तथा उत्तेजक पदार्थों के सेवन के कारण यह रोग होना।

हायोसायमस ३ या ६—एकाएका बेहोशी, मुँह से फेन निकलना, निगल न सकना, अनजान में पाखाना और पेशाब हो जाना।

हाइड्रोसियेनिकएसिड ६ या ३०—आखें स्थिर, पुत-लियाँ ऊपर टँगी हुई नाड़ी लुप्तप्राय श्वास प्रश्वास में घड़-घड़ाहट और खींचन।

लोरोसिरेसस ३ या ६—हाइड्रोसियेनिक एसिड से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

ग्लोनइन ३—शिर में चक्कर शिर में आगे और पीछे दर्द, मिचली प्रकाश से रोग का बढ़ना।

इनके अलावा विरट्रम विरिडि, सेङ्गुइनेरिया, एस्कुलस, कोनायम, जेल्सीमियम और एनाकार्डियम आदि दवाए भी

दी जा सकती है । संन्यास के बाद लकवा हो जाने पर कास्टिकम, क्युप्रम, कक्युलस, सल्फर, प्लम्बम, जिङ्कम, फोस्फरस, और एकोलिन या लकवा रोग की अन्यान्य दवाएं आजमानी चाहिये ।

आवश्यक सूचना—रोगी बेहोश हो जाने पर उसे हवादार स्थान में सुलाना चाहिये, शरीर के कपड़े निकाल देने चाहिये और सिर पर बरफ या जलपट्टी चढ़ानी चाहिये । पथ्य हलका और पुष्टिकर होना चाहिये । गरिष्ठ और शराब मसाले आदि उत्तेजक चीजें न खानी चाहिये । सेंक और मालिश से हाथ पैरों की अकड़न में लाभ होता है । रोगी दवा न खा सके तो जीभ पर रख देना चाहिये या रुई में डाल कर सुँघाना चाहिये ।

धनुष्टंकार ।

(Tetanus)

यह एक आक्षेपिक स्नायु रोग है । प्रायः चोट लगने और कट जाने के कारण ही यह रोग होता है । कोई कोई एक तरह के विषाक्तजीवाणु को भी इसका कारण मानते हैं । तुरन्तके जन्मे हुए बच्चों को भी नाला काटनेके दोषसे यह रोग होता है । इसमें मुँह न फैला सकना, गर्दन का अकड़ जाना, दाँत बँधजाना, जबड़े या भौंह का रुक जाना, ऐसा मालुम होना मानो रोगी हँस रहा है, बाद को चेहरे की और शरीर की

वृटियोंसे (२) खनिज अर्थात् खानसे निकले हुए पदार्थोंसे (३) प्राणिज अर्थात् जीवजन्तु या प्राणियोंसे प्राप्त पदार्थोंसे और (४) रोगज अर्थात् रोगके कीटाणु आदिसे। इन पदार्थोंको स्पिरिटमें गलाकर जो मूल अर्क तैयार किया जाता है, उसे मदर टिञ्चर (Mother tincture) कहते हैं। जो चीजें स्पिरिटमें नहीं गलतीं, उनकी मूल औषधि कूट-पीसकर चूर्णके रूपमें तैयार की जाती है। जो चीजें केवल पानीमें ही घुल सकती हैं, उनके मदर टिञ्चर पानीमें घोलकर तैयार किये जाते हैं।

दवाओंके क्रम।

दवाओंके मदर टिञ्चर या मूल अर्क बड़े तेज होते हैं। उनमे केवल घुलनेभरके लिये स्पिरिट या पानी आदि मिला रहता है। होमियोपैथीका तो सिद्धान्त है कि दवा सूक्ष्मसे-सूक्ष्म मात्रामे देनी चाहिये, इसलिये यह मानी हुई बात है कि यदि यह मदर टिञ्चर ही दवाके रूपमें प्रयोग किये जाय तो अधिकांश स्थानोंमे इनसे कोई लाभ नहीं हो सकता। इसलिये मदर टिञ्चरमें स्पिरिट आदि मिलाकर करनेके लिये तो उसकी तेजी घटा दी जाती है लेकिन ऐसा करनेसे दवा सूक्ष्मसे-सूक्ष्म रूप धारण करती चली जाती है जिससे उसकी रोग आराम करनेकी शक्ति घटनेके बदले बढ़ती जाती है और वह उत्तरोत्तर तेज होती जाती है।

पेशियों में अकड़न, शरीर का आगे पीछे की ओर झुककर धनुष की तरह टेढ़ा हो जाना आदि लक्षण प्रगट होते हैं और अनजान में पाखाना पेशाब, श्वासकष्ट, जोरों की खींचन आदि लक्षण प्रकट होकर रोगी की मृत्यु हो जाती है। बच्चों का यह रोग बहुत ही सांघातिक होता है। लोग इसे भूत व्याधि मानकर कुचिकित्सा करते हैं और अपनी अज्ञानता के कारण उसे वास्तविक चिकित्सा से वंचित रखते हैं।

चिकित्सा।

हाइपेरिकम १X–रोग के आरम्भ में ही इसे देनेसे अनेक वार आश्चर्यजनक लाभ होता है।

एकोनाइट ३ या ६–बुखार और उत्कण्ठा, चेहरा कभी लाल, कभी फीका, ठंडा पसीना, शरीर का पीछे की ओर झुक जाना।

अर्निका ६ या ३०–चोट लगने के कारण यह रोग होना, शिर गरम और शरीर ठंडा, खींचन और श्वास कष्ट इत्यादि।

साइक्यूटा ६–शरीर कड़ा, स्थिर दृष्टि, बेहोशी अंगों का टेढ़ा हो जाना, श्वासकष्ट, चेहरा लाल मुंह से फेन निकलना, शरीर का पीछे की ओर झुक जाना।

केली ब्रोमेटम १X–सोनेके पहले इसे सेवन करने से वहुत लाभ होता है।

पियोनिया ३X–केलीब्रोम से लाभ न होने पर इसे आजमाना चाहिये।

चायना ६–कमजोरी के कारण रोग का होना और छाती पर भार मालूम होना।

सल्फर ३०–रोगके समय कलेजे में जोरों की धड़कन पैदा हो जाना।

आवश्यक सूचना–उत्तेजक पदार्थ न खाने चाहिये। चित सोना भी वन्द कर देना चाहिये।

लू लगना।

(Sunstroke)

साधारणतः गरम हवा या लू लगने से जो वीमारी होती है, उसे हमलोग लू लगना कहते हैं। परन्तु तेज धूप और भट्ठी, एञ्जिन या कहीं भी आँचके सामने रहने से ठीक वैसी ही वीमारी हो सकती है, जैसी लू लगने से होती है। यह रोग आमतौर से गरमी के दिनों में ही होता है।

इस रोगमें आँख और चेहरा लाल, शिरमें चक्कर और दर्द, वहुत कमजोरी, जाड़ा सा मालूम होना, वुखार, दृष्टि-क्षीणता, पेट में दर्द, कै या मिचली, वेहोशी, श्वासकष्ट,

पाखाना पेशाब का रुक जाना या बारंबार पेशाब होना, अंग-प्रत्यंग की खींचन आदि लक्षण प्रकट होते हैं। बहुत तेज बुखार या हिमाङ्गावस्था के कारण कठिन उपसर्ग उत्पन्न होने पर रोगीकी मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ६ या ३०—तेज धूप लगने के कारण यह रोग होना, तेज प्यास, शिरमें दपदपी, स्नायविक उत्तेजना, बेचैनी, उत्कंठा इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

बेलेडोना ३ या ६—शिरमें भार और तेज दर्द, ऐसा मालूम होना मानो शिर फट जायगा, रोशनी और आवाज का बरदास्त न होना, रोगी का बहुत बक झक करना इत्यादि।

स्ट्रैमोनियम ६ या ३०—प्रलाप की अधिकता में बेलेडोनासे लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

ब्रायोनिया ६—शिर में दर्द, हिलने डोलने से दर्दका बढ़ना, मिचली, कब्जियत और बेहोशी।

ग्लोनइन ६ या ३०—यह इस रोगको एक बढ़िया दवा है। तेज शिर दर्द शिरमें चक्कर, बेहोशी चेहरा और आंख लाल श्वासकष्ट कलेजे में जोरों का धड़कन इत्यादि।

हेलीबोरस ६—शरीर की गरमी का बहुत घट जाना तन्द्रा और शिर दर्द

विरेट्रम विरिडि ६—शरीर की गरमी का बहुत अधिक बढ़ जाना और दस्त।

केम्फर १ या ३—एकाएक शरीर का ठंडा पड़ जाना और हृदयकी गति का बन्द हो जाना।

जेल्सीमियम १X-शिरमें चक्कर, शिरमें दर्द, बारंबार पेशाब आदि लक्षणों और रोगकी प्रारम्भिक अवस्था में इससे लाभ होता है।

इनके अतिरिक्त केक्टस, नेट्रम म्यूर, ओपियम, कार्बोवेज हायोसायमस, एमिल नाइट्रेट, एन्टिमक्रूड, लेकेसिस, अर्निका आदि दवाओं से भी लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—रोगीको ठंडे पानीसे नहलाना, शिर पर ठंडा पानी छोड़ना, कपाल पर जलपट्टी चढ़ाना, शिरपर बरफ देना आदि लाभदायक है। मिश्रीके शर्बत में नीबूका रस डालकर पिलाने से रोगीको तत्काल शान्ति मिलती है। कच्चे आमका पना इस रोगकी अमोघ औषधि मानी जाती है। खूब पतला सत्तू नमक डालकर पिलाने से भी काफी लाभ होता है।

स्नायुप्रदाह।

(Neuritis)

शरीर के सभी या कुछ स्नायुओं का फूल जाना, लाल हो जाना और उनमें दर्द पैदा हो जाना, स्नायु प्रदाह कहलाता है। सर्दी या चोट आदि लगना तथा यक्ष्मा, कोढ़ या भीतरी यंत्रों की खराबी के कारण यह रोग होता है इसमें आक्रान्त स्थानमें जलन या तनाहट होती है और कभी कभी वह स्थान शून्य भी मालूम होता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६—ठंडी हवा लगने के कारण यह रोग होना, तेज और असह्य वेदना, अस्थिरता, अनिद्रा इत्यादि।

बेलेडोना ३\—तेज बुखार, आक्रान्त स्थान को छूनेसे दर्दका बढ़ना दपदपी, नोचने या फाड़ने जैसा दर्द, एकायक दर्दका आरम्भ होना और एकायक गायब हो जाना शामको दर्द का बढ़ना।

आर्सेनिक ६ या ३०—रात में दर्दका बहुत बढ़ना गरम से आराम मालूम होना बहुत कमजोरी और बेचैनी।

स्ट्रिकनिया ३\—ऊपर के लक्षण में आर्सेनिक से लाभ न होने पर देना चाहिये।

नक्स वॉमिका ६ या ३०—मद्य और [illegible] खाने से [illegible] लेकर शुरू तक रोग लक्षण का आक्रान्त स्थान [illegible] जड़ मालूम होना, [illegible] का ...

मिमिसिफिउगा ३x—मासिक खराबी होने पर स्नायुशूल हो तो इसे देना चाहिये।

मर्क्युरियस ६—दांत के कारण होने, रात में बिछौने की गर्मी से तकलीफ का बढ़ना, आक्रान्त स्थान का ठंडा इत्यादि। बेलेडोना के बाद इससे अधिक लाभ होता है।

रसटाक्स ६ या ३०—कट जाने जैसा दर्द, गरम प्रयोग और हिलने डोलने से आराम मालूम होना।

लेकेसिस ६ या ३०—नींद के बाद रोग लक्षण बढ़ जाते हों तो इसे देना चाहिये।

स्नायुशूल ।

(Neuralgia)

सर्दी या चोट लगना, ऋतु परिवर्तन, अधिक परिश्रम उपदंश या धातु दोष आदि अनेक कारणों से यह रोग होता है। इसमें आक्रान्त स्थान में बिजलीसी चमक जाती है। तीर लगने, सलाई भोंकने, काटने या दबाने जैसा दर्द होता है। यह रोग चेहरा, शिर, मस्तिष्क का पिछला भाग, गर्दन, बगल कमर, स्तन, पैर आदि अनेक अंगों में होता है और उन्हीं

अंगोके नाम सम्बोधित किया जाता है। वात रोगके परिच्छेद में गृघसी वातका इलाज लिखा जा चुका है। वह भी इसी रोग के अन्तर्गत है। इस रोगकी प्रधान प्रधान दवाओंके लक्षण नीचे अंकित किये जाते है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६—सर्दी के कारण यह रोग होना, चमक जैसा दर्द, बेचैनी और घबड़ाहट।

बेलेडोना ६ या ३०—चेहरे का स्नायुशूल, बुखार, अनिद्रा, छूने, हिलने-डोलने और ठंडी हवा लगने से तथा दोपहर से लेकर आधी रात तक दर्दका बढ़ना।

आर्सेनिक ६ या ३०—किसी निर्दिष्ट समय पर दर्द का शुरू होना, सुई चुभोने जैसा दर्द और उस में जलन, आधी रात के बाद रोग का बढ़ना गरम प्रयोग से आराम मालूम होना।

ब्रायोनिया ६ या ३०—हिलने डोलने से रोग लक्षणों का बढना।

रसटक्स ६ या ३०-पेरमें झुनझुनी, बैठे या पड़े रहने पर तकलीफ का बढ़ना चलने फिरने से आराम पाना ने भीगने या तर हवा लगने के कारण यह रोग होना

कास्टिकम ६ या ३०—चेहरे का स्नायुशूल, दपदप वेदना, खाँसनेके समय अनजान में पेशाब का हो जाना, अकड़जाने जैसा दर्द।

स्पाइजिलिया ३—शिर और चेहरे में काटने या नोचने जैसा दर्द, आँखों तक दर्दका फैलना, शिर झुकाने या हिलने से दर्दका बढ़ना, साथही कलेजे में धड़कन और बेचैनी।

जेल्सीमियम ३—स्नायविक दुर्बलता के कारण सब अंगों का फड़कना, साथही स्नायुशूल, पीठ, कन्धे और गर्दन के पिछले हिस्से में स्नायुशूल।

मेजिरियम ३०—पैरका स्नायुशूल, बाहरसे पैर ठंडा, अन्दर से गर्मी मालूम होना, शामसे लेकर रात तक रोग लक्षणों का बढ़ना।

कोलोसिन्थ ६ या ३०—छुरी से काटने जैसा तेज दर्द, अस्थिरता, हिलने से दर्दका बढ़ना, गरम प्रयोग, पूर्ण विश्राम और दबाने से आराम मालूम होना।

कैमोमिला ६ या ३०—चिलकने या सुई चुभोने जैसा तेज दर्द, चिल्लाना, दर्द के कारण बेचैनी।

मैग्नेशिया फस ६x या १२x विचूर्ण—सब तरह के स्नायुशूल में इससे लाभ होता है। इसे गरम पानी के साथ सेवन करना चाहिये।

सिमिसिफिउगा ३X या ६—वात रोगके साथ स्नायुशूल होनेपर इससे अधिक लाभ होता है।

कोफिया ६ या ३०—अनिद्रा और अस्थिरता, रातमें रोग लक्षणों का बढ़ना, दाहिनी ओर के आधे शिरमें तेज स्नायुशूल, हिलने डोलनेसे और शोरगुलसे दर्द का बढ़ना।

मर्क्युरियस ६ या ३०—उपदंश दोष, रात में दर्दका बढ़ना, बहुत पसीना आना लेकिन उससे कोई आराम न मालूम होना।

आर्निका ६ या ३०—चोट लगने के कारण यह रोग हो तो इसे देना चाहिये।

पल्सेटिला ६ या ३०—छुरी से काटने या फाड़ने जैसा दर्द, गरम स्थान में और शामके वक्त दर्दका बढ़ना, ठंडे स्थान में आराम मालूम होना इत्यादि।

इनके अतिरिक्त अर्जनाई, कल्केरिया, लाइको पोडियम, काटो लेका रूटा, सीपिया, सल्फर, नेफेलियम, हिपर, इग्नेशिया, केली, हाइडो, केली बाइक्रोम, लेकेसिस, प्लम्बम, केक्टस, हाइपेरिकम, प्लेन्टेगो, केलमिया, जिङ्कमफस आदि दवाएं भी लक्षणानुसार फायदा करती है।

आवश्यक सूचना—नये रोग में प्रतिदिन ३-४ बार और पुराने रोग में प्रतिदिन एक बार दवा देना काफी है। पूर्णरूप से विश्राम करना चाहिये। सर्दी अनियमित आहार विहार

इस तरह दवाको तेज बनानेके लिये होमियोपैथिक दवाओंके १० वें, सौवें, हजारवें, दस हजारवें और लाखवें क्रमतक तैयार किये जाते हैं। दसवाँ क्रम दिखानेके लिये दवाका नाम लिखकर उसके आगे X., सौवें क्रमके आगे कुछ नहीं, ५०० के आगे D., हजारके आगे M, दस हजार के आगे C. M., पचास हजार के आगे D. M., और एक लाखके आगे M. M, प्रभृति सांकेतिक चिह्न लिखे जाते हैं। यदि कहीं "आर्सेनिक ६ X" लिखा हो तो समझना चाहिये कि आर्सेनिकके दसवें क्रममेंसे छठे क्रमकी दवा है। यदि केवल "आर्सेनिक ६" लिखा है, तो समझिये, कि आर्सेनिकके सौवें क्रममेंसे छठा क्रम है। यदि "आर्सेनिक M" लिखा हो तो समझ लीजिये कि आर्सेनिकका हजारवाँ क्रम बतलाया गया है।

दवाओंके १x, २x, ३x, ६x, आदि दसवें क्रम, तथा ३, ६, १२, १८ और ३० आदि सौवें क्रम निम्न या हलके क्रम माने जाते हैं। इससे बड़े क्रम उच्च या तेज क्रम माने जाते हैं। कोई-कोई १२, १८, और ३० क्रमको मध्यम क्रम कहते हैं।

नीचे हम पाठकोंकी साधारण जानकारीके लिये क्रम तैयार करने की विधि अंकित करते हैं। होमियोपैथीके विद्यार्थियोंको अवश्य इससे लाभ होगा, परन्तु साधारण पाठकोंको जान रखना चाहिये कि उन्हे कभी भी क्रम तेयार करनेकी झंझट न करनी होगी। दवा वेचनेवालो के यहाँ

वेराइटा, कस्टिकम, एसिडफस, स्ट्रेमोनियम, एकोनाइट, मर्क्युरियस सल, इग्नेशिया, एन्टिमटार्ट, हायोसायमस, जिङ्कम और पिकरिक एसिड आदि दवाओं से भी लाभ होता है ।
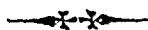
स्नायविक दुर्वलता ।

(Neurasthenia)

अधिक मानसिक परिश्रम, अधिक इन्द्रिय सेवा या हस्तमैथुन, वारंवार गर्भधारण करना इत्यादि कारणों से प्रायः युवा स्त्री पुरुषों को ही यह रोग होता है । इस रोग में चिढ़ जाना, जरा मे ही रो देना, अनिद्रा, शिरदर्द, शिरमें चक्कर, भूख न लगना, अरुचि, संगमशक्ति का अभाव, स्नायुशूल, स्मरण शक्ति की कमी, कलेजेमें धड़कन, एकान्त प्रियता, विरक्ति, हिस्टीरिया, शारीरिक और मानसिक सुस्ती, शरीर और हाथ पैरोमे ऐंठन आदि लक्षण प्रगट होते हैं ।

चिकित्सा ।

एकोनाइट ३ X–कहीं भी अकेले पड़ जाने पर रोगीको डर मालूम होना ।

पिकरिक एसिड ६–अधिक चिन्ता और परिश्रम के कारण दिमाग की थकावट थोड़े परिश्रम मे ही थक जाना पीठमे दर्द इत्यादि ।

मस्तिष्क प्रदाह में आरम्भ ही से कोई स्नायविक क्रिया या स्पर्शशक्ति लोप हो जाती है, झिल्ली प्रदाह में पहले ही से ऐसा नहीं होता। मस्तिष्क प्रदाह में प्रलाप नहीं होता, झिल्ली प्रदाह में प्रलाप की प्रधानता रहती है। इसके सिवा अन्यान्य सभी लक्षण प्रायः एक समान होते हैं।

क्रोध शोक आदि मानसिक आवेग, सर्दी या गर्मी, चोट, टायफाइड, लाल ज्वर, हामज्वर, कान या नाकका प्रदाह, फोड़ोका बैठ जाना, संक्रामक रोगों से पीड़ित होना, उत्तेजक पदार्थों का सेवन, न्युमोनिया आदि अनेक कारणों से और अनेक बीमारियों के साथ यह रोग होते हैं। तेज बुखार, जोरों का शिरदर्द, शिर और गलेकी नसोंका फड़कना और दपदप होना, प्रकाश और आवाज बरदास्त न होना, अनिद्रा, प्रलाप, मिचली और कै, पुतली संकुचित या फैली हुई और आक्षेप आदि इन रोगोंके प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६—रोगके आरम्भ में तेज बुखार, मस्तिष्क में रक्त संचय, चेहरा लाल, उत्कंठा, मृत्युभय, अनिद्रा, अस्थिरता, बारंबार करवट बदलना, उठ बैठने पर शिर मे चक्कर या बेहोशी।

एपिस ३ X-यह एक बढ़िया दवा है। तकिये मे शिर रगड़ना, जोरसे चिल्ला उठना आदि लक्षणो में और नयी

बीमारी में इसे देनेसे अनेक वार दूसरी दवा की जरूरत नहीं पड़ती।

जिङ्कम ३ X—एपिस से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

बेलेडोना ६ या ३०—शिरमें तेज दर्द और दपड़पी. आँख और चेहरा लाल, बहुत बकझक करना, भागने की इच्छा करना, चिल्लाना. मारना काटना. तेज बुखार. नींद से चौंक पड़ना. रोशनी बर्दास्त न कर सकना इत्यादि।

ब्रायोनिया ६ या ३०—शिर में रक्त संचय. शिरदर्द विकार में अपने नित्यकर्म—व्यापार व्यवसाय या खेल कूदकी बातें करना. बाहर होने पर घर जानेकी इच्छा प्रकट करना. प्यास, कब्जियत हिलने-डोलने से तकलीफ का बढ़ना इत्यादि।

आर्निका ६ या ३०—चोट लगने के कारण यह रोग होना मस्तिष्क में रक्त संचय और निद्रा शिर गरम शरीर ठंढा इत्यादि।

स्ट्रैमोनियम ६ या ३०—गहरी बेहोशी तेज प्रलाप मारने दौड़ना भागना अंधेरे में अकेले में और नींद खुलने पर डरना, दांत किटकिटाना दांतों पर मैल जमना हिचकी दुर्गन्ध वाला और पतला मल इत्यादि।

चाहिये। यह रोग बहुत ही खतरनाक है। शुरू से ही सद्
चिकित्सक से इलाज कराना चाहिये।

मस्तिष्क में रक्ताधिक्य।

(Rush of Blood to the Head)

हृदय की खराबी, उत्तेजक पदार्थों का सेवन, समुचि(त) शारीरिक परिश्रम न करना, हर्ष, शोक, भय आदि मानसि(क) आवेग रक्तस्राव आदि जनित कमजोरी आदि कारणों से शिर में रक्तसंचय होता है।

शिरमें चक्कर, उसके साथ कभी कभी बेहोशी, चेहरा लाल, शिर गरम, भयंकर शिर दर्द, और गर्दन में भार और दपदपी, शिर में जलन और तनाहट। हाथ पैर ठंडा हृदयमें कष्ट मालूम होना, शरीर का रंग मटमैला कपाल और ब्रह्मतालु में दर्द पेशाब थोड़ा और लाल, तेज रोशनी या आवाज सहन न होना, इत्यादि इस रोगके प्रधान लक्षण हैं। इस रोग में प्रलाप कभी रहता है कभी नहीं भी रहता।

चिकित्सा।

बेलेडोना ६ या ३०—यह इस रोग की प्रधान दवा है चेहरा और आँखें लाल प्रलाप आँखों की पुतली फैली हुई रोशनी और आवाज का बरदाश्त न होना शिरमें चक्कर

अवसन्नता. शिर झुकाने पर तरह तरह के चिह्न दिखायी देना इत्यादि।

एकोनाइट ३ X—उत्कंठा, मृत्युभय. प्यास. चेहरा लाल. वदन सूखा, शिर झुकाने या धूप में घूमने पर चक्कर आना आदि लक्षणों में और मानसिक आवेग के कारण यह रोग होने पर तथा बच्चों को बीमारी मे इसे देना चाहिये।

ग्लोनइन ३—ऋतु का बन्द हो जाना, धूप, गरमी या लू लगने के कारण यह रोग होना. शिर में तेज टनक पर बुखार का न होना।

आर्निका ६ या ३०—शिरमें किसी तरहकी चोट लगने के कारण यह रोग होना. शिरमें जलन. शिर गरम और शरीर ठंडा मालूम होना इत्यादि।

विरेट्रमविर ६ या ३०—बुखार, शिर गरम. चेहरा और आँखें लाल. गर्दन के पीछे से शिर तक दर्द. आँखोंकी पुतली फैली सब चीजें दो दिखायी देना, शिर भारी, चेहरेकी पेशियों का फड़कना आदि एकोनाइट और बेलेडोना के सम्मिलित लक्षणों में इसे देना चाहिये।

नक्सवोमिका ६ या ३०—कब्जियत, शिरके अन्दर दर्द मालूम होना, मतवाले की तरह शिरमें चक्कर मानसिक परिश्रम और शराबखोरीके कारण यह रोग होना।

प्रायः अपने आप होता है। कभी कभी खाँसी हाम ज्वर, चेचक आदि रोगो के बाद भी होता है।

इस रोग में पहले बुखार अनिद्रा, अस्थिरता, चिड़चिड़ा स्वभाव शिर गरम, रोशनी और शोरगुल बरदास्त न होना, आँखकी पुतली का फैलना, नींद में से चौंक पड़ना और चिल्ला उठना आदि लक्षण प्रकट होते हैं। बादको शिरमें जल-सञ्चय या शोथ पैदा होता है। इस अवस्था मे रोना चिल्लाना, सिर हिलाना आदि लक्षण प्रकट होकर अन्त मे खींचन या लकवा के कारण रोगी की मृत्यु हो जाती है। रोगी कभी-कभी दो ही तीन दिन में मर जाता है, कभी कभी दो तीन सप्ताह तक भोगता रहता है। यह रोग कंठमाला धातुवाले बच्चो को अधिक होता है।

चिकित्सा ।

एकोनाइट ३ या ६—रोग के आरम्भ में मृत्यु भय अनिद्रा, बेचनी, उत्कंठा, चिल्लाना, बुखार पतले दस्त आदि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

कल्केरिया कार्ब—गण्डमाला धातु सिर बड़ा ब्रह्म तालु का मस्तिष्का तरह न भरना सिर में अधिक पसीना खास कर सोते समय जरा में ही सर्दी लगना मोटा और थुलथुला शरीर इत्यादि।

दस्त. बहुत बकझक करना. बिछौने से उठ उठ कर भागना इत्यादि।

इनके अतिरिक्त हेलीबोरस. आर्जनाइ, आर्सेनिक, एपोसाइनम. इथूज़ा. इग्नेशिया, केली ब्रोमाइड, मर्क्युरियस, विरेट्रम-एल्ब आदि दवाएँ भी लक्षणानुसार फायदा करती हैं।

आवश्यक सूचना—शिर पर बरफ या जलपट्टी चढ़ाना और पैर के पंजे गरम पानी में डुबो रखना लाभदायक है। खाने के लिये साबूदाना. बार्ली आदि हलके पदार्थ देने चाहिये।
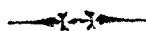
शिरमें टाल।

(Baldness)

अनेक कारणों से शिर के रोम झड़ कर खोपड़ी साफ निकल आती है। इसे टाल पड़ना या गंज हो जाना कहते हैं। अधिक अध्ययन, मानसिक परिश्रम, शिर दर्द और चिन्ता उत्कण्ठा शोक, दुःख आदि मानसिक आवेग इसके प्रधान कारण कहे जा सकते हैं।

चिकित्सा।

कमज़ोरी के कारण बाल झड़ते हों तो पहले [illegible] और बाद को फास्फ़रस दीजिये। अधिक पढ़ाई [illegible]

सभी क्रमोंकी दवाएँ तैयार रहती हैं और उनसे जिस क्रमकी इच्छा हो, उस क्रमकी दवा मंगायी जा सकती है।

क्रम तैयार करने की विधि।

किसी भी दवाका १ X क्रम तैयार करनेके लिये एक हिस्सा मदर टिंचर में ९ हिस्सा आल्कोहल या रेक्टीफाइड स्पिरिट मिलाना होता है। स्पिरिट मिलानेके बाद कमसे-कम दस बार शीशीको अच्छी तरह हिला देना चाहिये। २x क्रम तैयार करने के लिये १ भाग १x की दवा और ९ भाग आल्कोहल मिलाना चाहिये। ३x तैयार करनेके लिये १ भाग २x की दवा और ९ भाग आल्कोहल होना चाहिये। इसी तरह चाहे जिस नंबरका दसवाँ क्रम तैयार किया जा सकता है।

सौवाँ क्रम तैयार करनेके लिये ९ भागके स्थानमें ९९ भाग आल्कोहल मिलाना होता है। उदाहरण के लिये १ भाग मदर टिंचरमें ९९ भाग आल्कोहल मिलानेसे १ शततमिक क्रम तैयार होगा। १ शततमिकमें ९९ भाग आल्कोहल मिलानेसे २ शततमिक, २ शततमिक में ९९ भाग मिलानेसे ३ शततमिक, ३ शततमिक मे ९९ भाग मिलानेसे ४ शततमिक तथा इसी तरह और भी क्रम तैयार होते है।

यदि किसी दवाको तरल न बनाकर उसका चूर्ण बनाना होता है तो इसी तरह आल्कोहलके बदले सुगर ऑफ मिल्क (दूधकी चीनी) मिलाकर विचूर्ण दवा तयारकी जाती है। विचूर्ण दवा ६x तथा ३ शततमिक क्रमतकही
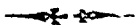
बादाम के तेल में मिलाकर केशों में लगाने से बहुत लाभ होता है। केन्थरिस का मूल अर्क रम नामक शराब में मिला कर लगाने से भी लाभ होता है।

दिमागकी कमजोरी।

(Brain Fag)

अधिक मानसिक परिश्रम के कारण दिमाग थक जाता है और कमजोरी मालूम होती है। इसके कारण थोड़े परिश्रम मे ही थक जाना, काम में जी न लगना,स्मरण शक्ति की कमी आदि लक्षण प्रकट होते है।

चिकित्सा।

स्नायुओं की कमजोरी में एसिड फस ३ X। बहुत उदासी, किसी तरह की इच्छा ही न होने पर एसिड पिक्रिक ३। स्मरण शक्ति की कमी, बुद्धि की जड़ता आदि मे जिङ्कम ६ इथूजा ३ या एनाकार्डियम ६। तेज बीमारी या गृहस्थी के भार मे दिमाग कमजोर हो जाने पर कल्केरिया फस ६ X विचूर्ण। पुराने शिर दर्द अधिक परिश्रम स्नायविक दुर्बलता आदि कारणों से यह रोग होने पर सिलिका ६। 'स्नायविक दुर्बलता' रोग की दवाओं मे से भी दवाए चुनी जा सकती है।

स्मरण शक्ति की कमज़ोरी।

(Weakness of Memory)

चोट, कमजोरी, बुढ़ापा, कठिन बीमारी आदि अनेक कारणोंसे स्मरणशक्ति कमजोर हो जाती है। इसकी शिकायत होने पर आदमियों के नाम या घटनाओं का भली भाँति स्मरण नहीं रहता।

चिकित्सा।

रसरक्त का अधिक स्राव होने के कारण कमजोरी अथवा ऐसे ही किसी दूसरे कारण से स्मरण शक्ति खराब हो जाने पर चायना या लेकेसिस। बड़ी उम्र के आदमियों को जिन्हें हमेशा सरदी लग जाती हो और जिन्हें घर में ही रहना भला मालूम होता हो, उन्हें यह रोग होने पर नक्स मस्केटा देना चाहिये। ऐसे आदमियों को खुली हवा में जाने से सर्दी लग जाती हो, फिर भी अगर उन्हे खुली हवा में भी रहना भला मालूम होता हो तो एलियम सिपा देना चाहिये। शिर में चोट लगने के कारण यह रोग हुआ हो तो आर्निका। शराब आदि पीने के कारण रोग होने पर नक्सवोमिका। भय, क्रोध, दुःख आदि मानसिक आवेगों के कारण रोग होने पर एकोनाइट,स्टेफीसेग्रिया, इग्नेशिया या विरेट्रम। सर्दी लगने के बाद यह शिकायत होने पर रसटक्स या कार्वो-वेज। शिर मे रक्त संचय के कारण रोग होने पर

एकोनाइट और वेलेडोना । इच्छा करने पर भी किसी निश्चित विषय पर विचार न जम सके तो एपिस। चायना रसटक्स, मर्क्युरियस और सल्फर से भी इस अवस्था में लाभ हो सकता है।

आवश्यक सूचना—नयी बीमारी में निम्न क्रमकी किन्तु पुरानी बीमारी में हमेशा ऊँचे क्रम की ही दवाएँ देना चाहिये। रोज शाम को ठंडे पानी से शिर धोकर ऊपर से रूमाल बाँधना और सुबह बहुत ठंडे पानी से कपाल और आँखें धोना लाभदायक है। सोने के पहले एक मिनट ठंडे पानी में पैर के पंजे रखने के बाद उन्हे तौलिये से अच्छी तरह रगड़ कर पोछ डालना और बाद को सोना-इस प्रक्रिया से भी काफी लाभ होता है।

शिरमें चक्कर ।

([illegible])

शिर मे रक्त का कमी या अधिकता पाकाशय का गोलमाल हस्तमैथुन या अधिक इन्द्रियसेवा शराब आदि उत्तेजक पदार्थों का सेवन चोट लगना, फोडों का बैठ जाना, वृद्धावस्था इत्यादि कारणों से यह रोग होता है।

इस रोग मे रोगी को चारों ओर की चीजें घूमती हुई मालूम देती है अथवा ऐसा मालूम देता है मानो वह स्वयं घूम

पल्सेटिला ६ या ३०--स्त्रियों को रजोरोध के कारण यह बीमारी होना। बैठने के बाद उठते समय शिर चकराना, शाम के समय तकलीफ का बढ़ना, मिचली और अरुचि, गरम और बन्द स्थान में रोग लक्षणों का बढ़ना, खुली हवामें आराम मालूम होना इत्यादि।

ओपियम ६ या ३०--बिछौने से उठते ही शिर चकराना, इस तकलीफ के कारण फिर बिछौने पर लेट रहना।

आर्निका ३ या ६--शिर में चोट लगने के कारण यह रोग होना, मिचली लेट रहने से आराम मालूम होना।

चायना ६ या ३०--अधिक रसरक्त के स्राव के कारण कमजोरी और उस कमजोरी के ही कारण शिर घूमना इत्यादि।

एपिस ६ या ३०--विश्राम के समय तकलीफ का बढ़ना, बैठने समय, खड़े होते समय या बिछौने पर पहले पहल आँख बन्द करते समय आँखों के सामने अँधेरा छा जाना, साथ ही शिर में दर्द और मिचली।

लेकेसिस ६--नींद से उठने पर शिर में चक्कर आता हो तो इसे देना चाहिये।

अन्यान्य दवाएँ--सोने के समय शिर चकराने पर कोनायम या नेट्रमम्यूर। रोगी को ऐसा मालूम होना मानो

वह उलट कर गिर पड़ेगा, बोरेक्स। मस्तिष्क के रोगों के कारण शिर चकराता हो तो कोफिया, नक्स मस्केटा, हले-शिया, जिकम, थिरिडियन, एम्ब्रा। कर्णरोग के कारण शिर चकराये तो कस्टिकम, जेल्सीमियम और स्ट्रेमोनियम। पाका-शय के गोलमाल के कारण यह रोग होने पर नक्सवोमिका, पल्सेटिला और ब्रायोनिया। शिर में रक्त स्वल्पता जनित रोग में वेराट्रा कार्व, ग्रेफाइटिस, साइलीसिया, लाइको-पोडियम और नक्सवोमिका। शिरमें रक्ताधिक्य के कारण यह रोग होने पर एकोनाइट, वेलेडोना, आर्निका, लेकेसिस और नक्सवोमिका। शिर चकराने के कारण सामने की ओर झुक जाने पर स्पाइजिलिया और साइक्यूटा। पीछे की ओर झुक जाने पर ब्रायोनिया, नक्सवोमिका और रसटक्स। दाहिनी या बायीं ओर झुकने पर सल्फर। स्नायविक दुर्बलता के कारण शिर चकराने पर फास्फरस, पेरिस क्वा, चायना और [illegible]। रोग के समय के होता हो तो आर्सेनिक, [illegible] नक्सवोमिका, पल्सेटिला और [illegible]। रोग के समय झुक आ जाने पर कैमोमिला, [illegible], नक्सवोमिका, [illegible] और सल्फर। दृष्टि क्षीणता के साथ [illegible] [illegible] पर [illegible]। बिछौने पर सीधे होकर [illegible] [illegible] कैल्केरिया, [illegible] बैठ जाने के कारण [illegible] होने पर सल्फर और कैल्केरिया कार्ब।

आवश्यक सूचना—ठंडे जलसे नहाना और खुली हवा में घूमना लाभदायक है। पेट में गोलमाल हो तो हलके और रक्तहीन या दुर्बलता के कारण रोग होने पर पुष्टिकर पदार्थ खाने चाहिये।

शिरदर्द।

(Headache)

शिर दर्द एक बहुतही कष्टदायक रोग है। अधिकांश स्थानों में यह बतौर एक स्वतन्त्र रोगके नहीं बल्कि किसी दूसरे रोग के उपसर्ग के रूप में प्रकट होता है। यह जिस कारण से होता है उसी के नाम से सम्बोधित किया जाता है, जैसे कि रक्ताधिक्य के कारण होने पर रक्ताधिक्य जनित शिरदर्द, पाकाशय के गोलमाल से होने पर पाकाशयिक शिर दर्द इत्यादि।

शिरदर्द के अनेक कारण हो सकते हैं, मस्तिष्क में रक्त स्वल्पता या रक्ताधिक्य, अजीर्ण दोष, उत्तेजक या विषैले पदार्थों का सेवन [illegible]

आदि लक्षण भी प्रगट होते हैं। नाकसे नमकीन पानी सुड़कना, एकोनाइट, साइना, नक्सवोमिका आर्सेनिक, एलियम सिपा आदि इसकी प्रधान दवाएँ हैं।

वातके कारण शिरदर्द—इसमे सुई चुभोने या खींचने जैसा दर्द होता है। दर्द स्थान बदलता रहता है। कभी गर्दन, कभी कान और कभी कनपटी में मालूम होता है। छूने या हिलानेसे और निद्रा के समय खासकर आधी रातको तकलीफ का अधिक बढ़ना, पसीना आना इधर उधर कुछ कुछ फूल जाना, कभो कभी कै इत्यादि लक्षण भी प्रकट होते हैं। कैमोमिल, नक्सवोमिका बेलेडोना, पल्सेटिला, इपीकाक,इग्नेशिया, कोलोसिन्थ, सल्फर, ब्रायोनिया और सीपिया इसकी प्रधान दवाएँ हैं।

पेटकी गडबड़ीके कारण शिरदर्द—पाकाशय और आँतों की क्रिया ठीक न होनेके कारण जो शिरदर्द होता है, उसमें जीभ पर लेप, मुँहका स्वाद बिगड़ा हुआ, भूख बिलकुल न लगना, मिचली या कै इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। ब्रायोनिया, नक्सवोमिका ओपियम, मर्क्युरियस, पल्सेटिला, इपीकाक, विरट्रम लाइकोपोडियम और सीपिया इसकी प्रधान दवाएँ हैं।

स्नायविक शिरदर्द या अधकपारी—इसके लक्षण और दवाएँ पृथक अध्यायमें अंकित की जायेंगी।

साधारण शिरदर्द—इसमें लक्षणानुसार भिन्न भिन्न दवाएं व्यवहार की जाती हैं। सेङ्गइनेरिया, वेलेडोना, एकोनाइट प्लेटिनम, मर्क्युरियस, एपिस, सीपिया, सल्फर, साइलीसिया स्पाइजिलिया आदि दवाएँ मुख्य हैं।

सभी तरह के शिरदर्दों की प्रधान-प्रधान दवाओं के लक्षण नीचे अंकित किये जाते हैं:—

एकोनाइट ३X या ६— तेज शिरदर्द, अवसन्नता, दर्दके कारण वेचैनी, कपाल में भार और पूर्णता मालूम होनी, ऐसा मालूम होना मानो कपाल के भीतरी पदार्थ वाहर निकल पड़ेंगे। कै या मिचली, बुखार, प्यास इत्यादि लक्षणों में खासकर सर्दीके शिरदर्द में इससे विशेष लाभ होता है।

वेलेडोना ६ या ३०—जोरोंका शिरदर्द, एकायक दर्दका शुरू होना और एकायक बन्द हो जाना, शिरमें दपदपी, रोशनी या आवाज विलकुल वरदास्त न होना, दर्दके कारण आँखें बन्द कर रखना, शिर हिलाने से दर्दका बढ़ना, दबाने से आराम, रोज दोपहर से लेकर आधी रात तक दर्द का होना, अनिद्रा, अचैतन्य भाव इत्यादि। दाहिनी ओर अधिक दर्द होने पर भी इससे लाभ होता है।

सेङ्गुइनेरिया ३ या ६—किसी निर्दिष्ट अवधिके बाद शिरदर्द का होना अथवा सुबह दर्दका शुरू होना और रात तक मौजूद रहना, शिर ऐसा भरा हुआ मालूम होना मानो

तैयार की जाती है। ऊँचे क्रम विचूर्णके आकारमें न बनाकर तरल ही बनाये जाते हैं। विचूर्ण दवा कमसे-कम एक घण्टे तक खलमें घोटनी पड़ती है।

दवाके क्रम तैयार करनेके लिये आल्कोहल या रेक्टीफाइड स्पिरिट निश्चित डिग्रीका ही लेना होता है। किसी-किसी दवामें डाइलूट आल्कोहल (७ भाग रेक्टीफाइड स्पिरिट और ३ भाग शुद्ध जल) मिलानेकी जरूरत पड़ती है। दवा बनानेके वर्तन, शीशी, कार्क और खल आदि चीजें बहुत ही साफ सुथरी रखनी पड़ती हैं। नोसिखुओंको चाहिये, कि केवल किताबी ज्ञानके सहारे इस काममें हाथ न डालकर, पहले किसी अनुभवीके निकट इसका व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर लें, तब इसपें हाथ लगायें। ऐसा करनेपर न तो उन्हें कोई कठिनाई मालूम होगी, न भूल ही होनेका डर रहेगा।

दवाका रूप-रंग।

कई होमियोपैथिक दवाओंके मदर टिञ्चर घाव, चोट आदि पर बाहरसे लगानेके काममें आते हैं। खास अवस्था में किसी-किसी दवाका मदर टिञ्चर खिलाया भी जाता है। किन्तु साधारणतः होमियोपैथिक दवाओंके उपरोक्त विधिसे तैयार किये हुए क्रम ही रोगीको खिलाये जाते हैं। आल्कोहलके संयोगसे बने हुए क्रम पानीकी तरह पतले होते हैं। सुगर आफ मिल्कमें बने हुए क्रम देखने में चीनीके

कुछ बाहर निकल पड़ेगा, या ऐसा मालुम होना मानो आँखें बाहर निकल पड़ेंगी. शिरके पिछले हिस्सेमें दर्दका शुरु होना और दाहिनी आँख पर ठहर जाना, अथवा समूचे शिरमें खोंचने, भोंकने, मारने या खोदने जेसा दर्द, कपाल और दाहिनी ओर इस दर्दकी अधिकता, साथही ठंढ. मिचली, कै, पड़ रहने की इच्छा और हिलने डोलने से दर्दका बढ़ना इत्यादि।

आर्सेनिक ६ या ३०—किसी निर्दिष्ट समय में शिरदर्द, कपाल में भार, बायीं भौंहके नीचे तेज दर्द, दर्दके साथ जलन, गर्दन या शिरके पिछले हिस्से में दर्द, कपालमें टनक, मिचली या कै, प्यास, बेचैनी, मृत्युभय, खुली हवा में और ठंढे पानी से धोनेपर आराम इत्यादि।

सीपिया ६ या ३०—दाहिनी आँख पर तेज दर्द मानो कोई खोंचा मार रहा है या सलाई-भोंक रहा है, दर्दके कारण रोना, साथही मिचली या कै, शिर झुकाने या हिलाने से दर्द का बढ़ना, रजोदोष या प्रदर के साथ स्त्रियों को शिर दर्द होना।

स्पाइजिलिया ३ या ६—बायीं ओरके समूचे शिरमें दर्द कभी कभी चेहरे और दांतो तक दर्दका फैल जाना, सुबहसे दर्दका शुरू होना, ज्यों ज्यों सूरज चढ़े त्यो त्यों दर्दका बढ़ना, दोपहर के बाद दर्दका घटना और सूर्यास्त होने पर आराम

हो जाना, हिलने डोलने से दर्द का वढ़ना, दवाने से घटना, आवाज वरदास्त न होना इत्यादि ।

एपिस ६ या ३०–शिर भरा हुआ और वड़ा मालूम होना, शिरमें वजन और दवाव, खास कर खड़े होते समय, वड़े कमरे में दर्द का वढ़ना, दोनों हाथोंसे दवाने पर आराम मालूम होना, रातमें जराभी हिलने डोलने से ठंढ मालूम होना चेहरा और हाथ गरम, वदन में खुजली, खुजली में जलन और दर्द ।

नक्सवोमिका ६ या ३०–चलने या हिलने पर ऐसा मालूम होना मानो दिमाग सूज गया है, कनपटियों में दवाव, वैठने या लेटने से आराम न मालूम होना, सिर भारी, ऐसा मालूम होना मानो फट जायगा, खुली हवामें भोजन के वाद और सुवह में दर्द का वढ़ना, काफी, शराव आदि उत्तेजक पदार्थों के सेवन या कब्जियत के कारण शिर दुखना ।

व्रायोनिया ६ या ३०–ऐसा मालूम होना मानो कपाल की सव चीजें वाहर निकल पड़ेंगी, नाकसे पानी वहना, पर कोई आराम न मालूम होना आँखें जल पूर्ण और उनमें जलन, मिचली और कै, शिरमें रक्त सञ्चय या कब्जियत के कारण शिरदर्द ।

ओपियम ६ या ३०–शिरमें खोंचा मारने या फट जाने जैसा दर्द, शिरमें रक्त संचय, आँखोंमें तकलीफ मालूम होना, तेज प्यास, मुँह सूखा, कै करने की इच्छा इत्यादि ।

मर्क्युरियस ६ या ३०—ओपियम के बाद इससे विशेष लाभ होता है। ऐसा मालूम होना मानो शिर फट जायगा या पट्टीसे कसकर बाँध दिया गया है, रातमें तकलीफ का बढ़ना, खोंचा मारने जैसा, ज्वालाकर या सलाई भोंकने जैसा दर्द।

पल्सेटिला ३ या ६—पेट की गड़बड़ी, घी अथवा तेलकी चीजें खाने या रजोदोष आदिके कारण शिरदर्द, शिर मे एकही ओर दर्द, ठंढ मालूम होना, प्यासका न होना, रोगी उत्तेजित, रो देनेकी इच्छा इत्यादि।

इपीकाक ६ या ३०—शिरदर्दके साथ मिचली या कै होने पर इसे देना चाहिये।

ग्लोनइन ३ या ६—शिर में एकायक तेज दर्द, शिरमें मानो खून चढ़ रहा है शिर हिलानेसे दर्दका बढ़ना और ठंढे जलसे धोने पर आराम मालूम होना, नाड़ी बहुत तेज, चेहरा और आँखें लाल कानोंमें भनभनाहट, गरमी के दिनों का शिर-दर्द, गेस या बिजली की बत्तीके नीचे काम करने वालो को इनकी गरमी से शिर दर्द होने पर इसे ही देना चाहिये।

सल्फर ६ या ३०—कपाल या कान के पीछे टपक जैसा दर्द, खोपड़ी गरम, सुबह पतले दस्त शिरमें रक्त संचय या बवासीर का रक्तस्राव रुकने के कारण शिरदर्द।

विरेट्रमविर ३ X या ६—सब नसो का फड़कना, बेहोशी कानमें भों भों आवाज, कै या मिचली के साथ अतिसार शिर भरा हुआ और भारी मालूम होना।

एसिड फोस्फरिक ६ या ३०—दृष्टि क्षीणता, स्मरण और श्रवण शक्तिकी कमी, शिर और गलेके पीछे दर्द, स्नायविक दुर्बलता या धातु दौर्बल्य के कारण यह रोग होना।

चायना ६ या ३०—रसरक्तके स्राव के कारण कमज़ोरी और उसके कारण दर्द, कानमें गुन गुन आवाज, चेहरा लाल, एक दिनके अन्तर से शिरदर्द, शिरके पिछले भागमें दर्द, स्पर्श, ठंढ और मानसिक परिश्रम से दर्दका बढ़ना, चलने फिरने से आराम मालूम होना।

कार्बोवेज ६ या ३०—अधिक शराब पीनेके कारण शिरदर्द, शिरके पिछले भागसे लेकर आँखके ऊपरी भाग तक दर्द, नाकसे रक्तस्राव होने पर दर्दका घटना इत्यादि।

कोफिया ६ या ३०—चिड़चिड़ा और चंचल स्वभाव, शिरमें काँटी ठोकने जैसा दर्द, शिर बहुत छोटा मालूम होना, ऐसा मालूम होना मानो टुकड़े टुकड़े हो जायगा, अनिद्रा, खट्टी डकार, खुली हवामें दर्द का बढ़ना।

केमोमिला ६ या १२—क्रोधी और चिड़चिड़ा स्वभाव, सर्दी के कारण शिर दर्द, एक गाल लाल और गरम,

दूसरा फोका और ठंढा,पित्तकी कै; दर्दके कारण रोगी का चित्त ठिकाने न रहना।

अर्निका ६ या ३०—चोट, रक्तसंचय या स्नायविक दुर्बलता के कारण शिरदर्द, आँखके पलक का भारी मालूम होना, आँखों में जलन, शिर गरम, कपाल और गर्दनकी नसोंका फड़कना, रोशनी, हिलने डोलने और सोने से दर्द का बढ़ना इत्यादि।

जेल्सोमियम ६ या ३०—शिर दर्द के कारण रोगीको अंधेरा दिखायी देना, दर्द के समय चुपचाप पड़े रहना, अधिक पेशाब और नींद से आराम।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—पुराना शिरदर्द, ऋतु को गड़बड़ी के कारण स्त्रियों को यह रोग होना, शिर और पैर बहुत ठण्डे, शिर में रूसी इत्यादि।

साइलीसिया ६ या ३०—स्नायविक शिरदर्द, दर्द प्रायः एक ही ओर होता है। गर्दन के पास से शुरू होकर ऊपर को चढ़ता है। शिर झुकाने, ठंढी हवा लगने, बोलने या मानसिक परिश्रम करने से दर्द का बढ़ना।

आरममेट ६ या ३०—गरमी या रक्ताधिक्य के कारण शिर दर्द, कपाल में सुई चुभोने जैसा दर्द, अनिद्रा, आत्महत्या करने की इच्छा, सुबह और ठंढी हवा में दर्द का बढ़ना, चलने फिरने या गरमी में आराम।

लेकेसिस ६ या ३०—खोपड़ी में जलन, कपाल में दर्द, खड़े होने पर ऐसा मालूम होना मानो मूर्च्छा आ जायगी, शरीर और मन निस्तेज, सोने के बाद तकलीफ का बढ़ना।

फोस्फरस ६ या ३०—आँखों पर जोर पड़ने और मानसिक परिश्रम के कारण शिरदर्द, शिर का पिछला भाग ठंढा, हर तीसरे दिन दर्द होना।

मेली लोटस १X—रक्तसंचय के कारण शिरदर्द, दर्द के कारण रोगी का व्याकुल होकर शिर पटकना, पागल की तरह बकझक करना इत्यादि लक्षणों में इसे देनेसे बड़ा लाभ होता है।

मेग्नेशिया फस १२ X चूर्ण—असह्य और भ्रमणशील वेदना, बीच बीच में दर्द का बन्द हो जाना इत्यादि। इसे गरम पानी के साथ सेवन करना चाहिये.।

अर्जेन्टम नाइट्रिकम ६—शिर के अन्दर दर्द और चक्कर, कपड़े से शिर बाँधने पर आराम मालूम होना।

सिमिसिफिउगा ३—हिस्टीरिया रोगवाली स्त्रियों का शिरदर्द, शराबी और विद्यार्थियों का शिरदर्द, स्नायुवात और रजोदोष के साथ शिरदर्द, शिरके पिछले भाग में दर्द, प्रलाप, अनिन्द्रा और दृष्टि विकार।

आवश्यक सूचना—साधारण शिरदर्द के लिये दवा

चुनते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि रोशनी बरदाश्त न होने पर बेलेडोना, आवाज न बरदाश्त होने पर स्पाइजिलिया कमरे में आदमियों का चलना बरदाश्त न होने पर सेङ्गुइनेरिया, किसी भी तरह की गन्ध नापसन्द होने पर सल्फर या एकोनाइट और रोगी को छूना नापसन्द हो, बिछौने की शिकायत हो तथा ठंढी हवा, मेघ गर्जना तूफान आदि से दर्द बढ़ता हो तो सीपिया से अधिक लाभ होता है।

शिरदर्द मे विशेष परहेज़ी करने की ज़रूरत नहीं, पर उत्तेजक और घी तेल के पके पदार्थ न खाना चाहिये। सभी तरह की मानसिक उत्तेजनाओं से बचना चाहिये और स्नायविक दर्द हो तो ठंढे पानी से स्नान करना चाहिये।

अधकपारी।

(Hemicrania)

किसी निर्दिष्ट समय पर आधे शिर में जो दर्द होता है, उसे अधकपारी या स्नायविक शिरदर्द कहते हैं। अधिक मानसिक परिश्रम अनिद्रा, पेट का गोलमाल, जरायुदोष आदि कारणों से यह रोग होता है। कभी कभी माता-पिता को यह रोग होने से उनके बच्चों को भी विरासत मे मिलता है।

इसमे शिर के दाहिने या बायें हिस्से में तेज दर्द होता है। कभी कभी ऐसा मालूम होता है मानो दर्दवाले स्थान में कील

ठोक दी गयी है। दर्द प्रायः सुबह सूर्योदय के साथ शुरू होता है, दोपहर को तेज़ी में आता है और शाम को शान्त हो जाता है। इसके अतिरिक्त दूसरे समय में भी होता है, परन्तु इसका समय निर्दिष्ट या बंधा हुआ रहता है। शिर प्रायः ठंडा और चेहरा फीका रहता है। रोग के आरम्भ में कभी कभी रोगी को बिना रंग का पेशाब होता है। के होने से तकलीफ़ घटती है और शिर को छूने से बढ़ती है। अंधेरे कमरे में चुपचाप पड़े रहने से आराम मालूम होता है। काफी पीने से कुछ देर के लिये दर्द भले ही घट जाता हो, परन्तु नशे इस रोग के लिये काफी बहुत ही हानिकारक है, अतएव जिन्हें काफी पीने की आदत हो उन्हें तुरन्त इसे त्याग देना चाहिये।

चिकित्सा।

काफिया ६ या ३०—शिर में तेज दर्द, मानो कांटा ठोंक दी गयी हो, जरा भी आवाज़ बरदाश्त न होना, गाना नागवार मालूम होना, दर्द के कारण व्याकुल हो उठना उत्तेजित मालूम होना इत्यादि। कई बार यह दवा देने पर लाभ न हो तो नक्सवामिका या सिंकोना अथवा इग्नेशिया या पल्सेटिला या [illegible] चाहिये।

ग्लोनाइन ३x या ६—तेज शिरदर्द, रोगी का [illegible] [illegible] सा आना, भुनभुनाहट, आवाज़ या झिलना डोलना [illegible]

दूसरो की बातचीत से दर्द का बढ़ना, उत्कण्ठा, बेचैनी, सर्दी, तर हवा या जुकाम के कारण शिरदर्द।

बेलेडोना ६ या ३०—दाहिनी ओर शिरदर्द, शामको दर्द का बढ़ना. चेहरा लाल, आँख और नाक तक दर्द का बढ़ना, रोशनी बिलकुल बरदाश्त न होना इत्यादि।

स्पाइजिलिया ६ या ३०—बायीं ओर के शिरदर्द में इससे विशेष लाभ होता है। सुबह दर्द का शुरू होना, दोपहर में ज्यादा तेज़ी, सूर्यास्त के समय आराम, आवाज बरदाश्त न होना।

सेङ्गुइनेरिया १ x—सुबह से लेकर रात तक दर्द का होना, शिर भरा हुआ, आँखें मानो बाहर निकल पड़ेंगी, दाहिनी आँख पर तेज़ दर्द, हिलने डोलने से दर्द का बढ़ना, कमरे में दूसरे आदमियो के चलने से तकलीफ़ मालूम होना इत्यादि।

कोलोसिन्थ ३ या ६—आधे शिर में दर्द, झुकने या चित सोने पर दर्द का बढ़ना, रोज दोपहर या तीसरे पहर बायीं ओर दर्द का शुरू होना बहुत बेचैनी या उत्तेजना. पसीने में पेशाब जैसी गन्ध, साधारण अवस्था में थोड़ा या गंदला पेशाब. दर्द के समय तादाद में अधिक और साफ पेशाब।

सीपिया ६ या ३०—दाहिनी आँख पर तेज दर्द, मानो कोई खोंचा मार रहा है या काँटी ठोंक रहा है, दर्द के कारण रोना, साथ ही मिचली या कै, फिर झुकाने या हिलाने से दर्द का बढ़ना, रजोदोष या प्रदर के साथ स्त्रियों का शिरदर्द, ऐसा ही दर्द अगर बायीं ओर हो तो एकोनाइट ३ या ६। कुछ घण्टों में एकोनाइट से लाभ न हो तो सल्फर ३० या साइलीसिया ६।

आर्सेनिक ६ या ३०—बायीं आँख पर टपटपी जैसा दर्द, अस्थिरता, प्यास, कै, ठंढे पानी से क्षणिक आराम।

नक्सवोमिका ३०—सुबह सोकर उठने के बाद दर्द का शुरू होना, दिन को बढ़ना, जी मिचलाना और कै, विश्राम और मानसिक परिश्रम से दर्द का बढ़ना।

नेट्रमम्यूर ६ या ३०—सुबह से दर्द का शुरू होना, घूमने से दर्द घटना, खाँसने से बढ़ना।

जेलसीमियम ३ या ६—तेज़ शिरदर्द, दर्द के कारण चारों ओर अँधेरा दिखायी देना।

आइरिस वर्स ३ या ६—यकृत की खराबी, दाहिनी ओर तेज दर्द, साथ ही मिचली या कै।

क्रियोनेन्थस ३ X—नियमित समय के अन्तर से शिरदर्द, साथ ही मिचली या कै।

इनके अतिरिक्त इग्नेशिया, विरेट्रमविरिडी, पल्सेटिला, ब्रायोनिया, नक्समस्केटा, कैमोमिला, चायना, पुल्टिमक्ड, केप्सीकम, कल्केरिया कार्ब, केली बाइक्रोम, प्लेटिना, इपीकाक, स्ट्रिकनिया, एट्रोपिन, केनेबिस-इन्डिका, नेजा और पोडोफिल्लाम आदि दवाएं भी लक्षणानुसार लाभ करती हैं।

आवश्यक सूचना—जेल्सीमियम, आयरिस, कियोनेन्थ, और सेंगुइनेरिया तुरन्त लाभ दिखानेवाली दवाएं हैं। लक्षण मिलने पर इन्हें पहले आजमाना चाहिये। स्नायुशूल और शिरदर्द की दवाओं में से भी दवाएं चुनी जा सकती हैं।

अँधेरी कोठरी में सोना, पतली चीजें खाना और कपाल पर जलपट्टी चढ़ाना लाभदायक है। पेशाब या कब्जियत आदि के कारण शिरदर्द होने पर मूल कारण का इलाज करने से शिरदर्द उसके साथ ही आराम हो जाता है। धूप, अधिक इन्द्रियसेवा मानसिक परिश्रम और उत्तेजक पदार्थों का सेवन इस रोग में हानिकारक है।

६—आँख के रोग।

पलक का प्रदाह।

(... th Eyelids)

अनेक बार केवल आँख के पपटे या पलकों में प्रदाह होता है। इस अवस्था में नीचे या ऊपर का एक अथवा दोनों

पपटे सूज जाते हैं, लाल हो जाते हैं और उनमें प्रदाह पैदा हो जाता है। इसके कारण आँखें फूल जाती हैं, दुखती हैं, किरकिराती हैं, उनसे पानी गिरता है और रात में दोनों पलकें जुड़ जाती हैं। लेकिन आँख के भीतरी हिस्से अर्थात् कोआ और पुतली आदि में लाली, दर्द या किसी तरह की तकलीफ नहीं होती। इस रोग की प्रधान प्रधान दवाएं नीचे लिखी जाती हैं।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ x या ६—पपटों में लाली, कड़ी सूजन, जलाकर गर्मी, पपटे सूखे अथवा फीके, उनमें पीला-पन लिये हुए लाली, सूजन, चमक, खोंचन, साथ ही बुखार और बेचैनी इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। दो दिन में इससे लाभ न हो तो पल्सि ६ या ३० दीजिये। इससे पानी भर जाने के कारण पपटों की सूजन, पपटों का जुड़ जाना, आंखों का भारी मालूम होना, बहुत खुजली, सुई चुभोने जैसी [illegible] आदि लक्षणों में काफी लाभ होता है। [illegible] पानी की पट्टी चढ़ाने से दर्द आराम हो जाता है। और [illegible] दूर हो जायें लेकिन सिर्फ दर्द मौजूद [illegible] पपटे सूजे हुए न मालूम हों तो हिपर सल्फर ६ [illegible] [illegible] भी दूर हो जाती है।

सल्फर ६ या ३०—बहुत अधिक सूजन, पपटे बहुत फूले हुए, लाल और गरम, जोरों की जलन,श्लेष्मा और पीब निकलना, रातमें पलको का जुड़ जाना और रोशनी बरदास्त न होना— इन लक्षणों में हिपर सल्फर के बदले इसे देना चाहिये। इससे काफी लाभ न हो तो इसके बाद फिर 'एको-नाइट दीजिये।

बेलेडोना ३ x या ६—हिपर सल्फर देने पर भी अगर फायदा न हो और पपटो में जलन, सूजन, लाली, खुजली, पलको का जुड़ जाना, खोलने पर खून निकलना, उनका भारी या सुन्न मालूम होना आदि लक्षण मौजूद रहे तो इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३०—पपटों के भीतरी भाग मे सूजन, लाली और दर्द, बहुत जलन, आँखों का मुश्किल से खुलना इत्यादि।

मर्क्युरियस ६ या ३०—आँख खोलने पर भी बल-पूर्वक उसका बन्द हो जाना, सूजन, आँख खोलने में बड़ा कष्ट, काटने जैसा तेज दर्द, पलक के किनारे पपड़ी जमना, पलक का बाहर की ओर मुड जाना, कभी कभी बिलकुल ही दर्द न मालूम होना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। इस से पूरा लाभ न होने पर हिपर सल्फर ६ या ३०।

ग्रेफाइटिस ६ या ३०—पपटों की सूजन के साथ चेहरे

लाल बने रहे,आँखों के कोनों में पीव इकट्ठा हो जाया करे, रोशनी बरदास्त न हो और काँटा ठोकने जैसा दर्द होता हो।

इनके अतिरिक्त पढ़ते समय पपटों में जलन और तकलीफ मालूम हो तो सल्फर देना चाहिये। पपटा बहुत भारी मालूम होने पर केमोमिला। आँखें बहुत सूखी, पलक उठाने पर तकलीफ और आँख से आँसू निकलना, आँखें गरम इत्यादि में विरेट्रम। पपटो में सूजन और कड़ापन होने पर कल्केरिया और आयोडियम। आँखें सूखी हुई, खासकर सुबह के वक्त, एलुमिना। पपटों के किनारे सूजन और लाली पलको का गिर जाना इत्यादि में एसिडफस। पलक का गिर जाना और किनारे पर छोटी छोटी फुन्सियाँ होनेपर सीपिया। यह दवाएँ नयी बीमारी में निम्न क्रमकी और पुरानी बोमारी मे उच्चक्रमकी देनी चाहिये।

नेत्र प्रदाह या आँख उठना।

(Ophthalmia)

आखमें धूल या बालूके कण गिरना, सर्दी या ठंड लगना, चोट या धुआँ लगना, चेचक, दाम या सूजाककी बीमारी होना आदि कारणोंसे आँखमें प्रदाह होता है। लोग इसे

केमोमिला १२ या ३०—बच्चोंकी बीमारी, खोंचा मारने, दबाने या जलने जैसा दर्द, मानों आँखमें आग भरी हुई है, सुबह आँखों मे सूजन, आँखें बन्द या बहुत सूखी, दर्द के कारण रोगी का बहुत चिड़चिड़ाना इत्यादि।

बेलेडोना ६ या ३०—आँख एक दम लाल या उसमें बड़े बड़े डोरे, बहुत गरमी ज्वालाकर तेज आँसू अथवा आँखें एकदम सूखी हुई और रोशनी जरा भी बरदास्त न होना, शिरमें दर्द, कभी कभी इस बीमारी के साथ तेज जुकाम।

अर्जेन्टम नाइट्रिकम ३ या ६—बच्चों की बीमारी, गाढ़ा गाढ़ा मलाई जैसा या पीले रंग का बहुत पीब निकलना।

पल्सेटिला ६ या ३०—अर्जेन्टम नाइट्रिकम से फायदा न होने पर इसे देना चाहिये। स्त्रियोंकी बीमारी में इससे अधिक लाभ होता है।

मर्क्युरियस सल ६—आँख लाल, ज्वालाकर वेदना आँखसे बहुत आँसू या पतला स्राव निकलना स्रावके कारण पलक और गालों का लाल हो जाना रात में आँखके बाहर और भीतर का दर्द बहुत बढ़ जाना, आगकी लपट या बत्ती की रोशनी बहुत बुरी मालूम होना गण्डमाला धातु या सूजाक के कारण यह रोग होना।

सल्फर ६ या ३०—रात में रोगी को हलका बुखार और बेचैनी, आँखमें सुई चुभोने जैसा तेज दर्द इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। उपरोक्त दवाओंके लक्षण मौजूद होने पर भी जब उनसे पूरा पूरा लाभ न हो तब इसकी कई खुराकें देनेके बाद पुनः वही दवाएँ देने से अधिक लाभ होता है।

युफ्रेशिया ३ या ६—आँखमें भार मालूम होना, आँखों में श्लेष्मा और आँसुओंका संचय, पलकों का जुड़ जाना, आँख बहुत लाल, साथ ही शिरदर्द और जुकाम, रोशनी बरदास्त न होना, लाली कम और दर्द ज्यादा इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

एपिस ३ या ६—पपटों में सूजन, आँखे लाल, उन में जलन और डंक मारने जैसा दर्द आँख जलपूर्ण और उन से पीब निकलना इत्यादि।

हिपर सल्फर ६ या १२—पुरानी बीमारी, आँख में जलन या पीड़ा न होने पर भी बहुत पीब का बहना, पारेका अपव्यवहार आदिमें इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ३ या ६—पपटे में जख्म, आँख में जलन और दर्द, तेज जुकाम, आँख और नाक से गरम पानी निकलना।

नाइट्रिक एसिड ६ या ३०—गरमी या सुजाकके कारण आँख आने पर इससे बहुत लाभ होता है।

इनके अतिरिक्त फेरमफस, एल्युमिना अरममेट, रसटक्स, फोस्फरस, जेल्सीमियम, केली-आयोड, कल्केरिया कार्ब, सिलिका, स्टेफीसेग्रिया, जिङ्कम, लाइको पोडियम, नेट्रमम्यूर, और सीपिया आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार काफी लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—आँखें धोने के लिये सुसुम पानी या दूध काम में लाना चाहिये। आँख पर हरे रंगका चश्मा पहन रखना या हरे कपड़े से आँख ढक रखना लाभदायक है। युफ्रेशिया मदर टिंचर दस बूंद एक आउन्स (आधी छटाक) पानी में मिलाकर आँखमें डालनेसे आँखका दर्द बहुत घट जाता है। चार बूंद अर्जेन्टम नाइट्रिकम मदर टिञ्चर आधी छटाक पानी में मिलाकर, उससे आँख धोने पर बढ़ी हुई तकलीफ घट जाती है। आँखको धूप, रोशनी धुआँ और धूलसे बचाना चाहिये। रोगीको हलकी और पुष्टिकर चीजें खानेको देना चाहिये।

अजनी या गुहोरी।

(Hordeolum)

नीचे या ऊपर का पलक पर बेलनाकार जो फुन्सियाँ होती हैं वे अंजनी या गुहोरी कहलाती हैं। सरदी और कम-

लक्षणोंसे अधिकसे-अधिक मिलते हों, अतएव किसी भी रोगीको दवा देते समय उसके लक्षणोंसे दवाके लक्षणोंको अच्छी तरह मिला लेना चाहिये और जिस दवाके लक्षण अधिकसे-अधिक मिलते हों, वही दवा देनी चाहिये। रोगके प्रत्यक्ष और परोक्ष सभी लक्षण जान लेना सहज काम नहीं है। इसके लिये रोगका कारण, रोगीका मल, मूत्र, भूख, प्यास, नाड़ीकी गति, पसीना, मानसिक अवस्था प्रभृति जिन-जिन विषयोंकी छानबीन करनेकी जरूरत रहती है, उनका हम आगे चलकर उल्लेख करेंगे। यहाँ हम केवल यही बतलाना चाहते हैं, कि दवाका चुनाव करते समय जहाँतक हो सके रोगी और दवाके अधिकसे-अधिक लक्षण मिला लेने चाहियें। यही वास्तविक होमियोपैथी है। जल्दबाज होमियोपैथ या वे डाक्टर, जिनके यहाँ रोगियोंकी भरमार होती है वे प्रायः ऐसा नहीं करते और इधर-उधर के दो-चार लक्षण देखकर ही दवा दे दिया करते हैं। कभी-कभी उनके अनुभवके कारण और कभी-कभी रोगीके सौभाग्यसे ऐसी दवाएँ काम भी कर जाती हैं, परन्तु है यह होमियोपैथीके सिद्धान्तके खिलाफ। किसी भी होमियोपैथीको दवाका चुनाव करते समय जल्दबाजी न करनी चाहिये।

दवाके क्रमका चुनाव।

होमियोपैथको दवा देते समय उसके क्रमपर भी ध्यान रखना होता है, परन्तु यह विषय रोग लक्षणों (Symptoms)

कार्ब, नेट्रम म्यूर. एमन कार्ब, केन्थरिस. टेपलीज, जिंजिया, बायीं आँखकी अंजनी में पल्सेटिला, स्टेफीसेग्रिया, ग्रेफाइ-टिस और सल्फर. नीचे की पलक में अंजनी होने पर फोस्फरस, रसटक्स और स्टेफीसेग्रिया. ऊपर की पलक में अंजनी होने पर एमन कार्ब, कस्टिकम, मर्क्युरियस, एसिड फस, सल्फर और एलुमिना, आँखके कोने में अंजनी होने पर लाइकोपोडियम और स्टेनम. अंजनी के साथ आँख लाल होने पर सीपिया दुबारा अंजनी का होना रोकने के लिये सल्फर. स्टेफीसेग्रिया या ग्रेफाइटिस आदि दवाएं भी आज-मायी जा सकती हैं। रातमें पुल्टिस या गरम पानीका सेक देनेसे लाभ होता है। ठंढा पानी न लगना चाहिये। अंजनी बह जाने के बाद उसमें गरम घी लगाने से घाव जल्दी सूख जाता है।

मातियाबिन्द।

([illegible])

चोट. बहुमूत्र. शारीरिक दुर्बलता और वृद्धावस्था आदि अनेक कारणों से यह रोग होता है। इसमें पहले सब चीज धुंधली दिखायी देती है। बादको ऐसा मालूम होता है मानो सब चीजों पर एक जाल सा बिछा हुआ है। इन शिकायत को लोग धुंधी और जाला कहते हैं। इसके बाद रोग बढ़ने पर दृष्टि शक्ति एकदम लोप हो जाती है और रोगी पूर्ण रूपसे अन्धा हो जाता है।

चिकित्सा।

सिनेररिया मेरिटिया मदर टिञ्चर-दिनमें तीन चार बार पाँच छः महीने तक एक एक बूँद डालने से यह रोग आराम हो जाता है। इसके साथ कल्केरिया क्लोर १२X विचूर्ण, फ्लुरिक एसिड ६ या केल्कफस ६X विचूर्ण, सेवन करने से बहुत लाभ होता है। निम्नलिखित दवाएं भी व्यवहारकी जाती हैं:—

नयी बीमारी में बेलेडोना, शारीरिक कमजोरी या ऋतु बन्द हो जाने के कारण रोग होने पर मेग्नेशिया कार्ब। बूढ़ों की बीमारी में आयडोफोर्म ३X विचूर्ण सल्फर, एमन कार्ब, बेराइटा कार्ब, केनेबिस इन्डिका, कस्टिकम, कोनायम, लाइको पोडियम, युफ्रेशिया, सीपिया, फोस्फरस, नेट्रमम्यूर आदि दवाएँ लक्षणानुसार। चुनी हुई दवा दिनमें एक या दो बार खाना चाहिये। नमक खाना छोड़ देनेसे इस रोग में लाभ होता है।

दृष्टि क्षीणता।

(*Amblyopia*)

रात्रि-जागरण, तेज रोशनी में रहना या काम करना, अधिक पढ़ना, अधिक चिन्ता करना, हस्तमैथुन या अधिक इन्द्रिय सेवा, आँख के भीतरी यंत्रकी कोई खराबी आदि कारणों से यह रोग होता है। इसमें रोगीको कम दिखाई

देता है। ऐसा मालूम होता है, मानो सर्वत्र कुहासा या धुआँ छाया हुआ है। कभी कभी आँखके सामने चिनगारियाँ, काले अथवा चमकीले धब्बे या आकृतियाँ भी दिखाई देती हैं। कभी २ शिरमें दर्द भी होता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६—शिरमें चक्कर, एकायक यह रोग होना, कोई भी चीज साफ न दिखायी देना।

चायना ६ या ३०—अधिक रसरक्तस्राव होने के कारण कमजोरी और उसके कारण यह रोग होना।

फोस्फरस ६ या ३०—चायना से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

नक्सवोमिका ६ या ३०—नशेखोर या शराबियों को यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

पल्सेटिला ६ या ३०—स्त्रियों को रजस्राव बन्द हो जाने के कारण यह रोग होना धुंधला दिखायी देना, शाम के वक्त तकलीफ का बढ़ना।

सल्फर ६ या ३०—आँखमें जलन सूर्य का रोशनी बरदास्त न होना आँखों के सामने काले काले धब्बोंका उड़ते रहना [illegible] और हाथ पैरके तलवों में गर्मी या जलन।

वक्रदृष्टि (Strabismus-Squinting)—इस रोगमें दोनों आँखें समान भावसे काम नहीं करतीं, फलतः रोगी किसी वस्तुको देखता है तो देखनेवालों को ऐसा मालूम होता है, मानों वह किसी दूसरी ही ओर देख रहा है। इस रोगके रोगियों को लोग कैंचा कहा करते हैं। इस रोग में एलुमिना, स्पाइजिलिया, साइना हायोसायमस, जेलसीमियम, साइक्लेमेन, स्ट्रेमोनियम, साइक्यूटा, फोस्फरस आदि दवाओं से काफी लाभ होता है। इस रोगके लिये खास तरह का चसमा मिलता है। अच्छी आँखको वन्द रखकर रोगी आँख से देखते रहने पर वहुत फायदा होता है।

दूर दृष्टि (·Hypermetropia)—इस रोग में नजदीक की चीज साफ नहीं दिखायी देती, लेकिन दूर की चीज अच्छी तरह देखी जा सकती है। इस रोग के रोगियों को चसमा व्यवहार करना पड़ता है। कल्केरिया, हायोसायमस, नेट्रम-म्यूर, नक्सवोमिका, सीपिया और सल्फर इन दवाओं के सेवन से भी लाभ होता है।

निकट दृष्टि (Myopia)—इस रोग में नजदीक की वस्तु साफ दिखायी देती है, पर दूर की वस्तु साफ नहीं दिखायी देती। अधिक पढ़ने लिखने या सीने पिरोने वालों को यह रोग होता है। इस रोग में चसमा व्यवहार करना पड़ता है। आवश्यकतानुसार कल्केरिया, लाइकोपोडियम

फोस्फरस, पल्सेटिला और सल्फर आदि दवाएँ भी व्यवहार की जाती हैं।

रतौन्धी (Himerolopia)—इस रोग के रोगियों को धीमी रोशनी या रात में कोई वस्तु दिखाई नहीं देती। फाइजस्टिग्मा इस रोग की अच्छी दवा है। नक्सवोमिका, हेलीबोरस, चायना, बेलेडोना, लाइकोपोडियम, हायोसायमस, रेननक्युलस नाइट्रिक एसिड, पल्सेटिला, स्ट्रेमोनियम, विरेट्रम, सल्फर और मर्क्युरियस, आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

दिनौन्धी (Nyctalopia) इस रोग में दिनके समय या उजाले में रोगी कुछ देख नहीं सकता पर अंधेरे में उसकी आँखे ठीक काम देती है। बोथूप्स इस रोगी की प्रधान दवा है। लक्षणानुसार साइलीसिया फोस्फरस, सल्फ्युरिक एसिड बेलेडोना, स्ट्रेमोनियम, मर्क्युरियस कोनायम, जेल्सीमियम, नक्सवोमिका और पल्सेटिला आदि दवाओं से भी लाभ होता है।

द्वित्व दृष्टि ([illegible])—इस रोग मे सब चीजें दो दो दिखायी देती हैं। जुफोर्बिया एगारिकस एन्टिमटार्ट आर्जेन्टम नाईट्रिकम और जलसमिट आदि दवाओं से इस रोग में लाभ होता है

धूम्र दृष्टि (Glancoma)-इस रोग में आँखों के सामने धुआँ या कुहासा सा दिखायी देता है। एकोनाइट, अर्जेन्टम, नाइट्रिकम,फोस्फरस,वेलेडोना,जेल्सीमियम और स्पाइजिलिया आदि दवाएँ लक्षणानुसार देने से इस रोग में लाभ होता है।

जाल दृष्टि (Muscal Volitantes)—इस रोग में आँखों के सामने जाल सा बिछा हुआ दिखायी देता है। कभी कभी फतिङ्गे धूल के कण जैसी चीजें उड़ती दिखायी देतीहैं ' यह रोग प्रायः शारीरिक दुर्बलता या कमजोरी के कारण होता है, इसलिये पुष्टिकर चीजें खाने से यह रोग आराम हो सकता है। आवश्यकतानुसार चायना, एसिडफस और फोस्फरस आदि दवाओं के सेवन से भी लाभ होता है।

आंशिक दृष्टि (Partial Blindness) इस रोग में आँख के सामने की चीजें पूरी पूरी नहीं दिखायी देतीं। किसी वस्तु का केवल ऊपरी अंश दिखायी देने पर अरममेट, दाहिना अंश दिखायी देनेपर लीथियाकार्ब और बायाँ अंश दिखायी देने पर लाइकोपोडियम से लाभ होता है। (अर्ध-दृष्टि देखिये)

क्लान्त दृष्टि—इस रोग में किसी चीज की ओर कुछ ही देर तक देखने से आँखें थक जाती हैं। कल्केरिया कार्ब और नेट्रमम्यूर से इस रोग में काफी लाभ होता है।

आँखका फड़कना (Nyctitation)-इस रोग में आँख की पलकें लगातार फड़का करती हैं। इससे कभी कभी कष्ट होता है। पल्सेटिला या इग्नेशिया के सेवन से इस रोग में काफी लाभ होता है।

पलक का पक्षाघात (Ptosis) इस रोग में आँख की ऊपरी पलक या पपटे में लकवा हो जाता है। इससे इच्छा करने पर पलक ऊपर को नहीं उठती और आँख सदा ढकी रहती है। कुछ देखने की जरूरत होने पर उंगलियो से पलक को ऊपर उठाना पड़ता है। उपदंश जनित लकवा, मैलेरिया जनित कमजोरी और वृद्धावस्था के कारण यह रोग होता है। एलुमिना, कस्टिकम, युफ्रेशिया, जेलसीमियम, केलमिया, लेडम, नेट्रमम्यूर, रसटक्स सीपिया और हायोसायमस आदि दवाओं से इस रोग में लाभ होता है।

पुतली का प्रदाह (Iritis)—गरमी, वात, चोट, आँखो का अधिक परिश्रम आदि कारणों से अनेक वार आँख की पुतली में प्रदाह उत्पन्न होता है। इससे पुतली का रंग बदल जाना, कम दिखायी देना, आँख में लाली, सूजन और दर्द, आँख से पानी गिरना आदि लक्षण प्रकट होते हैं। नयी बीमारी और हरारत होने पर एकोनाइट ३ या ६। चोट लगने के कारण रोग होने पर आर्निका ३ या ६। टपटप वेदना, शिर दर्द और शिर में चक्कर होने पर बेलेडोना ६। वात के

कारण रोग, आँख हिलाने पर और शामको तथा रात में तकलीफ बढ़ने पर ब्रायोनिया ६ या ३०। प्रदाह के साथ रक्त संचय और दर्द होने पर जेल्सीमियम ६ या ३०। प्रमेह के कारण रोग होने पर फोस्फरिक एसिड ६ या ३०। इनके अतिरिक्त मर्क्युरियस ६ या ३०, पल्सेटिला ६ या ३०, रसटक्स ६ या ३० और स्पाइजिलिया ६ या ३० आदि दवाओं से भी लाभ होता है।

आँख में ठेंठर—पुतली का प्रदाह होने पर अनेक बार उसमें ज़ख्म हो जाता है और उस जख्म के रास्ते भीतर के टिस्सु गाँठ बन कर मटर की तरह बाहर निकल पड़ते हैं। इसे ठेंठर कहते हैं। आँख से लेकर शिर तक दर्द मालूम होने पर सिमिसिफिउगा। आँख में जलन और डंक मारने जैसा दर्द होने पर एपिस। ज्वालाकर अश्रुस्राव, रोशनी बरदास्त न होना, बेचैनी आदि लक्षणों में आर्सेनिक। दर्द का बाहर की ओर से भीतर की ओर बढ़ना, रोशनी से डरना आदि लक्षणों में अरममेट। गहरा और सड़न युक्त जख्म, शिर को ढक रखने की इच्छा आदि में साइलीसिया। गरमी या सूजाक के कारण रोग होने पर थूजा। यह सब दवाएं ३ से लेकर ३० क्रम तक व्यवहार करनी चाहिये। लक्षणानुसार अर्जन्टम नाइट्रिकम, एसाफिटीडा, कल्केरिया कार्ब, कल्केरिया आयोड, केमोमिला, सिना वारिस, कोनायम, क्रोटन, युफ्रे-

शिया. ग्रेफ़ाइटिस, हिपर. मर्क्युरियस. नेट्रमम्यूर, मेकसिनि-नम, सल्फर और फेलीबाइक्रोम आदि दवाओं से भी लाभ होता है।

आँख में फूली—पुतली के प्रदाह या ज़ख्म के कारण आँख में एक तरह की झिल्ली पैदा हो जाती है। पुतली पर यह झिल्ली होने से रोगी को कम दिखायी देता है। झिल्ली बहुत मोटी या अधिक होने पर बिल्कुल दिखायी नहीं देता। पारा का दोष रहने पर नाइट्रिक एसिड, गण्डमाला धातु में कल्केरिया कार्ब,चोट लगनेके कारण यह रोग होने पर आर्निका और साधारण रोग में युफ्रेशिया से इसमें फायदा होता है। युफ्रेशिया मदरटिञ्चर १० बूँद आधी छटाँक पानी या गुलाब जल में मिला कर तीन या चार बार में आँख में डालने से बहुत लाभ होता है। चेलीडोनियम क्युप्रम, एलुमिना, हिपर, केलीबाइक्रोम नेट्रम सल्फ पल्सेटिला, रसटक्स, साइलिसिया और स्पञ्जिया आदि दवाओंसे भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

कई उपसर्गों की दवायें—आँखों में जलन मालूम होने पर बेलेडोना आर्सेनिक और सल्फर। आँखें सदा खुजलाने पर सल्फर और पल्सेटिला। आँखों से पानी गिरने पर युफ्रेशिया और पल्सेटिला। ऐसा मालूम होना मानों आँखों में बालू पड़ा है—कास्टिकम हिपर सल्फर नेट्रमम्यूर और सल्फर। रातमें आँखोंका दर्द बढ़ने पर आर्सेनिक और सिफि-

लिनम। धूप या तेज रोशनी में दर्द बढ़ने पर मर्क्युरियस ३। पढ़ने के समय आँखें तुरन्त थक जाती हों तो जेबोरेन्डी या नेट्रम आर्स। पढ़ने के समय अक्षर जुड़े हुए मालुम होने पर नेट्रम म्यूर। पढ़ने के समय मानो अक्षर गायब हुए जाते हों-साइक्यूटा। आँखोंमें ठीक एकही समय दर्द शुरू होनेपर-सिड्न।

आवश्यक सूचना—नेत्र रोग की सभी दवाएँ खासकर नयी बीमारी में निम्नक्रम की ही व्यवहार करनी चाहिये। यदि होमियोपैथिक दवा खायी जाय तो बाहर से काजल सुरमा, अंजन या किसी तरह की भी कोई दवा आँख में न लगाना ही अच्छा है। यदि स्वयं चिकित्सक ने ही कोई दवा बतलायो हो तो वह सहर्ष व्यवहार की जा सकती है।

७—कर्ण-रोग।

(Diseases of the Ear)

कर्ण-प्रदाह।

(Otitis)

यह रोग प्रायः ठंढ या सरदी लगने के कारण होता है। कान में टनक, लाली और सूजन, कान के अन्दर जलन, हिलने डोलने या हाथ रखने से दर्द का बढ़ना, कम सुनायी देना, धीमा बुखार इत्यादि इस रोग के प्रधान लक्षण हैं। कभी

कभी किसी चर्म रोग के साथ भी यह रोग दिखायी देता है। कभी दर्द तो बन्द हो जाता है, पर कान से पीब बहने लगता है।

चिकित्सा ।

एकोनाइट ३ x या ६—नयी बीमारी, कान उज्ज्वल, लाल,फूला हुआ और गरम, कान में प्रदाह, चिलकने जैसा दर्द, साधारण बुखार इत्यादि में इसे देना चाहिये ।

बेलेडोना ३ या ६—कुछ कालापन लिये हुए लाली, कान के अन्दर दूर तक प्रदाह, दपदपी, काटने या दबा रखने जैसा दर्द इत्यादि। एकोनाइट से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये ।

पल्सेटिला ६ या ३०-कानके भीतर और बाहर प्रदाह, छुरी से कट जाने जैसा दर्द कान से पीब बहना, कान का बन्द हो जाना, कुछ सुनायी न देना हाम ज्वरके बाद इस रोग का होना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये ।

मर्क्युरियस सल ३ या ६—कान के अन्दर दपदपी नेजे दर्द कान से सड़ा हुआ बदबूदार खून मिला पीब निकलना कान में फोड़ा फुन्सी रात में दर्द का बढ़ना इत्यादि बेलेडोना के बाद इसे देने से अधिक लाभ होता है

अर्निका ६ या ३०—चोट लगने के कारण अथवा कान में फोड़ा होने के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

हिपर सल्फर ६—अर्निका से लाभ न होने पर इसे आजमाना चाहिये।

केमोमिला १२ या ३०—सर्दी के कारण कान का प्रदाह, दर्द के कारण रोगी का पागल हो उठना, चिड़चिड़ा स्वभाव, सुई भोंकने जैसा दर्द इत्यादि।

नाइट्रिक एसिड ६ या सल्फर ३०—पुरानी बीमारी में यह दवाएँ देनी चाहिये।

आवश्यक सूचना—कान को रूई या फ्लानेल से ढक रखना चाहिये ताकी सरदी न लग सके। फ्लानेल, नमक की पोटली, स्पंज या गरम पानी द्वारा सेंकने से दर्द कम हो जाता है।

कर्णमूल प्रदाह।

(Mumps)

कान के सामने और कान के नीचे कई गिल्टियाँ रहती हैं। इन गिल्टियों में प्रदाह होने पर वह कर्णमूल प्रदाह कहलाता है। यह रोग प्रायः वर्षा और जाड़े में ही होता है। युवक और

बच्चों को छोड़ कर बड़ी उम्र के आदमियों को नहीं होता। यह संक्रामक भी होता है। रोगी की छुआछूत से दूसरों को भी हो जाता है। इसमें कान की एक या दोनों ओर की गाँठे फूलकर कड़ी हो जाती हैं और तेज दर्द, साधारण बुखार, कुछ चिबा या निगल न सकना इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। कभी कभी कान की गिल्टियोंका दर्द बन्द होकर स्त्रियों के स्तन और पुरुषों के अंडकोष में यह बीमारी प्रकट होती है। उस अवस्था में यह रोग अधिक कष्टकर मालूम होता है।

चिकित्सा ।

एकोनाइट ३ x या ६—नयी बीमारी, बुखार, प्यास, बेचैनी, सरदी लगने के कारण यह रोग होना।

मर्क्युरियस बिन आयोडेटस ३ x या ६—यह इस रोग की प्रधान दवा है। सरदी के कारण रोग होना, गिल्टी कड़ी और फूला हुई चिबाने और निगलने में कष्ट, मुंह से लार बहना मुंह से बदबू, बुखार कम इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

बेलेडोना ३ या ३० [illegible] प्रदाह, सूजन [illegible] लाली बहुत दर्द [illegible] सूजन का घट जाना और [illegible] पर आक्रमण करना [illegible] बहोशी और [illegible] आदि लक्षणों [illegible]

बेलेडोना ६ या ३०—कान में और कानके पीछे तेज दर्द, शिर और आँख तक दर्द का फैलना, छूने या हिलाने से दर्द का बढ़ना गले में भी दर्द मालूम होना।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—एक ही ओर दर्द, खास-कर दाहिनी ओर, बहुत तेज दर्द, दर्दके कारण रोगीका व्याकुल हो उठना, पिछली रात में या दोपहर के पहले दर्द का बढ़ना इत्यादि।

डाल्केमारा ६—पानी में भीगने या सरदी लगने के कारण यह रोग होना, विश्रामके समय खासकर रात में दर्द का बढ़ना, जी मिचलाना इत्यादि।

रसटक्स ६ या ३०—एकाएक पसीना रुक जाने या भीगने के कारण कान में दर्द होने पर इससे भी बहुत लाभ होता है।

अर्निका ३ या ६—चोट लगने के कारण दर्द, कान के पीछे दर्द, कान गरम तेज आवाज से दर्द का बढ़ना।

कान में छेद होने या कुछ गड़ने जैसे दर्द में कैप्सीकम, ज्वालाकर दर्द में आर्सेनिक डंक मारने जैसे दर्द में एपिस निगलने के समय दर्द मालूम होने पर फाईटोलेका, दाँत में दर्द के साथ कान में भी दर्द होने पर कमोमिला या मर्क्युरियस आदि दवाएं व्यवहार की जाती हैं। इनके अतिरिक्त नक्स वोमिका चायना हिपरसल्फर प्लेटिना फोस्फरिकएसिड ग्रेफाइटिस आदि दवाओं से भी लाभ होता है।

मर्क्युरियस ६ या ३० कान की गिल्टियों में सूजन और दर्द, बदबूदार और खून मिला पीब निकलना, कान का बन्द हो जाना और कान से कम सुनायी देना, चेचक के बाद यह रोग होना इत्यादि ।

पल्सेटिला ६ या ३०—कान गरम और लाल गाढ़ा पीब या बिना बदबू का पानी जैसा पीब निकलना, हाम के बाद यह रोग होना इत्यादि ।

सल्फर ६ या ३०—बदबूदार पीब निकलना, पुरानी बीमारी तथा पल्सेटिला से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये ।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—गण्डमाला धातु वाले बच्चों को और बहुत पुरानी तथा कठिन बीमारी में इससे काफी लाभ होता है ।

हिपर सल्फर ६ या ३०—पारे के अपव्यवहार और हाम या चेचक के बाद इस रोग का होना, बदबूदार पीब निकलना, कम सुनायी देना, दपदप होना, सांय सांय आवाज सुनायी देना इत्यादि ।

अरमेट ६ या ३०—गर्मी के कारण यह रोग होना, बहुत पीब बहना, कान में दरद, जलन और खुजली हिलने डोलने, धोने और खुला हवा में रहने से आराम मालूम होना

आवश्यक सूचना—मूलेनआइल दो तीन बूंद कान में डालने पर दर्द घट जाता है। सेंकने से भी बहुत लाभ होता है रुई से कान ढक रखना चाहिये। सरदी से बचना चाहिये।

कान बहना।

(Ottorhoea)

गण्डमाला धातु या गरमी के दोष से अथवा कान पकने, कान में फोड़ा हो जाने आदि कारणों से कान में जख्म होकर कान बहने लगता है। कान से गाढ़ा या पतला पीव बहता है। यह बीमारी प्रायः बच्चों को ही होती है। बहुत होनेके पहले बड़ी उम्रके आदमियों को भी यह रोग हो जाता है। इसका इलाज तुरन्त करना चाहिये। क्योंकि कान और दिमाग के बीच में सिर्फ एक ही हड्डी का अन्तर है। रोग पुराना हो जाने पर दिमाग तक उसका असर पहुंचता है और उस हालत में यह रोग आराम होना बहुत मुश्किल हो जाता है।

चिकित्सा।

केप्सीकम ६—यह इस रोग की बढ़िया दवा है। कान से पीव निकलने पर सबसे पहले इसे ही आजमाना चाहिये।

कसरत करना पसन्द करे तो डाल्कमारा दीजिये। अगर रोगी चुपचाप रहना पसन्द करे तो बेलेडोना। बिछौने की गरमी से रोग बढ़े तो मर्क्युरियस। पीब बन्द हो जाने पर कर्णमूल प्रदाह जैसी बीमारी हो जाय तो उसी रोग की दवाएँ दीजिये।

आवश्यक सूचना–कान को सुसुम पानी से रोज अच्छी तरह धो देना चाहिये और दर्द वाले कान के आसपास छोटे तकिये या कपड़े की गद्दी रख कर उसी कान के बल रोगी को सुलाना अच्छा है। कान को रूई से बन्द रखना चाहिये। कान में तेल डालना इस रोग में हानिकारक है। मूलेन आइल रोज दो तीन बूँद डालना अच्छा है। जब तक स्राव एक दम बन्द न हो जाय तब तक कान को सुसुम पानी से धोते रहना बहुत आवश्यक है, वर्ना रोग का दुबारा हमला होने का डर रहता है।

कर्णनाद।

(Buzzing in the Ear)

कान में कोई बीमारी होने पर उसके साथ और कभी २ बिना किसी बीमारी के ही कान में तरह तरह की आवाज सुनायी देती है।

कसरत करना पसन्द करे तो डाल्केमारा दीजिये। अगर रोगी चुपचाप रहना पसन्द करे तो बेलेडोना। बिछौने की गरमी से रोग बढ़े तो मर्क्युरियस। पीब बन्द हो जाने पर कर्णमूल प्रदाह जैसी बीमारी हो जाय तो उसी रोग की दवाएँ दीजिये।

आवश्यक सूचना—कान को गुनगुने पानी से रोज अच्छी तरह धो देना चाहिये और दर्द वाले कान के आसपास छोटे तकिये या कपड़े की गद्दी रख कर उसी कान के बल रोगी को सुलाना अच्छा है। कान को रुई से बन्द रखना चाहिये। कान मे तेल डालना इस रोग में हानिकारक है। मूलेन आइल रोज दो तीन बूँद डालना अच्छा है। जब तक स्राव एक दम बन्द न हो जाय तब तक कान को गुनगुने पानी से धोते रहना बहुत आवश्यक है, वर्ना रोग का दुबारा हमला होने का डर रहता है।

कर्णनाद।

(Buzzing in the Ear)

कान में कोई बीमारी होने पर इसके साथ और कभी २ बिना किसी बीमारी के ही कान में तरह तरह की आवाज सुनायी देती है।

होना । रोग दब कर जब जब उभड़े तब तब इसे ही देना चाहिये ।

एलियमसिपा ६ या ३०—बारम्बार तेजी के साथ रोग का होना, तर हवा में रोग का बढ़ना, बन्द कमरे में तकलीफ का बढ़ना, खासकर लेट रहने पर, इस रोग के कारण कम सुनायी देना. साथ ही गले में दर्द, आँख से आँसू निकलना, पेशाब में तकलीफ इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये ।

एसिडफस ३०—कान में गर्जना. घंटा बजाना, गुनगुन या भन भन जैसी आवाज होना साथ ही दुर्बलता आदि लक्षणों में इसे देना चाहिये ।

बेलेडोना ३ या ६-कान में गुन गुन और सों सों आवाज होने पर इससे लाभ होता है ।

सल्फर ६ या ३०—कान का पुराना जख्म सूख जाने या कोई चर्मरोग दब जाने के कारण यह रोग होना ।

हिस हिस आवाज होने पर ग्रेफाइटिस, क्रियोजोट एसिड म्यूर नक्सवोमिका साइलीसिया और ट्यूक्रियम । मधुमक्खी की तरह गुन गुन या भन भन आवाज होने पर बेलेडोना, एमनकार्ब कास्टिकम, ग्रेफाइटिस हायोसायमस आयोडियम नेट्रम म्यूर और पल्सेटिला, तथा मेघगर्जना जैसे आवाज में कलकेरिया ग्रफाइटिस प्लेटिना अरममेट, कास्टिकम और नेलाडोनियम आदि दवाओं से विशेष लाभ होता है ।

पल्सेटिला ६ या ३०—हाम के बाद यह रोग होना. कान में काला मैल, ऐसा मालूम होना मानो कान बन्द हो गया है।

सल्फर ६ या ३०—आदमी की आवाज न सुनायी देना खाते समय कान मे सों सों आवाज, बारम्बार सर्दी लगना, और कान का बन्द हो जाना इत्यादि।

फोस्फरस ६ या ३०—कान से कम सुनायी देना. पर ठंढ आदमी की आवाज न सुनायी देना, टायफाइड ज्वर के बाद यह रोग होना कान में हमेशा एक ही तरह की आवाज सुनायी देना।

ग्रैफाइटिस ३—बहुत पुराना रोग साथ ही कान का बहना इत्यादि।

अर्जेन्टम नाइट्रिकम ६—टाइफस बुखार के बाद यदि कम बहरे हो जाने पर इसे देना चाहिये।

आवश्यक सूचना—कान में मैल या पीब वगैरह हो तो कुनकुने पानी और पिचकारी से अच्छी तरह धोकर रुई से कान पोंछ देना चाहिये बच्चों का कान ऐंठना या ज़ोर से कान पर मारना हानिकारक है नई बीमारी में [illegible] [illegible] कान [illegible] [illegible] दिन में [illegible] बार कान में डालना [illegible] [illegible]

पर नाक में जख्म हो जाते हैं, कफ गाढ़ा हो जाता है और उससे बदबू आती है। नाक का बन्द हो जाना, किसी वस्तु को सुगन्ध न मालूम होना श्वासकष्ट, नाक में पपड़ी जमना, नाक से बदबू निकलना आदि लक्षण प्रकट होते हैं। यहाँ दोनों तरह के रोगों की चिकित्सा एक साथ लिखी जाती है।

चिकित्सा।

नयी बीमारी में—अर्क कपूर, एकोनाइट, डाल्केमारा, ब्रायोनिया, नक्सवोमिका, जेल्सीमियम, आर्सेनिक, पल्सेटिला, मर्क्युरियस अरसट्राइ, एमन कार्ब इपीकाक, एलियम सिपा, केली बाइक्रोम नेट्रमम्यूर, कल्केरिया कार्ब, हिपरसल्फर और पुरानी बीमारी में कल्केरिया कार्ब केली बाइक्रोम, केली-म्यूर लेकेसिस, लाइकोपोडियम, केली आयोड मर्क्युरियस, साइलीसिया स्टिक्टा, फास्फरिक एसिड अरम मेट हिपर-सल्फर सल्फर सोरिनम आर्स आयोड, हाइड्रेस्टिस, नाइ-ट्रिक एसिड सीपिया और नक्सवोमिका आदि दवाएं विशेष रूप से व्यवहार की जाती हैं। खास खास दवाओं के लक्षण नीचे लिखे जाते हैं।

स्पिरिट कैम्फर—कुछ कुछ जाड़ा बदन में दर्द नाक से पतला पानी निकलना आदि जुकाम के प्रारम्भिक लक्षण मालूम होते ही आध आध घंटे के अन्तर से कई घंटे तक

एलियमसिपा ६ या ३०—तर और ठंढो हवामें रोगका बढ़ना, आँख से पानो बहना. शिरदर्द, खाँसी, प्यास, रात में और बन्द कमरे में तकलीफ का बढ़ना, खुले स्थान में आराम, नाक से बहुत पानो निकलना इत्यादि।

लेकेसिस ६ या ३०—बहुत तेज जुकाम, नाक से बहुत ज्यादा पानो निकलना, नाक का फूल जाना।

आर्सेनिक ६ या ३०—गरमी मे आराम मालूम होना, थोड़ा थोड़ा पानो पीना. कमजोरी, बहुत बेचैनी, नाक और शरीर में जलन, नाक और आँख से गरम पानी गिरना, ऐसा मालूम होना मानो नाक बन्द हो गयी है, फिर भी नाक बहना. रात में नींद न आना इत्यादि।

नक्सवोमिका ६ या ३०—आर्सेनिक से लाभ न होने पर आर्सेनिक से मिलते जुलते लक्षणों में अथवा दिन में नाक बहना रात में बन्द हो जाना मुंह सूखा कब्जियत छाती जकड़ी हुई, शाम के वक्त पारी पारी से गरमी और जाड़ा मालूम होना, सिर चेहरा या समूचा शरीर बहुत गर्म आदि लक्षणों मे इसे देना चाहिये।

डालकमारा ६ कुछ लक्षण आर्सेनिक के और कुछ लक्षण नक्सवोमिका के लेकिन चलने फिरने रहने पर रोगी को आराम मालूम होना और विश्राम से तकलीफ का बढ़ना

केली बाइक्रोम ३ या ६—नाक से गाढ़ा गाढ़ा रस्सी जैसा कफ निकलना, गला बैठ जाना, नाक से सड़ी बदबू निकलना, नाक में ज़ख्म।

केलीसल्फ ३ या ६—पल्सेटिला देनेके बाद गलेमें कफ घड़घड़ाता रहे तो इसे देना चाहिये।

लाइकोपोडियम ३०—रात में नाक बन्द हो जाने के कारण मुँह से साँस लेना।

केली आयोड ६ या ३०—पारे या गर्मी का दोष, नाक मे जख्म, काला काला या पीला पीला चिकना कफ निकलना।

स्टिक्टा ३ या ६—नाक का बन्द हो जाना, नाक सूखी नाक में पपड़ी, नाक में दर्द, बारंबार नाक छिड़कना, पर नाक से कफ न निकलना।

फोस्फरिक एसिड ६ या ३०—हमेशा नाक का खुजलाते रहना नाकमे खून मिला पीब निकलना नाकसे सड़ी बदबू।

कार्बोवेज ३० नाक का बन्द रहना दिनभर आराम शाम के वक्त फिर जुकाम का प्रकट होना।

जेल्सामियम ६ या ३० गले में दर्द, निगलने से नाक लेकर कान के अन्दर तक दर्द हवा में साधारण परिवर्तन होने पर भी जुकाम हो जाना।

सल्फर ६ या ३० स्वाद और सुगन्ध बिलकुल न मालूम होना शिर में चक्कर मूरत बिछौने से उठने से। पाखाना

अरममेट ६ विचूर्ण—गर्मी का दोष, नाक में पपड़ी या जख्म, हमेशा नाक का बन्द रहना, गाढ़ा बदबूदार स्राव, सदा खिन्न रहना, आत्महत्या करने की इच्छा इत्यादि।

कुछ उपसर्ग—किसी दवाके प्रयोग से जुकाम दब जाय, नाक से पानी निकलना बन्द हो जाय लेकिन उसके कारण शिरदर्द करने लगे तो एकोनाइट दीजिये। इससे फिर पानी बहना न शुरू हो तो पल्सेटिला या चायना दीजिये। अगर बायीं आँख पर जोरों का दर्द होता हो तो स्पाइजिलिया दीजिये। अगर समूचे कपाल में दर्द हो या दाहिनी ओर अधिक दर्द हो और पीला पीला पीब जैसा कफ निकलता हो तो बेलेडोना दीजिये। अगर रोज शाम को कुछ घंटों के लिये दर्द हो जाया करता हो तो आर्सेनिक दीजिये। छाती में सर्दी बैठ जाने के कारण श्वास कष्ट हो तो इपीकाक दीजिये इससे फायदा न हो तो ब्रायोनिया या आर्सेनिक अथवा दमा रोग की दवाओं में से कोई दवा दीजिये। उपरोक्त दवाओं में से किसी दवा से लाभ न हो तो सल्फर आजमाइये। खाँसी बुखार आदि उपसर्गों के लिये उन्हीं रोगों की दवाओं में से दवा चुननी चाहिये।

आवश्यक सूचना रोग के समय गरम पानी पीना चीनी डाल कर गरम दूध पीना और नाक से गरम पानी की भाप सांस में लेना लाभदायक है। नमक मिला पानी नाक

से सुड़कने पर भी वहुत लाभ होता है। बुखार न होने त गरम पानी से नहाकर शरीर पोंछ डालना चाहिये और शरीर को गरम कपड़े से ढक लेना चाहिये। भात न ता अच्छा है। रोटी मजे में खायी जा सकती है। बुखार होने पर बुखार को तरह पथ्य परहेज़ा करनी चाहिए।

पीनस या नाक में जख्म।

(Ozoena)

बुखार, पुराना जुकाम, चोट गण्डमाला, धातु, नाक में अन्न या कोई दूसरी चीज का घुस जाना आदि कारणों से भी यह रोग होता है, लेकिन गरमी या उपदंश का दोष ही इस रोग का प्रधान कारण है। इसमें नाक में जख्म होकर उसमें खून मिला बदबूदार पीब बहता है। जख्म तालू की हड्डी तक फैल जाता है, नाक में सूखी पपड़ी पड़ती है, नाक से इतनी बदबू निकलती है कि पास बैठा नहीं जाता। यदि रोग जल्द आराम न हुआ तो अन्त में नाक की हड्डी तक गल जाती है। फलतः नाक बैठ जाता है और रोगी नकिया नकिया कर बोलता है।

चिकित्सा।

आरमेट ६ या ३०—गरमी के कारण बीमारी, नाक के अन्दर जख्म, वेदना पपड़ी जमना पीले रंग का स्राव, पतला

और बदबूदार पीव निकलना, नाककी हड्डी का धीरे धीरे क्षय होना इत्यादि।

ऐसिड नाइट्रिक ६ या ३०—पारे या गर्मी का दोष माता, पिता में यह दोष होने के कारण बच्चों को पीनस होना, नाक में सूजन, बदबूदार पीव निकलना इत्यादि लक्षणों मे इसे देना चाहिये।

कैलीबाइक्रोम ६ या ३०—नाक से बहुत पानी या रक्त मिला बदबूदार पीव निकलना, किसी वस्तु की गन्ध न मालूम होना, नाक का बिचला भाग बैठ जाना इत्यादि लक्षणों में इससे लाभ होता है।

मर्क्युरियस विन आयोडेटम ६-खून मिला स्राव और नाक के अन्दर हड्डी में जख्म।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३० गण्डमाला धातु गाढ़ा और पीले रंग का बदबूदार स्राव।

आयोडियम ६ या ३० नाक के अन्दर जख्म और बदबूदार पीव निकलना इत्यादि।

आर्सेनिक ६ या ३ बहुत जलन, पानी जैसा स्राव निकलना और आना गला बैठ जाना इत्यादि।

सारिनम ३०—नाक से बहुत बदबूदार स्राव निकलना दवा से रोग का पूरा तरह आराम न होना।

पल्सेटिला ६ या ३०—यह स्त्रियों की दवा है। थोड़ा कम ऋतुस्राव होना, ऋतुके समय नाक से खून गिरना, जुकाम के साथ यह रोग होना, दोपहर के बाद से लेकर आधीरात के पहले तक इस रोगका प्रकट होना।

एकोनाइट ३ X या ६—रक्ताधिक्य धातु, जवानी में यह रोग होना, चमकीला लाल खून गिरना, शिरमें रक्त संचय या शराब पीने के कारण यह रोग होना इत्यादि।

ब्रायोनिया ६ या ३०—एकोनाइट से फायदा न होनेपर और इस रोग के साथ शिर और छाती की भी शिकायत होने पर इसे देना चाहिये।

चायना ६ या ३०—बहुत दिनों तक रक्तस्राव होने के कारण कमजोरी, उसके कारण यह रोग होना, चेहरा फीका इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

का[illegible] ६ या ३०—नाकसे [illegible] में बहुत सा खून निकलना, दोपहर के पहले और रात में रोग का आक्रमण, नाक से खून गिरने के पहले और बाद चेहरा फीका हो जाना, इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। वृद्ध और कमजोर आदमियों की बीमारी में इस दवा से बहुत लाभ होता है।

[illegible] ६ या ३० अधिक परिश्रम या खून [illegible] के कारण यह रोग होना, विश्राम के समय और रात

में रोग का हमला, नाक फूटने के कारण नींद से जाग पड़ना इत्यादि।

क्रोकस ६—नाक से गाढ़ा और काला काला खून गिरना, रोग के समय कपाल में ठंडा पसीना इत्यादि।

मर्क्युरियस ६ या ३०—रात में सोते समय या रात में बुखार के साथ नाक से खून निकलने पर इसे देना चाहिये।

साइना ३ या २००—बच्चों को पेट में कृमि होने के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

सल्फर ३० या २००—जिन्हे बारंबार यह रोग होता हो, उन्हें यह दवा देनी चाहिये।

सिकेली ६ या ३०—बहुत दुर्बलता के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

बेलेडोना ३ या ६—नाक से बूंद बूंद करके बहुत खून गिरना रात के समय बच्चों की नाक फूटना, शिर में रक्ताधिक्य के कारण यह रोग होना इत्यादि।

फेरम ६ या ३०—कमजोरी और रक्तहीनता के कारण रोग होने पर इससे लाभ होता है।

हेमामिलिस १ x या ३ x—ऋतु का बन्द हो जाना नाक से बहुत खून गिरना इत्यादि।

नक्सवामिका ३ या ६—बवासीर का खून बन्द हो जाने के कारण यह रोग होना कपाल मे दर्द इत्यादि।

इनके अतिरिक्त मिलिफोलियम नेट्रमनाइट्रिकम, हेमा-मिलस, निरेटम सिर, चायना, लेकेसिस, आर्सेनिक, पोडो-फिलाम, फेरम मिटिकम आदि दवाओं से भी काफी लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—सरसों का तेल, ठंडा पानी या हेमामेलिस मदरटिञ्चर नासकी तरह सुड़कने पर लाभ होता है। अधिक रक्तस्राव होने पर कपाल, नाककी जड़ या जननेन्द्रिय पर बरफ रखने से फायदा होता है। खून निकलने के समय मुँह बन्द कर नाकसे साँस लेना चाहिये। ठण्डे पानी से नहाना और हलकी तथा पुष्टिकर चीजें खाना चाहिये। अधिक पढ़ना लिखना या परिश्रम करना और उत्तेजिक चीजें खाना पीना मना है।

नाकके अन्यान्य रोग।

गन्ध न मालूम होना—नयी या पुरानी सर्दी अथवा किसी दूसरी बीमारी के कारण कभी कभी नाक की घ्राणशक्ति खराब हो जाती है या लोप हो जाती है। जिस कारण से यह शिकायत पैदा हुई हो, वह कारण दूर कर देने से यह शिकायत अपने आप दूर हो जाती है। नयी बीमारी में एकोनाइट और पुरानी बीमारी में पल्सेटिला, मर्क्युरियस तथा सल्फर व्यवहार किया जाता है। कल्केरिया कार्ब

सीपिया. जेल्सीमियम, केली वाइक्रोम और केलीआयोड से भी लाभ होता है ।

नाकका प्रदाह—चोट, सर्दी और गण्डमाला धातु आदि कारणों से यह रोग होता है । नाकमें दर्द, सूजन, जलन, खुजली, फोड़ेकी तरह कड़ापन, कभी कभी पीब पड़जाना इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं । नयी बीमारी मे एकोनाइट, बेलेडोना, मर्क्युरियस और अर्निका आदि दवाएँ व्यवहार की जाती है । पीब पड़ जाने पर हिपरसल्फर, मर्क्युरियस, केलीबाइक्रोम और साइलीसिया आदि दवाएँ देनी चाहिये ।

नासरोग या नकड़ा (Palypas)—नाक के अन्दर लहसुन जैसी कोमल सूजन होने को नकड़ा कहते हैं । यह रोग नाक के एक या दोनों छेदों में हो सकता है । यह रोग सर्दी के साथ शुरू होता है । कभी कभी यह रोग होने पर बुखार भी आ जाता है । बेलेडोना या कल्केरियाकार्ब का सेवन और सेगुइनेरिया या स्युक्रियम मदरटिञ्चर का वाह्य प्रयोग इस रोग मे बहुत लाभदायक होता है । केडमियम सल्फ, फोस्फरस सोरिनम, केलीबाइक्रोम, मर्क्युरिस आयोड थूजा एसिड नाइट्रिक और मेलीलोटस एल्बा आदि दवाएं भी लक्षणानुसार व्यवहार की जाती हैं ।

नाक में फोड़ा फुन्सी—नाक का बाहरी भाग सदा लाल रहने पर बेलेडोना, सल्फर, आरनम्यूर. फ्लूरिक एसिड, एपिस

और थोरिक्स आदि दवाएं व्यवहार की जाती हैं। नाक में पीब भरी फुन्सियां होने पर पेट्रोलियम से बहुत लाभ होता है। नाक की नोक पर फुन्सी या फोड़े होने पर एसनकार्ब, केलीक्रोम, थोरिक्स, केप्सीकम, सिलिका, आर्कजेलिक एसिड, कार्बोएनी और नाक टटाने पर ग्रेफाइटिस तथा केलीबाइक्रोम आदि दवाएं लक्षणानुसार व्यवहार की जाती हैं।

आवश्यक सूचना—नाक की बीमारियां घातक नहीं होतीं, फिर भी इनका इलाज सावधानी से करना चाहिये। नाक में कोई चीज घुस जाने पर उसे ठेल ठेल कर ऊपर न चढ़ा देना चाहिये, बल्कि सूत का फन्दा या चिमटी आदि के सहारे धीरे धीरे उसे बाहर निकाल लेना चाहिये।

मुखके रोग।

(Diseases of the mouth)

मुख गह्वर में जीभ, दांत, मसूड़े, आलजिह्वा आदि अंग हैं। इनकी अधिकांश बीमारियां पेटकी खराबीके कारण उत्पन्न होती हैं। इसलिये उनकी गणना पेटकी बीमारियोंमें की जा सकती है। तथापि पाठकों की सुविधा के लिये उन्हें हम यहां अंकित करते हैं।

मुंहमें दुर्गन्ध।

(Offensive Breath)

दांत या मसूड़ोंकी खराबी, दांत में मैल, अच्छी तरह मुंह न धोना तम्बाकू या शराब पीना, पेटकी खराबी, पारेका

अपव्यवहार, मुँहमे जख्म, जुकाम, गलेमें सूजन आदि अनेक कारणों से श्वास प्रश्वास या मुँह में बदबू आ सकती है। जिस कारण से मुँह मे बदबू आती हो, उसे दूर करने की चेष्टा करनी चाहिये। आवश्यकतानुसार निम्नलिखित दवाएँ प्रयोग की जा सकती हैं—

चिकित्सा ।

केवल सुबह में बदबू मालूम देती हो तो नक्सवोमिका ६ या ३०। सुबह और रातमें मालूम होने पर पल्सेटिला ६ या ३०। सिर्फ भोजन के बाद मुँहमें बदबू मालूम होती हो तो कैमोमिला १२ या ३०। प्याज जैसी गन्ध मालूम देती हो तो पलियमशिपा ३० या पेट्रोलियम ६। किस कारण से बदबू आ रही है, यह मालूम न होने पर आर्निका ३। कार्बोवेज ६ इस रोगकी अच्छी दवा है। दो सप्ताह तक इसे सेवन करनेके बाद कुछ दिनों तक हिपरसल्फर ६ या नाइट्रिक एसिड ३ सेवन करने से रोग अवश्य आराम हो जाता है। आवश्यकतानुसार ब्रायोनिया, आर्सेनिक, हायोसायमस मर्क्युरियस नक्समस्केटा, स्पाइजीलिया और सल्फर आदि दवाएं भी दी जा सकती हैं।

मुख-प्रदाह ।

(Stomatitis)

पेटकी खराबी या सर्दी और दाम आदि कारणों से यह रोग होता है। इसमें मसूड़ों में सूजन और दर्द मुँहमें

अन्दर और जीभ में छोटे छोटे जख्म या छाले, गले की गिल्टियों का फूल उठना, लार बहना, कभी कभी खून या पीब निकलना, रोग बढ़ने पर बुखार आजाना आदि लक्षण प्रकट होते हैं।

चिकित्सा ।

बेलेडोना ३ या ३०—रोगके आरंभ में जब लाली दिखायी दे तब इसे देना चाहिये।

मर्क्युरियस ६—यदि पारेका अपव्यवहार न हुआ हो तो नयी बीमारीमें इससे बहुत लाभ होता है। यदि पारा खाया जा चुका हो तो कार्बोवेज देना चाहिये। मर्क्युरियस से पूरा लाभ न होने पर डालकेमारा।

आर्सेनिक ६—नमकीन पदार्थ अधिक खानेके कारण रोग हुआ हो तो इसे देना चाहिये। कार्बोवेज भी दिया जा सकता है। मसूढ़े काले पड़ जायँ तो आर्सेनिक ही देते रहना चाहिये।

कार्बोवेज ६ या ३०—पारे या नमक का अपव्यवहार, मसूढ़ों से खून और बदबू निकलना इत्यादि। इससे लाभ न होने पर लेकेसिस या केप्सीकम आजमाना चाहिये।

केलीक्लोरिकम ३—मुंह, गला और तालु में जख्म जीभ पर छाले, मुहमें बदबू।

नेट्रमम्यूर ६ या ३०—मुंहमें और जीभ में जख्म, मसूढ़ों में सूजन और रक्तस्राव, खाने, पीने और बोलने में भी तकलीफ इत्यादि लक्षणों में और उपरोक्त दवाओं से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

बोरेक्स ३—यह भी इस रोगकी एक अच्छी दवा है।

इनके अतिरिक्त हिपर सल्फर, सल्फर, सोरिनम, हेलीबोरस, क्रियोजोट, नेट्रमम्यूर, नाइट्रिक एसिड आदि दवाएँ भी दी जा सकती हैं।

आवश्यक सूचना—रोगके आरंभ में गरम पानी में नींबू का रस डालकर कुल्ली करने से लाभ होता है। मुंह के जख्मों में बोरिकाम २X विचूर्ण लगाना लाभदायक है। रोगकी अवस्था में गरम पानी से मुंह धोना चाहिये।

मुंह में गलित क्षत।

(Cancrum oris)

पेट यकृत तिल्ली आदि की खराबी या मेलेरिया आदि बुखारों के कारण होठ गाल जीभ या होठों की जड़में एक तरह का जख्म होता है। इसमें बहुत दर्द और जलन होता है। जख्म धीरे धीरे बढ़ता जाता है। इसके बाद [illegible] गलकर गिर जाता है और मुंह से बदबू [illegible]।

चिकित्सा ।

इस रोग में आर्सेनिक, एसिड फास, कार्बोवेज, एसिड नाइट्रिक, लेकेसिस, मर्क्युरियस, फेरी फास्फो, कैली क्लोरिक और क्रियोजोट आदि दवाएं लक्षणानुसार व्यवहार की जाती हैं। मुख प्रदाह की दवाओं में से भी दवा चुनी जा सकती हैं।

मुँहमें खराब स्वाद ।

(Bad tastein Mouth)

अनेक बार यह रोग दूसरे रोगों का लक्षण मात्र होता है। इसलिये, यदि मूल रोगका पता लग जाय तो उसीका इलाज करना चाहिये। यदि उसका पता न चले तो निम्नलिखित दवाएं लक्षणानुसार पसन्द की जा सकती हैं:—

सुबह मुँहका स्वाद कड़ुआ—सल्फर, मर्क्युरियस वाइवस, पल्सेटिला, ब्रायोनिया, कल्केरिया और साइलीसिया।

खानेकी चीजें कड़वी मालूम हों—सल्फर ब्रायोनिया, रिउम रसटक्स, हिपर, कोलोसिन्थ और फेरममेट ।

खाने तथा पीनेकी भी चीजें कड़वी मालूम हों—पल्सेटिला और चायना ।

खाने या पीने के बाद कडुवा स्वाद—पल्सेटिला, ब्रायोनिया और आर्सेनिक ।

सुबह या शाममें कड़वा स्वाद—पल्सेटिला और अर्निका।

किसी दूसरे समय या सदाही कड़वा स्वाद—उपरोक्त दवाएं तथा एकोनाइट, वेलेडोना, विरेट्रम, नक्सवोमिका, केमोमिला, एन्टिमक्रूड, कार्बोवेज।

मुहमें मीठा स्वाद—मर्क्युरियसवाइवस, सल्फर, क्यु-प्रम वेलेडोना, पलसेटिला, ब्रायोनिया. चायना, फेरम, स्पञ्जिया।

सुबह में मीठा स्वाद—सल्फर।

रोटियाँ मीठो मालूम होने पर—मर्क्युरियस-वाइवस।

मुँहमें नमकीन स्वाद—कार्बोवेज, रिउम. फोरफरिक-एसिड, नक्सवोमिका, सल्फर, आर्सेनिक नेट्रमम्यूर और क्युप्रम।

खाते समय नमकीन स्वाद—कार्बोवेज सल्फर।

खाँसते समय नमकीन स्वाद—कार्बोवेज ककुलस।

मुहमें खट्टा स्वाद—रिउम फोरफरिक एसिड नक्स-वोमिका चायना सल्फर, कैप्सीकम, कल्केरिया नेट्रमम्यूर ककुलस. क्युप्रम।

खाने की चीजें खट्टी मालूम होने पर—चायना और कल्केरिया।

कारणों से यह रोग होता है । जिस कारण से यह रोग हुआ हो, पहले उसीका इलाज करना चाहिये । साधारणतः कल्के-रिया कार्ब मर्क्युरियस, कार्बोवेज, एसिड फस आदि दवाएं इस रोगमें व्यवहार की जाती हैं ।

मसूढ़ों में जख्म ।

(Gum Boil)

मसूढ़े में दांतों की जड़ में छोटासा फोड़ा होकर यह फट जाता है और उसीके कारण मसूढ़े में जख्म हो जाता है । होनेमें दर्द, मसूढ़ेमें सूजन, पीब बहना, साधारण बुखार आदि इस रोग के प्रधान लक्षण हैं ।

चिकित्सा ।

बेलेडोना ६ या ३० — शोथ व ... के प्रदाह और दपदपी होने पर इसे देना चाहिये

मर्क्युरियस [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

आवश्यक गनना—लगे हुए दाँत उखाड़ना देना अच्छा है। सूजनवाले स्थान में नोक लगा कर खून और पीव निकाल देने से आराम मिलता है। आवश्यकता हो तो पुल्टिस चढ़ाई जा सकती है।

जिह्वा प्रदाह।

(Glossitis)

सर्दी, कमजोरी, चोट या जख्म, पारेका अपव्यवहार और एक तरह के जीवाणुके कारण यह रोग होता है। इसमें जीभ लाल हो जाती है, फूल जाती है और उसमें दर्द होता है।

चिकित्सा।

बीमारी के आरंभ में एकोनाइट ३ X या बेलेडोना ६ से लाभ हो सकता है। मर्क्युरियस बाइवस ६ इस रोग की बढ़िया दवा है, बशर्ते कि रोगी ने पहले पारा न खाया हो। चोट लगने के कारण यह रोग होने पर अर्निका ३ या ६। जीभ में सूजन, प्रदाह, निकलने में तकलीफ, डंक मारने जैसी ज्वालाकर वेदना में एपिस ३ या ६। आग में जल जाने के कारण यह रोग होने पर आर्टिकायुरेन्स ३ या ६। तेजबीमारी जलन, सड़ने का उपक्रम आदि में आर्सेनिक ६ या ३०। नींद के बाद तकलीफ का बढ़ना, सड़न, स्पर्श बरदास्त न होना

यदि लक्षणों में लेकेकिस ६ या ३०। पारे के अपव्यवहार कारण रोग होने पर नाइट्रिक एसिड, अरम मेट, हिपर ल्फर या कार्बोवेज। मधुमक्खियों के काटने या ऐसेही सी दूसरे कारण से यह रोग होने पर नेट्रमम्यूर या ३०। नींद में जीभ कट जाने के कारण प्रदाह होने पर सिडफल ६ या ३०। मुँह सदा साफ रखना चाहिये। र्निका या आर्टिकायुरेन्स के लोशन से कुल्ली करने पर ाभ होता है।

जीभकी अन्यान्य बीमारियाँ।

बच्चे जीभ के दोष से बोलना न सीखें तो नेट्रमम्यूर। ारा खाने के कारण जीभ में छाले पड़ जाये तो नाइट्रिक एसिड या हिपर सल्फर। बहुत गरम चीज खाने पीनेके कारण जीभका प्रदाह होने पर केन्थरिस। जीभ में छाले और जलन होनेपर नेट्रमम्यूर। जीभ अकड़ जाने पर कास्टिकम। जीभ निर्जीव मालूम होने पर जल्सीमियम। गरमी के कारण जीभकी बीमारी होनेपर एसिड फ्लोरिक। घी और पानका रस गर्मकर जीभ पर मालिश करने से जीभ के जख्म अच्छे हो जाते है।

दाँत में दर्द।

(Toothache)

दांतों में अनेक कारणों से दर्द होता है। दर्द कभी एक दांत में और कभी कई दांतों में एक साथ ही होता है। दर्द व

कारण रोगी रोता है, हवा रमता है या लोट कर खून निकालता है। कभी कभी तो वह बेचैनी के कारण पागल की तरह इधर उधर घूमता फिरता है। दाँत के दर्द का इलाज कारण को ध्यान में रखते हुए करना पड़ता है।

चिकित्सा।

दाँत के दर्द में निम्नलिखित दवाएं विशेष रूप से व्यवहार की जाती हैं—एकोनाइट, एन्टिम क्रड, एपिस, आर्निका, आर्सेनिक, बेलेडोना, ब्रयोनिया, कल्केरिया, कार्बोवेज, कस्टिकम, एलियम सिपा, कैमोमिला, चायना, कोफिया, डालकमारा, ग्लोनइन, हिपर सल्फर, हायोसायमस, इग्नेसिया, लेकसिस, मर्क्युरियस, नक्स मस्केटा, नक्सवोमिका, फॉस्फरस, फोस्फरिक एसिड, पल्सेटिला, रसटक्स, साइलीसिया, स्टेफीसेग्रिया और सल्फर। इनमें से प्रधान प्रधान दवाओं के लक्षण नीचे लिखे जाते हैं:—

एकोनाइट ३X—असह्य वेदना स्पर्शा, बेचैनी शिरदर्दके कारण रोगीका पागल हो उठना, शिरमें रक्त-संचय, सर्दी लगने के कारण यह रोग होना बच्चों की बीमारी इत्यादि।

बेलेडोना ३ X या बच्चों को बीमारी

मसूढ़ों मे सूजन और दर्द ह

...७ बेचैनी, दाँत खोदकर

।, चेहरा और आँखे ल,

ना बढ़ना, गाल और चेहरे की हड्डियों तक दर्द का फैल
ा दाँतकी जड़ या मसूढ़ों से बदबूदार स्राव।

बायीं ओर के दांतोंमें दर्द होने पर केमोमिला, नक्स-
केटा, फोस्फरस और सल्फर; दाहिनी ओरके दाँतों मे दर्द
ने पर बेलेडोना, ब्रायोनिया, कल्केरिया, काफिया, लेकेसिस,
क्स, स्टेफीसेग्रिया और एसिड फस; खोखले दाँतोंमें दर्द
ने पर कल्केरिया, केमोमिला, हायोसायमस, लेकेसिस,
मर्क्युरियस, पल्सेटिला, रसटक्स और स्टेफीसेग्रिया;
मसूढ़ों में दर्द होने पर कल्केरिया कार्बोवेज, मर्क्युरियस,
नेट्रमम्यूर, नक्सवोमिका और स्टेफीसेग्रिया; हिलते हुए
दाँतो में हायोसायमस, ठंढी चीज खाने पर दर्द बढ़ने से
कल्केरिया, केमोमिला कस्टिकम, हिपर, मर्क्युरियस, नेट्रम
नक्स, सल्फर साइलीसिया और स्टेफी सेग्रिया; गर्म चीज
खाने पीनेसे दर्द बढ़ने पर ब्रायोनिया, केमोमिला, नक्स-
वोमिका कल्केरिया और पल्सेटिला आदि दवाओं से विशेष
लाभ होता है।

आवश्यक सूचना। दांत और मुंह हमेशा साफ रखना
चाहिये। [illegible] मञ्जनों की अपेक्षा बबूल खदिरा
[illegible] दांत मलने के लिये काममें लाना अच्छा है। खाने
[illegible] बार हमेशा मुंह साफ करना चाहिये। [illegible] या
[illegible] दांत [illegible] चाहिये।

ग्लोनइन ३ या ६—गरमी के बाद एकायक ठंढ लगने के कारण यह रोग होना, नीचे या ऊपर के दाँतोंमें दर्द, शिरमें रक्तसंचय और दर्द।

इग्नेशिया ६ या ३०—जो लोग बहुत दुःखी रहते हैं, या जो ज़रामें ही प्रसन्न और ज़रामे ही रोने लगते हैं, उन्हें तथा सामने के दाँतोंमें दर्द, सभी दाँतोंमें सूजन, खाने, बीड़ी पीने, लेटने और सुबह घूमने के बाद तथा शामको दर्द का बढ़ना, इत्यादि लक्षणों में इससे लाभ होता है।

चायना ६ या ३०—दूध पिलाते समय माताओं को यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

हिपर सल्फर ६ या ३०—खानेके बाद, गरम कमरे में और रातमें दर्द बढ़ने पर इसे देना चाहिये। बेलेडोना और मर्क्युरियस के बाद इससे विशेष लाभ होता है।

फोस्फरिक एसिड ६ या ३०—मसूढ़ों मे सूजन और उनसे खून निकलना, बिछौने की गरमी और ठंढ तथा गरमी से दर्दका बढ़ना, खोखले दाँतोंमें दर्द, दर्दका शिर तक फैल जाना इत्यादि।

एपिस ६ या ३०—मसूढ़ों में तेज दर्द, खून बहना, शिरदर्द इत्यादि।

साइलीसिया ६ या ३०—दिनरात जोरोंका दर्द, रातमें

दर्दका बढ़ना, गाल और चेहरे की हड्डियों तक दर्दका फैल जाना, दाँतकी जड या मसूढ़ों से बदबूदार स्राव।

वायीं ओर के दाँतोंमें दर्द होने पर केमोमिला, नक्स-मस्केटा, फोस्फरस और सल्फर; दाहिनी ओरके दाँतों में दर्द होने पर बेलेडोना, ब्रायोनिया, कल्केरिया, काफिया, लेकेसिस, नक्स, स्टेफीसेग्रिया और पसिड फस; खोखले दाँतोंमें दर्द, होने पर कल्केरिया, केमोमिला, हायोसायमस, लेकेसिस, मर्क्युरियस, पलसेटिला. रसटक्स और स्टेफीसेग्रिया; मसूढ़ों में दर्द होने पर कल्केरिया, कार्बोवेज, मर्क्युरियस, नेट्रमम्यूर, नक्सवोमिका और स्टेफीसेग्रिया; हिलते हुए दाँतों में हायोसायमस; ठंढी चीज खाने पर दर्द बढ़ने से कल्केरिया, केमोमिला, कस्टिकम, हिपर, मर्क्युरियस, नेट्रम, नक्स, सल्फर. साइलीसिया और स्टेफी सेग्रिया; गर्म चीज खाने पीनेसे दर्द बढ़ने पर ब्रायोनिया, केमोमिला, नक्स-वोमिका. कल्केरिया और पलसेटिला आदि दवाओ से विशेष लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—दाँत और मुँह हमेशा साफ रखना चाहिये। हानिकर दन्त मंजनो की अपेक्षा केवल खड़िया मिट्टी दाँत मलने के लिये काममें लाना अच्छा है। खाने पीनेके बाद हमेशा मुँह साफ करना चाहिये। खोखले या कीड़ा खाये दाँत उखड़वा देने चाहिये।

१०—गलेके रोग।

गलेका प्रदाह

(Sore Throat)

साधारण अवस्था में अथवा शरीर गरम होने पर एका-यक सरदी या तर हवा लगने के कारण अथवा गलेमें रक्ताधिक्य या बहुत जोरसे बोलने या गानेके कारण गला प्रदाहित हो उठता है। साथ ही गलेमें दर्द, सूजन, गलेका लाल हो जाना, निगलने में तकलीफ, साधारण बुखार आदि लक्षण प्रकट होते हैं। रोग पुराना होनेपर सूजन बढ़ जाती है, गलेमें क्षत हो जाते हैं, आल जिव्हा और टान्सिल बढ़ जाते हैं और दर्दके कारण खाने पीनेमें भी तकलीफ होती है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६—बोलने और निगलने में तकलीफ और दर्द गलेमें जलन और लाली बुखार, उत्कंठा, बेचैनी इत्यादि।

बेलेडोना ३ या ६- गलेमें प्रदाह जलन, लाली, सूजन ऐसा मालूम होना मानो गलेमें कुछ अटका हुआ है, निगलने में तकलीफ, गला, सूखा और उसमें जलन, मुंहमें लार बहना कपाल में दर्द, जीभ पर लेप, खखारने में तकलीफ इत्यादि

लक्षणों मे और एकोनाइट से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

मर्क्युरियस सल ६ या ३०—रोग बढ़ जाने के कारण कान और गर्दन तक दर्द का फैलना, गले में जख्म लार बहना इत्यादि। बेलेडोना से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

लेकेसिस ६ या ३०—निगल न सकना, बहुत लार बहना, गलेमें कफ, स्पर्श बरदाश्त न होना, बायीं ओरसे रोगका शुरू होना, सोने के बाद और कभी सुबह, कभी दोपहर मे तकलीफ का बढ़ जाना आदि लक्षणों मे तथा बेलेडोना और मर्क्युरियस से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

बेराइटाकार्ब ६ या ३०—तालुमूल और नाकके अन्दर लाली तथा जख्म होने पर इसे देना चाहिये। बेलेडोना और मर्क्युरियसके बाद यह दवा भी बहुत फायदा करती है।

एपिस ६ या ३०—नयी बीमारी, गले में जलन, डंक मारने जैसा दर्द, सूजन, जीभ और तालु मूलमे सूजन तथा लाली।

एलुमिना ६ या ३०—पुरानी बीमारी, गलेमें जख्म की तरह दर्द, गला सूखा, स्वरभंग, पीला या भूरे रंगका बदबूदार स्राव इत्यादि।

इग्नेशिया ६ या ३०—ऐसा मालूम होना मानो गलेमें

१८—गलेके रोग।

गलेका पकना

(Sore Throat)

साधारण अवस्था में अचानक शरीर गरम होने पर एकाएक सर्दी या तर हवा लगने के कारण अथवा गलेमें रक्ताधिक्य या बहुत ज़ोरसे बोलने या गानेके कारण गला प्रदाहित हो उठता है। साथ ही गलेमें दर्द, सूजन, गलेका लाल हो जाना, निगलने में तकलीफ, साधारण बुखार आदि लक्षण प्रकट होते हैं। रोग पुराना होनेपर सूजन बढ़ जाती है, गलेमें घाव हो जाते हैं, आल जिभा और टान्सिल बढ़ जाते हैं और दर्दके कारण खाने पीनेमें भी तकलीफ होती है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६—बोलने और निगलने में तकलीफ और दर्द, गलेमें जलन और लाली, बुखार, उत्कंठा, बेचैनी इत्यादि।

बेलेडोना ३ या ६—गलेमें प्रदाह, जलन, लाली, सूजन, ऐसा मालूम होना मानो गलेमें कुछ अटका हुआ है, निगलने मे तकलीफ, गला, सूखा और उसमें जलन, मुँहसे लार बहना, कपाल में दर्द, जीभ पर लेप, खखारने में तकलीफ इत्यादि

लक्षणों में और एकोनाइट से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

मर्क्युरियस सल ६ या ३०—रोग बढ़ जाने के कारण कान और गर्दन तक दर्द का फैलना, गले में जख्म लार बहना इत्यादि। बेलेडोना से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

लेकेसिस ६ या ३०—निगल न सकना, बहुत लार बहना, गलेमें कफ, स्पर्श बरदाश्त न होना, बायीं ओरसे रोगका शुरू होना, सोने के बाद और कभी सुबह, कभी दोपहर में तकलीफ का बढ़ जाना आदि लक्षणों में तथा बेलेडोना और मर्क्युरियस से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

बेराइटाकार्ब ६ या ३०—तालुमूल और नाकके अन्दर लाली तथा जख्म होने पर इसे देना चाहिये। बेलेडोना और मर्क्युरियसके बाद यह दवा भी बहुत फायदा करती है।

एपिस ६ या ३०—नयी बीमारी, गले में जलन डंक मारने जैसा दर्द, सूजन, जीभ और तालु मूलमें सूजन तथा लाली।

एलुमिना ६ या ३०—पुरानी बीमारी, गलेमें जख्म की तरह दर्द, गला सूखा, स्वरभंग, पीला या भूरे रंगका बदबूदार स्राव इत्यादि।

इग्नेशिया ६ या ३०—ऐसा मालूम होना मानो गलेमें

[illegible] हुई है, [illegible] [illegible] में [illegible], निगलते समय गलेमें [illegible] मालूम होना।

[illegible] ६ या ३० निगलनेमें तकलीफ, गला गर्म मालूम होना, प्यास न होने पर भी गला सूखा, गलेके अन्दर बैंगनी रंगकी सूजन, शामको जाड़ा मालूम होना, जाड़ेके बाद बुखार, बुखारके समय भी प्यास नदारद।

[illegible] ६ या ३० गलेके भीतरी भाग और टॉन्सिलमें सूजन, गला सूखा, गला बहुत ही तंग मालूम होना।

ब्रायोनिया ६ या ३० गला छूने या शिर हिलाने पर दर्द मालूम होना, निगलनेमें तकलीफ और दर्द, गलेमें कोई कड़ा पदार्थ अटका हुआ मालूम होना, गलेमें सूजन, गला सूखा हुआ, बोलनेमें तकलीफ, बुखार, चिड़चिड़ापन इत्यादि।

रसटक्स ६ या ३० ब्रायोनिया जैसे लक्षण, साथ ही कानके नीचेकी गिल्टियाँ बहुत सूजी हुईं, बहुत बेचैनी, सोते समय मुँहसे खून मिली लार बहना इत्यादि।

केप्सीकम ६ या ३०—किसी भी दवासे लाभ न होने पर अन्तमें इसे आजमाना चाहिये। जाड़ा और प्यासके बाद बुखारका आ जाना, मुँह में छाले, गलेमें जख्म, खाँसी, खाँसते समय गलेमें बहुत दर्द, हमेशा पड़े रहनेकी इच्छा, ठंड और हवासे डरना इत्यादि लक्षणोंमें इससे अधिक लाभ होता है।

परन्तु वैसी हानि भी न होगी जैसी एलोपैथिक आदि [illegible] देनेसे होती है। यदि दवा ठीक होगी तो उससे रोगीको आराम मिलेगा। ठीक न होगी तो उससे हानि न होगी, बल्कि रोग ज्यों का त्यों बना रहेगा। अगर रोगके लक्षण बदल जायेंगे तो दूसरी दवा चुनने में सहायता मिलेगी।

होमियोपैथिक दवासे हानि उसी अवस्था में होगी जब आप कोई दवा बहुत अधिक तादाद में या बहुत बार या बहुतसी दवाएं एकके बाद एक देते चले जायँगे और उनका फल देखने की प्रतीक्षा न करेंगे। प्रत्येक दवाको उसकी क्रिया होनेके लिये काफी समय दो और जब तक उससे जरा भी लाभ हो रहा हो, तब तक दूसरी दवा हरगिज मत दो। अक्सर बिना किसी दूसरी दवाके ही, अगर दवा ठीक चुनी जाती है तो [illegible] लाभ हुए बिना नहीं रहता।

दवा रखने के नियम।

[illegible] स्थान में होमियोपैथिक दवाएं रखनी हों वह स्थान [illegible] साफ सुथरा होना चाहिये। वहां सर्दी या अन्धकार [illegible] न होना चाहिये। उस स्थानमें तेज धूप, [illegible] [illegible], सुगन्ध या तेज गन्ध भी न होनी चाहिये। [illegible] न [illegible] हो, यहां धूप देना हो, तो दवा वहां [illegible] चाहिये। दवावाले स्थानमें बीड़ी या तम्बाकू [illegible] सुगन्धित [illegible] चाहिये। अर्क कपूर होमि

इनके अतिरिक्त फोस्फरस, नक्सवोमिका, केली बाइक्रोम, नाइट्रिक एसिड, साइलीसिया, अर्जेन्टम नाइट, अरममेट, बेप्टीशिया, हाइड्रेस्टिस, हिपरसल्फर, लाइकोपोडियम, फाइटो लेका, केली हाइड्रो आदि दवाओंसे भी लाभ होता है ।

आवश्यक सूचना—सर्दीसे बचनेके लिये गलेमें फ्लानेल या गरम कपड़ा लपेट रखना चाहिये । पुल्टिस चढ़ाने और गरम दूध पीने या भाप लेनेसे भी लाभ होता है । गलेमें जख्म न होनेपर फाइटोलेकका और गलेमें जख्म होनेपर हाइड्रेस्टिस मदरटिञ्चर ३० बूँद एक पाव पानीमें डालकर उससे कुल्ला करना लाभदायक है ।

टान्सिल प्रदाह ।
(Tonsillitis)

तालुमूलके पास बादाम जैसी ग्रन्थियाँ होती हैं । यह ग्रन्थियाँ तालुमूल ग्रन्थि या टान्सिल कहलाती हैं । सर्दी लगने, पानीमें भीगने, एकाएक पसीना रुक जाने अथवा गण्डमाला धातुके कारण यह ग्रन्थियाँ फूल उठती हैं और कभी कभी उनमें प्रदाह होकर पीब तक पड़ जाता है । गले में दर्द सूजन, टपक, निगलने में तकलीफ, गलेके अन्दर लाली, बुखार आदि इसके प्रधान लक्षण हैं । रोग बढ़ने पर स्वरभंग, लाली, पीब निकलना, गलेका प्राय: बन्द हो जाना, कानसे कम सुनाई देना, सांस लेने में भी तकलीफ होना इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं ।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६ नई बीमारी, बुखार तेज उत्कंठा, प्यास घबड़ाहट इत्यादि।

बेलेडोना ३ या ३०—टान्सिल्स में सूजन, और लाली साधारण जलन, निगलते समय गलेमें जलन, ऐसा मालूम होना गलेमें कुछ अटका हुआ है इत्यादि।

मर्क्यूरियस सॉल ३ या ६ टान्सिल्स का पकना, मुंह में बहुत लार बढ़ना, जीभ पर पीला लेप, जीभ और मसूढ़ों में सूजन, रात में तकलीफ का बढ़ना इत्यादि लक्षणोंमें और बेलेडोना से काफी लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

हिपर सल्फर ६ या ३० निगलते समय बहुत तकलीफ कान और गलेकी गिल्टियों तक दर्द का फैलना, शाम को ठंड या बुखार, बाद का पसीना, मुंह से लार का बढ़ना, जलन के कारण निगल न सकना, रात के समय और ठंडी हवा में रोग लक्षणों का बढ़ना, तेज सिरदर्द इत्यादि उपरोक्त तीनों दवाओं से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

लेकेसिस ६ या ३०—बायीं ओर से रोग शुरू होना, निगलते समय दर्द, पतली चीज निगलने पर नाकसे उसका बाहर निकल पड़ना, सोने के बाद तकलीफ का बढ़ना, तेज बीमारी इत्यादि।

एपिस ६ या ३०—गलेमें जलन, लाली और कनकनाहट. टान्सिल लाल और सूजे हुए. गला सूखा हुआ मालूम होना. डंक मारने जैसा दर्द और जलन।

लाइकोपोडियम ६—पुरानी बीमारीमें खासकर पीव उत्पन्न हो जानेपर इसे देना चाहिये।

साइलीसिया ६ या ३०—बढ़ी हुई बीमारीमें पीव पड़ जानेके बाद इसे देनेसे लाभ होता है।

बराइटा कार्ब ६ या ३०—टान्सिल पकनेके लक्षण मालूम होनेपर और मर्क्युरियस से काफी लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

सल्फर ६ या ३०—पुरानी बीमारी में इससे भी लाभ होता है।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—टान्सिल और ग्लाण्डि-लाकी सूजन, गलेमें दर्द, टान्सिलमें जख्म, पुराना रोग इत्यादि। गण्डमाला धातुवाले रोगियोंको इससे अधिक लाभ होता है।

कैप्सिकम ६ या ३०—प्यासके साथ जाड़ा लगकर बुखारका आजाना, मुंहमें छाले, गलेमें जख्म, खाना खानेके समय गलेमें बहुत दर्द, हमेशा पड़े रहनेकी इच्छा, उठने और दवा भली न मालूम होना इत्यादि लक्षणों में तथा उपरोक्त दवाओं से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

आवश्यक सूचना—गले के प्रदाह की सभी दवाएं इसमें भी फायदा करती हैं, इसलिये उन दवाओं में से भी दवा चुनी जा सकती है। गरम पानी की भाप लेना, गरम दूध पीना, सेंकना आदि लाभदायक है। सर्दी या ठंढ से बचना चाहिये। हलकी और पतली चीजें खाना चाहिये।

डिप्थीरिया।

(Diphtheria)

यह बीमारी भी गलेके प्रदाह से मिलती जुलती है परन्तु उससे अधिक भयंकर और संक्रामक होती है। पनालेकी बदबू, मरे हुए प्राणियों के सड़ने की बदबू, एक तरह का विषाक्त जीवाणु आदि से यह रोग होता है। साधारण रोगों में निगलने में तकलीफ, गलेमें दर्द, जलन, शरीर में दर्द आदि लक्षण प्रकट होते है और रोगी प्रायः आराम हो जाता है। सांघातिक डिप्थीरिया में उपरोक्त लक्षणों के साथ जाड़ा बुखार, कै या दस्त, बहुत, कमजोरी, बेचैनी टान्सिल और आलजिह्वा में सूजन आदि लक्षण भी प्रकट होते है। साथही टान्सिल और आलजिह्वा पर एक तरह की कृत्रिम झिल्ली दिखाई देती है। यह झिल्ली चारों ओरसे बढ़ते बढ़ते अन्त में एक में मिल जाती है और इससे गला ढक जाने और साँस लेने में तकलीफ होती है। अन्तमें

इसी तकलीफ के कारण रोगी की मृत्यु होजाती है। कभी कभी गलेका प्रदाह मुँह, नाक श्वास, नली और फेफड़े तक फैलकर कठिन उपसर्ग पैदा कर देता है। किसी तरह झिल्ली निकल जाने पर रोगी आराम होजाता है, वर्ना श्वास कष्ट तथा अन्यान्य कठिन उपसर्गों के कारण उसकी मृत्यु हो जाती है। यह रोग बच्चों को ही अधिक होता है। इसमें अधिक दिनों तक इलाज करना पड़ता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३—बीमारीके आरंभ में बुखार, गले में दर्द सूजन, उत्कंठा, बेचैनी आदि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

ब्रायोनिया ६ या ३०—हिलने डोलने या हिलाने पर समूचे बदन में दर्द जीभ सफेद, प्यास न होने पर भी मुंह सूखा अथवा बहुत अधिक पानी पीनेकी इच्छा।

बेलेडोना ३ या ६—गले में बहुत सूजन बहुत बेचैनी, आँख की पुतलियाँ फैली हुई, सुस्ती, लेकिन नींद न आना, नींद लगने पर तुरन्त ही जाग पड़ना।

लेकेसिस ६ या ३०—बेलेडोना देने पर दूसरे दिन फायदा न मालूम हो या सोकर उठने पर तकलीफ बढ़ी हुई मालूम हो अथवा टान्सिल पर झिल्ली के चिन्ह बायीं ओर अधिक तकलीफ, गले या गर्दन पर हाथ तक न रखने देना इत्यादि लक्षण दिखायी देने पर इसे देना चाहिये।

डिफ्थोरिनम ३० या २००—आजकल यह इस रोगकी उत्कृष्ट दवा मानी जाती है। तेज बीमारी, गलेमें मोटा और काला पर्दा, कमजोरी, नाकसे खून गिरना, हाथ पैरो का सुन्न हो जाना इत्यादि लक्षणोंमें इसे देना चाहिये। चारों ओर इस रोगका प्रकोप होनेपर बतौर प्रतिषेधक दवाके भी यह काम देती है।

एकिन्नेसिया १x—सड़नेवाली बोमारीमें यह दवा भी शुरूसे आखिर तक काम देती है।

आर्सेनिक ६—रोगकी अन्तिम अवस्था में जब रोगी बहुत सुस्त हो जाये, जख्मों से खून या पीब बहता हो, साँस में बदबू हो, तब इसे देना चाहिये।

इनके अतिरिक्त एसिडम्यूर, फाइटोलेक्का, केन्थरिस, केली बाइक्रोम, कार्बोलिक एसिड, सल्फ्यूरिक एसिड, केलीम्यूर मर्क्युरियससायनेटस, ब्रोमिन, क्रोटेलस, वेप्टीशिया, नेजा, नाइट्रिक एसिड, लेकेसिस आदि दवाएं भी लक्षणानुसार लाभ करती है।

आवश्यक सूचना—रोग की प्रारम्भिक अवस्था में पुल्टिस चढ़ायी जा सकती है। फाइटोलेक्का का मदरटिंचर दस बूंद एक छटाक पानीमें मिलाकर उससे बीच बीचमें गला धो देना चाहिये। गरम पानीसे कुल्ले करना भी लाभ-दायक है। गरम पानी में टिंचर आइडिन या एमोनिया

पर कल्केरिया फ्लोरिका ६। इनके अतिरिक्त थाइरेडिन, नेट्रम म्यूर, नेट्रम सल्फ, कल्केरिया फस, कल्केरिया आयोड, केली आयोड, लेकेसिस, लाइको पोडियम, रसटक्स और वेडियेगा आदि दवाएँ भी लक्षणानुसार लाभ करती हैं।

११—छाती के रोग।

(Diseases of the Chest)

हमारी छाती में श्वासनाली, फेफड़ा आदि श्वासयन्त्र तथा हृदय और धमनी आदि रक्त-सञ्चालन की क्रिया सम्पादन करनेवाले यंत्र अवस्थित हैं। इस अध्याय में इन्हीं यंत्रों के रोगों का इलाज अंकित किया जाता है।

स्वरभंग या गला बैठ जाना।

(Hoarseness)

सरदी लगना, बहुत चिल्लाना, गाना या लेक्चर आदि कारणों से यह रोग होता है। अनेक बार क्षय और खांसी आदि अन्यान्य रोगों के साथ भी बतौर एक लक्षण के यह प्रकट होता है।

चिकित्सा।

कास्टिकम ६ या ३०—स्वरभंग, गला और छाती में दर्द, जुकाम इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। यह इस रोग की

प्रधान दवा है। अनेक वार केवल इसी दवा से यह रोग आराम हो जाता है।

केली वाइक्रोम ३ या ६—कस्टिकम से लाभ न होने पर और पुरानी बीमारी में इसे देना चाहिये।

केमोमिला १२ या ३०—जुकाम के साथ स्वर भंग, खाँसी, गला सूखा, गले में जलन और प्यास, शाम को बुखार, चिड़चिड़ा स्वभाव इत्यादि लक्षणों में बच्चों को यह दवा देने से विशेष लाभ होता है।

पल्सेटिला ६ या ३०—जुकाम पीला या हरा, बदबूदार कफ निकलना, छाती में दर्द, सरदी, गले में सूजन, निगलने में तकलीफ, कई दिनों तक जोर से न बोल सकना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। इससे लाभ न हो तो सल्फर ३० या २००।

फोस्फरस ६ या ३०—यह भी एक अच्छी दवा है। खाँसी, शाम को तकलीफ का बढ़ना, गले में दर्द होने के कारण बोल न सकना, छाती जकड़ी हुई मालूम होना, क्षय के साथ स्वरभंग इत्यादि।

मर्क्युरियस सल ६ या ३०—स्वरभंग, कर्कश आवाज, गलेके अन्दर जलन और सुड़सुड़ाहट, बहुत पसीना आना, हवा के झोंके से तकलीफ का बढ़ना इत्यादि।

योपैथिक दवाओं के साथ रखने से उनका गुण नष्ट हो जाता है। शिरमें सुगन्धित तेल लगाकर होमियोपैथिक दवाखाने में न जाना चाहिये। शीशियों के कार्क भूलसे दूसरी दवामें न लगा देना चाहिये। ऐसा करने से दोनो दवाएं नष्ट हो जाती है। दवा चाहे तरल हो, चाहे विचूर्ण, चाहे गोलियो के रूपमें, उसे हाथ कभी भी न लगाना चाहिये। रोगीके कमरे में भी दवा रखना मना है।

बूँद टपकाने की विधि ।

तरल क्रमकी दवा रोगीको केवल एक बूँद दी जाती है। जिन लोगोंको बूँद गिराने का अभ्यास नहीं होता, वे ज्यो ही एक या दो चार बूँद दवा गिराने की चेष्टा करते है, त्यों ही सारी शीशीकी दवा उलट पड़ती है। इस हानिले बचने के लिये होमियोपैथिक दवाएं व्यवहार करने वालो को बूँद गिराने का अभ्यास अवश्य कर लेना चाहिये। एक शीशीमें पानी भरकर पहले उसके द्वारा अभ्यास करना अच्छा है।

बूँद टपकाने का एक यंत्र भी आता है, जिसे ड्रॉप कहते है। छोटी पिचकारी से भी यह काम लिया जा सकत है, परन्तु इसमें झंझट यह है कि यह सब एक दम सा होने चाहियें। साथ ही जब-जब किसी नयी दवाके बूँद ट काने हो, तब-तब, इन्हे गरम पानी या स्पिरिट से धोकर तरह साफ कर लेना चाहिये, ताकि पहले की दवाका भी असर उसमे न रह जाय। लेकिन सबसे सरल तरी

डल्केमारा ६ या ३०—ठंड और सर्दी लगने के कारण खाँसी, उसके साथ स्वरभंग इत्यादि।

कार्बोवेज ६ या ३०—बहुत दिनों की बीमारी, सुबह, शाम और बोलने के बाद तकलीफ का बढ़ना, हामज्वर के बाद यह रोग होना इत्यादि।

इनके अतिरिक्त नक्सवोमिका, केप्सीकम, एपिस रसटक्स, सेम्बुक्स, साइलीसिया, होलेरा और निकोलम आदि दवाओं से भी लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—गरम घी या गरम दूध पीने से भी लाभ होता है। गले के आसपास कोई गरम कपड़ा लपेट रखना चाहिये।

स्वर लोप।

(Aphonia—Aphasia

सिर में चोट लगना सर्दी या ठंढ लगना, आदि कारणों से यह रोग होता है। साधारण रोग आराम हो सकता है लोग जन्म से ही बहरे होते हैं व गूंगे भी हुआ करते हैं ऐसी बीमारी प्रायः ही आराम होती है।

चिकित्सा।

गले में दर्द के साथ एकाएक स्वर लोप होने पर एकोनाइट ६। [illegible] के बाद स्नायु [illegible] होने पर [illegible] ३०

पैदा होती हैं। रोग पुराना हो जाने पर क्षय या श्वास नाली के क्षय के रूप में परिणत हो जाता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ X या ६—नयी बीमारी, बुखार, बेचैनी, प्यास, सूखी खाँसी, गले में दर्द, ठंडी हवा लगने से यह रोग होना इत्यादि।

बेलेडोना ६ या ३०—बुखार गले में दर्द, शिर में दर्द, गले का बैठ जाना, गले में जलन, निगलने में तकलीफ आधी रात के समय आक्षेपिक या कुत्ता भोंकने जैसी खाँसी इत्यादि।

एन्टिमक्रूड ६ या ३०—गानेवालों को यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

एन्टिम टार्ट ६ या ३०—गले में कफ घड़घड़ाना लेकिन उसका बाहर न निकलना।

ब्रोमियम ६ या ३० —गले में छीलने जैसा दर्द कफ जमने के कारण साँस रुकने का उपक्रम, खाँसी और स्वरभंग।

फास्फरस ६ या ३० गले में सुड़सुड़ाहट तेज खाँसी, सिर में दर्द स्वरभंग शाम के वक्त तकलीफ का बढ़ना।

आयोडियम ६ या ३०-जरा जरा में सरदी लगना पुरानी बीमारी बहुत अधिक लेकिन सीना हल्का पतला।

खाँसी।

(cough)

खाँसी स्वयं कोई रोग नहीं है, बल्कि दूसरे रोगों का एक लक्षण है। जब गले की कोई बीमारी या ब्रोंकाइटिस, न्युमोनिया, फुसफुसवेष्ट प्रदाह स्वरभंग और क्षय आदि रोग होते हैं, तब उन बीमारियों के कारण खाँसी आने लगती है। सर्दी या ठंढ लगना इसका उत्तेजक कारण कहा जा सकता है।

खाँसी दो भागों में बाँटी जा सकती है—सूखी और तर या सरल। सूखी खाँसी होने पर कफ नहीं निकलता, तर खाँसी होने पर आसानी से कफ निकल जाता है और रोगी को अधिक कष्ट नहीं होता।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६—नयी और सूखी खाँसी गले के अन्दर सुरसुराहट रहना, प्यास होना [illegible] और खाने पीने के बाद तकलीफ का बढ़ना [illegible] [illegible] और बढ़ जाना।

नक्स वोमिका ६ या ३० शराब या [illegible] [illegible] सूखी [illegible] सिर और पेट में [illegible] [illegible] [illegible] मालूम होना [illegible]

छाती में दर्द, बच्चों की नाक से खून बहना, छाती और शिर में फट जाने जैसा दर्द, स्वरभंग, जुकाम या पतले दस्त इत्यादि।

कार्बोवेज ६ या ३०—दिन मे कई बार या शाम को खाँसी का जोर बढ़ना, मिचली या कै, बुखार, पसीना आना, छाती में सूजन, सफेद, पीला या भूरे रंग का कफ निकलना, छाती, श्वास नाली और शिर में दर्द, नमकीन या खट्टा कफ।

केप्सीकम ६ या ३०—सूखी खाँसी, शाम के समय और रात में खाँसी का बढ़ना, कभी कभी कै हो जाना, शिर, गला और कान में दर्द, शरीर के विभिन्न अंगों में दर्द।

रसटक्स ६ या ३०—शाम से लेकर आधी रात तक सूखी खाँसी छाती में दर्द लोहे के मोरचे जैसा कफ, ठंढी हवा से खाँसी का बढ़ना चलने फिरने से या गरम स्थान में रहने से आराम मालूम होना मुँह में खून का स्वाद इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—खुली हवा में खाँसी का बन्द हो जाना गरम स्थान में बहुत बढ़ना मुशर पीला नमकीन या खट्टा कफ निकलना स्वाद और गन्ध मालूम न होना खाँसते समय पेशाब हो जाना इत्यादि।

ब्रायोनिया ६ या ३०—गले में सुरसुराहट के साथ सूखी खाँसी, खाने के बाद खाँसी का शुरू होना, गरम कमरे में खाँसी का बढ़ना, पीला पीला कफ और उसमें खून, शिर, गला, पसलियाँ, छाती और तलपेट में दर्द, हिलने डोलने से खाँसी का बढ़ना।

साइना ३x या २००—सूखी और आक्षेपिक खाँसी, जुकाम के साथ अथवा पेट में कृमि होने के कारण खाँसी, नाक में जलन या खुजली, छूने से चिढ़ उठना इत्यादि।

डाल्केमारा ६—सर्दी लगने के कारण तर खाँसी, स्वर भंग, कभी कभी रात में कफ के साथ उज्ज्वल लाल रंग का खून निकलना, कमरे में या लेटने पर तकलीफ का बढ़ना, चलने फिरने से आराम।

ड्रोसेरा ६ या ३० स्वरभंग के साथ सूखी या तर खाँसी, खाँसते समय छाती और पसलियों में दर्द होने के कारण उन्हें हाथ से पकड़ लेना, पहले खायी हुई चीजें, बाद को बलगम और पानी की कै, हँसने बोलने, या लेटने पर खाँसी का बढ़ना इत्यादि।

फोसफरिक एसिड ६ या ३०—तर खाँसी, जोरोंका स्वरभंग, गले में सुड़सुड़ाहट, सुबह पीला या सफेद कफ निकलना और शाम को सूखी खाँसी, पीब जैसा कफ या

काला खून निकलना, छाती में दर्द और जलन खाँसते समय शिर में दर्द ।

इग्नेशिया ६ या ३०–रातदिन सूखी खाँसी, जुकाम, चित्त का दुःखी रहना. दिन में खाने के बाद, शाम को लेटने पर और सुबह बिछौने से उठने पर खाँसी का बढ़ना ।

आर्निका ६ या ३०–खाँसी कफके साथ खून निकलना, दमा पेट. छाती और पसलियों में दर्द. बच्चों को सुबह या सोते समय खाँसी आना. खाँसी के कारण उनका रोना चिल्लाना ।

विरेट्रम ६ या ३०–गहरी खाँसी चेहरा नीला अपने आप पेशाब का निकल पड़ना श्वासकष्ट, बहुत कमजोरी ।

आर्सेनिक ६ या ३०–तर खाँसी लेकिन बड़ी तकलीफ के साथ बहुत थोड़ा कफ निकलना पानी पीने के बाद हमेशा खाँसी का आना, रात में खाँसी कफ में खून श्वासकष्ट बहुत सुस्ती और कमजोरी रात में कलेजा धड़कना इत्यादि

[illegible] ६ या ३० पीला और [illegible] कफ छाती में भार [illegible] सरसराहट और गला घुटने [illegible] अथवा गहरा [illegible] कफ में खून छाती में दर्द और [illegible] रात [illegible] ऐसा मालूम होना मानो [illegible] जायगा [illegible] तरह साँस न ले सकना इत्यादि

सल्फर ६ या ३०—पुरानी सूखी खाँसी, दोपहर के बाद से लेकर आधी रात तक खाँसी का आना, रात में नींद न आना, अथवा दिन में, पीले या हरे रंग का बदबूदार कफ और रात में सूखी खाँसी, खाँसते समय मानो छाती फट जायगी, श्वासकष्ट, छातीमें साँय साँय आवाज, कलेजा धड़कना, रात में उठकर बैठने के लिये मजबूर होना अथवा शिरमें दर्द, आँखों के सामने अंधेरा, शिर और चेहरा गरम, हाथ ठंढे इत्यादि।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—गण्डमाला धातु, रात में खाँसी, स्वरभंग, स्वरनाली और गले में जख्म, छाती में कफ घड़घड़ाना, खाँसते समय शिर में पसीना, पीला, हरा या भूरे रंग का बदबूदार कफ, कफ की बदबू से कै हो जाना, रात में पसीना, बहुत कमजोरी इत्यादि।

क्युप्रम ६ या ३०—सूखी और श्वासरोधक खाँसी, खाँसते खाँसते श्वास अटक जाना,ठंढा पानी पीने से आराम, रात में तकलीफ का बढ़ना, दमा, हुपिंग खाँसी इत्यादि।

केली बाइक्रोम ६ या ३०—कष्ट के साथ गोंद जैसा चिकना कफ निकलना, खींचने पर कफ का रस्सी की तरह लम्बा होना इत्यादि।

स्पञ्जिया ६ या ३०—सूखी खाँसी, कुत्ता भोंकने की सी आवाज, गले में साँय साँय होना, गले में सुड़सुड़ाहट और जलन, सोने पर खाँसी का बढ़ना इत्यादि।

कस्टिकम ६ या ३०—सरदी लगने के कारण सूखी खाँसी, चिल्लाने या गला बैठ जाने के कारण खाँसी, गले में ज़ख्म मालुम होना, ठंढा पानी पीने से आराम इत्यादि ।

एन्टिम टार्ट ६ या ३०—छाती में कफ घड़घड़ाना लेकिन उसे बाहर निकालने की शक्ति न होना, जोरों की खाँसी, छींक आना, श्वासकष्ट, जम्हाई लेना, जी मिचलाना, वृद्धों की पुरानी खाँसी इत्यादि ।

हिपर सल्फर ६ या ३०—स्वर भंग के साथ खाँसी, सरल खाँसी, ठंढ लगने से खाँसी का बढ़ना, दिन में बहुत कफ निकलना, रात में कफ का न निकल सकना इत्यादि ।

फोस्फरस ६ या ३०—गले में सुड़सुड़ाहट, छाती जकड़ी हुई, सूखी खाँसी, लाल पीब मिला कफ निकलना, पढ़ने बोलने या अधिक हँसने पर खाँसी का आजाना, ज्वर रोग की खाँसी इत्यादि ।

रिउमेक्स ६ या ३०—आक्षेपिक खाँसी, लगातार गला सुड़सुड़ाना, खक खक करके खाँसी आना, इन्फ्लुएञ्जा के बाद की खाँसी, बोलने पर खाँसी का बढ़ना ।

लेकेसिस ६ या ३०—छाती पर हाथ दबाने से खाँसी का आ जाना, गले में सुड़सुड़ाहट या ज़ख्म, मुँह में बहुत लार, कष्ट के साथ कफ निकलना, खाने, सोने या उठने

के बाद तकलीफ का बढ़ जाना, सांस में गंध, नाक, कान और आंखों में दर्द।

स्टैफीसेगिया ६ या ३०—पीला कफ निकलना, रात में पीब सा कफ, छाती में जख्म मालूम होना, मुँह में पानी भर जाना, कभी कभी कफ में खून और छाती में दर्द खांसते समय पेशाब हो जाना इत्यादि।

पुरानी खांसी में कष्टिकम, लेकेसिस, कलकेरिया, सल्फर, साइलीसिया और फोस्फरिक एसिड से अधिक लाभ होता है। इनसे लाभ न होने पर स्टैफिसेग्रिया, आर्सेनिक, डलकेमारा और कार्बोवेज चुनना चाहिये। अन्यान्य दवाएं नई बीमारी में अधिक लाभ करती हैं।

नई बीमारी में जब जोर का हमला हो और श्वासकष्ट, छाती में भार, स्वरभंग, गले में दर्द, बुखार, रात में खांसी आने के बाद सुबह जलन आदि लक्षण दिखाई दें तब पहले एकोनाइट की एक खुराक देकर पांच छः घंटे बाद या दूसरे दिन लक्षणानुसार दूसरी दवा देनी चाहिये। लेकिन खांसी बहुत कष्टकर हो और ऐसा मालूम होता हो, मानो श्वास ही रुक जायगा तो पहले इपीकाक और बाद को लक्षणानुसार दूसरी दवा देनी चाहिये।

आवश्यक सूचना—खांसी के रोगी को सर्दी से बचना चाहिये, लेकिन इस तरह नहीं कि सर्दी बरदाश्त करने

की शक्ति ही नष्ट हो जाय । घूमना, फिरना और नहाना धोना समुचित ढंग से चालू रखना चाहिये । रोगी ठंडा पानी पीना पसन्द करे तो जबरदस्ती रोकना न चाहिये । गरम चीजें पीने से स्थाई लाभ नहीं होता । जुलाब लेना ठीक नहीं । बुखार की हालत में साबूदाना और बार्ली आदि तथा बुखार न होने पर रोटी आदि खाने को देना चाहिये । शाम को पानी और चीनी मिलाकर गरम दूध पिया जा सकता है । मिठाई खाना मना है ।

हुपिङ्ग खाँसी ।

(Whooping Cough)

यह एक संक्रामक रोग है और बच्चों को ही अधिक होता है । इसमें खाँसते समय हुप हुप आवाज होती है, इस लिये इसे हुपिङ्ग खाँसी कहते हैं, । सरदी लगने के कारण प्रायः जाड़े में ही यह रोग होता है । कभी कभी चारों ओर यह रोग फैल जाता है ।

इसमें पहले साधारण बुखार, सरदी और खाँसी होती है । धीरे धीरे खाँसी बढ़ जाती है और स्वरभंग आदि लक्षण प्रकट होते हैं । खाँसते खाँसते श्वास रुक सा जाता है और चेहरा तथा आँखें लाल या नीली हो जाती हैं । अनेक बार कै भी हो जाती है । रात में खाँसी बहुत जोर करती है ।

वेलेडोना ६ या ३०–नयी बामारी, सूखी खाँसी, रात में तकलीफ का बढ़ना, शिरमें रक्त संचय या दर्द, गलेमें सूजन इत्यादि।

रोगकी द्वितीयावस्था मे जब आक्षेप के साथ खाँसी आती है, तब इपीकाक, विरेट्रम, ड्रोसेरा और साइना से अधिक लाभ होता है।

इपीकाक ६ या ३०–हरबार खाँसी आनेके बाद एक एक खुराक इसे देने से बहुत लाभ होता है।

विरेट्रम ६ या ३०–बहुत कमजोरी, बुखार, ठंढा पसीना, खास कर कपाल में, अपने आप पेशाब हो जाना।

रसटक्स ६ या ३०–केवल रात में खाँसी आती हो तो इसे देना चाहिये।

ड्रोसेरा ३ या ६–रातमे और विश्रामके समय खाँसी का जोर बढना, ठंढके बाद प्यास पसीना गरम रात में ही पसीने का आना, घड़घडाहट के साथ खाँसी स्वरभंग हँसने या बोलने पर खाँसी का बढना, श्वासका रुक जाना इत्यादि।

साइना ३ x या २००–खाँसी के समय शरीर का अकड़ जाना, कृमिके कारण यह रोग होना नाक खुजलाना, बुखार के समय मुख मलद्वारमें खुजली इत्यादि।

फेरमफस ६ या ३०–न्युमोनिया या ब्राकाइटिस के लक्षण, तेज बुखार, सूखी और कड़ी खाँसी, छाती में घड़घड़ाहट।

एन्टिमटार्ट ६ या ३०–रोगी का चेहरा नीला, छाती में कफ घड़घड़ाना लेकिन उसका बाहर न निकलना इत्यादि रोग के आरंभ में इसे देने से बीमारी जल्दी अच्छी हो जाती है। या उसका जोर घट जाता है।

इनके अतिरिक्त केमोमिला, स्कुइला, सिफाइटिस, चेली, डोनियम, सल्फर, पार्ट्सन आदि दवाओं से भी लाभ होता है। रोगीको सर्दी से बचाना चाहिये। बुखार होने पर साबूदाना और बार्ली आदि तथा बुखार न होने पर हलकी और पुष्टिकर चीजें खाने को देना चाहिये।

क्रुप खाँसी।

(Croup)

यह एक तरहकी घातक खाँसी है। इसमें पहले साधारण खाँसी और सर्दी के जैसे ही लक्षण प्रकट होते हैं। बादको धीरे धीरे या किसी दिन अचानक जोरों की खाँसी शुरू होती है और बच्चा खांसते खांसते बेदम हो जाता है। इस खाँसी में खांसते समय गधके रेंकने जैसी कुत्ते के भोंकने जैसा या कांसेके बर्तन के बजाने जैसी आवाज होती है। गले में सांय सांय आवाज घड़घड़ाहट स्वरभंग और श्वास

बढ़ना इत्यादि लक्षणों में और उपरोक्त तीनो दवाओं से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये ।

आर्सेनिक ६ या ३०—आधी रात के बाद खाँसी का बढ़ना, बहुत कमजोरी, अस्थिरता, व्याकुलता, बारंबार पानी माँगना, लेकिन एक साथ अधिक पानी न पी सकना ।

बेलेडोना ३ या ६—बड़ी तेजी के साथ रोगका हमला, खाँसी के कारण साँसका रुक जाना, चेहरा लाल, काँखना, नींद न आना, नींद से चौंक पड़ना इत्यादि ।

एन्टिमटार्ट ६ या ३०—रात में नींद से जाग पड़ना, जागते ही खाँसी का शुरू हो जाना, ठंडा पसीना, चेहरा नीला, श्वासकष्ट, गले में कफ घड़घड़ाना इत्यादि ।

इनके अतिरिक्त कार्बोवेज, केमोमिला, आर्निका, कल्केरियाकार्ब क्युप्रम क्लोरम जेल्सोमियम, कस्टिकम आयोडियम केली बाइक्रोम, लाइकापोडियम, मेज्रुइनेरिया, सेम्बुकस और ब्रोमिअम आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है ।

आवश्यक सूचना—इस रोगका इलाज बड़ी सावधानी के साथ किसी चतुर चिकित्सक द्वारा करवाना चाहिये । रोग के समय या रोग आराम हो जाने के बाद भी रोगी को सर्दी से बचाना चाहिये । खाने के लिये साबूदाना और बार्ली आदि हलकी चीजें देना चाहिये ।

रक्तकास या खूनी खाँसी।

(Hoemoptyses)

अनेक बार खाँसी आनेपर कफ के साथ खून निकलता है। इसे ही रक्तकास कहते हैं। अधिक परिश्रम, भारी बोझ उठाना, मल मूत्र या पसीने का बन्द हो जाना, जोर से बोलना या गाना, क्षय रोग, रजस्राव या बवासीर का खून रुक जाना आदि अनेक कारणों से यह रोग होता है। साधारण बीमारी में अधिक चिन्ता न कर धैर्यपूर्वक इलाज करना चाहिये, लेकिन जब अधिक खून निकले या बारंबार रोग का आक्रमण होने के कारण रोगी कमजोर हो जाय, तब अवश्य चिन्ता करनी चाहिये ताकि रोग असाध्य न हो जाय।

चिकित्सा।

कफ के साथ खून—अनेक बार मसूढ़े या नाक से भी खून निकल कर कफ या थूक में मिल जाता है। छाती से कफ निकलने पर वह नीचे से आता हुआ मालूम होता है और [illegible] तथा भारी मालूम देता है। साथ ही छाती में दर्द और जलन भी मालूम होती है। यदि वास्तव में छाती से खून आता हो लेकिन [illegible] अधिक नहीं, खाँसी भी [illegible] हो, तो ओषधि की कोई [illegible] देने से वह आराम हो जाता है। [illegible], मिलेफोलियम, हमामेलिस, [illegible], [illegible],

वाह्यप्रयोग की दवाएँ।

अनेक रोगों में बाहर से धोने, मालिश करने या मलहम की तरह लगाने के लिये दवाओं की जरूरत पड़ती है। इसके लिये कई होमियोपैथिक दवाओंके मूल अर्क या मदर टिंचर अठगुने पानी, तेल, साबुन चर्बी या मोम आदिमें मिलाने से धावन, मालिश का तेल या मलहम तैयार होता है। वाह्य-प्रयोगकी कोई भी दवा वेसलिनमें तैयार करना ठीक नहीं।

आनुसंगिक नियम।

होमियोपैथिक दवा सेवन करते समय यदि जरूरत हो तो कुछ और उपचार भी किये जा सकते हैं। इनसे रोग आराम होने में सहायता पहुंचती है। फोड़ा हुआ हो और उसे पकाने या फाड़ने के लिये दवा दी गयी हो, फिर भी [illegible] पर [illegible] आदिकी पुल्टिस [illegible] जरूरत मालूम होने पर चीरा लगवा दिया [illegible] अनुचित नहीं। इससे लाभ ही होगा। [illegible]

[illegible]

चायना, डालकेमारा, स्टेफीसेग्रिया, साइलीसिया और लेके-सिस आदि इसकी अच्छी दवाएँ है। "खाँसी" देखिये।

छाती मे चोट—जोरसे गिर पड़ने, मार पड़ने या चोट लगने के कारण मुँहसे खून गिरे तो पहले अर्निका देना चाहिये। कुछ दिनोंमें यदि बुखार आजाय और छातीमें दर्द मालूम हो तो एकोनाइट देना चाहिये। यदि इससे तकलीफ अधिक बढ़ जाय तो फिर अर्निका देनेसे काफी लाभ होता है।

खतरनाक हालत—खून निकलने के कारण खतरनाक हालत मालूम हो तो एकोनाइट, इपोकाक, अर्निका, चायना और ओपियम—इन दवाओं में से कोई दवा चुननी चाहिये।

रजस्राव रुकनेके कारण—यदि रजस्राव रुकने के कारण स्त्रियों को यह रोग हो तो उन्हें पल्सेटिला या ब्रायोनिया देना चाहिये। कफ्युलस या विरेट्रम से भी लाभ होता है।

एकोनाइट ३ x या ६—छाती पूर्ण, जलन, कलेजे में धड़कन, बेचैनी, जरासा खासते ही आसानीके साथ बहुतसा खून निकलना।

इपीकाक ६ या ३०—एकोनाइट से खूनका निकलना रुक जाने पर भी मुँहमें खूनका स्वाद बना रहना, खाँसी, कफके साथ थोड़ा खून, मिचली और कमजोरी आदि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३०—एकोनाइट से पूरा लाभ न होना, बल्कि कलेजे की धड़कन का बढ़ जाना; रात में नींद न आना, शरीर में दाह इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। इसे देने के बाद रोग का पुनः आक्रमण होने पर इपीकाक, नक्सवोमिका या सल्फर। इससे रोग बढ़ जाय तो फिर आर्सेनिक।

चायना ६ या ३०—बहुत सूखी खाँसी, खाँसते समय दर्द, मुँह में खून का स्वाद, बहुत खून निकलने के कारण कमजोरी और बेहोशी, हाथ पैर ठंढे, सदा पड़े रहना इत्यादि। इसके बाद फेरम, आर्निका या आर्सेनिक देने से अधिक लाभ होता है।

फेरम ६ या ३०—जरा सा खाँसते ही खालिस खून निकलना, खून की तादाद कम, बहुत कमजोरी, धीरे धीरे टहलने से आराम मालूम होना।

आर्निका ६ या ३०—काला काला गाँठ जैसा खून, खून का आसानी से निकलना, दमा, छाती में जलन और दर्द, बेहोशी जैसी सुस्ती, कभी कभी कफ मिला लाल खून निकलना।

पल्सेटिला ६ या ३०—कुछ दिनों की पुरानी बीमारी, खून काला और गाँठ गाँठ जैसा, रात में बहुत दुर्बलता, रोने

की इच्छा इत्यादि। पल्सेटिला के बाद सिकेली से काफी लाभ होता है।

रसटक्स ६ या ३०—खून गाँठ जैसा लेकिन चमकीला लाल. बहुत उत्कण्ठा, अस्थिरता चिड़चिड़ाना, रात के समय छाती में सुड़सुड़ाहट इत्यादि।

नक्सवोमिका ६ या ३०—बवासीर का खून रुक जाने या शराब पीने के कारण यह रोग होना, छाती में सुड़सुड़ाहट सिर मे दर्द सुबह तकलीफ का बढ़ना। इससे लाभ न होने पर सल्फर देना चाहिये।

ओपियम ६ या ३०—थक्का थक्का कफ मिला खून निकलना, बड़े शराबियों की बीमारी, श्वासकष्ट, कलेजे में जलन, बोलने मे कमजोरी, तन्द्रा, कलेजे में जलन।

मर्क्युरियमस ६ या ३०—ओपियम देने के बाद छाती पर पसीना आना, साथ ही बेचैनी का होना अथवा न होना।

हायोसायमस ६ या ३०—रात में लेटने पर सूखी खाँसी के साथ खून निकलना, नींद मे रोग का आक्रमण। इसके बाद ओपियम और नक्सवोमिका से अच्छा लाभ होता है। इनसे भी लाभ न हो तो आर्सेनिक देना चाहिये।

बेलेडोना ६ या ३०—गले में सुड़सुड़ाहट होनेके कारण खाँसी आना और खून निकलना. छाती में रक्त संचय और दर्द मालूम होना. चलने फिरने से तकलीफ का बढ़ना।

दमा या श्वासकास ।

(Asthma)

यह रोग सभी उम्र के आदमियों को होता है, लेकिन बड़े उम्र के आदमियों को अधिक होता है। धूल तम्बाकू, चूना सन या घास आदि के कण साँस मे जाना, माता पिताको यह रोग होना,रातमे अधिक भोजन, शारीरिक या मानसिक उत्ते-जना सर्दी लगना आदि अनेक कारणों से यह रोग होता है। इसमे आक्षेप पैदा होने के कारण श्वासकष्ट पैदा होता है और गले में साँय साँय आवाज होती है । छाती में भार मालूम होना, बिछौने पर सोया या बैठा न जाना, श्वासकष्ट, दूर करने के लिये हाथ ऊपर को उठाये रहना, सूखी खाँसी आना कफ निकलने पर आराम मालूम होना इत्यादि इस रोगके प्रधान लक्षण हैं । यह रोग कष्टकर अवश्य होता है, पर घातक नहीं होता। वलिक लोग कहते हैं कि दमाके रोगी अधिक दिन जीते है ।

चिकित्सा ।

ब्लैटाओरिएन्टलिस मदरटिन्चर या ३ X-सबसे पहले इस दवा को आजमाना चाहिये। इससे बहुत लोग अच्छे हुए हैं ।

कई प्रधान दवाओं के लक्षण नीचे अंकित किये जाते हैं:-

एकोनाइट ३ या ६—रोग की प्रारम्भिक अवस्था में सर्दी बुखार सूखी खाँसी गला खुड़खुड़ाना. खाँसी के कारण नींद का खुल जाना सुबह और शाम खाँसी, प्यास, इत्यादि।

ब्रायोनिया ६ या ३०—कष्टकर सूखी खाँसी, पीले रंग का गाढ़ा और खून मिला कफ निकलना. खाँसते समय छाती को हाथ से पकड़ लेना, कब्ज़ियत इत्यादि।

बेलेडोना ३ या ६—सूखी खाँसी, बुखार, सिर में दर्द, चेहरा और आँखें लाल रोशनी या आवाज बरदाश्त न होना, साधारण बक झक।

एन्टिमटार्ट ६ या ३०—श्वास रोधक खाँसी थोड़ा थोड़ा कफ निकलना. गले से साँय। साँय आवाज छाती में घड़घड़ाहट कमर पीठ और सिर में दर्द, कलेजे में धड़कन आधीरात के बाद खाँसी का बढ़ना इत्यादि। इसके साथ पर्याय क्रम से बेलेडोना भी दिया जाता है।

पल्सेटिला ६ या ३०—पीले रंग का बहुत कफ निकलना, बुखार का न होना शाम समय में या लेटने पर खाँसी का बढ़ना दर्द और कमजोर आदमियों का पुराना ब्रांका-इटिस इत्यादि।

सल्फर ३०-श्वासनली में सुड़सुड़ाहट, तर खाँसी, छाती में दर्द, गाढ़ा कफ निकलना, स्वरभंग, बीच-बीच में कफ के कड़े टुकड़े निकलना, पुरानी बीमारी इत्यादि।

ओपियम ६ या ३०—कैपिलरी ब्रोकाइटिस, बहुत श्वासकष्ट, साँस में घड़घड़ाहट, निद्रालुता, प्रलाप, कब्जियत, बहुत पसीना, रोग की अन्तिम अवस्था इत्यादि।

एमनकार्ब ६-पुरानी बिमारी, कफ में खून के छींटे, ठंढी हवा लगने से खाँसी का बढ़ना इत्यादि।

कल्केरियाकार्ब ६ या ३०-तर खाँसी, गले में घड़-घड़ाहट, रात में सूखी और दिन में तर खाँसी, भोजन के बाद रोग का बढ़ना।

ड्रासेरा ६ या ३०-लगातार आक्षेपयुक्त खाँसी खाँसते समय छाती को हाथ से पकड़ लेना इत्यादि।

केली बाइक्रोम ६ या ३०-गोंदकी तरह चिकना और रस्सी जैसा कफ श्वास कष्ट, सुबह सोकर उठने पर और खाने पीने के बाद तकलीफ का बढ़ना इत्यादि।

नक्सवोमिका ६ या ३०-आधीरात से लेकर सुबह तक सूखी खाँसी, सिरदर्द, कब्जियत इत्यादि।

आवश्यक सूचना-रोगी को सर्दी से बचना चाहिये। छाती में फ्लानेलसे सेंकने, तीसीकी पुल्टिस चढ़ाने या सरसों

दर्द का बढ़ना, छाती में भार मालूम होना, पहले फेन जैसा पतला और चिकना, बाद को गाँठ-गाँठ जैसा पीला या हरा और अन्त में खून मिला कफ निकलना, कष्टकर श्वास-प्रश्वास, खींच खींच कर साँस लेना, खाँसते समय ठन ठन आवाज, बुखार बहुत तेज, प्यास, साफ बोल न सकना, अनियमित नाड़ी, अनिद्रा, बेचैनी जलन के साथ लाल रंग का थोड़ा पेशाब आदि लक्षण प्रकट होते हैं।

रोग साधारण होने पर पहले चार पाँच दिन तक बुखार बढ़ता है बाद को पसीना या दस्त और पेशाब होकर बुखार घट जाता है और ८-१० दिन में रोगी आराम होने लगता है। तेज बीमारी होने पर या अच्छी तरह इलाज न होने पर बुखार १०५-१०६ डिग्री तक बढ़ता है और तीसरे या चौथे दिन से ही बुरे लक्षण प्रकट होने लगते हैं। अन्त में बहुत श्वासकष्ट अधिक रक्त स्राव और विकार या सन्निपात के लक्षण प्रकट होकर रोगी की मृत्यु हो जाती है। जोरों का बुखार जल्दी जल्दी साँस लेना विकार कफ में अधिक खून जाना आदि इस रोग के अशुभ लक्षण माने जाते हैं।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६-रोग के आरम्भ में बुखार चमड़ा सूखा, तेज श्वास प्रश्वास जोरों का प्यास बहुत उत्कण्ठा छाती में दर्द सूखी खाँसी इत्यादि।

छाती में भार, छाती जकड़ी हुई, सूखी खाँसी, शाम से लेकर आधी रात तक खाँसीका बढ़ना, श्वासकष्ट के कारण पानी न पी सकना, खाँसते समय दस्त हो जाना, बकझक, विकार के लक्षण इत्यादि। रोगके आरंभ में ही एकोनाइट या ब्रायोनिया के साथ इसे पर्यायक्रम से देने पर साधारण बीमारी प्रायः अच्छी हो जाती है।

लाइकोपोडियम ६ या ३०—पीला पीव जैसा कफ निकलना, कमजोरी, रात में पसीना आना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३०—बहुत बेचैनी, तेज प्यास, बार-बार पानी माँगना लेकिन एक साथ अधिक पानी न पी सकना, चेहरा फीका और उत्कण्ठा पूर्ण, पतले दस्त इत्यादि।

रसटक्स ६ या ३०—बहुत ज्यादा बेचैनी, तन्द्रालुता; कानसे कम सुनायी देना, अनजान में पाखाना और पेशाब चमड़ा सूखा और गरम, जीभका अगला हिस्सा लाल, स्थिर रहने से तकलीफ का बढ़ना इत्यादि।

ओपियम ६ या ३०—चेहरेका रंग नीला श्वास प्रश्वास में घड़घड़ाहट फेन जैसा नीला कफ निकलना, गरम पसीना निकलना बच्चों और बड़ोंकी बीमारी इत्यादि।

लेकेसिस ६ या ३०—बायीं ओरसे रोग का शुरू होना, नींदके बाद तकलीफका बढ़ना बदबूदार दस्त खून और पीब मिला कफ निकलना मुँह में बदबू बहुत श्वासकष्ट इत्यादि।

हिपरसलफर ६ या ३०—मर्क्युरियस से लाभ न होने पर, और पीब होनेका उपक्रम दिखाई देनेपर इसे देना चाहिये।

केलीम्यूर ३ या ६—रोग को द्वितीयावस्था में सफेद रंग का थक्का-थक्का कफ निकलना, जीभ पर लेप इत्यादि लक्षणों में इसे देने से लाभ होता है।

क्युप्रम ६ या ३०—न्यूमोनिया के साथ लकवा होने का डर दिखाई दे तो इसे देना चाहिये।

जेल्सीमियम ३ x या ६०—दाहिने ओर के फेफड़े का आक्रान्त होना, साथ ही यकृत में दर्द, गाँठ-गाँठ पीले रंग का पतला दस्त, श्वासकष्ट इत्यादि।

चेलाडोनियम ६ या ३०—तर खांसी लेकिन कष्ट के साथ कफ का निकलना दाहिने फेफड़े का आक्रान्त होना एक पैर गरम और दूसरा ठंढा दिन मे जड़ता रात मे साधारण प्रलाप चेहरा पीला मलका रंग सुनहला इत्यादि लक्षणों में और यकृत की खराबी के साथ यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

सेङ्गुइनेरिया ६ या ३ —दाहिने फेफड़े का न्यूमोनिया बुखार छाती के ऊपरी हिस्से में जलन सुई चुभोने जैसा दर्द श्वासकष्ट हाथ पर अधिक गरम या अधिक ठंढे फेफड़े मे रक्ताधिक्य इत्यादि।

कष्टदायक खाँसी आना, छाती के पार्श्वों का अधिक चौड़ा हो जाना, खोंचामारने या कतरने जैसा दर्द, खाँसने पर कफ न निकलना इत्यादि इस रोग के प्रधान लक्षण हैं। साधारण और केवल एकही ओर प्लुरिसी होने पर रोगी आसानी से आराम हो जाता है। रोगी बहुत कमजोर होने पर या प्लूरामें जल संचित हो जाने पर रोग कठिनाई से आराम होता है। ब्राइट्स डिज़ीज, कैन्सर या विकार आदि के साथ यह रोग होने पर अनेक बार रोगीकी मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६—रोगकी प्रथमावस्था में सर्दी और छाती में दर्द होकर बुखार आ जाने पर इससे बड़ा लाभ होता है। जाड़ा लगकर बुखार आना शरीर बहुत गरम, बेचैनी छाती में दर्द प्यास, भय सूखी खाँसी, तेज श्वास-प्रश्वास इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

बेलेडोना ६ या ३०—तेज बुखार रोगका प्रबल आक्रमण आंखें और चेहरा लाल धकधक आदि विकार लक्षण इत्यादि।

एपिस ६ या ३० पुरानी बीमारी प्लूरा में जल संचय होनेके कारण श्वासकष्ट तकलीफ के कारण रोगी का सो न सकना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये

रसटक्स ६ या ३०—सरदी लगने या वर्षा के दिनों में पानी से भीगने पर अथवा आमवातिक रोग के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

सल्फर ६ या ३०—पुरानी बीमारी, प्लुरिसी के साथ न्युमोनिया। चुनी हुई दवासे ठीक लाभ न होना, हाथ पैर के तलवों और शिरमे गरमी मालूम होना इत्यादि।

आर्निका ३ या ६—चोट लगने के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

केन्थरिस ३ या ६—प्लूरामें बहुत जलसंचय, खांसी, श्वासकष्ट, मूर्च्छाभाव बहुत पसीना थोड़ा पेशाब इत्यादि।

हिपरसल्फर ३० या २००—प्लुरिसी में पीब उत्पन्न होने के लक्षण गण्डमाला और कफ प्रधान धातु, चेहरा पीला इत्यादि।

केलीकार्ब ६ या ३०—सूई चुभोने जैसा दर्द [illegible] और कलेजे का धड़कना [illegible] खांसीका बढ़ना [illegible] में और [illegible] लाभ न होने पर इसे देना चा[illegible]।

एन्टिमटार्ट ६ [illegible] न निकलना श्वासक[illegible]

सेनेगा ६ या [illegible] निकलना छाती मे [illegible]

इनके अतिरिक्त रेननक्युलस, लोरोसिरेसस, स्कुइला, कैम्फर कार्बोवेज, फेरम, केली-हाइड्रो, लेकेसिस और साइलीसिया आदि दवायें लक्षणानुसार व्यवहार कीजाती हैं।

आवश्यक सूचना—छाती पर वारम्वार गरम पुल्टिस चढ़ाना, छातीके चारों ओर फ्लानेल लपेट रखना और फ्लानेल से सेंकना लाभदायक है। सावूदाना, वार्ली आदि हलके पदार्थ खाना चाहिये। रोग आराम हो चले तब दूध आदि पुष्टिकर पदार्थ भी दिये जा सकते हैं।

छाती में दर्द।

(Pleurodynia)

छाती में कभी कभी वात की तरह दर्द होता है। यह रोग होने पर प्लुरिसी का भ्रम होता है, परन्तु प्लुरिसीकी तरह इसमें खाँसी या बुखार के लक्षण नहीं रहते। प्रायः गला, गर्दन या कन्धेमें वात वेदना होकर वह छातीमें उतर जाता है अथवा सर्दी आदि लगने के कारण यह रोग होता है। छाती के किसी भी स्थानमें दर्द, दर्द का एक स्थान से दूसरे स्थान में चला जाना, छूनेसे दर्द मालूम होना, पसलियों के बीच में उँगली से दबाने पर दर्द का बढ़ना, पार्श्व या बगल में सुई चुभोने जैसा दर्द इत्यादि इस रोगके प्रधान लक्षण हैं।

गरम मसाला, प्याज, लहसुन, चाय, काफी, सोडावाटर या पलिडले तैयार होनेवाले अन्य पानीय पदार्थ इत्यादि चीजें दवा खाने के समय निषिद्ध हैं। रोग आराम होने लगे तब रोटी और बाद को भात दिया जा सकता है। पुराने रोग में एक वक्त रोटी और एक वक्त भात देना अच्छा है। प्यास दूर करनेके लिये कुछ गुनगुना पानी देना चाहिये। कै होती हो तो ठंडा पानी पिलाना चाहिये या बरफके टुकड़े चूसने को देने चाहिये।

रोग-विचार।

स्वास्थ्य-रक्षाके नियमों का ठीक-ठीक पालन न करने के कारण अथवा शरीर में किसी तरह का विष प्रविष्ट हो जानेके कारण, शरीरकी साधारण अवस्था में जो गड़बड़ी पैदा हो जाती है उसे रोग कहते हैं।

होमियोपैथिक शास्त्र में समस्त रोग तीन भागोंमें बाँट दिये गये है यथा-(१) नया या तरुण रोग-Acute disease एक्यूट डिजिज (२) पुराना या पुरातन रोगChronic disease क्रानिक डिज़िज और (३) जायुज रोग Drug disease ड्रग डिजिज। इन तीनोंका विशेष वर्णन नीचे दिया जाता है।

तरुण रोग-इस काटिके रोग दो भागों में बाँटे जा सकते हैं। एक तो वे रोग जो खानपानके दोष ...

चिकित्सा ।

अर्निका ३ या ६—यह इस रोग की प्रधान दवा है। चोट लगने के कारण यह रोग होना, अथवा बायीं ओर स्तन के पास सुई चुभोने जैसा दर्द, साँस लेते समय दर्दका बढ़ना, दर्दके कारण अच्छी तरह साँस न ले सकना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

ब्रायोनिया ६ या ३०—सूखी खाँसी, छाती में सुई चुभोने जैसा दर्द, चुप रहने से आराम हिलने डोलने और श्वास प्रश्वास से तकलीफ का बढ़ना इत्यादि।

रसटक्स ६ या ३०—हिलने डोलने से आराम, सोने से तकलीफ का बढ़ना, सर्दी लगने के कारण रोग होना।

पल्सेटिला ६ या ३०—लेटने पर दबाकर पकड़ रखने जैसा दर्द, रातमें दर्दका स्थान परिवर्तन, शामके समय, रातमें और बायीं करवट सोनेपर दर्द का बढ़ना इत्यादि।

सिमिसिफिउगा ३ या ६—यह भी इस रोगकी अच्छी दवा है। रसटक्सके बाद इसे देने से अधिक लाभ होगा।

रननकुलस ६ या ३०—बायीं ओर स्तन के नीचे दर्द, दर्दके कारण हिल डोल न सकना इत्यादि।

एकन [illegible] नक्सवोमिका [illegible] तथा [illegible] रोगमें अन्यान्य दवाओं से भी काफी लाभ होता है। [illegible] रोग और [illegible] देखिए।

चिकित्सा।

आर्निका ३ या ६—यह इस रोग की प्रधान दवा है। चोट लगने के कारण यह रोग होना, अथवा बायीं ओर स्तन के पास सुई चुभोने जैसा दर्द, साँस लेते समय दर्दका बढ़ना, दर्दके कारण अच्छी तरह साँस न ले सकना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

ब्रायोनिया ६ या ३०—सूखी खाँसी, छाती में सुई चुभोने जैसा दर्द, चुप रहने से आराम, हिलने डोलने और श्वास प्रश्वास से तकलीफ का बढ़ना इत्यादि।

रसटक्स ६ या ३०—हिलने डोलने से आराम, सोने से तकलीफ का बढ़ना, सर्दी लगने के कारण रोग होना।

पल्सेटिला ६ या ३०—लेटने पर कसकर पकड़ रखने जैसा दर्द रातमें दर्दका स्थान परिवर्तन शामके समय, रातमें और बायीं करवट सोनेपर दर्द का बढ़ना इत्यादि।

सिमिसिफिउगा ३ या ६—यह भी इस रोगकी अच्छी दवा है। रसटक्सके बाद इसे देने से अधिक लाभ होगा।

रननक्युलस ६ या ३०—बायीं ओर स्तन के नीचे दर्द, दर्दके कारण हिल डोल न सकना इत्यादि।

इनके अतिरिक्त नक्सवोमिका [illegible] वात रोगकी अन्यान्य दवाओं से भी [illegible] वात रोग और [illegible] वात देखिये।

हाइड्रोथोरेक्स।

(Hydrothorax)

प्लूराकी खोलमें शोथके कारण जल संचय होनेको हाइड्रोथोरेक्स कहते हैं। हृदय, मूत्र यन्त्र और यकृत आदि अंगोंकी बीमारी के कारण यह रोग होता है। इस संचित जलके कारण फेफड़े पर दबाव पड़ता है फलतः फेफड़े में रक्तसंचय होता है। परिश्रम करने, जोरसे चलने या सीढ़ी आदि चढ़ने पर हाँफना, घूमते समय हृदय में भार मालूम होना, कलेजे में दपदपी, रोग बढ़ने के साथ श्वासकष्ट का बढ़ना, रात में सोने पर श्वासकष्ट का और भी बढ़ जाना, रोगकी अन्तिम अवस्था में समूचे शरीर में शोथके लक्षणों का प्रकट होना, चेहरा नीला पड़ जाना आदि इस रोगके प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा।

एपिस ६ या ३०—लेटने पर कसकर पकड़ रखने जैसा तेज दर्द, थाड़ा पेशाव, अधिक श्वास कष्ट, प्यास का न होना, बुखार के बाद यह रोग होना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

ब्रायोनिया ६ या ३०—छाती में सुई चुभोने जैसा दर्द, साँस लेने और हिलने डोलने पर दर्द का बढ़ना, मिचली, शिरमें फट जाने जैसा दर्द, अधिक प्यास, कब्जियत, प्लुरिसी या वात रोगके साथ इस रोग का होना।

आर्सेनिक ६ या ३० बहुत श्वासकष्ट, श्वास कष्ट के कारण लेट न सकना, कलेजे में धड़कन, रातमें तकलीफ का बढ़ना, प्यास, अस्थिरता. कमजोरी इत्यादि।

डिजिटेलिस ६ या ३०—हृदय रोग के साथ यह रोग होना, पेशाब में तकलीफ, नाड़ी में रुकावट इत्यादि।

कन्वोकम ६ या ३०—हृदय के वातके साथ यह रोग होना. पेशाबका वेग मालूम होने पर भी बहुत थोड़ा पेशाब होना, हाथ पैर में शोथ. मिचली इत्यादि लक्षणो में इसे देना चाहिये।

एपोसाइनम ६ या ३०—बीच बीच में साँसका रुक जाना. बात न कर सकना, पेशाबका पैदा ही न होना, पाका-शयकी उत्तेजना इत्यादि।

लेकेसिस ६ या ३०—बदबूदार मल, पेशाब काला नींद के बाद रोग का बढ़ना।

लाइकोपोडियम ६ या ३०—चित्त सोने पर श्वासकष्ट, तलपेट में बायीं ओर गड़गड़ाहट इत्यादि।

इनके अतिरिक्त सल्फर मर्क्युरियस स्पाइजिलिया सिला आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—अधिक पानी पीना या अधिक नमक खाना हानिकारक है। रोटी भात दूध शोरवा आदि पुष्टिकर खाने खाने चाहिये।

स्पाइजिलिया ६—दाहिनी ओर हृदय बढ़ा हुआ मालूम हो तो इसे देना चाहिये ।

आर्सेनिक ६ या ३०—कमजोरी, हाँफना, बेचैनी इत्यादि लक्षणों के साथ यह रोग होने पर इससे विशेष लाभ होता है ।

आर्निका ६—मल्लाह और मुद्गर भाँजनेवालों को हृदय की वृद्धि, हृदय में दर्द या पेशीशूल होने पर इसे देना चाहिये ।

आवश्यक सूचना—रोगीको स्थिर और शान्त रखना चाहिये । मानसिक उत्तेजना और शारीरिक परिश्रम से बचना आवश्यक है । पुष्टिकर अनुत्तेजक पदार्थ खानेको देने चाहिये ।

हृदय में दर्द ।

[illegible]

[illegible]

होकर बढ़ जाना, बीच बीच में कुछ देरके लिये कम हो जाना, तेज श्वास प्रश्वास, श्वासकष्ट, ऐसा मालूम होना मानो दम रुक जायगा और मृत्यु हो जायगी, चलने फिरने से तकलीफ का बढ़ना, बैठ रहने से आराम मालूम होना, हाथ पैरके तलवे और चेहरा ठंढा, आधे घंटेसे लेकर दो तीन घण्टे तक दर्द का ठहरना इत्यादि इस रोगके प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६—कलेजे में दर्द, श्वास रोग का भाव, समूचे शरीर में पसीना, नाड़ी पूर्ण और सबल इत्यादि।

आर्सेनिक ६ या ३०—हृदय में सुई चुभोने जैसा दर्द, उसके कारण मूर्च्छाभाव, अस्थिरता, उद्वेग इत्यादि।

केक्टस ३ या ६—हृदय में आक्षेप, ऐसा मालूम होना मानों किसीने फौलादी पंजेसे कलेजा पकड़ लिया है, श्वास कष्ट, कलेजे में धड़कन, रातके समय और बायीं करवट लेटने पर दर्द का बढ़ना।

सिमिसिफिउगा ६ या ३०—स्त्रियों के जरायु आदिकी बीमारी के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

स्पाइजिलिया ६ या ३०—हृदय में सुई चुभोने जैसा दर्द, हिलने डोलने से दर्दका बढ़ना इत्यादि लक्षणों में इससे लाभ होता है।

लेकेसिस ३०—उद्वेग और मूर्च्छा, सोनेके बाद समस्त रोग लक्षणों का बढ़ना इत्यादि।

ब्रायोनिया ३ या ६—छाती में सूई चुभोने या कतरने जैसा दर्द, तेज और कष्टकर श्वास प्रश्वास, हिलने डोलने से दर्द का बढ़ना इत्यादि।

डिजिटेलिस ३ या ६—जोरों की धड़कन, रोगी को ऐसा मालूम होना मानो हिलने से साँस रुक जायगी, नाड़ी सविराम इत्यादि।

बेलेडोना ३ या ६—कलेजा धड़कना, नाड़ी पूर्ण. रात में अनिद्रा और बेचैनी इत्यादि।

एसिड हाइड्रो ३ या ६—बारंबार बहुत देरतक कलेजे का धड़कना बेहोशी, बहुत व्याकुलता, नाड़ी क्षीण इत्यादि।

नक्सवोमिका ६ या ३०—पाकाशयकी गड़बड़ी के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

आवश्यक सूचना—हृदय के स्थान पर पुल्टिस चढ़ाना और हाथ पर सेकना लाभदायक है। रोगी को स्थिर रखना चाहिये। शारीरिक और मानसिक परिश्रम मानसिक उत्तेजना उत्तेजक पदार्थों का सेवन आदि हानिकारक है।
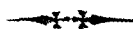
हृदय का धड़कना ।

(Palpitation of the Heart)

अधिक मानसिक उत्तेजना या उदासीनता, स्नायुमण्डल की बीमारी, चाय, काफी और शराब आदि उत्तेजक पदार्थों का सेवन, अधिक मानसिक परिश्रम, अधिक भय, शोक, दौड़धूप, हस्तमैथुन, नाटक नावेल आदि का पढ़ना, गर्भावस्था आदि अनेक कारणों से यह रोग होता है। जोरों के साथ जल्दी जल्दी कलेजे का धड़कना इस रोग का प्रधान लक्षण है

चिकित्सा ।

एकोनाइट ३ या ६—अधिक परिश्रम, भय, दौड़ धूप, तैरना आदि कारणों से यह रोग होना, मृत्युभय, बहुत बेचैनी छटपटाना धड़कन के कारण रोगी का सीधे होकर बैठ रहना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। मोटे ताजे युवकों की बीमारी में इससे अधिक लाभ होता है।

कोफिया ६—बहुत आनन्द या बहुत मानसिक उत्तेजना के कारण रोग होने पर इसे देना चाहिये।

स्पाइजिलिया ३ या ६—जिन्हे बारंबार यह बीमारी होती हो, साथ ही जिनके श्वास प्रश्वास में बदबू रहती हो, उन्हें यह दवा देनी चाहिए।

नक्समस्केटा ६ या ३०—कलेजे में धड़कन, मूर्च्छा, मूर्छा के बाद नींद आजाना इत्यादि।

चायना ६ या ३०—अधिक खून, वीर्य, रज या दूध आदि निकलने के कारण यह रोग होना, बहुत कमजोरी, रात में अच्छी तरह नींद न आना, पेट में वायु का जोर।

बेलेडोना ६ या ३०—कलेजे में धड़कन के साथ शिर और छाती में दर्द होने पर इसे देना चाहिए।

सल्फर ६ या ३०—कोई चर्मरोग दब जाने या पुराना जख्म भर जाने के बाद यह रोग होना, ऊपर चढ़ने या चढ़ाई उतरने के बाद अधिक समय तक कलेजे का धड़कते रहना इत्यादि लक्षणों में और बेलेडोना से लाभ न होने पर इसे देना चाहिए।

आर्सेनिक ६ या ३०—आधी रात के बाद कलेजे का धड़कना, बहुत तेज बीमारी, छाती में जलन, और गरमी मालूम होना, श्वास कष्ट, लेटने पर श्वास कष्ट का बढ़ना और चलने फिरने पर आराम मालूम होना इत्यादि लक्षणों में और सल्फर से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

विरेट्रम ६ या ३०—आर्सेनिक के समान लक्षण खास-कर सांस लेने में तकलीफ, लेटने पर आराम मालूम होना और खड़े होने या हिलने डोलने पर तकलीफ का बढ़ना।

एसिडफस ६ या ३०—अधिक स्त्री संग या हस्त मैथुन के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये। डिजि-टेलिस से भी इन लक्षणों में लाभ होता है।

६ या २००। अधिक परिश्रम के कारण कलेजा धड़कने पर आर्निका ३ या ६। क्रेटिगस मदरटिञ्चर इस रोग की एक बढ़िया दवा है। दिन में तीनबार पाँच पाँच बून्द सेवन करने से नयी बीमारी में आश्चर्यजनक लाभ होता है। क्रेटिगस से लाभ न होने पर जब यकृत का भी शोथ दिखायी दे, आइरिस मदरटिंचर दिन में दो तीन बार दो दो तीन तीन बून्द के हिसाब से देना चाहिए।

इनके अतिरिक्त, मस्कस १, कन्वेलरिया ३, केक्टस ३, एडोनिस ३, वेलेरियाना ६, कोवा ३०, केलमिया लेट ३, कल्केरिया फस १२ X विचूर्ण आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—मानसिक उत्तेजना, दौड़ धूप भारी चीज उठाना आदि मना है। रोज ठंढे जल से स्नान करना थोड़ा थोड़ा व्यायाम करना खुली हवा में घूमना इत्यादि लाभदायक है। चाय, तम्बाकू शराब आदि उत्तेजक पदार्थों से एक दम दूर रहना चाहिए। अधिक आहार घी तेल या गरम मसाले की चीजें भी खाना मना है जिस कारण से यह रोग हुआ हो उस कारण पर ध्यान रखकर इलाज करने से विशेष और शीघ्र लाभ होता है।

हृदय में वात।

(Rheumatism of the Heart)

जैसे शरीर के अन्यान्य अंगो में वात या वाई की बीमारी होती है, वैसे ही हृदय पर भी इस रोग का आक्रमण होता है यह रोग होने पर छाती में बायीं ओर कलेजे के स्थान में दर्द या भार मालुम होता है। बायीं करवट सोने में तकलीफ, श्वासकष्ट, कलेजे में धुकधुकी, चेहरे पर उद्वेग, बहुत बुखार उसके साथ पसीना इत्यादि लक्षण भी प्रकट होते हैं। यह रोग बहुत बुरा होता है। पुराना होजाने पर कठिनाई से आराम होता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६—बहुत बुखार, कलेजेका कॉपना, छाती में सुई चुभोने जैसा दर्द, भय, पेशाब का रुक जाना इत्यादि।

बेलेडोना ३ या ६—हृदय का अकस्मात और अपरिमित संकोचन, कलेजे में धड़कन, छाती में दाव और भार मालूम होना, उसके कारण श्वास रुक जाने के लक्षण, दर्द का एकायक शुरू होना और एकायक गायब हो जाना इत्यादि।

सिमिसिफिउगा ३ या ६—हृदय के चारों ओर भयंकर दर्द, बायें कन्धे में भी दर्द मालूम होना, स्नायविक और वात वेदना।

चिकित्सा।

हेमामेलिस ३X—यह इस रोग की अच्छी दवा है। इसे सेवन करते समय हेमामेलिस मदरटिञ्चर का (अठगुने पानी में मिलाकर) बाह्य प्रयोग करने से अधिक लाभ होता है।

आर्निका ३ या ६—चोट लगने या अधिक चलने के कारण नसें फूलने पर इसे देना चाहिये।

बेलेडोना ६—नसों में प्रदाह, सूजन और लाली हो तो इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३०—नसें फूल गयी हों और उनमें जलन होती हो तो इसे देना चाहिये।

फ्लोरिक एसिड ३—बीमारी पुरानी होने पर इससे काफी लाभ होता है।

पल्सेटिला ६—नसें फूल गयी हों और उनमें बहुत दर्द होता हो तो इसे देना चाहिये।

इनके अतिरिक्त कल्केरिया-कार्ब ग्रेफाइटिस, जिङ्कम, फेरमफस, प्लम्बम, लेकेसिस, फर्मिका और सल्फर आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—क्लिमेटीज़ धावन के बाह्य प्रयोग से भी काफी लाभ होता है। पैर में पट्टी बाँधने, मोजे पहनने अथवा बैण्डेज के व्यवहार से भी लाभ होता है।

१२-यकृत और प्लीहा के रोग।

(Diseases of the Liver & Spleen)

यकृत-प्रदाह।

(Hepatitis)

क्रोध और शोक आदि मानसिक उत्तेजना या अवसन्नता, किसी तरह की चोट लगना, कै या दस्त करानेवाली किसी तेज दवा का सेवन, शराबखोरी आदि कारणों से यह रोग होता है। यकृत, पेट मे दाहिनी ओर पसलियों के नीचे स्थित रहता है। यह रोग होने पर उस स्थान में दर्द और कनकनी होती है। हाथ थपथपाने या दबाने पर जोर से साँस छोड़ने पर और खाँसी आने पर दर्द होना, दाहिने कन्धे और हाथ में दर्द, दाहिनी ओर जलन और दर्द, सुई चुभोने जैसा दर्द, श्वासकष्ट, मल का रंग कीचड़ जैसा या सफेद और कब्जियत आदि इस रोग के प्रधान लक्षण हैं। रोग का आरंभ जाड़ा बुखार, बहुत प्यास, थोड़ा पेशाब, मिचली और कै, क्षुधाहीनता आदि लक्षणों से होता है। बीमारी साधारण होने पर बुखार नहीं भी आता अथवा बहुत कम आता है। प्रदाह शीघ्र आराम न होने पर वह फोड़े के रूप में परिणत हो जाता है। और फोड़ा फटने पर कै, थूक और मल के साथ पीब निकलता है। नयी बीमारी ८-१० दिन में

मर्क्युरियस ६ या ३०—हाथ लगाने पर बहुत दर्द तन्नाहट, छींकने या खाँसने पर सुई चुभोने जैसा दर्द, दाहिनी करवट सो न सकना, यकृत फूला और बढ़ा हुआ, पीला चेहरा, पित्त की कै इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। ब्रायोनिया के साथ पर्याय क्रम में या फोड़ा होकर पकने के लक्षण दिखायी देने पर इसे देने से बहुत लाभ होता है।

नक्सवोमिका ६ या ३०—यकृत में दर्द, दबाने से दर्द का बढ़ना मुँह में खट्टा या कड़ुवा स्वाद, खाना अच्छी तरह हजम न होना कब्जियत मल का वेग मालूम होना, पर दस्त साफ न होना अधिक मानसिक परिश्रम या शराब आदि के सेवन से यह रोग होना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

नेट्म सल्फ ३०—हिलने डोलने दीर्घ श्वास लेने या यकृत पर हाथ रखने से दर्द मालूम होना। पेट खाली होने पर नाभी के चारों ओर दर्द, कुछ खा लेने पर आराम।

चेलीडोनियम ३ या ६—यकृत के स्थान में तेज या धीमा दर्द चेहरा पीला लेड़ी जैसा या खूब पीले रंग का मल शिर के पिछले हिस्से में कान की ओर खींचने सा दर्द।

पाडोफिल्लाम ६ या ३०—यकृत में दर्द और भार मालूम होना मिचली या पित्त की कै यकृत में सदा हाथ

लगाकर रगड़ते रहना, सुबह पतले दस्त, यकृत की क्रिया में गाल माल।

हाइड्रैस्टिस ३ या ६—बहुत कब्जियत, मल का रंग फीका, यकृत की जड़ता, पेट खाली मालूम होना, बुखार का न होना इत्यादि।

नेट्रमम्यूर ३० या २००—यकृत के स्थान में चुटकी से काटने जैसा दर्द, बुखार, पेटका बढ़जाना, पेट में गड़गड़ाहट इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—मुंह का स्वाद कड़ुवा, जीभ पर पीला लेप, मिचली और कै, रात में हरे रंग का चिकना दस्त, गरम स्थान में भी ठंढ मालुम होना, पेशाब में कतरने जैसा दर्द, शाम को तकलीफ का बढ़ जाना इत्यादि।

लेपटान्ड्रा ६ या ३०—यकृत में कनकनी और धीमा-धीमा दर्द, जीभ पर पीला लेप, काले रंग का बदबूदार मल, कमला रोग, तीसरे पहर और शाम को दस्तों का बढ़ना इत्यादि।

चायना ६ या ३०—यकृत के स्थान, में दर्द और भार मालूम होना, खोंचा मारने जैसा दर्द, रात में दर्द का बढ़ना चेहरा फीका, बहुत कमजोरी इत्यादि लक्षणों में और नक्सवोमिका से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

इनकी दोही अवस्थाएँ होती है—(१) प्रारम्भ और (२) वृद्धि। तीसरी अर्थात् ह्रास की अवस्था इनमे होती ही नहीं, फलतः एक बार यह रोग हो जाने पर आजीवन इनका विष शरीर मे बढ़ता ही रहता है। इन रोगों से छुटकारा उसी अवस्था में मिलता है, जब मनुष्यकी मृत्यु होती है। नये रोगो का हमला व्यक्ति विशेष, नगर विशेष या देश विशेष में होता है, परन्तु पुरातन रोग जिसका पीछा पकड़ते हैं, उसकी कई पीढ़ी तक अपना असर दिखाते है। संसार में इन रोगोका बहुत ज्यादा प्रसार है किन्तु होमियोपैथिक के सिवा ऐसी दवाएं बहुत ही कम है जो इन्हे आराम करने का दावा रखती हैं।

यह रोग बाहरकी ओर से शरीर में अन्दर की ही ओर प्रवेश करते चले जाते है,इसलिये इनकी चिकित्सा करने समय ऐसी दवाए व्यवहार की जाती है, जो रोग को बाहर की ओर खीच लाते है। यही कारण है कि इनका इलाज करने समय कभी-कभी कोई चर्म रोग फूट निकलता है। यदि ऐसा हो तो समझना चाहिये कि रोग आराम होने की ओर बढ रहा है। ऐसी अवस्थामें दवा खिलाना कुछ दिनों के लिये बन्द कर देना चाहिये। इन रोगों मे बहुत उच्च क्रम की दवा एक दो या चार सप्ताहके अन्तर से देना होता है। रोगका आराम होने में भी कई वर्ष लग जाते है। सच्चे होमियोपैथ की परख ऐसे ही रोगोंकी चिकित्सा करनेमे होता है

लेकेसिस ६ या ३०—यकृत में बहुत दर्द पाकाशय तक दर्द का फैल जाना. दाहिनी ओर काँटा लगने जैसा दर्द, किसी तरह का दबाव बरदाश्त न होना, सोने के बाद सभी रोग लक्षणों का बढ़ जाना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। बेलेडोना या मर्क्युरियस के बाद इसे देने से अधिक फ़ायदा होता है।

केलीकार्ब ६ या ३०—सुई चुभोने जैसा दर्द. कमर से लेकर घुटने तक दर्द का फैल जाना, सूजन, पाण्डु-रोग इत्यादि।

साइलीसिया ३०—यकृत का स्थान कड़ा और फूला हुआ. टप टप वेदना. हिलने डोलने या छूने से दर्द का बढ़ना।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—भूख की कमी सामने की ओर झुकने पर यकृत में सुई चुभोने जैसा दर्द, दर्द के कारण कमर में कस कर कपड़ा न पहन सकना, मटमैले रंग के कड़े और अजीर्ण पदार्थ मिले हुए दस्त पैर गीले और ठंढे इत्यादि।

सलफर ६ या ३०—सिर और हाथ पैर के तलवों में गरमी मालूम होना सम्पूर्ण जीभ पर सफेद लेप लेकिन उसके अगले भाग में लाली कपाल में भार मालूम होना पेट हटाना इत्यादि।

आवश्यक सूचना-यकृत को फ्लानेल या चोकर की पोटली से सेंकना चाहिये। बुखार होने पर सागूदाना और बार्ली आदि हलकी चीजें खाने को देना चाहिये। माँस मछली और घी तेल के पके पदार्थ खाना एक दम मना है। खाना थोड़ा थोड़ा खाना चाहिये। एक साथ ही बहुत अधिक खा लेना हानिकारक है।

यकृत का बढ़ना।

(Enlargement of the Liver)

इस रोग में यकृत का आकार अपने स्वाभाविक आकार की अपेक्षा बड़ा हो जाता है। अधिक माँस, मछली, घी, तेल के पके पदार्थ, और शराब आदि उत्तेजक पदार्थों का सेवन धूप में अधिक परिश्रम करना अजीर्ण रोग, यकृत प्रदाह की बीमारी का पुराना हो जाना यकृत में रक्त संचय होना इत्यादि अनेक कारणों से यह रोग होता है। यकृत बड़ा हो जाने पर टटोलने से हाथ में लगता है। यकृत का बड़ा और ऊंचा हो जाना, बैठने या खड़े होने पर यकृत में भार मालूम होना, यकृत के स्थान में दबाने से दर्द मालूम होना शरीर का रंग पाण्डु या पीला हो जाना जीभ पर मैला लेप कब्जियत मल कठिन, भूख की कमी कभी कभी मिचली शिर में दर्द कमजोरी मलका रंग मटमैला या सफेद आँखें पीली इत्यादि

इस रोग के प्रधान लक्षण हैं। यह रोग प्रायः आराम हो जाता है, लेकिन कभी-कभी खान पान के अत्याचार से सूजन आदि उपसर्ग उत्पन्न होकर रोगी की मृत्यु हो जाती है। बच्चों के लिये यह रोग अवश्य खतरनाक होता है। बुखार शीघ्र न छूटने पर वे बड़ी कठिनाई से आराम होते हैं।

चिकित्सा ।

एकोनाइट ३ या ६–बहुत बुखार, यकृतवाले स्थान में सुई चुभोने जैसा दर्द, श्वास प्रश्वास में कष्ट, बहुत घबड़ाहट, मृत्युभय, अस्थिरता या बेचैनी इत्यादि।

ब्रायोनिया ३ या ६–यकृत में सुई चुभोने जैसा दर्द, बाहु और कन्धे तक दर्द का फैल जाना, कब्ज़ियत, मल सूखा और कठिन, साधारण बुखार इत्यादि।

मर्क्युरियस ६ या ३०–यकृत में दर्द, पेशाब का रंग लाल, मलका रंग मटमैला या हरा, यकृत फूला और बढ़ा हुआ, कमला रोग जैसे लक्षण इत्यादि।

लाइकोपोडियम ६ या ३०–यकृत में दर्द, पतले दस्त या कब्जियत आदि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

सीपिया ६ या ३०–यकृत की पुरानी बीमारी में और स्त्रियों को यह रोग होने पर इससे बहुत लाभ होता है।

नक्सवोमिका ६ या ३०—घी तेल के पके पदार्थ खाने या शराब पीने के कारण यह रोग होना. यकृत में दपदपी, खाने के बाद पेट बहुत भरा हुआ मालूम होना, कमर में कपड़ा न रख सकना, सुबह मुँह में खट्टा या कड़ुवा स्वाद, कब्जियत, कठिन मल, क्वीनाइन के अपव्यवहार के कारण यह रोग होना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। अनेक बार केवल इसी दवा से यह रोग आराम हो जाता है।

सल्फर ३०—नक्सवोमिका से पूरा पूरा लाभ न होने पर इसे देना चाहिये। पुरानी बीमारी में इससे अधिक लाभ होता है।

चायना ६ या ३०—बहुत कमजोरी खाना हजम न होना, बिना दर्द के दस्त, साधारण बुखार, यकृत का फूल जाना, हाथ लगाने से दर्द होना इत्यादि।

पोडोफिल्लाम ३ या ६—यकृत की खराबी के साथ पतले दस्त आते हों तो इसे देना चाहिये।

आवश्यक सूचना—दिन में सोना, रात में जागना, अधिक परिश्रम करना, सर्दी लगना आदि हानिकारक हैं। ठंढे पानी से नहाना बर्दाश्त न हो तो गरम पानी से बदन पोंछ डालना चाहिये। आराम करना [illegible]। [illegible] और पुष्टिकर पदार्थ खाने चाहिये। [illegible]

[illegible]

आर्सेनिक ६ या ३०—दाहिनी ओर दर्द, सूजन और जलन, दवाने से दर्द मालूम होना, शरीर में जलन, अस्थिरता अवसन्नता इत्यादि।

लेकेसिस ६ या ३०—शराबियों को यह रोग होना, नींद के बाद सभी रोग लक्षणों का बढ़ जाना।

लाइको पोडियम ३०—शराबियों की बीमारी, मुँह में खट्टा स्वाद, जरासा खाने से ही पेट भर जाना लेकिन फिर भूख लगना, पेट में वायु, संचय, डकार आना, कब्जियत इत्यादि।

नेट्रमम्यूर ३०—मैलेरिया के कारण यह रोग होना, कब्जियत, सुई चुभोने जैसा दर्द।

अरममेट ३०—हृदय की बीमारी के कारण यह रोग होना, कमला, कब्जियत, सफेद या राख के रंग का दस्त होना।

कार्बोवेज ३०—दर्द के कारण यकृत में हाथ तक न लगने देना, कमरमें कपड़ा न रख सकना, पेटमें वायु संचय, दस्त के समय पेट से वायु निकलना इत्यादि।

कल्केरिया कार्ब ३०—गण्डमाला धातु वाले रोगियों को इससे अधिक लाभ होता है।

आयोडियम ६ या ३०—रातमें दर्द, अक्षुधा, शरीर दुबला पतला इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

नाइट्रिक एसिड ६ या ३०—पुरानी बीमारी, गरमी या पारेके दोषसे यह रोग होना, कीचड़ जैसा मल, मुँहमें बहुत बदबू इत्यादि।

नक्सवोमिका ३०—कमला, बवासीर या अम्ल रोगियों की बीमारी, शराब पीने के कारण यह रोग होना, यकृत फूला हुआ, कमर में कपड़ा पहनने पर तकलीफ मालूम होना इत्यादि।

सल्फर ३०—कब्जियत, यकृत कड़ा और फूला हुआ, अजीर्णता, अनेक प्रकारके चर्मरोग, चुनी हुई दवा से पूरा लाभ न होना इत्यादि।

आवश्यक सूचना—खुली हवाका सेवन और स्वास्थ्य रक्षाके नियमों का पालन करना चाहिये। शराब आदि उत्तेजक पदार्थों का सेवन एकदम मना है।

पाण्डु या कमला।

(Jaundice)

यकृत की क्रिया में गड़बड़ी या गोलमाल होनेके कारण यह रोग होता है। वास्तव में इसे यकृत रोगका एक लक्षण

ही कहना चाहिये। यकृत की क्रिया में खराबी होने के कारण मल मूत्र द्वारा पित्त बाहर नहीं निकलते और खूनके साथ मिलकर समूचे शरीर में संचालित होते हैं। इसी लिये यह रोग होता है। सविराम ज्वर, या प्लीहाजनित ज्वर के साथ और स्त्रियों को गर्भावस्था में भी यह रोग हो जाता है। आँखें और चेहरा पीला पड़ जाना, समूचा शरीर भी पीला हो जाना, पेशाब का रंग पीला. जीभ मैली, मुँह का स्वाद कड़ुवा, भूख न लगना, जी मिचलाना, पित्तकी कै, सफेद मटमैले या राखके रंगके दस्त होना, कब्जियत, कमज़ोरी साधारण बुखार, कभी-कभी शरीर खुजलाना इत्यादि इस रोगके प्रधान लक्षण हैं :

चिकित्सा।

आर्सेनिक ६ या ३०—मैलेरियाके कारण यह रोग होना, हमेशा धीमा बुखार आना इत्यादि।

चायना ६ या ३०—यह इस रोगकी बढ़िया दवा है। मैलेरिया बुखार या किसी तेज बीमारीके बाद यह रोग होना. यकृत कड़ा और बड़ा, दबाने से दर्द, कीचड़ जैसे दस्त, मुँहका स्वाद कड़ुवा, मिचली, भूख कम या अधिक लगना लेकिन भोजन में अरुचि, पतले दस्त इत्यादि लक्षणों में और मर्क्युरियस के साथ पर्याय-क्रममें देने से अनेक बार यह रोग इसी दवासे आराम हो जाता है।

पोडोफिल्लाम ३ या ६—पित्त रुक जानेके कारण यह रोग होना, जी मिचलाना, पित्तकी के, यकृत में तनाहट और दर्द, कब्जियत या उदरामय इत्यादि लक्षणों में इससे लाभ होता है।

सल्फर ६ या ३०—चर्मरोगवाले रोगियों को यह रोग होना, खोपड़ी और हाथ पेरमें जलन, पित्त अथवा रक्तकी कै, दाहिनी ओर दर्द, पेट फूला हुआ, कब्जियत. अनिद्रा शामको बुखार इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—जीभ पर पीला लेप, मुँहका स्वाद कडुवा, हरे रङ्गके पतले दस्त प्यास न होना, जाड़ा मालूम होना, शामको तकलीफ का बढ़ जाना इत्यादि।

लाइको पोडियम ३० या २००—यकृत को पुरानी बीमारी के कारण यह रोग होना, बहुत कब्ज़ियत, पेट में वायुसंचय इत्यादि।

थरममेट ६ या ३०—यकृत और पेट के ऊपरी हिस्से में दर्द, मटमैला या हरे रङ्गका मल, शरीर के निचले अङ्गों में दर्द इत्यादि।

मिरिका ३ x—तेज बीमारी, कन्धेको हड्डियों में दर्द, पेट से वायु निकलना, पेशियो में दर्द इत्यादि।

अर्निका ६—चोट लगने के कारण यह रोग होने पर और सान्निपातिक लक्षण दिखायी देने पर इसे देना चाहिये।

ब्रायोनिया ६ या ३०—पिलही के स्थान में सुई चुभोने जैसा दर्द, कब्जियत अथवा कै और दस्त, हिलने डोलने से दर्द का बढ़ना, चिड़चिड़ा स्वभाव इत्यादि।

आर्सेनिक ६ या ३०—जलन, पतले दस्त, खूनी कै, बहुत कमजोरी इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

नक्सवोमिका ३०—शराबियों को यह रोग होनेपर और एकोनाइट से लाभ होने पर इसे देना चाहिये।

पिलही का बढ़ना।

(Enlargement of the Spleen)

मैलेरिया बुखार आने पर तथा अधिक क्वीनाइन सेवन करने के कारण प्रायः यह रोग होता है। कभी-कभी दूसरे रोगों के साथ एक उपसर्ग के रूपमें भी यह रोग प्रकट होता है। यह रोग होने पर पेट बड़ा दिखायी देता है, खास कर बायों ओर कभी-कभी पेट इतना बढ़ जाता है कि देखने में तोंदी जैसा मालूम होता है। पेट पत्थर जैसा कड़ा हो जाना, भूख न लगना, पतले दस्त होना, खूनी आँव

फेरम ३०–सविराम ज्वर या क्वीनाइन के अपथ्य
हार के कारण पिलही का बढ़ना, शोथ, अकड़ने जैसा दर्द
हाथ रखने से तनाहट इत्यादि।

सियेनोथस १ X–पिलही फूली और कड़ी, दर्द,
दर्द के कारण बायीं करवट लेट न सकना, कब्जियत
इत्यादि।

लाइकोपोडियम ३०–बायीं कोख में कसकर
पकड़ रखने जैसा दर्द, पेट फूला हुआ और वायुपूर्ण
कब्जियत इत्यादि।

नेट्रम म्यूर ३०–पुरानी बीमारी में इससे लाभ
होता है।

फेरम आर्स ३०–पिलही का बढ़ना पिलही कड़ी
बुखार शोथ कब्जियत या पतले दस्त रक्तहीनता
इत्यादि।

बसिलिनम २०० किसी दवासे लाभ न होने पर इसे
आजमाना चाहिये।

रोग के प्रधान लक्षण हैं। रोग बढ़ने पर रोगी का चेहरा और आँखें बैठ जाती हैं और हाथ पैर तथा चेहरे पर ठंढा, पसीना, मूर्छा, प्रलाप आदि लक्षण प्रकट होकर रोगी की मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६—ठंडी सूखी हवा लगकर रोग होना, तेज बुखार, पाकाशय में दर्द और जलन, तेज प्यास, बेचैनी और मृत्यु भय।

एण्टिमटिला ६ या ३०—पाकाशय में छुरी भोंकने जैसा दर्द, खाने पीने के बाद मिचली और कै, शिरमें चक्कर, जाड़ा मालूम होना, मुँह का स्वाद कड़वा, पतले दस्त, शामको तकलीफ का बढ़ना इत्यादि।

नक्सवोमिका ६ या ३०—पेट में ऐंठन और जलन खट्टी गन्ध युक्त कफ या खूनकी कै, कब्जियत, शिरमें दर्द शराबियों को यह रोग होना इत्यादि।

कार्बोवेज ६ या ३०—पाकाशय में जलन खट्टी डकार जरासा खाने से भी दर्द पेट में वायु संचय, खट्टी चीजें खाने की इच्छा इत्यादि।

बेलेडोना ६ या ३० दर्द का एकाएक शुरू होना और एकाएक गायब हो जाना शिरमें रक्ताधिक्य और दर्द,

लक्षणों में और आर्सेनिक के बाद इसे देने से अधिक लाभ होता है।

कैम्फर ६ या ३०—एकायक बहुत सुस्त हो जाने तथा के दस्त होने पर इसे देना चाहिये।

हाइड्रेस्टिस ३ X—यह भी इस रोगको एक बढ़िया दवा है।

इनके अतिरिक्त एन्टिमक्रूड, मर्क्युरियस कर, थूजा, हायोसायमस, अर्जेन्टम नाइट, विस्मथ, मिल्लिफोलियम मर्क्युरियस सल, आदि दवाएँ भी लक्षणानुसार लाभ करती है।

आवश्यक सूचना—रोगकी तेजी के समय एकाएक या आधे-आधे घंटे पर दवा देनी चाहिये। जब तक रोग आराम न हो तब तक थोड़ा ठंडा पानी या बरफ के टुकड़ों को छोड़ कर और कुछ भी खाने के लिये न देना चाहिये। रोग शान्त होने पर साबूदाना, बार्ली, दूध आदि दिया जा सकता है। जब तक पाचनशक्ति ठीक न हो जाय, तब तक कड़ी चीजें खाने को न देनी चाहिये।

भूख न लगना ।

([illegible])

अनेक बार यह रोग किसी दूसरे रोगके लक्षण स्वरूप ही प्रकट होता है। अधिक या [illegible] भोजन, किसी प्रकार का शारीरिक व्यायाम न करना, सदा पढ़ने लिखने रहकर

वक्त पुस्तकके पन्ने उलट लेने से भी रोगी की चिकित्सा की जा
सकती है। यही कारण है कि साधारण विद्या-बुद्धिवाले मनुष्य
और स्त्रियाँ तक इसकी दवाओंका चुनाव कर, साधारण रोगोंका
इलाज कर लेती हैं और रुपयोंका काम पैसा से निकाल लेती हैं।
दवाएँ तैयार मिलती हैं और खाने में सुस्वादु होती हैं। न आसव,
अरिष्ट या काढे बनानेकी झझट, न खानेमें मिक्श्चरों जैसा कड़ुवा-
पन। ऐसी अवस्थामें उत्तरोत्तर इनका प्रचार बढ़ता जाय तो
उसमें कोई आश्चर्य नहीं।

परन्तु इस चिकित्सा शास्त्रमें नित्य ही नये नये प्रयोग हुआ
करते हैं, जिनके फलस्वरूप नयी नयी दवाएँ भी ईजाद होती जा
रही हैं। कुछ ही वर्षोंमें उनकी संख्या दो हजार के करीब जा
[illegible] है। किसी भी चिकित्सा शास्त्रके लिये ऐसे प्रयोग और
[illegible] सराहनीय कही जा सकती है, उसकी उन्नति भी ऐसी
[illegible] पर ही निर्भर है, इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि इन खोजों
[illegible] पर चिकित्सा शास्त्र पूर्णता प्राप्त करता जा रहा है,
[illegible] भी [illegible] इतना ही [illegible] कि [illegible] और दवाओं
[illegible] इस चिकित्सा प्रणालीमें भी [illegible] आ गयी
[illegible] चिकित्सकोंके ही
[illegible]।
[illegible] नहीं [illegible]। [illegible] नहीं जानते हैं कि
[illegible] मात्री [illegible] सन्ताप

इनके अतिरिक्त हाइड्रेस्टिस, एन्टिमक्रूड, प्रुनस स्पाइ, मेग्नेशिया और रसटक्स आदि दवाएँ भी आजमायी जा सकती हैं।

आवश्यक सूचना--सुबह शाम खुली हवा में घूमना, ठंढे जलसे स्नान करना, तड़के उठना, नियमित व्यायाम करना लाभदायक है। आसानी से हजम हों ऐसी चीजें खाना चाहिये।

मुँहमें पानी भर आना।

(Pyrosis)

यकृत और पाकाशय की क्रिया में गड़बड़ी होने से और भारी या अपुष्टिकर भोजन करने से यह रोग होता है। भोजन करने के बाद डकार आना और उसके साथ ही खट्टा या स्वादरहित पानी पेटसे निकल कर मुँहमें भर जाना इसका प्रधान लक्षण है।

चिकित्सा।

कार्बोवेज इस रोग में काफी फायदा करता है। पुरानी बीमारीमें लाइकोपोडियम आजमानी चाहिये। नक्सवोमिका, एसिड सल्फ, ब्रायोनिया, पल्सेटिला आदि दवाओं से भी लाभ होता है। अजीर्ण या बदहजमी की दवाओं में से भी दवा चुनी जा सकती है। तेज बीमारी में रोगीको डबल मात्रा खिलाने से भी काफी फायदा होता है

आवश्यक सूचना—रोग चाहे जिस कारण से हुआ हो, इसे सदा रोग ही समझना चाहिये और रोगीको भली बुरी सभी चीजें चाहे जितनी तादाद में न खाने देना चाहिये। खान पान में नियमित न रहने से रोगीको अन्य भयंकर रोग हो सकते है।

बदहजमी या मन्दाग्नि।

(Dyspepsia—Indigestion)

इस रोग को अग्निमान्द्य या अजीर्ण रोग भी कहते हैं। घी-तेलके पके पदार्थ खाना अच्छा तरह चिबाकर न खाना, चाय, काफी, शराब तम्बाकू या ऊटपटांग दवाओं का अधिक सेवन, अधिक शारीरिक या मानसिक परिश्रम करना अथवा बिलकुल ही परिश्रम न करना, खट्टी चीजें खाना कमजोरी, सदा खिन्न रहना स्नायुरोग या वात रोगका होना, सोरा धातु आदि अनेक कारणों से यह रोग होता है। पेटमें भार, मुंहमें पानी भर आना छातीमें जलन पेटमें दर्द सांस में बदबू कलेजा धड़कना शिर में दर्द कभी कभी गाजनी बस पेट फूलना कब्जियत या पतले दस्त निकलना या खट्टे डकार आना गला जलना इत्यादि इस रोग के प्रधान लक्षण है।

सल्फर ३०—पाकाशय में भार, खट्टी डकार आना, भोजन के बाद तन्द्रा, मुँहमें और होठों पर जख्म या सूजन, कब्जियत, बवासीर इत्यादि। सुबह सल्फर ३० और शामको नक्सवोमिका ३० सेवन कराने से पुराने रोगमें बहुत लाभ होता है।

लाइकोपोडियम ६ या ३०—कमजोर आदमियों को यह रोग होना, बदहजमी और पेट फूलना, कब्जियत, सदा तन्द्राभाव, खासकर भोजन के बाद, खट्टी डकार, खट्टी कै, थोड़ा सा खाने पर भी पेट भरा मालूम होना, पेटमें वायु संचय, दस्त साफ न होना इत्यादि।

कार्बोवेज ६ या ३०—यह भी इस रोग की बढ़िया दवा है। सड़ी, बदबूदार और खट्टी डकार, हिचकी, डकार आने या वायु निकलने पर आराम मालूम होना, भोजन की अनिच्छा, पेटमें गड़गड़ाहट अतिसार और पेट फूलना, रोगीका कातर हो पड़ना इत्यादि।

एन्टिमक्रूड ६ या ३० अधिक भोजन के कारण यह रोग होने पर तथा स्त्री बच्चे और वृद्धोंको यह रोग होनेपर इससे अधिक लाभ होता है। बदबूदार डकार पानी पानी से कब्जियत और दस्त जाने पर सफेद लेप, अरुचि, [illegible] न लगना, डकार और वायु निकलना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

इनके अतिरिक्त हाइड्रेस्टिस, पेट्रोलियम, नक्स मस्केटा केली वाइक्रोम, प्लम्बम, डालकेमारा, एकोनाइट, कोलोसिन्थ आइरिस, विस्मथ, और अर्निका आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—रोज कुछ समय तक घूमना, ठंडे पानीसे नहाना, नियमित समय पर भोजन, भोजन के बाद कुछ देर विश्राम, दिनमें न सोना, भोजन के बाद काफी पानी पीना आदि बातें लाभदायक हैं। जल्दी जल्दी खाना, रात मे जागना आदि हानिकारक हैं। खानेके लिये ऐसी ही चीजें व्यवहार में लानी चाहिये, जो आसानी से हजम हो जायँ। घीके पके पदार्थ मॉस, दही घी, चाय, काफी आदि चीजें विलकुल ही न खायी जायें तो अच्छा है।

अम्ल रोग।

A(ι ι)

यह रोग भी एक तरह का अजीर्ण रोगही है और साधारणतः अजीर्ण रोग से ही यह रोग उत्पन्न होता है। छाती और पेटमे जलन होना मुंहमे खट्टा पानी भरना खट्टी डकार आना कभी कभी भोजन के बाद पेटमे कुछ दर्द होना व सिरदर्द कब्जियत या उदरामय आदि इसके प्रधान लक्षण है

चिकित्सा।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—यह इस रोग की बढ़िया दवा है। मुँहमें खट्टा स्वाद और कै, जीभ पर सफेद या पीला लेप, प्यास न होना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

कार्बोवेज ६ या ३०—अम्लरोग, सड़ी डकार आना, दस्तोंके कारण कमजोरी, पेटमें गड़गड़ाहट और वायु संचय जी मिचलाना इत्यादि।

सल्फ्यूरिक एसिड ६ या ३०—कलेजे में जलन, खट्टी डकार, खट्टी कै, बदन से खट्टी गन्ध निकलना, काले दस्त, हिचकी इत्यादि।

लाइकोपोडियम १२ या ३०—पेटमें वायु संचय, पेटमें किसी भी चीजका ठहर न सकना।

नेट्रमफस १२ X विचूर्ण—पेटमें दर्द, खट्टी डकार, खट्टी कै, डकार आने पर आराम मालूम होना इत्यादि।

अर्जेन्टम नाइट ६ या ३०—पुरानी बीमारी, डकार आना राक्षसी भूख इत्यादि।

फोस्फरस ३०—खट्टी डकार या मुँहमें पानी भर आना वृद्धोंको यह रोग होना इत्यादि।

सल्फर ३०—पुरानी बीमारी, कब्जियत सुबह के वक्त पतले दस्त, शिरमें जलन इत्यादि।

नक्सवोमिका ३०—भोजन के बाद पेटमें भार मालूम होना, पेट दबाने पर दर्द होना,कब्जियत,शराबी और अमिताचारियों को यह रोग होना इत्यादि।

रोबिनिया ३०—कै, तीती डकार, पेटमे जलन.कब्जियत इत्यादि लक्षणों में इसे बहुत दिनों तक सेवन करने से अच्छा लाभ होता है।

इनके अतिरिक्त मेङ्गेनम, मेग्नेशिया फस,केलीकार्ब आदि दवाओं से भी लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—नियमित समय में नहाना, खुली हवामें घूमना, और व्यायाम करना लाभदायक है। घी और तेलवाले पदार्थ, मिठाई और श्वेतसार वाले पदार्थ खाना मना है। भोजन के दो घंटे बाद कागजी नीबूका रस पीना लाभदायक है।

मिचली और कै।

(Nausea and Vomiting)

यह रोग दूसरे रोगों का एक लक्षण मात्र है। खराब चीजें खाना अधिक खाना, बदहजमी, गर्भावस्था, मस्तिष्क

आर्निका ३ या ६—पेट में किसी तरह की चोट लगने या अधिक परिश्रम करने के कारण खून की के हो तो इसे देना चाहिये।

चायना ६ या ३०—खून का रङ्ग काला, बहुत खून निकलना और उसके कारण रोगी का कमजोर हो जाना।

आर्सेनिक ६ या ३०—पेटमें जलन, पेटमें दर्द, कमजोरी, अस्थिरता, मूर्च्छाभाव, रोगी का बहुत सुस्त हो जाना, तेज बीमारी।

पल्सेटिला ३ या ६—स्त्रियों को ऋतु बन्द हो जाने के कारण यह रोग हो तो इसे देना चाहिये।

कार्बोवेज ६ या ३०—बहुत कमजोरी, मृत्युकाल कीसी अवस्था, बारंबार बेहोशी, हाथ पैर बरफ की तरह ठंडे, ठंढा पसीना, नाड़ी लुप्त प्राय, पेटका फूल जाना इत्यादि।

फोस्फरस ६ या ३०—लाल रंगका खून निकलना, होठ आदि का रक्त शून्य हो जाना, पेटमें जलन ठंढा पानी पीने से आराम मालूम होना।

इनके अतिरिक्त नक्सवोमिका, सिकेली, क्रोकस, बेलेडोना, फेरम, इरिजिरन और इरिखियम आदि दवाओं से भी लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—तेज़ बीमारी में घण्टे में दो तीन बार दवा देना चाहिये। मानसिक उत्तेजना, हिलना डोलना

कठिन चीज़ें खाना आदि मना है। पेट पर ठंडे पानी की पट्टी चढ़ाते रहना, बरफ के टुकड़े चूसना, और पूर्णरूप से विश्राम करना लाभदायक है। हलकी चीजें ठंढी करके खाने को देना चाहिये।

पेट में शूल ।

(Colic)

यह एक तरह का स्नायविक दर्द है, जो पेटमें होता है आसानी से हजम न होनेवाली चीजें, अधपकी रोटियाँ, तरकारी, घी-तेलकी पकी चीजें आदि खाना पेटमें सर्दी लगना, पेटमें मल इकट्ठा होना, गरम शरीर में बरफ आदि पीना, पेटमें वायुका संचित होना आदि इस रोगके प्रधान कारण है। शूल वेदना नाभी की जड़से शुरू होकर समूचे पेटमें फैल जाती है। वेदना बहुत ही कष्टदायक होती है, पर यह हमेशा बनी नहीं रहती। दर्द अचानक शुरु होता है, कुछ देर रहता है, बादको फिर शान्त हो जाता है। कुछ समय के बाद फिर शुरू होता है। दर्द के कारण रोगी पेटको हाथसे पकड़ लेता है, सामने की ओर झुक जाता है या जमीन पर पेटको दबाता है। जी मिचलाना, डकार आना, चेहरे पर ठंढा पसीना, कब्जियत, पेट फूलना इत्यादि लक्षण भी प्रकट होते हैं। बुखार नहीं रहता। दर्द

नक्सवोमिका ६ या ३०—अधिक भोजन या बदहजमी के कारण पेट फूलना, साथ ही पेटमें शूल, वारंवार दस्तका वेग मालूम होना. पर दस्तका न होना. कब्जियत, मूत्राशय में कतरने जैसा दर्द इत्यादि।

डायस्कोरिया ३ या ६—नाभी से शुरू होकर दर्दका समूचे पेट और शरीर में फैल जाना. साथ ही पेटका फूलना, पित्त और खायी हुई चीजों की कै. लेटने पर दर्दका बढ़ना. खड़े होने पर आराम मालूम होना इत्यादि।

बेलेडोना ३ या ६—तूफान की तरह अचानक दर्दका शुरू होना. और अचानक गायब हो जाना, कसकर पकड़ रखने या कुछ गड़ने जैसा दर्द. मल कठिन हो जानेके कारण दर्द, दवाने और घुटने तोड़कर सोने पर आराम मालूम होना. खड़े होने पर दर्दका बढ़ना. जी मिचलाना. छोटे बच्चे और बालकों को यह रोग होना इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—घी, तेलकी पकी चीजें खाने के कारण पेटमें शूल होने पर इसे देना चाहिये।

कार्बोवेज ६ या ३०—पेट में वायुसंचय और गड़-गड़ाहट, डकार आना, भोजन के बाद तकलीफ का बढ़ जाना इत्यादि लक्षणों में और लाइकोपोडियम से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

पित्त शूल ।

(Bilious Colic)

पाकाशय और आंतों में पित्त संचित होनेपर कभी कभी जो शूल वेदना होती है उसे पित्तशूल कहते हैं। पेटमे दर्द, साथ ही जी मिचलाना और कै, कै में पीले या हरे रंगके और खट्टे या कड़ुवे पित्त निकलना इत्यादि इस रोगके प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा ।

कोलोसिन्थ ३ या ६—पाकाशय में दर्द, कै मे हरे रंगके पित्त निकलना, मुंहमें तीता स्वाद इत्यादि।

डायस्कोरिया ३ या ६—हिलने डोलने से आराम मालूम होना, पित्तशूल, साथही पतले दस्त।

इपीकाक ३ या ६—जी मिचलाना और कै, पाकाशय में दर्द, कड़ुवे पदार्थ की कै इत्यादि।

केमोमिला ६ या १२—पाकाशय में आक्षेपिक वेदना, पित्तकी कै, चिड़चिड़ा स्वभाव, बच्चोंकी बीमारी।

नक्सवोमिका, ब्रायोनिया तथा शूलवेदना की अन्यान्य दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—खाली पेट रहना और खाली पेटमें दूध पीना मना है। हलकी और पुष्टिकर चीजें खाना चाहिये। मिठाई खाना हानिकारक है।

बार्बेरिस १ X—कल्केरिया से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

कार्डुयस मेरियेनस १ X—यकृत में दर्द मालूम होने पर इसे देना चाहिये।

चायना ३ X—रोगके समय कभी दर्दका शुरू होना और कभी बन्द हो जाना, बहुत कमजोरी इत्यादि।

अर्निका ३ या ६—शूलकी तकलीफ घट जाने पर भी तन्नाहट बनी रहे तो इसे देना चाहिये।

कोलिस्टेरिनम १ X या ३ X—पित्तपथरी के कारण शूलवेदना होने पर इससे भी आश्चर्यजनक लाभ होता है।

इनके अतिरिक्त कियोनेन्थस, हाइड्रेस्टिस, डायस्कोरिया, चेलीडोनियम, जेल्सीमियम, बेलेडोना, आर्सेनिक, मेग्नेशियाफस, एकोनाइट, मर्क्युरियस नक्सवोमिका और फोस्फरस आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—फ्लानेल से सेंकना, दर्द के समय गरम पानी पिलाना, रोगीको गरम पानी के टबमें बैठाना या गरम पुल्टिस चढ़ाना लाभदायक है। खुली हवामें घूमना और स्वास्थ्यके नियमों का पालन करना चाहिये। आसानी से हजम होनेवाली चीजें खाना चाहिये। रोगका दुबारा आक्रमण रोकने के लिये चायना चेलीडोनियम या कार्डुयस मेरियाना दीर्घकाल तक सेवन करना चाहिये।

कर अड़ाने, दबाने और सेंकने पर आराम मालूम होना इत्यादि।

आर्सेनिक ३ या ६—बहुत दर्द, दर्दके कारण रोगी का पागल सा हो जाना, ज्वालाकर वेदना, रात के समय दर्द।

बेलेडोना ३ या ६—काटने या कनकनाने जैसा दर्द, दर्द के कारण साँस रोककर रोगी का चुपचाप पड़े रहना, एकाएक दर्द का शुरू होना और एकायक गायब हो जाना।

कक्युलस ३ या ६—भोजन के समय और भोजन के बाद पेट में भयंकर अकड़न, ऐंठन और कतरने जैसा दर्द, पाकाशय में स्नायुशूल और श्वासकष्ट इत्यादि। कोलोसिन्थ से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

केमोमिला १२ या ३०—नक्सवोमिका से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

इनके अतिरिक्त एकोनाइट, मेग्नेशिया फस, इग्नेशिया, विस्मथ, ब्रायोनिया, फेरम, बेलीडोनियम, रोबिनिया, कार्ब-नाइ, वार्बेरिस, डायस्कोरिया, कार्बोवेज और पेट्रोलियम से भी लक्षणानुसार लाभ होता है। फलानेलसे पेट सेकने पर दर्द कम हो जाता है।

चिकित्सक को ध्यान रखना होता है। पुरुष और स्त्रियोंकी शारीरिक रचना, गठन, शक्ति, सहन शीलता इत्यादि में बड़ा अन्तर है। स्त्रियाँ पुरुषों की अपेक्षा अधिक कोमल और कम-जोर होती है, इसलिये थोड़ी दवासे ही उनके रोग आराम हो जाते है। स्त्रियोंकी चिकित्सा करते समय यह विशेष रूप से जान लेना चाहिये कि उन्हे नियमित रजस्राव होता है या नहीं? वे गर्भवती हैं या नही और उन्हें हिस्टीरिया या प्रदर की बीमारी तो नहीं है? पुरुषो के मामले मे यह जान लेना आवश्यक होता है कि वे वीर्य सम्बन्धी कोई रोगसे तो पीड़ित नहीं है अथवा उन्हे कभी सूजाक या गरमी की बीमारी तो नहीं हुई? आरंभ से ही यह सब बातें जाँच लेने पर रोग की चिकित्सा करने में बड़ा सुभीता होता है।

अवस्था-विचार।

चिकित्सा आरंभ करने के पहले रोगी की अवस्था या उम्र जान लेना भी आवश्यक है। रोगी के शरीर पर अनेक बार उसकी उम्र का भी प्रभाव पड़ता है। बाल्यावस्था में किसी भी बीमारी के साथ मस्तिष्क के स्नायुओ की उग्रता उत्पन्न हो सकती है। युवकोंकी बीमारीमे प्राय. उनका मस्तिष्क आक्रान्त होता है। वृद्धावस्थामे अन्यान्य बीमारियोंके साथ पेटकी गड़-बड़ी भी प्रायः मौजूद रहती है। इसके अतिरिक्त बीमारी एक होने पर भी अवस्थानुसार भिन्न-भिन्न रोगियो पर उसका

को एलुमेन ६ या ३० देना चाहिये। इससे लाभ न होने पर प्लाटिना ६ या ३० अथवा नक्सवोमिका ६ या ३० आजमाना चाहिये।

तोंद निकलना—अधिक खाने पीनेके कारण पाकाशय बेतरह बढ़ जाता है और इसके कारण तोंद निकल आता है। साधारण अवस्था में इससे कोई हानि नहीं होती, पर रोग बढ़ जाने पर कब्जियत और खट्टी कै आदि लक्षण प्रकट होकर शरीर के अन्यान्य यंत्र भी दूषित हो जाते है और यह रोग सांघातिक होजाता है। नक्सवोमिका ३ X ३०, सीपिया ३० हाइड्रेस्टिस १ X या ३ और स्ट्रिकनिया ३ विचूर्ण इस रोग की बढ़िया दवाएं है। आर्सेनिक क्रियोजोट, आर्जेनाइ, ब्रायोनिया कार्बोवेज और सल्फर आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

पाकाशय की शीतलता—जिस तरह अधिक खाने से [illegible]

हाइड्रोक्लोरिक एसिड थोड़े पानी के साथ पीने से भी काफी लाभ होता है।

सी सिकनेस–जहाज आदि पर चढ़ने से बहुत लोगों को कै होती है। इस बीमारी को सी सिकनेस कहते हैं। कक्युलस ३ या ६ इस रोग की प्रधान दवा है। शिर चकराता हो तो इसे ही देना चाहिये। कै के साथ कब्जियत या दस्त होने पर नक्सवोमिका ६ या ३०। कक्युलस से लाभ न होने पर क्रियोजोट ३ या ६ आजमाना चाहिये। पेट्रोलियम ६ इस रोग की प्रतिषेधक दवा मानी जाती है। नक्सवोमिका भी प्रतिषेधक है।

१९—तलपेट के रोग।

(Diseases of the Abdomen)

हमारे तलपेट में आँतें, मूत्र यंत्र, जननेन्द्रिय और मल द्वार आदि अङ्ग अवस्थित हैं। स्त्रियों के तलपेट में जरायु आदि प्रजनन अंग होते हैं। इस अध्याय में तलपेट के उन रोगों का इलाज हम अंकित करते हैं जिनका सम्बन्ध आँतें और मलद्वार से पाया जाता है। मूत्र यन्त्र और जननेन्द्रिय के रोग पृथक अध्यायों में अंकित किये जायंगे और स्त्रियों के प्रजनन अङ्ग की चिकित्सा इसी रोग के अध्याय में लिखी जायगी।

चिकित्सा ।

एकोनाइट ३ या ६—रोग की प्रारम्भिक अवस्था में तेज़ बुखार, बेचैनी, बहुत प्यास, चमड़ा सूखा, नाभी के चारों ओर कतरने जैसा दर्द, कब्जियत, सर्दी लगकर यह रोग होना इत्यादि ।

बेलेडोना ३ या ६—पेट में दर्द, पेट फूला हुआ, पतले दस्त, पेट में हाथ न लगा सकना, चेहरा और आँखें लाल, प्रलाप इत्यादि लक्षणों में, ख़ास कर जब दस्त आते हों तब इसे देना चाहिये ।

एन्टिमक्रूड ६ या ३०—पाकाशय की खराबी, जीभ पर सफेद लेप, पतला दस्त, पेट में तनाव और दर्द इत्यादि।

ब्रायोनिया ३ या ६—नाभी के चारों ओर दर्द, पेट फूला हुआ, आँत में सुई चुभोने जैसा दर्द, हिलने डोलने से दर्द का बढ़ना, बहुत कब्जियत, तेज़ प्यास इत्यादि ।

आर्सेनिक ६ या ३०—बहुत बेचैनी और घबड़ाहट, तेज प्यास लेकिन एक साथ अधिक पानी न पी सकना, शरीर में दाह, बदबूदार काले रंग के दस्त, बहुत कमज़ोरी, कठिन बीमारी ।

कोलोसिन्थ ३ या ६—पेट में बहुत दर्द, दर्द के कारण रोगी का आगे की ओर झुक जाना, पेट दबाने से आराम मालूम होना, आँव मिले पतले दस्त इत्यादि।

एपिस ६ या ३०—पेट में कतरने जैसा दर्द, स्पर्श बरदाश्त न होना, अधिक आँव गिरना, बड़बड़ाना।

अर्निका ६ या ३०—अनजान में दस्त और पेशाब, बहुत निद्रालुता, जीभ सूखी, पेट का फूलना, शरीर में नीले नीले दाग, चोट लगने के कारण यह रोग होना।

केन्थरिस ६ या ३०—बारंबार पेशाब का वेग मालूम होना और बूँद-बूँद पेशाब होना इत्यादि।

मर्क्युरियस ६ या ३०—पेट फूला हुआ, खून और आँव मिले दस्त पुरानी बीमारी में पीब होने का उपक्रम।

इथ्यूजा ३ या ६—छोटे बच्चे और बालकों को इनसे विशेष लाभ होता है। दूध हजम न होना, बहुत के होना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

लेकेसिस ६ या ३०—नाभी के आसपास दराने जैसा दर्द स्पर्श बरदाश्त न होना शूल दर्द और पेट का फूलना बदबूदार दस्त, सोने के बाद तकलीफ का बढ़ जाना।

पोडोफिलाम ६-तरह-तरह के अलग-अलग रंग के दस्त सुबह रोग का बढ़ना शरीर का रंग पीला पेट के फूलना इत्यादि।

या दस दिन में रोगी की मृत्यु हो जाती है। यदि इतने दिन वह बच जाता है, तो फिर प्रायः आराम हो जाता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६—ठंढ या, सरदी लगकर यह रोग होना, बुखार, प्यास, बेचैनी, मृत्युभय इत्यादि लक्षणों में और रोग की प्रारम्भिक अवस्था में इसे देना चाहिये।

बेलेडोना ३ या ६—तेज बुखार, तलपेट फूला हुआ, गरम, छूने से दर्द होना, एकायक दर्दका शुरू होना और एकायक गायब हो जाना, पेशाब बन्द, पित्तकी कै इत्यादि।

आर्सेनिक ३ या ६—बहुत सुस्ती, लगातार कै, पेट में जलन शूल,वेदना ठंढा पसीना इत्यादि।

कर्बो वेज ६ या ३०—हाथ पेर ठंढे बहुत सुस्ती, पतनावस्था के लक्षण इत्यादि।

आर्निका ३ या ६—गिरने या चोट लगने के कारण अथवा प्रसव के बाद यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

लाइकोपोडियम ३०—पेट में गड़गड़ाहट और वायु-सचय पेट का फूलना और निद्रालुता।

करने से लाभ होता है। कड़ी चीजें खानेको न देना चाहिये। बरफ के टुकड़े चूसने को दिये जा सकते हैं। साबूदाना या पानी में पकायी हुई बार्ली खाने को देना चाहिये।

कब्ज़ियत।

(Constipation)

पेटमें मल होने पर भी खुलासा दस्त न होनेको कब्जियत कहते है। अनियमित आहार या उपयुक्त अहारका अभाव, ठीक समय पर पाखाने न जाना, आँतोंकी क्रिया में गोलमाल, आलसी स्वभाव, एकान्तवास, देश भ्रमण, यकृतकी खराबी, बारंबार जुलाब लेना, अफीम गाँजा आदि मादक पदार्थोंका सेवन, रक्त स्वल्पता आदि अनेक कारणों से यह रोग होता है। यह रोग होने पर कभी दस्त बिलकुल ही नहीं होता, कभी मल सूखकर कड़ा हो जाता है और पाखाने जाने पर बहुत थोड़ा मल निकलता है, कभी बारम्बार दस्तका वेग मालूम होता है, पर दस्त नहीं होता अथवा बहुत कम होता है। कुछ दिनों तक यह रोग रहने पर मन निस्तेज हो जाता है, भूख बहुत कम लगती है और पेटमें दर्द आदि लक्षण प्रकट होते है।

कब्जियत होने पर जुलाब ले लेना बहुत आसान बात है, परन्तु होमियोपैथी के आचार्यों ने इसे बहुत ही घातक

जाड़ा मालूम होना, सूखा और कड़ा मल, पारी पारी से कब्जियत और पतले दस्त. बड़ा और कड़ा लेंड़ बड़े कष्ट से निकलना, दस्त का वेग न होना, प्यास. शिर दर्द डकार आना, यकृत को खराबी आदि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

ओपियम ६ या ३०–दस्त का नियमित वेग न होना अथवा वेग होने पर भी ऐसा मालूम होना मानो मलद्वार बन्द होगया है, कभी कभी तलपेट में भार मालूम होना, पाकाशय पर दबाव मुँह सूखा. प्यास, भूख न लगना, मल कठिन और गुठली जैसा बारंबार जुलाब लेने के कारण इस रोग का होना इत्यादि।

प्लेटिना १२ या ३०–बारंबार दस्तका वेग मालूम होना, लेकिन काँखने पर बहुत थोड़ा दस्त होना, पतला मल निकलने में भी तकलीफ, सफर के समय सफर के बाद कब्जियत इत्यादि।

लाइकोपोडियम ३०–पेट फूलना, पेट में वायुसंचय और गड़गड़ाहट, कब्जियत या बड़ी तकलीफ के साथ सूखा और कड़ा मल निकलना, भोजन के बाद तलपेटका फूलना, पेट में गरमी मालूम होना. मुँह में पानी भरना और डकार आना।

सल्फर ३०–स्वाभाविक कब्जियत, कड़ा और चक्का चक्का मल, सदा मल त्याग की इच्छा, पर मलका न निक-

एनाकार्डियम ३ या ६—पाखाने का वेग, लेकिन मल त्याग की चेष्टा करते ही इसका बन्द हो जाना ।

नाइट्रिक एसिड ३—प्रबल सूखी खाँसी के साथ कब्जियत हो तो इसे देना चाहिये ।

सीपिया ३०—जरायु दोषवाली अथवा गर्भवती स्त्रियों को यह रोग होना, मलद्वार में दर्द इत्यादि ।

सिलिका ३०—ऋतुमती स्त्रियों को कब्जियत, मल का थोड़ा निकलकर फिर मलद्वार में घुस जाना ।

इनके अतिरिक्त, एस्कुलस, एमनम्यूर, कल्केरिया कार्ब, कस्टिकम, बेलो डोनिअम कोलिन्सोनिया, ग्रेफाइटिस आयोडियम, मेग्नेशियाम्यूर, मर्क्युरियस, पोडोफिलाम, पल्सेटिला, रूटा, रेटानिया, सोरिनिया, सेलिनियम और सिरट्रम आदि दवाएँ भी लक्षणानुसार लाभ करती हैं ।

आवश्यक सूचना—पेट में मल सूख गया हो और दवा खाने पर भी बाहर न निकले तो मलद्वार में ग्लीसरीन की पिचकारी देने से मल बाहर निकल जाता है । दस्त आवे हो या न हो नियमित समय पर पाखाने जरूर जाना चाहिये । खुली हवा में घूमना, व्यायाम करना, ठंडे जल से स्नान करना, रात को सोते समय और सुबह उठने पर ठंडा पानी पीना आदि लाभदायक हैं । मांस या बहुत बारीक आटे की रोटी न खाना चाहिये । मोटे आटे की रोटी खाना छिलके समेत

कभी अधिक भूख साधारण बुखार, पसीना और कमजोरी आदि लक्षण भी दिखाई देते है। पेट में दर्द प्रायः नहीं होता। रोग बढ़ने पर मूर्च्छा के, शिर में चक्कर, हाथ पैर में अकड़न और हैजे को तरह हिमाङ्गावस्था आदि लक्षण भी उपस्थित होने हैं। दस्त होते होते रोगी कमजोर हो जाता है और खाट से लग जाता है कभी कभी यह रोग हैजे के रूपमे भी परिणत हो जाता है।

चिकित्सा

एकोनाइट ३ या ६—सरदी लगने या बहुत गरमी के बाद ठंढ लगने के कारण यह रोग होना, पेटमें बहुत दर्द, हरे रङ्गके पतले दस्त बेचैनी, शिरमें चक्कर, प्यास, जाडा मालूम होना, ज्वर भाव, हैजेके समय बीमारी के डरने अथवा किसी भी कारण से डरजाने पर यह रोग होना इत्यादि लक्षणों मे इसे देना चाहिए।

स्पिरिट कैम्फर—जाडा, कम्प, पाकस्थली में दर्द, हाथ पैर और चेहरा ठंढा, गरमी के दिनों में अथवा सरदी लगने के कारण यह रोग होना किसी भी कारण से एकाएक दस्तों का शुरू हो जाना।

सिनिनमआर्स ६ X—साधारण अतिसार की यह एक बढ़िया दवा है।

बेहोशी दस्त में बदबू, मटमैले रंगका मल, बहुत प्यास, चलने फिरने से आराम मालूम होना।

क्रोटन ६ या ३०—पतले पानी जैसे हरे या पीले रङ्गके दस्त, कुछ खाने या पीने पर रोगका बढ़ना, पिचकारी की तरह जोरके साथ मलका निकलना।

नक्सवोमिका ६ या ३०—मैले, हरे या काले रङ्गके दस्त, सुबह या पिछली रातमें दस्तोंका बढ़ना, बारंबार वेग होने पर भी खुलासा दस्त न होना, रात्रि जागरण खान पान का अत्याचार और शराबखोरी आदिके कारण यह रोग होना।

एलोज ६ या ३०—अनजान में दस्त, पेशाब या वायु निकलते समय अनजान में मलका निकल पड़ना, सुबह और खानेके बाद रोगका बढ़ना, मलके साथ गरम वायुका निकलना, पीले रङ्गके दस्त, पेटमें बोतल से पानी ढालने की तरह कलकल आवाज इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३०—बरफ, बहुत ठंडी चीज या फल मूल खानेके कारण यह रोग होना, कालापन लिये हुए हरे रंगके दस्त, पेटमें दर्द और जलन, चेहरा और आँखोंका बैठ जाना, बहुत कमजोरी, अस्थिरता, प्यास, थोड़ा थोड़ा पानी पीना, शरीर में दाह, पानी पीनेके बाद कै, इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

पल्सेटिला ६ या ३०—बारंबार दस्त का रंग-ढंग बदल जाना, मुँह का स्वाद तीता, कै या मिचली, डकार आना, तेल या घी की पकी हुई चीज़ें खाने के कारण यह रोग होना, पेट मे वायुसंचय, आँव या श्लेष्मा मिला दस्त, रात में रोग लक्षणों का बढ़ना।

रियुम ३ या ६—बच्चों को दाँत निकलते समय यह रोग होना, रोगीके मल और शरीरमें खट्टी गन्ध, पेटमें शूल, मल त्यागकी व्यर्थ चेष्टा इत्यादि।

थूजा ६ या ३०—पीले रङ्ग के पानी जैसे पतले दस्त, रक्त मिला चरबी या तेल जैसा दस्त, गड़गड़ाहट के साथ ज़ोरों से दस्त होना, टीका लगवाने के बाद बच्चों को यह रोग होना, प्रमेह रोगियों को यह रोग होना, पुरानी बीमारी, शीघ्रता के साथ रोगी का दुबले होते जाना इत्यादि।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—कभी छर्दि कभी अधिक भूख, कमजोरी और शीर्णता, चेहरा, रक्तहीन, पतला और चिकना दस्त, गण्डमाला धातु वाले बच्चों को यह रोग होना।

पोडोफिल्लाम ६ या ३०—बिना दर्द के दस्त, सफ़ेद या पीले रंग के फटे-फटे दस्त, सुबह अधिक दस्त होना पेट फूलना, पेट में कलकल आवाज़ बच्चों को दांत निकलने के समय यह रोग होना।

गुफर लूटिया ३ या ६—खट्टी गन्ध युक्त पीले रङ्ग के पानी जैसे दस्त, दस्त के बाद मलद्वार में जलन, पेट में वायु संचय, सुबह चार से लेकर सात बजे तक दस्तों का बढ़ना इत्यादि।

रिउमेक्स ३ या ६—सुबह खाकी रङ्ग के पतले दस्त, जोरों का वेग, बिछौने से उठते ही पाखाने की ओर दौड़ पड़ना।

एन्टिम क्रूड ६—जीभ पर सफेद लेप, डकार आना; मिचली, अरुचि, पानी जैसा पतला दस्त, पित्त मिला मल।

जिञ्जिबार ६—खराब पानी पीनेके कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

मर्क्युरियस कर ३ या ६—खून या पित्त मिला दस्त, पेट में दर्द, आँव मिले दस्त के साथ काँखना, दस्त हो जाने पर भी काँखना बन्द न होना, मिट्टी जैसा या पीला दस्त, सुस्ती।

विरेट्रम एल्बम ६ या ३०—पानी जैसा या चावल के धोवन जैसा अधिक दस्त, आवाज के साथ या बड़ी तेजी से मल का निकलना, अनजान में दस्त, पेट और पैरों में एंठन, कपाल पर ठंढा पसीना, तेज प्यास, समूचा शरीर ठंढा, शीघ्रता पूर्वक बढ़नेवाली अवसन्नता।

उंगलियों द्वारा मणिबन्धके पाससे ऊपरकी ओर धमनी नाड़ीमें नाड़ी देखनी चाहिये । नाड़ीकी गति अनेक प्रकारकी होती है जिसमेंसे तेज, मन्द, निर्जीव, शून्य, असमान, सपर्याय और पूर्ण यह सात गतियाँ मुख्य हैं।

गर्भस्थ भ्रूणकी नाड़ी प्रति मिनट १५० बार, तुरन्त के जन्मे हुए बच्चेकी १४० से १३० बार, एक वर्षका उम्रतक १३० से ११५ बार, दो वर्षकी उम्रमें ११५ से १०० बार, तीसरे वर्षमें १०० से ९० बार, तीनसे लेकर सातवें वर्ष तक ९० से ८५ बार, सातसे लेकर चौदहवें वर्ष तक ८५ से ८० बार, मध्यम अवस्थामें ७५ से लेकर ७० बार और वृद्धावस्थामें ६५ से लेकर ५५ बार तक नाड़ी चलती है। कभी-कभी इस गणना में अन्तर भी पड़ जाता है।

पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों की नाड़ी प्रति मिनट १०-१५ बार अधिक चलती है। बैठे रहने की अपेक्षा खड़े या लेटे रहने पर नाड़ी अधिक तेज चलती है। मानसिक उत्तेजना या कसरत आदि करने के समय भी साधारण अवस्था की अपेक्षा नाड़ी की गति तेज रहती है। बुखार या बुखारवाली सभी बीमारियों में नाड़ी तेज रहती है। नाड़ी धीमी होने से समझना चाहिये कि रोगी कमजोर हो गया है या उसके सिरमें रक्ताधिक्य हो गया है। नाड़ी सूत जैसी सूक्ष्म या लुप्तप्राय दिखायी दे तो समझना चाहिये कि रोगकी जीवनी-शक्ति घट रही है और वह मृत्युकी ओर अग्रसर हो रहा

एसिडफस ३ x या ६—बिना दर्द का पतला दस्त, अनजान में दस्त, दस्त के बाद सुस्ती और कमजोरी मालूम होना।

सल्फर ६ या ३०—पीले या मैले रङ्ग का बिना दर्द का दस्त, अजीर्ण का दस्त, सुबह रोग का बढ़ना, पुरानी बीमारी, मलद्वार में जख्म, दस्त के वेग से रोगी की नींद का खुल जाना और उसी समय उसका पाखाने की ओर दौड़ना इत्यादि।

अपाच्य चीजें खाने के कारण अतिसार होने पर—पल्सेटिला, नक्सवोमिका और इपीकाक।

फल या खट्टी चीजें खाने के कारण—आर्सेनिक,कोलोसिन्थ, चायना।

गरमी के दिनों में—विरेट्रम, चायना, आर्सेनिक, आयरिस, एसिड फस, कल्चीकम, पोडोफिलाम, पल्सेटिला, ब्रायोनिया।

वर्षा के दिनों में—डल्केमारा, रसटक्स।

जाड़े के दिनों में—स्पिरिट कैम्फर, एकोनाइट, ब्रायोनिया।

स्त्रियों को गर्भावस्था में—एन्टिम टार्ट, लाइकोपोडियम एन्टिमक्रूड, चायना।

बरफ या आइस्क्रीम खाने के कारण—आर्सेनिक, कार्वोवेज।

खराब पानी पीने के कारण—केमोमिला, आर्सेनिक, वेप्टोशिया, जिञ्जिवार।

वालकों को यह रोग होने पर—केमोमिला, कल्केरिया कार्व, सोरिनम।

खून मिले दस्त होने पर—मर्क्युरियस सल या मर्क्युरियस कर, इपीकाक।

पित्त मिले दस्त होने पर—पोडोफिल्लाम, आइरिस, क्रोटन।

आवश्यक सूचना—तेज बीमारी में हरबार दस्त के बाद या अवस्थानुसार एक से लेकर तीन से चार घंटे का अन्तर देकर दवा देनी चाहिये। पुरानी बीमारी में रोज एक या दो बार दवा देनी काफी है। रोगी को स्थिर सुला रखना चाहिये। नींद आजाय तो बढ़िया है। अधिक पानी पीना, गरम चीजें खाना या पीना, घी-तेल की पकी चीजें और साग सब्जी आदि खाना मना है। पथ्य पर बहुत ध्यान रखना चाहिये दूध न देना ही अच्छा है। रोगी बहुत ही कमजोर हो जाय तो बकरी का थोड़ा सा दूध दिया जा सकता है। नयी बीमारी में जब पानी जैसे दस्त होते हों तब कुछ भी खाने को न देना

है। पुराने रोगी भी अच्छे होते हैं लेकिन कमजोरी, नाड़ी तेज और बहुत क्षीण, चेहरा और आँखें बैठ जाना पेट फूलना, तेज बुखार, हिचकी, ठंढा पसीना, शोथ, खूनी दस्त और प्रलाप आदि बुरे लक्षण माने जाते हैं।

चिकित्सा ।

एकोनाइट ३ या ६—आँव और खून मिले दस्त लेकिन खून का अंश अधिक, बहुत बुखार, अस्थिरता, प्यास इत्यादि। रोग की प्रारम्भिक अवस्था में तेज बुखार होने पर तथा जिस समय दिन में गरमी रात में सरदी रहती हो उस समय यह रोग होने पर इसे ही देना चाहिये।

बेलेडोना ३ या ६—रोग की प्रथमावस्था में और बच्चे की बीमारी में इससे विशेष लाभ होता है। आँव और खून मिले हरे रंग के दस्त, दस्त के समय और दस्त के बाद पेट में दर्द, साँस रोक कर काँखने पर आराम मालूम होना, बुखार, प्यास, मलद्वार में जलन, बेहोशी, पेशाब में तकलीफ इत्यादि लक्षणों में और एकोनाइट से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

मर्क्युरियस कर ३ या ६—यह इस रोग की एक प्रधान दवा है। नाभी के चारों ओर खरोंचन, पेट में दर्द और काँखना, बारंबार थोड़ी-थोड़ी आँव, लाल रंग का

एलोज ३, ६ या ३०—नाभी के पास दर्द, पेट में गड़-गड़ाहट, आँव और खून मिले तथा अतिसार जैसे दस्त, पेशाब करते समय पाखाने का वेग, मलत्याग में जलन, शूल जैसा दर्द, सुबह अधिक दस्त होना इत्यादि।

नक्सवोमिका ३ या ३०—दस्त के पहले या दस्त के समय बहुत काँखना, लेकिन दस्त हो जाने पर काँखने आदि तकलीफों का कम हो जाना, खून के साथ गाँठ-गाँठ आँव का निकलना, बार-बार दस्त होने पर भी पेट का साफ न होना, थोड़ी-थोड़ी तायदाद में दस्त होना।

पोडोफिल्लाम ६ या ३०—मल में खून लिपटा हुआ या आँव मिले दस्त में खून की लकीर दिखायी देना, बहुत काँखना, पेट में शूल वेदना, काँच का बाहर निकलना, मिचली, हरी आँव या खून मिले दस्त, बच्चों की बीमारी।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—सफेद या पीली आभा लिये हुए अथवा हरे रंग के दस्त, शिर में पसीना, मलद्वार में तकलीफ, पैर बरफ जैसे ठंढे, गण्डमाला धातु।

इपीकाक ६ या ३०—घास जैसे हरे रंग के या काली आभा लिये लाल रंग के फेन भरे दस्त, पेट में दर्द, काँखना, पहले फेन भरे बदबूदार खूनी दस्त, बाद को खून मिली आँव निकलना, लगातार कै या मिचली, बहुत ग्लानि, कच्चे फल या खट्टी चीजें खाने के कारण यह रोग होना।

एन्सेटिला ६ या ३०—सफेद आँव मिले और खून की रेखा-युक्त दस्त, दस्तों का रूप-रंग हमेशा बदलते रहना, मुँह बे स्वाद, तीसरे पहर या शाम को दस्तों का बढ़ना इत्यादि। सफेद आँव की यह बढ़िया दवा है।

रसटक्स ६ या ३०—रात में अधिक दस्त, अनजान में दस्त, लाल या मांस के धोवन जैसे दस्त, कमजोरी, प्यास, बेचैनी, रोग कठिन होकर सान्निपातिक अवस्था का उपस्थित होना इत्यादि।

सल्फर ३०—पुरानी बीमारी में अथवा जब किसी चुनी हुई दवा से पूरा लाभ न होता हो तब इसे देने के बाद वह दवा देने से अधिक लाभ होता है।

कास्टिकम ६—बहुत काँखना, टुकड़े-टुकड़े खून मिला आँव निकलना, मलद्वार में तकलीफ,पेट का फूलना इत्यादि।

गेम्बोजिया ६—बदबूदार पतले दस्त, खाने-पीने के बाद रोग का बढ़ना, पेट दबा रखने पर दर्द कम मालूम होना, पेट ऐंठने के साथ एकायक दस्त का वेग होना इत्यादि।

फोस्फरस ६ या ३०—हरे रंग का गाँठ-गाँठ या खून मिला दस्त, किसी तरह का दर्द न होना, सुबह के वक्त या बायीं करवट लेटने पर रोग का बढ़ना, ठंढी चीजें पीने की तेज इच्छा, साबूदाने की तरह दानेदार दस्त।

केन्थरिस ३X या ६—बहुत तेज और व्यापक बीमारी, पेशाब में बहुत तकलीफ,पेशाब होने के बाद बहुत जलन,मांस के धोवन जैसे दस्त, पेट में तेज दर्द, पेट का फूलना, प्यास परंतु पानी पीने की इच्छा न होना, हिमाङ्ग।

लाइको पोडियम ३०—आँव के साथ पेट फूलने पर इसे देना चाहिये।

बेप्टीशिया ३ X—रोगी का बहुत सुस्त हो जाना,विकार या सान्निपातिक लक्षण।

एलस्टोनिया १ X या ३ X—मैलेरिया बुखार के साथ यह रोग होना, खून की कमी इत्यादि।

ट्रूम्बिडियम ६ या ३०—खाने पीने के बाद पेट में जोरों का दर्द, काँखने से दर्द का बढ़ना, रबड़ के रंग के पतले खून मिले दस्त, साथ ही काँखना इत्यादि लक्षणों में और मर्क्युरियसकाल के बाद इससे विशेष लाभ होता है।

हेमामेलिस ३ X—गाढ़ या कालिमा युक्त खून के साथ बहुत मल निकलना हो तो इसे देना चाहिये।

इनके अतिरिक्त फेरमफस, ट्रोम्बिडियम, कलम्बा, आर्जे-ण्टम नाइट्र [illegible], पल्सेटिला, चायना, आर्सेनिया, हाइड्रेस्टिस, मर्क्युरियस नाइट्रम पल्सम और जिंकम आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—तलपेट में फ्लानेल लपेट रखना अच्छा है । मलद्वार में तकलीफ हो तो नमक या चोकर की पोटली अथवा फ्लानेल से सेकना चाहिये । रोगी कमजोर हो तो उसे बिछौने पर ही पाखाना फिरवाना चाहिये । नयी बीमारी मे वार्ली. आरारोट, बकरी का दूध आदि चीजें देनी चाहिये । बुखार होने पर दूध देना मना है । कसेरू, कच्चा सिंघाड़ा, मठा, भूना हुआ बेल, अनार का रस, भात का मांड़ आदि चीजें सुपथ्य हैं । खाने-पीने मे बहुत सावधान रहना चाहिये । इसमे अत्याचार करने से यह रोग बढ़ जाता है ।

बवासीर ।

(Piles)

सदा बैठकर काम करना, घी तेल की पकी या मसालेवाली चीजें खाना, कब्जियत के कारण दस्तके समय जोर से काँखना, बारंबार जुलाब लेना, कामोत्तेजना, घोड़े की सवारी, शराबखोरी, रात्रि जागरण, पेट में अधिक वायु संचय, गर्भावस्था मे कसकर कपड़े पहनना, यकृत की खराबी, ठंढे पत्थर, भीगी घास या खूब मुलायम चीज़ पर बराबर बैठे रहना आदि कारणों से यह रोग होता है । यह रोग होने पर मलद्वार के भीतर और बाहर की नसें फूल जाती हैं और चमड़ा सख्त तथा कुञ्चित होकर मसे पैदा हो जाते हैं । यह देखने में अंगूर जैसे होते हैं । कभी यह मलद्वार के अन्दर होते हैं और

आवश्यक सूचना—तलपेट में फ्लानेल लपेट रखना अच्छा है। मलद्वार में तकलीफ हो तो नमक या चोकर की पोटली अथवा फ्लानेल से सेकना चाहिये। रोगी कमजोर हो तो उसे बिछौने पर ही पाखाना फिरवाना चाहिये। नयी बीमारी में बार्ली, आरारोट, बकरी का दूध आदि चीजें देनी चाहिये। बुखार होने पर दूध देना मना है। कसेरू, कच्चा सिघाड़ा, मठा, भूना हुआ बेल, अनार का रस, भात का मांड़ आदि चीजें सुपथ्य हैं। खाने-पीने में बहुत सावधान रहना चाहिये। इसमें अत्याचार करने से यह रोग बढ़ जाता है।

बवासीर।

(Piles)

सदा बैठकर काम करना, घी तेल की पकी या मसालेवाली चीजें खाना, कब्जियत के कारण दस्तके समय जोर से काँखना, बारंबार जुलाब लेना, कामोत्तेजना, घोड़े की सवारी, शराबखोरी, रात्रि जागरण, पेट में अधिक वायु संचय, गर्भावस्था में कसकर कपड़े पहनना, यकृत की खराबी, ठंढे पत्थर, भीगी घास या खूब मुलायम चीज़ पर बराबर बैठे रहना आदि कारणों से यह रोग होता है। यह रोग होने पर मलद्वार के भीतर और बाहर की नसें फूल जाती हैं और चमड़ा सख्त तथा कुञ्चित होकर मसे पैदा हो जाते हैं। यह देखने में अंगूर जैसे होते हैं। कभी यह मलद्वार के अन्दर होते हैं और

आवश्यक सूचना—तलपेट में फ्लानेल लपेट रखना अच्छा है। मलद्वार में तकलीफ हो तो नमक या चोकर की पोटली अथवा फ्लानेल से सेकना चाहिये। रोगी कमजोर हो तो उसे बिछौने पर ही पाखाना फिरवाना चाहिये। नयी बीमारी मे बार्ली, आरारोट, बकरी का दूध आदि चीजें देनी चाहिये। बुखार होने पर दूध देना मना है। कसेरू, कच्चा सिघाड़ा, मठा, भूना हुआ बेल, अनार का रस, भात का मांड़ आदि चीजे सुपथ्य हैं। खाने-पीने में बहुत सावधान रहना चाहिये। इसमे अत्याचार करने से यह रोग बढ़ जाता है।

बवासीर।

(Piles)

सदा बैठकर काम करना, घी तेल की पकी या मसालेवाली चीजें खाना, कब्जियत के कारण दस्तके समय जोर से काँखना, बारंबार जुलाब लेना, कामोत्तेजना, घोड़े की सवारी, शराब-खोरी, रात्रि जागरण, पेट में अधिक वायु संचय, गर्भावस्था मे कसकर कपड़े पहनना, यकृत की खराबी, ठंढे पत्थर, भीगी घास या खूब मुलायम चीज़ पर बराबर बैठे रहना आदि कारणों से यह रोग होता है। यह रोग होने पर मलद्वार के भीतर और बाहर की नसें फूल जाती हैं और चमड़ा सख्त तथा कुञ्चित होकर मसे पैदा हो जाते हैं। यह देखने में अंगूर जैसे होते हैं। कभी यह मलद्वार के अन्दर होते हैं और

केन्थरिस ३X या ६—बहुत तेज और व्यापक बीमारी, पेशाब में बहुत तकलीफ,पेशाब होने के बाद बहुत जलन,मांस के धोवन जैसे दस्त, पेट में तेज दर्द, पेट का फूलना, प्यास परंतु पानी पीने की इच्छा न होना, हिमाङ्ग।

लाइको पोडियम ३०—आँव के साथ पेट फूलने पर इसे देना चाहिये।

बेप्टीशिया ३ X—रोगी का बहुत सुस्त हो जाना,विकार या सान्निपातिक लक्षण।

एलस्टोनिया १ X या ३ X—मैलेरिया बुखार के साथ यह रोग होना, खून की कमी इत्यादि।

ट्रम्बिडियम ६ या ३०—खाने पीनेके बाद पेट में जोरों का दर्द, काँखने से दर्द का बढ़ना, रबड़ के रंग के पतले खून मिले दस्त, साथ ही काँपना इत्यादि लक्षणों में और मर्क्युरियमसल के बाद इससे विशेष लाभ होता है।

हेमामेलिस ३ X—गाढ़े या कालिमा युक्त खून के साथ बहुत मल निकलना हो तो इसे देना चाहिये।

इनके अतिरिक्त फेरमफास, थेम्बिडियम, प्लम्बम, आर्जेन्टम नाइट्रिकम, एल्युमेन, चायना, ब्रायोनिया, हाइड्रैस्टिस, लेकेसिस, विरेट्रम एल्बम और ज़िंकम आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

नक्सवोमिका १ X या ३०–आलसी और शराबियों की बीमारी, कब्जियत, दस्तका वेग होने पर भी दस्त का न होना, कभी-कभी पतला दस्त, दस्त के समय मसे का बाहर निकल आना. भोजन के बाद और पिछली रात से लेकर सुबह तक तकलीफ का बढ़ना, कभी खून निकलना, कभी न निकलना, मलद्वार में सुई चुभोने जैसा दर्द इत्यादि। इसके साथ पर्याय क्रम में सल्फर देने से अधिक लाभ होता है।

सल्फर ३०–पुरानी बीमारी, बहुत कब्जियत, मलद्वार में जलन और खुजली, बारंबार मलत्याग की इच्छा, पर दस्त न होना, मल में कभी-कभी खून दिखायी देना। सुबह सल्फर और शाम को नक्सवोमिका–इन दवाओं से अनेक रोगियों को असीम लाभ हुआ है।

आर्सेनिक ३ X या ६–पीठ में जोरों का दर्द, मसे का बाहर निकलना, कमजोरी या सुस्ती, गरमी मालूम होना, ऐसा मालूम होना मानों मसे के भीतर से गरम सुई निकल रही है, रक्तस्राव, अतिसार इत्यादि। आर्सेनिक से लाभ न होने पर हेमामेलिस देना चाहिये।

एकोनाइट ६ या ३०–मलद्वार में सुई चुभोने जैसा दर्द और रक्तस्राव, मसे में भयंकर तड़ाहट, अस्थिरता, प्यास, भूख न लगना, बुखार इत्यादि।

की साधारण या निर्मल गरमी मानी जाती है। थर्मामेटर मुँह में लगाने पर यही गरमी ९९ डिग्री ५ पाइन्ट तक दिखायी देती है।

युवकों की अपेक्षा बच्चों के शरीर की गरमी कुछ अधिक और वृद्धों के शरीर की गरमी कुछ कम हुआ करती है। नींद और विश्राम के समय भी शरीर की गरमी डेढ़ डिग्री कम मालूम होती है। शरीर की गरमी ढाई डिग्री तक बढ़ जाय तो उतनी चिन्ता न करनी चाहिये, जितनी एक डिग्री घट जाने पर। प्रति दिन शरीर की गरमी स्वभावतः ही १.८ (१ डिग्री ८ पाइन्ट) से लेकर १.३ (एक डिग्री ३ पाइन्ट) तक बढ़ सकती है। यदि शरीर की गरमी ९७.३ तक घट जाय या ९९.५ तक बढ़ जाय तो वह साधारण ही मानी जाती है। इससे अधिक घटने या बढ़ने पर समझना चाहिये, कि कोई रोग हुआ है। छोटी उम्र के बच्चों की गरमी का घट जाना अधिक चिन्ता का विषय समझना चाहिये।

शरीर की गरमी १०० से १०१ डिग्री तक हो जाने पर साधारण बुखार या हरारत, १०२ तक धीमा बुखार १०३ होने पर तेज बुखार और १०४ या १०५ डिग्री हो जाने पर सांघातिक या खतरनाक अवस्था समझनी चाहिये। १०७ से ११० डिग्री हो जाने पर समझना चाहिये कि रोगी की मृत्यु अवश्य और शीघ्र ही होगी।

रेटानहिया ३ या ६–दस्तके वाद वहुत देर तक मलद्वार में जलन, पुरानो वीमारी, कब्जियत, ववासीर से काले रङ्ग का थक्का थक्का खून निकलना, शाम के वक्त दस्त, रात मे तकलीफ का वढ़ना इत्यादि।

एल्युमिना ६ या ३०–वहुत कब्जियत, विना काँखे पतले मल का भी वाहर न निकलना, मलद्वार से जमे हुए खून की गाँठ निकलना, पतले कठिन मल, वादको पतला मल और खून निकलना, मलद्वार में दर्द और खुजली।

अर्निका ६ या ३०–घोड़े की सवारी के कारण यह रोग होना, मल पतला और फीते की तरह।

वेलेडोना ६ या ३०—वहुत प्रदाह, रक्तस्राव और दर्द, लाल रङ्गका थोड़ा पेशाव, शिर में रक्ताधिक्य।

कार्वोवेज ६ या ३०–मलद्वार से गोंद की तरह चिकना पदार्थ निकलना, उसके कारण जलन, वदहजमी, पेट का फूलना. नाक से रक्तस्राव, कमजोरी इत्यादि।

·कस्टिकम ६ या ३०–वहुत कब्जियत, चेष्टा करने पर भी दस्त का न होना, भगन्दर, मसा फूला हुआ और उसमें जलन।

इरिजिरन ३ या ६–खूनी ववासीर, मलद्वार के चारों ओर वहुत जलन, मल कठिन और रक्त मिश्रित।

इग्नेशिया ६ या ३०—मल त्याग के एक या दो घंटे बाद मलद्वार में पैंठन, बहुत काँखना, काँच निकलना इत्यादि।

मर्क्युरियस ६ या ३०—बड़ा मसा और उससे रक्तस्राव होना, मसे का पक जाना, पेशाब के बाद मूत्र-स्थली से रक्तस्राव।

फोस्फरस ६ या ३०—मल त्याग के समय धार बाँध कर खून का निकलना, मलद्वार में जखम, उससे खून और पीब निकलना।

खूनी ववासीर में—एकोनाइट, सल्फर, हेमामेलिस, इस्क्युलस, एलोज, चायना।

बादी ववासीर में—एकोनाइट, केप्सीकम, नक्सवोमिका सल्फर।

पुरानी बीमारी में—सल्फर, आर्सेनिक, फेरम, नाइट्रिक एसिड, हिपर सल्फर,।

कब्जियत के कारण—इस्क्युलस, नक्सवोमिका, सल्फर कोलिन्सोनिया, कार्बोवेज।

बवासीर से आँव निकलने पर—मर्क्युरियस, एकोनाइट

रोगी बहुत कमजोर होजाने पर—आर्सेनिक, फेरम, कार्बोवेज, एसिडफस या चायना।

आवश्यक सूचना—बहुत दर्द हो तो गरम पानी या पोटली से सेंकना चाहिये। खुजली होने पर वेसलिन में सुहागे का चूरा मिलाकर लगाना चाहिये। बहुत जलन और तकलीफ होने पर इस्क्युलस का मलहम व्यवहार करना चाहिये। बहुत खून बहता हो तो एक छटॉक पानी में १५ बूंद हेमामेलिस मदरटिंचर मिलाकर उसकी पट्टी चढ़ाना चाहिये। सभी तरह के उत्तेजक और गरम पदार्थ, मांस, लाल मिर्च, गरम मसाला, आदि खाना मना है। पपीता, अमरूद, आम, नारंगी, दूध, मक्खन आदि चीजें सुपथ्य हैं। भिगोया हुआ कच्चा चना खाने से कब्जियत दूर होती है। दही के साथ सरसों या तीसी की पुल्टिस तैयार कर दिन में चार पाँच बार गरम गरम मलद्वार में चढ़ाने से तकलीफ बहुत कम हो जाती है। कुरसी पर बैठ कर गरम पानी का वफारा लेना भी लाभदायक है। घोड़े की सवारी, मल-मूत्र का वेग रोकना, इन्द्रिय-सेवा, बहुत अधिक या बहुत कम परिश्रम करना और बहुत मुलायम बिछौने में सोना हानिकारक है।

कृमि (Worms)

मनुष्य के पेट में थोड़े बहुत कृमि सदा ही मौजूद रहते हैं, लेकिन किसी किसी के शरीर में खान पान के दोष से इनकी संख्या बहुत अधिक बढ़ जाती है और उस अवस्था

ज्वर भाव, शरीर दुबला, दाँत किड़मिड़ाना, चिड़चिड़ा स्वभाव, नाक के अगले भाग और मलद्वार में खुजली, मुँह में पानी भर आना, पेट में दर्द मिचली या कै, भूख बिलकुल ही न लगना या बहुत अधिक लगना, चेहरा मलीन, नींद से चौंक पड़ना पतले दस्त आदि इस रोग के साधारण लक्षण हैं। सूत जैसे छोटे कृमि में नाक और मलद्वार का खुजलाना भूख कम या अधिक लगना, नींद से चौंकना, इत्यादि लक्षणों की प्रधानता रहती है। केंचुवा जाति के कृमि में पेट में दर्द, दाँत किड़मिड़ाना, जी मिचलाना, मुँह में पानी भरना, चेहरा मलीन, आलस, आँखों के नीचे काले दाग, पेट कड़ा और गरम, चेहरा पीला और मिला दस्त, कभी बहुत भूख कभी अरुचि, साँस में बदबू, बेहोशी, पेशाब गदला इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। फीता जातीय कृमि के लक्षण भी उपरोक्त कृमि के समान होते हैं।

अधिक परिमाण में मिठाई खाना, शरीर का अच्छी तरह परिपोषण न होना, खराब पानी पीना, गुड़, केला, नारियल, पकवान, साग सब्जी और खटाई खाना आदि इस रोग के प्रधान कारण है। बच्चों को यह रोग अधिक होता है। पेट में कृमि होने पर उन्हें बाहर निकाल देना अच्छा है। बाहर न निकलने पर भी यदि रोग लक्षण घट जाते हैं तो रोगी को विशेष तकलीफ नहीं होती।

साइना (सिना) ६, ३० या २००—यह इस रोग की प्रधान और उत्कृष्ट दवा है। छोटे और बड़े दोनों तरह के कृमि में इससे लाभ होता है। भूख न लगना, जी मिचलाना, कब्जियत, या पतले दस्त, नाक खुजलाना, नाकसे खून गिरना, आँख के तारे का बढ़ना, नींद में दाँत किड़मिड़ाना, मुँह में पानी भरना, सोते में बोलना, अच्छी तरह नींद न आना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। पहले निम्नक्रम, और निम्नक्रम से लाभ न हो तो उच्चक्रम की दवा देनी चाहिये।

सेन्टोनाइन ३ x या २००—केचुआ जैसे कृमि में इस दवा से विशेष लाभ होता है। छोटे कृमि में भी फायदा करती है। एलोपैथिक सेन्टोनाइन एक या दो ग्रेन दिया जाता है।

टयुक्रियम ३ x या ३०—छोटे कृमि की यह भी बढ़िया दवा है। मलद्वार में खुजली, नाक खुजलाना, मलद्वार से कृमि का बाहर निकलना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

सल्फर ३०--कृमि के कारण पेट में शूल वेदना होने अथवा चुनी हुई दवासे पूरा लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

स्टेनम ६ या ३०—साइना से लाभ न होने पर इसे आजमाना चाहिये।

स्पाइजिलिया ३ या ६—छोटे कृमिमें यह दवा भी फ़ायदा करती है।

काँच निकलना।

(Prolapsus Ani)

यह रोग होने पर दस्तके समय मलद्वार से सरलान्त्र बाहर निकल आती है। बच्चे और बूढ़ोको यह रोग अधिक होता है। बहुत दिनोंतक आँव या अतिसारकी बीमारी होनेके कारण जोर लगा लगाकर मल त्याग करना, बवासीर या कब्जियतकी बीमारी होना, कमजोरी इत्यादि इस रोगके प्रधान कारण माने जाते हैं।

चिकित्सा।

नक्सवोमिका ६ या ३०—जिन्हें हमेशा कब्जियत की शिकायत रहती है उन्हें और बच्चोंको इससे विशेष लाभ होता है।

पोडोफिलाम ६ या ३०—सुबह पतले दस्त, दस्तके समय या दस्तके बाद काँचका निकलना, काँखना पटपटार दस्त।

मर्क्युरियस वाइवस ३—काँच निकलने के साथ रक्त और पीले रङ्गका कफ निकलना अतिसार मलत्यागके समय बहुत काँखना और जोर लगाना।

कल्केरिया कार्ब ३—शिशु दाँत निकलनेके समय काँचका निकलना, मलत्यागके समय मलद्वारमें जलन और दर्द।। बच्चे और गण्डमाला धातुवाले लोगोंकी दवा है।

मर्क्युरियस सल ६—बेलेडोना से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये ।

हिपरसल्फर ६ या ३०—फोड़ेमें पीब होनेकी तैयारी दिखायी दे तो इसे देना चाहिये ।

साइलीसिया ३०—ज़ख्म से बहुत पीब निकलता हो या नासूर हो गया हो तो इसे देना चाहिये ।

फोस्फरस ६—दर्द न होना, साधारण पीब बहना, क्षय रोगकी आशंका, शारीरिक क्षीणता इत्यादि । इन्हीं लक्षणों में कल्केरिया फास भी दिया जाता है ।

कस्टिकम ६ या ३०—मलद्वार में एकायक भयंकर दर्द स्पर्श बरदाश्त न होना, मलद्वारमें खुजली इत्यादि लक्षणों में तथा किसी दूसरी दवासे लाभ न होने पर इसे देना चाहिये ।

थूजा ३० या २००—भगन्दरके साथ मलद्वार में गोभी के फूल जैसे मसे, मसेके चारों ओर दर्द इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये ।

इनके अतिरिक्त चायना, कल्केरिया कार्ब, फ्लोरिक एसिड, कल्केरिया फ्लोर नक्सवोमिका, नाइट्रिक एसिड, ग्रेफाइटिस इस्क्युलस, एलोज, कार्बोरिस और स्टाफिसेग्रिया आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है ।

आवश्यक सूचना—हैमेमेलिस मदर्टिंचर का बाह्य प्रयोग करने से लाभ होता है । मांस मछली खाना मना है पुष्टिकर चीजें खानी चाहिये ।

आर्सेनिक ३ या ६–बहुत दर्द अथवा रक्तस्राव के लक्षण में इसे देना चाहिये।

आवश्यक सूचना–केलेण्डुला, हेमामेलिस या इस्क्युलसका मलहम प्रयोग करना चाहिये। पाखाने जाते समय मलद्वार में घी या तेल लगा लेने से मल आसानी से निकल जाता है। कब्जियत दूर करने के लिये गरम पानी की पिचकारी लेनी चाहिये और फल मूल अधिक तायदाद में खाना चाहिये।

मलद्वार में खुजली।

(Pruritus Ani)

पेट में मल संचय, एकायक किसी चर्मरोग का स्राव रुक जाना, रजोरोध, बवासीर, कृमि और अफीम आदि के सेवन के कारण मलद्वार में खुजली होती है।

चिकित्सा।

रेडियम ब्रोमेटम ३०–प्रति सप्ताह एकबार सेवन करने से काफी लाभ होता है।

इससे लाभ न हो तो सल्फर, लाइकोपोडियम पेट्रोलियम, आर्सेनिक और नेट्रमम्यूर आज़माना चाहिये। रोग के मूल कारण पर ध्यान रखकर दवा चुनने से विशेष लाभ हो सकता है। बोरेक्स कार्बोलिक एसिड, मर्करी. कैलेण्डुला,

कार्बोलिक एसिड ३ या ६–पेट मे वायु संचय, साथ ही बहुत डकारें आना।

लाइकोपोडियम ६ या ३०–पेट में वायु संचय के साथ कब्जियत होने पर इसे देना चाहिये।

टेरीबिन्थीना ६–बुखार और मदाह के कारण पेट फूले तो इसे देना चाहिये।

एसाफिटीडा ६–स्त्रियो को हिस्टीरिया रोग के साथ पेट फूलने की शिकायत हो तो इसे देना चाहिये।

रेफेनस ६–पेट फूला हुआ साथ ही कड़ा भी हो तो इसे आज़माना चाहिये।

सिना और कोलिन्सोनिया से भी इन रोगों में काफी लाभ होता है।

जलोदर।

(Ascites)

पेट के शोथ को जलोदर कहते हैं। वास्तव में यह स्वयं कोई रोग नहीं प्रायः हृदय, यकृत. पिलही और मूत्रग्रन्थिकी बीमारो के कारण ही यह रोग होता है। यह रोग होने पर पेट की आवरक झिल्ली या पेरिटोनियम में जल संचित होता है। इससे रोगी का पेट फूल जाता है। लेटने पर पेट के दोनों पार्श्व. खड़े होने पर पेट का निचला हिस्सा अधिक

अधिक पानी न पीना. श्वासकष्ट बेचैनी, घबड़ाहट, शरीर में जलन. रात मे तकलीफ के कारण नींद से उठ बैठना, जलोदर के साथ हृदय की बीमारी।

चायना ६ या ३०—रसरक्त का बहुत क्षय या यकृत और पिलही की बीमारी के कारण यह रोग हो तो इसे देना चाहिये।

डिजिटेलिस ६ या ३०—पेशाब में बहुत तकलीफ चेहरा बहुत फीका, ठंढा पसीना, शरीर फूला हुआ, हृदय की बीमारी शोथवाले स्थान को दबाने से वहाँ गढ़ा हो जाना इत्यादि।

ब्रायोनिया ६ या ३०--शिर में रक्ताधिक्य, नींद से उठने पर शिर का चकराना, हिलने डोलने से श्वास-कष्ट, बहुत प्यास, थोड़ा पेशाब में जलन बहुत कब्जियत।

लेकेसिस ६ या ३०—यकृत, पिलही और हृदय की बीमारी के साथ यह रोग होना, बुखार, काले रंग का थोड़ा पेशाब. नींद के बाद तकलीफ का बढ़ना।

फ्लोरिक एसिड ३ या ६—शराबियों को यकृत की बीमारी होकर यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

लाइकोपोडियम १२ या ३०—ऊपरी अंग सूखे हुए और निचले अंगों में शोथ, थोड़ा पेशाब होना और उसमें

एपेन्डिसाइटिस ।

(Appendicitis)

पेट में दाहिनी ओर उपाङ्ग नामक एक नाली है। इसका एक मुँह खुला और दूसरा बन्द रहता है, खुले मुँह से यदि कोई पदार्थ इस नाली में चला जाता है, तो वह फिर बाहर नहीं निकल सकता। साधारणतः इसी कारण से इस नाली में प्रदाह होता है। यही उपाङ्ग या एपेन्डिस प्रदाह अथवा एपेन्डिसाइटिस कहलाता है। एक प्रकारके जीवाणुद्वारा आँत [illegible] उत्तेजित होना, अधिक आहार, पेट में मल की गाँठे [illegible] कब्जियत, कृमि, जल्दी-जल्दी खाकर आफिस दौड़ना [illegible] या मोटर पर चढ़कर बहुत घूमना आदि [illegible] रोग हो सकता है।

दाहिनी कोख में दर्द, जी मिचलाना [illegible] रोग के प्रधान लक्षण हैं। इनके अतिरिक्त [illegible] दर्द, रोशनी बरदाश्त न होना, जीभ मैली [illegible] पेट से वायु निकलना, पैर मोड़ [illegible] एक सौ से लेकर एक सौ तीन [illegible] यकृत और पिलही का बढ़ जाना [illegible] लक्षण भी प्रकट होते हैं। [illegible] है और धीरे-धीरे बढ़ता जाता है [illegible] सप्ताह तक रोगी [illegible]

की ओर पकड़ कर नीचे की ओर झटकने से वह नीचे उतर जाता है। लगाने के पहले सदा इसी तरह पारे को ६८ डिग्री के नीचे उतार देना चाहिये।

श्वास प्रश्वास।

श्वास लेना और छोड़ना शरीर की एक आवश्यक और स्वाभाविक क्रिया है, इसलिये नीरोग अवस्था में यह क्रिया विना किसी कष्ट और आवाज के सहज में ही हुआ करती है। रोग की हालत में इसमें कई तरह के दोष पैदा हो जाते हैं। पूरी उम्र के स्वस्थ मनुष्य १ मिनट में १६ वार साँस लेते और १५ वार छोड़ते हैं। १ वर्ष के वच्चे प्रति मिनट ३४-३५ वार, दो वर्ष के वच्चे २५-२६ वार और १५ वर्ष के वच्चे १८ वार, साँस लेते और छोड़ते हैं।

रोग की हालत में श्वास प्रश्वास की गति ६० से लेकर ८० वार तक वढ़ जाती है या ८ से लेकर १० वार तक घट जाती है। अपरिमित आहार, व्यायाम आदि अंग चलाना, मानसिक उत्तेजना, अवसन्नता और आहार पचने के समय श्वास की गति कुछ वढ़ जाती है। मूर्च्छा, क्षय तथा ज्वर आदि रोगों के समय भी साँस तेज चलने लगती है। स्वस्थ अवस्था में साँस की गति का धीरा होना अच्छा लक्षण है। ठंढी और तेज साँस मृत्यु सूचक मानी जाती है। कमजोरी में भी श्वास की गति कम हो जाती है।

हिपर सल्फर ६ या ३०—पेटमें वहुत दर्द, और सूजन पैर मोड़े रहना, वारंवार दस्त और पेशाव की इच्छा, पीव होने के लक्षण।

मर्क्युरियस ६ या ३०—दाहिनी कोख में दर्द, और फूलन, वह स्थान गरम, लाल और कड़ा, छूने से दर्द मालूम होना, वहुत प्यास, कब्जियत, काँखने पर आँव जैसा मल निकलना, वहुत पसीना इत्यादि।

रसटक्स ६ या ३०—दाहिनी ओर पेट फूला हुआ और कठिन, वैठने या दाहिना पैर फैलाने पर वहुत दर्द, वेचैनी, हाथ पैर में दर्द, वायाँ करवट न लेट सकना, हिलने डोलने से आराम।

लेकेसिस ६ या ३०—पेट छूनेसे वहुत दर्द मालूम होना, दाहिनी कोख फूली हुई, कमर में अकड़न, कब्जियत, थोड़ा पेशाव, पेशाव में लाल तली जमना, मूत्र कष्ट, चित होकर जाँघें पेट की ओर मोड़कर सोना, शाम को ३ वजे वुखार का वढ़ना, नींद के वाद रोग लक्षणों का वढ़ना, साधारण वुखार के साथ कै इत्यादि।

अर्निका ६—चोट लगने के कारण यह रोग होना, वुखार, शरीर में दर्द कै और पसीना।

आर्सेनिक ६ या ३०—वहुत सुस्ती और वेचैनी, उत्कंठा, वहुत प्यास लेकिन एक साथ अधिक पानी न पीना, जीभ लाल।

असावधानी के कारण रोग बढ़ जाय अथवा दवाओं से पूरा लाभ न हो तो चीरा लगवाया जा सकता है।

१५—मूत्रयन्त्र के रोग

गुर्दा या मूत्रग्रन्थि प्रदाह

(Nephritis)

कमर के पास मेरुदण्ड के दोनों ओर दो ग्रन्थियाँ हैं, जो पेशाब उत्पन्न करने का काम करती हैं। इन ग्रन्थियों को अंग्रेजी में किडनी (Kidney) और देशी भाषाओं में मूत्र-ग्रन्थि, मूत्रकोष, मूत्रपिण्ड, वृक्कक या गुर्दा कहते हैं। सर्दी या ठंढ लगना, पानी में भीगना, मूत्रकारक उत्तेजक दवाएँ खाना, शराब पीना, कठिन परिश्रम करना चोट लगना, रात में जागना इत्यादि कारणों से इन ग्रन्थियों में प्रदाह पैदा होता है।

मूत्रग्रन्थियों में प्रदाह होने पर बहुत जाड़ा लगकर बुखार आना एक या दोनों मूत्र ग्रन्थियों में दर्द, जलन और गरमी मालूम होना, मूत्रस्थली पर्यन्त दर्द का बढ़ना, बारम्बार पेशाब का वेग लेकिन बहुत कष्ट के साथ थोड़ा थोड़ा पेशाब होना खून की तरह लाल पेशाब होना, इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। साधारणतः बायाँ मूत्रकोष ही प्रदाहित होता है।

निकलना, वहुत बुखार, इत्यादि लक्षणों में इससे लाभ होता है यह इस रोग की एक प्रधान दवा है।

आर्सेनिक ६ या ३०—काले या मैले रंग का एल्बुमेन मिला थोड़ा पेशाब, वहुत अस्थिरता, निद्राहीनता, मृत्युभय, प्यास, चेहरे पर सूजन इत्यादि।

फोस्फरस ६ या ३०—दुवले और कमज़ोर रोगियों को तथा गुर्दे की बीमारी के साथ न्युमोनिया होने पर इसे देना चाहिये।

एपिस ६ या ३०—हाथ पैर के पंजे और चेहरे पर सूजन, गुर्दे में तनाव, बारंबार पेशाब लगना, जोर लगाने पर तकलीफ के साथ थोड़ा पेशाब होना, कभी अण्डलाल मिश्रित और कभी दूध जैसा सफेद पेशाब।

बेलेडोना ३ या ६—गुर्दे से लेकर मूत्राधार तक चिलक मारने जैसा दर्द, पेशाब थोड़ा, पेशाब में जलन, लाल रंग का पेशाब और उसमें सफेद तली जमना।

टेरिबिन्थीना ३ या ६—दाहिनी गुर्दे से लेकर पट्ठे तक जलन, ऐसा मालूम होना मानो किसी ने कस कर पकड़ रक्खा है, पेशाब में काली तली जमना, अण्ड लाल और कभी कभी खून मिला पेशाब।

मर्क्युरियसकर ६ या ३०—पेशाब के साथ काले सूत या मांस जैसा पदार्थ निकलना और चेहरे पर शोथ होना।

सल्फर ३०—पुरानी वीमारी में तथा अन्यान्य दवाओं से लाभ न होने पर इसे आजमाना चाहिये ।

ब्रायोनिया ६ या ३०—गाढ़ा गाढ़ा धुमैले रंग का थोड़ा पेशाव, छाती में दर्द, दमे की तरह श्वासकष्ट, हिलने डोलनेसे तकलीफ का वढ़ना ।

कल्केरिया कार्व ६ या ३०—चेचक या दानेवाली कोई वीमारी होनेके कारण यह रोग होना, रोगी वहुत कमजोर, अल्प परिश्रम में ही हाँफने लगना इत्यादि ।

लेकेसिस ६ या ३०—डिफ्थोरिया या लाल ज्वर के वाद यह रोग होना, शरावियों को वीमारी, पेशाव गँदला या काला, वायें पैर में शोथ इत्यादि ।

कल्चीकम ६ या ३०—पेशाव खून मिला और स्याही को तरह काला, सीधे होकर खड़े न हो सकना, दर्द के कारण पॅर सिकोड़े रहना इत्यादि ।

रसटक्स या डाल्केमारा ६—पानी में भीगने के कारण यह रोग होनेपर इन दवाओंको आजमाना चाहिये ।

नक्सवोमिका ३ X या ६—शरावियो और मन्दाग्नि के रोगियों को इस दवा से विशेष लाभ होता है ।

आवश्यक सूचना—मूत्र ग्रन्थियोपर सॅक देनेसे तकलीफ घट जाती है। सरदी से वचना चाहिये। हलका और पतला

का पेशाव, पेशाव में जब तक कफ, पीब या खूनके छींटे
लायी देना, मूत्रस्थली और तलपेटका कुछ फूल उठना,
त्याग करने में बहुत कष्ट इत्यादि इस रोग के प्रधान
लक्षण है। रोग पुराना होने पर दर्द घट जाता है और गंदला
शाब होता है। पेशावमें कफ या श्लेष्मा जम जाता है।
र्दके प्रदाहमें दर्द नीचेकी ओर मूत्रस्थली तक फैलता है।
मूत्रस्थली प्रदाहमें दर्द, ऊपरकी ओर कमर तक फैलता
है। यह रोग प्रायः आराम हो जाता है। रोग कठिन
होने पर मूत्रस्थली बढ़ जाती है और रोगीकी अवस्था
सांघातिक हो जाती है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६—मूत्र ग्रन्थि और मूत्रस्थली में, दर्द
बारंबार पेशाब लगना, थोड़ा या बूँद-बूँद पेशाब होना,
मूत्रस्थली में जलन, बुखार, प्यास, अस्थिरता, इत्यादि लक्षणों
में इसे देना चाहिये। इसके साथ पर्यायक्रम में केन्थरिस देने
से विशेष लाभ होता है।

बेलेडोना ३ या ६—पेशाब थोड़ा, गरम और लाल,
कभी-कभी उसके साथ खूनका निकलना, बड़े कष्टसे, बूँद-बूँद
पेशाब होना, बुखार, स्पर्श बरदाश्त न होना इत्यादि लक्षणोंमें
और एकोनाइट से लाभ न होनेपर इसे देना चाहिये।

दर्द, जखम, पेशाब करते समय ज़ोरोंकी जलन खून या पीब निकलना आदि इस रोगके प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा।

अर्निका ३ X–चोट लगने के कारण यह रोग होने पर इसका सेवन करना चाहिये। साथ ही अर्निका, मदर-टिञ्चर दसगुने पानी में मिलाकर जल पट्टी चढ़ाने से बहुत लाभ होता है।

एकोनाइट ३ या ६–प्रदाह के साथ बुखार, दर्द, प्यास, बेचैनी आदि लक्षण मौजूद होने पर इसे देना चाहिये।

बेलेडोना ६–बुखार के साथ प्रदाह, टपक जैसा दर्द इत्यादि।

केन्थरिस ३ या ६—पेशाब करते समय ज़ोरों की जलन होती हो तो इसे देना चाहिये।

जेल्सीमियम ३ X–यह भी इस रोग की एक लाभदायक औषधि है।

आवश्यक सूचना–चोट आदि लगनेके कारण मूत्रनाली में जो प्रदाह होता है, वह आसानी से आराम हो जाता है। सूजाक के कारण जो प्रदाह होता है, वह कठिन होता है। उसके लिये सूजाक की दवाओं में से लक्षणानुसार दवा चुननी चाहिये।

रंगका पेशाब, पेशाब में जब तक कफ, पीब या खूनके छींटे दिखायी देना, मूत्रस्थली और तलपेटका कुछ फूल उठना, मल त्याग करने में बहुत कष्ट इत्यादि इस रोग के प्रधान लक्षण है। रोग पुराना होने पर दर्द घट जाता है और गंदला पेशाब होता है। पेशाबमें कफ या श्लेष्मा जम जाता है। गुर्देके प्रदाहमें दर्द नीचेकी ओर मूत्रस्थली तक फैलता है। मूत्रस्थली प्रदाहमें दर्द, ऊपरकी ओर कमर तक फैलता है। यह रोग प्रायः आराम हो जाता है। रोग कठिन होने पर मूत्रस्थली बढ़ जाती है और रोगीकी अवस्था सांघातिक हो जाती है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६—मूत्र ग्रन्थि और मूत्रस्थली में, दर्द बारंबार पेशाब लगना, थोड़ा या बूंद-बूंद पेशाब होना, मूत्रस्थली में जलन, बुखार, प्यास अस्थिरता इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। इसके साथ पर्यायक्रम में कैन्थरिस देने से विशेष लाभ होता है।

बेलेडोना ३ या ६—पेशाब थोड़ा, गरम और लाल कभी-कभी इसके साथ खूनका निकलना दर्द करते हुए बूंद-बूंद पेशाब होना बुखार स्पर्श बरदाश्त न होना इत्यादि लक्षणोंमें और एकोनाइट से लाभ न होनेपर इसे देना चाहिये

रहे, कमर, पेशाब करने समय [illegible] [illegible]
[illegible] आदि इस रोग के प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा।

आर्निका ३ x और चोट के कारण यह रोग होने पर इसका सेवन करना चाहिये। साथ ही आर्निका, मदर टिंचर दस बूंदें पानी में मिलाकर उस जगह लगाने से बहुत लाभ होता है।

एकोनाइट ३ या ६—प्रदाह के साथ बुखार, दर्द, प्यास बेचैनी आदि लक्षण मौजूद होने पर इसे देना चाहिये।

बेलेडोना ६—बुखार के साथ प्रदाह, टपक जैसा दर्द इत्यादि।

केन्थरिस ३ या ६—पेशाब करते समय जोरों की जलन होती हो तो इसे देना चाहिये।

जेल्सीमियम ३ X-यह भी इस रोग की एक लाभदायक औषधि है।

आवश्यक सूचना-चोट आदि लगनेके कारण मूत्रनाली में जो प्रदाह होता है, वह आसानी से आराम हो जाता है। सूजाक के कारण जो प्रदाह होता है, वह कठिन होता है। उसके लिये सूजाक की दवाओं में से लक्षणानुसार दवा चुननी चाहिये।

मूत्रनाली का संकोचन ।

(Stricture)

मूत्रनाली की मांसपेशियाँ सिकुड़ने पर वह आक्षेपिक संकोचन कहलाता है और श्लैष्मिक झिल्लियाँ पतली तथा कड़ी हो जाने पर वह यान्त्रिक संकोचन कहलाता है। इस प्रकार का संकोचन होने पर मूत्रनाली बहुत तंग हो जाती है. फलतः पहले थोड़ा थोड़ा पेशाब होता है, बाद को पेशाब होना एकदम ही रुक जाता है।

चिकित्सा ।

आक्षेपिक संकोचन—रोग के आरम्भ में स्पिरिट कैम्फर मदर टिञ्चर दो-दो बूँद पाँच-पाँच सात-सात मिनट के अन्तर से देना चाहिये। बुखार के साथ आक्षेप होने पर एकोनाइट ३ X या ३। पुरानी बीमारी में नक्सवोमिका ६ या ३०।

यान्त्रिक संकोचन—रोग के आरम्भ में क्लिमेटिज ३। इससे लाभ न होने पर फोस्फरस, डाल्केमारा, केन्थरिस. साइलिसिया, थियोसिनिनम, प्रुनस्पाइ, एपिस, एकोनाइट बेलेडाना, टेरिबिन्थीना, एसिडफस, आयोड, आर्सेनिक आदि दवाएं आजमानी चाहिये।

लाल पेशाब पेशाब में तली जमना, इत्यादि। यह दवा मिले तो इसके स्थान में तुलसी के पत्तियों का रस ... पन्द्रह मिनट के अन्तर से देना चाहिये।

सार्सापेरीला १ या ३—मूत्राशय में शूल पेशाब करने में तकलीफ, पेशाब में कफ या पीब का होना पेशाब में छोटी-छोटी पथरियाँ दिखायी देना, पेशाब में तली जमना इत्यादि।

डायस्कोरिया १ x—शरीर में ऐंठन जैसा दर्द, दर्द के कारण एक क्षण भी स्थिर न रहना, बहुत छटपटाना इत्यादि।

पेरेराब्रेवा १ या ३०—पेशाब में जलन और बूँद-बूँद पेशाब, कमर और मूत्रस्थली में दर्द, इत्यादि लक्षणों में और अन्यान्य दवाओं से लाभ न होने पर इसे आजमाना चाहिये।

केन्थरिस ३ या ६—मूत्रग्रन्थि में दर्द मूत्रस्थली तक दर्द का फैलना, पेशाब का कष्टदायक वेग जलन के साथ बूँद-बूँद पेशाब होना इत्यादि।

लीथियम कार्ब ६ या ३०—मूत्रस्थली में दर्द जलन के साथ थोड़ा पेशाब, पेशाब में कफ दिखाई देना इत्यादि।

ग्रेफाइटिस ६ या ३०—पेशाब में खट्टी गन्धयुक्त सफेद तली जमती हो तो इसे देना चाहिये।

मूत्रनाली का संकोचन ।

(Stricture)

मूत्रनाली की मांसपेशियाँ सिकुड़ने पर वह आक्षेपिक संकोचन कहलाता है और श्लैष्मिक झिल्लियाँ पतली तथा कड़ी हो जाने पर वह यान्त्रिक संकोचन कहलाता है। इस प्रकार का संकोचन होने पर मूत्रनाली बहुत तंग हो जाती है, फलतः पहले थोड़ा थोड़ा पेशाब होता है, बाद को पेशाब होना एकदम ही रुक जाता है।

चिकित्सा ।

आक्षेपिक संकोचन—रोग के आरम्भ में स्पिरिट कैम्फर मदर टिञ्चर दो-दो बूँद पाँच-पाँच सात-सात मिनट के अन्तर से देना चाहिये। बुखार के साथ आक्षेप होने पर एकोनाइट ३ X या ३। पुरानी बीमारी में नक्सवोमिका ६ या ३०।

यान्त्रिक संकोचन—रोग के आरम्भ में क्लिमेटिज ३। इससे लाभ न होने पर फोस्फरस, डाल्कैमारा, केन्थरिस, साइलिसिया थियोसिनिनम प्रुनस्पाइ, एपिस, एकोनाइट बेलेडाना, टेरिबिन्थीना, पल्सेफस, आयोड, आर्सेनिक आदि दवाएं आजमानी चाहिये।

इनके अतिरिक्त आर्टिका युरेन्स, कोकसकेक्टाई, एसिड-फस, किनिनम सल्फ, सीपिया, नेट्रमम्यूर, आक्जेलिक एसिड-बेलेडोना, ओपियम, नक्सवोमिका, एपोसाइनम, आइपोमिया रूटा, चायना, जिङ्कम, मर्क्युरियस और साइलीसिया आदि दवाएँ भी लक्षणानुसार लाभ करती हैं।

आवश्यक सूचना—रोग की तेजी के समय घंटे में दो, तीन या चार बार तक दवा देनी चाहिये। तेजी घटने पर दवा देने का समय भी बढ़ा देना चाहिये। दर्द के स्थान में सेंकना ठंडे जल से नहाना खुली हवा का सेवन करना, नियमित परिश्रम करना आदि लाभदायक है। चीनी, मिठाई, मांस, दाल, घी के पके पदार्थ, शराब, चाय, काफी, तम्बाकू और चूना खाना मना है। सोडा वाटर, पानी और गाय का ताजा दूध अधिक तादाद में पीना लाभदायक है। पेट में वायु न संचित होने देना चाहिये। खाली पेट रहना भी ठीक नहीं है।

अनजान में पेशाब।

(Involuntary Urination)

इस रोग को अंग्रेजी में Incontinence of Urine भी कहते हैं। मूत्रस्थली की पेशाब धारण करने या रोकने की शक्ति लोप हो जाने पर अनजान में पेशाब हो जाता है।

इनके अतिरिक्त आर्टिका युरेन्स, कोकसकेक्टाई, एसिड-फस, किनिनम सल्फ, सीपिया, नेट्रमम्यूर, आक्ज़ेलिक एसिड-वेलेडोना, ओपियम, नक्सवोमिका, एपोसाइनम, आइपोमिया रूटा, चायना, जिङ्कम, मर्क्युरियस और साइलीसिया आदि दवाएँ भी लक्षणानुसार लाभ करती हैं।

आवश्यक सूचना—रोग की तेजी के समय घंटे में दो, तीन या चार बार तक दवा देनी चाहिये। तेजी घटने पर दवा देने का समय भी बढ़ा देना चाहिये। दर्द के स्थान में सेंकना ठंढे जल से नहाना, खुली हवा का सेवन करना, नियमित परिश्रम करना आदि लाभदायक है। चीनी, मिठाई, मांस, मछली, घी के पके पदार्थ, शराब, चाय, काफी, तम्बाकू और चूना खाना मना है। सोड़ा, साफ, पानी और गाय का ताजा दूध अधिक तादाद में पीना लाभदायक है। पेट में वायु न संचित होने देना चाहिये। खाली पेट रहना भी ठीक नहीं है।

अनजान में पेशाब।

(Involuntary Urination)

इस रोग को अंग्रेजी में Incontinence of Urine भी कहते हैं। मूत्रस्थली की पेशाब धारण करने या रोकने क शक्ति लोप हो जाने पर अनजान में पेशाब हो जाता है।

सल्फर ३०—एक सप्ताह तक दिन में दो बार यह दवा सेवन करने पर इस रोग में आश्चर्यजनक लाभ होता है।

इग्नेशिया ६—स्त्रियों को हिस्टीरिया रोग होने पर बेहोशी के समय पेशाब हो जाता हो तो इसे देना चाहिये।

एसिड फस ३ X या ३०—अधिक वीर्यपात के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

कोनायम ३—वृद्धोंकी बीमारीमें इसे आजमाना चाहिये।

इनके अतिरिक्त इरिजिरन, नक्सवोमिका, मर्क्युरियस सल, स्पाइजिलिया, क्रियोजोट, क्लोरल, कल्केरिया फस, थूजा आदि दवाएँ भी लक्षणानुसार व्यवहार की जाती हैं।

आवश्यक सूचना—सोने के तीन घंटे पहले से पानी न पीना चाहिये। सोते समय और रात में समय समय पर उठकर पेशाब कर देना चाहिये। दिन में पेशाब रोकने का अभ्यास बढ़ाना चाहिये। ठंढे पानी से नहाना, चित सोना, पुष्टिकर चीजें खाना और कठिन शय्यापर सोना लाभदायक है।

खूनी पेशाब।

(Hoematuria)

गिर जाना, चोट लगना, अधिक परिश्रम करना, प्रदाह, प्रमेह अथवा किसी अन्य रोग के कारण खूनी पेशाब होना

की छाती अच्छी तरह फैली है या नहीं, जब वह साँस लेता तथा छोड़ता है तब छाती फूलती और सिकुड़ती है या नहीं तथा छातीका कोई भाग सूजा हुआ तो नहीं है।

इसके अतिरिक्त रोगीकी छाती पर उंगली से चोट देकर भी छातीकी परीक्षा की जाती है। छाती पर बायाँ हाथ रखकर दाहिने हाथकी तर्जनी उंगली से उसपर चोट देने से ठन-ठन की आवाज हो तो समझना चाहिये कि स्वाभाविक अवस्था है। टप-टप आवाज हो तो फेफड़े का प्रदाह या न्युमोनिया और छातीकी सूजन आदि जानना चाहिये। दमाकी बीमारी में अधिक हवा घुसने के कारण टनन्टन की आवाज होती है।

छाती परीक्षाका यंत्र विलायत से आता है। इसे स्टैथ-स्कोप कहते हैं। यह पहले काठ का बनाया जाता था। अब सींग, हाथी दाँत, जर्मन सिल्वर आदिका बनता है और उसमें रबड़की नलियाँ लगी रहती है। डाक्टरों को इसका उपयोग करते हुए सबने देखा होगा। इसके दो चोगे कानमें लगाकर, तीसरे चोंगेको रोगीकी छाती पर लगानेसे छातीमे तरह-तरहकी आवाज सुनायी देती है और उसी परसे रोगकी परीक्षा की जाती है।

स्टैथस्कोप कानमे लगाने पर साधारण अवस्थामे सों-सों की आवाज सुनायी देती है। श्वासनाली प्रदाह, दमा, क्षत आदि रोगोमें कई तरहके बाजोंकी सी ध्वनि सुनायी देती है।

है। यह रोग होने पर खून कहाँ से आता है, यह जान लेने पर इलाज करने में सुविधा होती है। मूत्रग्रन्थि या गुर्दे से खून निकलने पर वह पेशाब के साथ मिलकर निकलता है, तादाद में अधिक होता है, साथ ही गुर्दे और कमर में दर्द मालूम होता है। मूत्रस्थली से खून आने पर पहले साफ पेशाब होता है, बाद को थोड़ा सा खून निकल पड़ता है। मूत्रनाली से खून आने पर वह पेशाब के साथ नहीं निकलता, बल्कि किसी दूसरे समय बूँद बूँद निकलता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६—सर्दी लगने के कारण यह रोग होना खून मिला पेशाब, पेशाब के समय दर्द इत्यादि।

आर्निका ३ या ६—चोट लगने के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

केन्थरिस ६ या ३०—बहुत काँखना, जलन के साथ बूँद-बूँद पेशाब होना, मूत्रग्रन्थि से लेकर पट्ठे तक दर्द, खून मिला पेशाब इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। यह इस रोग की प्रधान दवा है।

केनेबिस ६ या ३०—केन्थरिस से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

मूत्रकृच्छ्रता ।
(Strangury)

यह एक बहुत ही कष्टदायक रोग है। बारंबार पेशाब लगना लेकिन कष्ट के साथ बूँद बूँद पेशाब होना अथवा बिल्कुल ही पेशाब का न होना इस रोग का प्रधान लक्षण है। पेशाब करते समय मूत्राशय प्रदेश में बहुत जलन भी होती है। सूजाक, पथरी, जरायु दोष, मूत्रग्रन्थि प्रदाह, गठिया, वात, हिस्टीरिया, कृमि आदि रोग होने पर अक्सर यह शिकायत पैदा हो जाती है। रोग पुराना होने पर पेशाब के साथ कफ या पीब भी निकलता है।

चिकित्सा ।

एकोनाइट ३ या ६—सरदी लगने के कारण यह रोग होना, बारंबार पेशाब का वेग, लाल रंग का बूंद बूँद पेशाब होना, ज्वर भाव, उत्कण्ठा इत्यादि।

केन्थरिस ६ या ३०—यह इस रोग की एक बढ़िया दवा है। वेग मालूम होने पर भी बूँद बूँद पेशाब होना पेशाब का रुक जाना, पेशाब करते समय मूत्रनाली में कतरने जैसा दर्द और जलन।

कोनायम ३ या ६—प्रोस्टेट ग्रन्थि बढ़ जाने के कारण बीच बीच में पेशाब का रुक जाना, अधिक स्त्री संग करने के कारण यह रोग होना, बूढ़ों की बीमारी इत्यादि।

है । यह रोग होने पर खून कहाँ से आता है, यह जान लेने पर इलाज करने में सुविधा होती है । मूत्रग्रन्थि या गुर्दे से खून निकलने पर वह पेशाब के साथ मिलकर निकलता है, तादाद में अधिक होता है, साथ ही गुर्दे और कमर मे दर्द मालूम होता है । मूत्रस्थली से खून आने पर पहले साफ पेशाब होता है, बाद को थोड़ा सा खून निकल पड़ता है । मूत्रनाली से खून आने पर वह पेशाब के साथ नहीं निकलता, बलिक किसी दूसरे समय बूँद-बूँद निकलता है ।

चिकित्सा ।

एकोनाइट ३ या ६—सरदी लगने के कारण यह रोग होना, खून मिला पेशाव, पेशाव के समय दर्द इत्यादि ।

आर्निका ३ या ६—चोट लगने के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये ।

केन्थरिस ६ या ३०—बहुत काँखना, जलन के साथ बूँद-बूँद पेशाव होना, मूत्रग्रन्थि से लेकर पट्ठे तक दर्द, खून मिला पेशाव इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये । यह इस रोग की प्रधान दवा है ।

केनेबिस ६ या ३० —केन्थरिस से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये ।

आदि लक्षण प्रकट होते हैं। इस रोग को मूत्ररोधविकार या Uroemia कहते हैं। इन तीनों रोगों की दवाएँ नीचे लिखी जाती हैं।

चिकित्सा।

मूत्रावरोध—स्पिरिट कैम्फर, नक्सवोमिका, कस्टिकम, नक्समस्केटा, इग्नेशिया, जेलसीमियम, पल्सेटिला, वेराइटा कार्ब एकोनाइट और केन्थरिस।

मूत्रनाश—एकोनाइट टेरिबिन्थीना, ओपियम, इग्नेशिया केन्थरिस और केली बाइक्रोम।

मूत्ररोध-विकार—आयोडिन, टेरिबिन्थीना, मर्क्युरियस कर, आर्सेनिक, केन्थरिस, केली बाइक्रोम, क्युप्रम एसेट, ओपियम, आर्टिका युरेन्स, एमोनकार्ब, हाइड्रोसियानिक एसिड, क्रियोजोट और प्लम्बम इत्यादि।

एकोनाइट ३ या ६—साधारण बीमारी, पेशाब न होने के कारण बच्चों का चिल्लाना और जननेन्द्रिय पर हाथ रखना, पेशाब बिल्कुल न होना, बूंद बूंद होना अथवा खून मिला पेशाब होना।

आर्निका ६ या ३०—किसी तरह की भी चोट लगने के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

चिकित्सा।

एसिड फस १X या ६ किसी स्नायविक रोग के साथ यह रोग होना, वारंवार पेशाव, रातके समय कमर में दर्द, शरीर का क्षय, धातुदौर्वल्य, उदासी या सुस्ती, चीनी मिला वहुत पेशाव, पीठ और गुर्दे में दर्द।

युरेनियम नाइट्रिकम १ X या ३—वदहजमी, प्यास, कब्जियत, नींद न आना, पेशाव में जलन, कमजोरी, पेशाव में वहुत चीनी इत्यादि लक्षणों में इसे देने से वहुत लाभ होता है।

लेकटिक एसिड १ X या ३ X—वारंवार वहुत प्यास चमड़ा मैला और सूखा, वहुत कब्जियत, जीभ चिकनी, पाकाशय का गोलमाल, वहुत कमजोरी वात व्याधि।

सिजिजियम जेम्बोलिनम १X—रोग की सभी अवस्थाओं में इससे लाभ होता है इसे देने पर पेशाव का वजन और चीनी का अंश कम हो जाता है।

लाइकोपोडियम ३० या २०० —वहुत खिन्नता, चिड़चिड़ा स्वभाव, सदा भूख और प्यास लगना, पेट फूला हुआ, कब्ज़ियत, पेशाव में लाल तली जमना।

कल्केरिया फस ६X—वहुमूत्र के साथ फेफड़े की वीमारी होने पर इसे देना चाहिये।

प्लम्बम ३०—यह भी इस रोग की एक बढ़िया दवा है

नेट्रम फस और नेट्रम सल्फ २००—यह दोनो दवाएँ चार पाँच सप्ताह सेवन करने से चीनीका भाग बहुत कम हो जाता है और चार पाँच मास तक सेवन करने पर अनेक रोगियों का रोग जड़ से आराम हो जाता है।

इनके अतिरिक्त सिकेली, हेलोनियस, केन्थरिस, आर्निका ओपियम, स्कुइला, परमङ्गाइ. डिजिटेलिस, और नक्स-वोमिक आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—स्वास्थ्य के नियमों का पालन, भ्रमण, वायुपरिवर्तन, अधिक शारीरिक या मानसिक परिश्रम न करना लाभदायक है। खान पान पर विशेष ध्यान रखने से इस रोग से छुटकारा मिल सकता है। चीनी, मिठाई और आलू एक दम खाना मना है। भात भी अधिक न खाना चाहिये। बिना मलाई का दूध खाया जा सकता है। मांस, मछली दाल रोटी साग सब्जी अण्डे खट्टे फल खीरा या ककड़ी मूंग परवल गूलर आदि चीजे सुपथ्य हैं। मीठे फल भी खाना मना है। पथ्य पर ध्यान रखने से रोग बढ़ने नहीं पाता और रोगी अधिक दिन जाता है

मूत्रमेह।

(. . . . .)

.न रोग में भी मधुमेह जैसे ही लक्षण प्रकट होते है

जननेन्द्रिय के रोग।

अण्डकोष प्रदाह।

(Orchitis)

इस रोग को एकशिरा या सांजर भी कहते हैं। यह रोग होने पर अण्डकोष अथवा अण्डकोष की थैली में प्रदाह पैदा हो जाता है प्रायः इसमें एक ही ओर का अण्डकोष प्रदाहित होता है। अण्डकोष का लाल हो जाना, फूल जाने और उसमें दर्द होना इसका प्रधान लक्षण है। कभी कभी अण्ड-कोष में पीब पड़कर वह अपने आप फूट भी जाता है। कभी कभी इस रोग के साथ बुखार और कै आदि लक्षण भी प्रकट होते हैं। कभी कभी अमावस्या और पूर्णिमा को इस रोग की तकलीफ बढ़ जाया करती है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ६ या ३०–प्रदाह के साथ जोरों का बुखार अण्डकोष में दर्द और सूजन, अण्डकोष का कड़ा हो जाना।

आर्निका ६ या ३०–चोट लगने के कारण यह रोग होना, अण्डकोष फूला और कड़ा, उसमें दर्द इत्यादि।

क्लिमेटिज ६ या ३०–सूजाक के कारण यह रोग होना, अण्डकोष पत्थर की तरह कड़ा, उसमें दर्द, मूत्रनाली

पल्सेटिला ६ या ३०--बायें अण्डकोष की बीमारी, धीरे-धीरे अण्डकोष का बढ़ते जाना, किसी तरह का दर्द या तकलीफ न होना।

साइलीसिया ६ या ३०—अमावस्या और पूर्णिमा को रोग बढ़ता हो तो इसे देना चाहिये।

कोनायम ६ या ३०—अण्डकोष फूला और कड़ा, चोट लगने के कारण यह रोग होना, वृद्धों की बीमारी।

रसटक्स ६ या ३०—सरदी लगने के कारण यह रोग होना, दर्द, लाली, सूजन इत्यादि लक्षणों में और रोडोडेन्ड्रन से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

कल्केरिया कार्ब ६—बहुत छोटी उम्र के बच्चों को यह रोग होने पर इसे देना चाहिये। यदि यह रोग जन्म से ही हो तो ब्रायोनिया ३ देना चाहिये।

इनके अतिरिक्त हेमामेलिस, अर्निका, आयोड और सल्फर आदि दवाएँ भी व्यवहार की जाती हैं।

आवश्यक सूचना—सुई या बेल के काँटे से दो तीन छेद कर अण्डकोष का पानी निकाल देना अच्छा है। ऐसा करने में भय मालूम हो तो चीरा लगवा देना चाहिये। लंगोट पहनना लाभदायक है। अधिक जलपान या जलीय पदार्थ न खाने चाहिये।

बीमारी हो जाती है। आरम्भ में ही इस व्याधि का इलाज न करने पर बच्चों का जीवन ही नष्ट हो जाता है और गार्हस्थ्य जीवन में उन्हे कोई आनन्द ही नहीं आता।

माता पिताओं को बच्चों पर सन्देह होते ही उन पर कड़ी दृष्टि रखनी चाहिये और उन्हे समझा-बुझा कर भले कामों में लगाकर तथा सभी सम्भव उपायों को काम में लाकर इस चेष्टा से विरत रखना चाहिये। बच्चों को बुरे नौकर चाकर या लड़के लड़कियों के साथ बैठने उठने न देना, उन्हे गन्दी पुस्तकें न पढ़ने देना, थियेटर, बायस्कोप आदि देखने से रोकना, नीति ज्ञानकी बातें बतलाना, सदा किसी न किसी काम में लगाये रखना, उनसे व्यायाम करवाना आदि ऐसी बातें है, जिनके अवलम्बन से बच्चों को इस कुटेव से छुटकारा मिल सकता है। नीचे कुछ ऐसी दवाओं के नाम दिये जा रहे … जिनके सेवन से इस कुटेव और इसके कुफलों से परित्राण … ल सकता है।

चिकित्सा।

केन्थरिस ३ या ६—बच्चों को यह दवा खिलाने से … सगंमेच्छा घट जाती है और यह आदत छुटने में … ता मिलता है।

…ाटिना ६—बालिकाओं को यह आदत छुड़ाने के … दवा देना चाहिये

धातु दौर्बल्य।

(Spermatorrhoea)

इस रोगको शुक्रमेह या धातुकी बीमारी भी कहते हैं। अनजान में या इच्छा न होने पर भी वीर्यपात हो जाना, इस रोगका प्रधान लक्षण है। यह रोग अधिकांश में हस्तमैथुन और अधिक स्त्री संग करने के कारण होता है। कभी कभी बवासीर, जननेन्द्रिय का खुजला, कृमि, कब्जियत आदि अन्यान्य रोगों के कारण भी यह शिकायत पैदा होती है, परन्तु वह बहुत साधारण होती है। हस्तमैथुन आदि के कारण जो रोग होता है, वह बहुत भयंकर होता है उससे मनुष्य का जीवन ही नष्ट हो जाता है।

यह रोग होने पर जननेन्द्रिय का कमजोर हो जाना और उसके कारण वीर्य धारण करने की शक्ति का घट जाना रात में और कभी कभी दिन में समय भी स्वप्नदोष हो जाना रोग कठिन हो जाने पर जरा सी उत्तेजना होने से [illegible] स्त्रियों को देखने या छूने ही वीर्य का निकल पड़ना मन में चञ्चलता उत्पन्न होना [illegible] [illegible]

के पहले ही बुढ़ापे का आ जाना और नपुंसकता आदि लक्षण प्रकट होते हैं।

इस रोगसे बचाने के लिये माता पिता और अभिभावकों को अपने बच्चों पर कड़ी निगाह रखनी चाहिये और अगर वे किसी बुरी आदत में फँसे हों तो उन्हें तुरन्त छुड़ाने की चेष्टा करनी चाहिये। इस रोगका इलाज करते समय भी इस बात पर ध्यान रखना चाहिये, कि रोगी सबसे पहले हस्तमैथुन आदि बुरी आदतें और उन सभी कामों को छोड़ दे, जिनसे इन्द्रिय को उत्तेजना उत्पन्न होती हो। बिना इसके इलाज करना व्यर्थ है। इसके बाद निम्नलिखित दवाओं में से लक्षणानुसार किसी दवाका सेवन कराना चाहिये। यह भी ध्यान रहे कि इस रोग में दीर्घकाल तक औषधि का सेवन कराना पड़ता है। औषधि-सेवन के साथ स्वास्थ्य-रक्षा के अन्यान्य नियमों का भी समुचित पालन होना चाहिये।

चिकित्सा।

एसिड फस १ X, ६ या ३०—अधिक स्त्री संग और हस्तमैथुन के कारण वीर्यपात, थोड़ी उत्तेजना में ही वीर्यका निकल पड़ना, मलत्याग करने समय वीर्यपात, जननेन्द्रिय की कमजोरी, इच्छानुसार उसका उत्तेजित न होना इत्यादि [illegible]णों में इसे देना चाहिये।

जीभ पर सफेद लेप चढ़ जाता है। यकृत में गोलमाल होने से जीभका रंग पीला हो जाता है। रक्त-संचालन की क्रियामें गड़बड़ी पैदा हो जानेसे जीभ में नीलापन आ जाता है। भोजन अच्छी तरह न पचनेसे जीभ पर ज़ख्म या छाले पड़ जाते है। पाण्डु या कमला की बीमारी में जीभ पीली पड़ जाती है। मन्दाग्नि की बीमारी में जीभके किनारे लाल तथा मध्य और मूल भाग पर सफेद लेप दिखायी देता है। स्नायविक और पाकस्थलीकी बीमारी में तथा उत्तेजना में जीभ भारी, फूली हुई और कोमल दिखायी देती है, तथा उस पर दाँत दवाने से दाँत के दाग पड़ जाते हैं। तेज बुखार में भी जीभ पर सफेद रंगका बहुत मोटा लेप चढ़ जाता है।

जीभ का काला रंग बहुत ही अशुभ लक्षण माना जाता है। आमाशयकी बीमारी में जीभ पर काले दाग पड़ जायें तो समझना चाहिये कि रोगीकी जीवनी शक्ति क्षीण हो रही है। चेचकमे जीभ काली पड़ जाने पर रोगीकी अक्सर मृत्यु हो जाती है। मस्तिष्क अवश हो जाने पर जीभ का हिलना वन्द हो जाता है या जीभ वाहर निकलकर एक ओर पड़ी रहती है। पाण्डु रोग में जीभ पर काला लेप दिखायी दे तो समझना चाहिये कि यकृतकी अवस्था वहुत ही खराव हो गयी है। किसी भी नयी वीमारीका प्रवल आक्रमण होने पर यदि जीभ काँपने लगे और वोली में लडखड़ाहट दिखायी दे तो समझना चाहिये कि रोगीका वचना कठिन है।

जेल्सीमियम ३०—पुरुषेन्द्रिय की दुर्बलता और शिथि-लता, थोड़ी उत्तेजना में ही वीर्यपात, शरीर कमज़ोर, स्त्री संग की इच्छा न होना, पुरुषेन्द्रिय का उत्तेजित न होना. मलत्याग करते समय वीर्यपात, आत्महत्या करने की इच्छा, दुश्चिन्ता, प्रमेह दोष इत्यादि। एसिड फसके साथ पर्याय-क्रम में इसे देने से अनेक बार बहुत लाभ होता है।

सीपिया ३०—एसिड फस से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

एग्नस कैस्टस ३ या ३०--जननेन्द्रिय की कमजोरी स्त्री संगके बाद शरीर हलका मालूम होना, पूर्ण रूपसे नपुं-सकता, लिङ्गका खड़ा ही न होना, पानी जैसा पतला वीर्य निकलना, अण्डकोष फूले हुए कड़े और वेदना पूर्ण, अकाल वार्धक्य इत्यादि।

नक्सवोमिका ३० या २००—स्वप्नदोष स्मरण शक्ति की कमी हस्तमैथुन का कुफल सिर और पांवमें दर्द, अधिक इन्द्रिय सेवाके कारण यह रोग होना सहज में ही कामेच्छा परन्तु संगम समय इन्द्रिय का पूर्णरूप से उत्तेजित न होना।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—स्वप्नदोष के बाद सिर और कलेजेमें दर्द हाथ पर ठट गलदमाला धातु थोड़े परि-श्रमसे हो थक जाना इत्यादि।

इत्यादि। यह दवा केवल सुबह के दो वक्त सेवन करनी चाहिये। इन लक्षणों में डिजिटेलिस से भी लाभ होता है।

कल्केरिया फस १२ या ३०—हस्तमैथुन के कारण धातु दौर्बल्य और वीर्य नाशकी यह भी बढ़िया दवा है।

स्टेफीसेग्रिया ६ या ३०—हस्तमैथुन के कारण शरीर का दुर्बल हो जाना, आँखके चारों ओर नीले दाग चेहरा निस्तेज लज्जाभाव इत्यादि।

एनाकार्डियम ३० या २००—धातु दौर्बल्य, दिमाग का कमजोर हो जाना, स्मरण शक्तिकी कमी मल और मूत्र त्याग के समय वीर्य निकलना।

पिक्रिक एसिड ६ या ३०—संगम के समय कुछ ही देरमें पुरुषेन्द्रिय का शिथिल हो जाना और बहुत सा वीर्यपात होना स्त्री संगकी प्रबल इच्छा रात भर नींद न आना नपुंसकता इत्यादि।

आवश्यक सूचना—सात्विक भोजन सात्विक आचरण सदविचार सद्ग्रन्थ पठन आदिका व्यवहार करना चाहिये। कामोद्दीपक सभी द्रव्यों का त्याग करना चाहिये

ओपियम ६ या ३०—नींद में प्रेमलीला के स्वप्न देखना और उसके कारण जननेन्द्रिय का उत्तेजित हो उठना, इसके बाद जागने पर वीर्यपात होना।

फछुलस ६ या ३०—अत्यन्त कामेच्छा रात में स्वप्न दोष, अण्डकोष में दर्द इत्यादि।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—मोटे और थुलथुले शरीर-वाले रोगियों को इस दवा से काफी लाभ होता है।

इनके अतिरिक्त डिजिटेलिस इरिजिरन, केलीब्रोमेटम, लेकेसिस मर्क्युरियस, थूजा जिङ्कम, पिक्रिक एसिड और सल्फर आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है। धातु दौर्बल्य की दवाओं में से भी दवा चुनी जा सकती है।

आवश्यक सूचना—हस्तमैथुन और अधिक स्त्री संग आदि बुरी आदतें छोड़ देनी चाहिये। कामोद्दीपक विचार, नाटक उपन्यास या गन्दी पुस्तकें पढ़ना थियेटर, बायस्कोप देखना कामोद्दीपक बातें करना या सुनना इत्यादि एकदम छोड़ देना चाहिये। नित्य ठंडे पानी से नहाना नित्यप्रति व्यायाम करना स्वास्थ्यवर्धक खाद्य खाना, कठिन शय्या में सोना तड़के उठना अन्नाहार न करना इत्यादि लाभदायक है। सोने के पहले जननेन्द्रिय और पैरों पर ठंडे जल डालना फायदेमन्द है। सब तरह के उत्तेजक पदार्थों का खाना पीना त्याग देना चाहिये

केनेबिस इन्डिका ६ या ३०—तरह तरह की अश्लील कल्पनाएँ करना. पुरुषो को यह रोग होना इत्यादि।

एगारिकस ६ या ३०—प्रबल कामेच्छा, जननेन्द्रिय को खुजली. संगम के बाद अवसन्नता इत्यादि लक्षणो के साथ स्त्रियो को यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

कोका १ X-स्त्रियो की बिमारी में इस दवा से भी बहुत लाभ होता है।

हायोसायमस ६ या ३० या २००—अश्लील बातें करना. अश्लील गाने गाना, नंगे हो जाना, बहुत प्रबल कामेच्छा इत्यादि लक्षणों में स्त्री और पुरुष दोनों को इस दवा से लाभ होता है।

नक्सवोमिका ३० या २००—आलसी स्वभाव के आदमियो और युवकों की बीमारी में इससे विशेष लाभ होता है। खासकर जब कामोन्माद के साथ कब्जियत की भी शिकायत हो।

सेबाडिला ६ या ३०—पेट में छोटे कृमि होनेके कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

फास्फरस ३० या २००—अविवाहित व्यक्तियों और विधवा स्त्रियो के कामोन्माद में इसे देना चाहिये।

चिकित्सा ।

फोस्फ़रस ३०, २०० या १०००—यह नपुंसकता की बढ़िया दवा है। संग शक्ति की कमी और नसों की कमज़ोरी में इसे देना चाहिये। इसके १००० क्रम से विशेष लाभ होता है।

एग्नस केक्टस १ x या ३ x—संगम शक्ति की कमी इन्द्रिय का बिलकुल उत्तेजित ही न होना, इत्यादि लक्षणों में बीमारी नयी होने पर इससे लाभ होता है।

एसिड फस ३ या ६—अधिक स्त्री संग करने के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

कोनायम ३०—अधिक स्त्री संग होने के कारण यह रोग होने पर और बूढ़ों की बीमारी में इससे विशेष लाभ होता है।

लाइको पोडियम ३० या २००—बूढ़ों की बीमारी अथवा जवानी में हो बूढ़ों की सी हालत होने पर इसे देना चाहिये।

एगारिकस ३—यह भी एक अच्छी दवा है। पुरुषेन्द्रिय सिकुड़ी हुई और ठण्डी होने पर अथवा एग्नस से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

एलोज ३ x—संगम करने की इच्छा ही न होती हो तो इसे देना चाहिये।

कैलाडियम १x या ३x—पुरुषांग का उत्तेजित ही न होना, कमजोरी या नपुंसकता इत्यादि।

आरममेट ६, ३० या २००—अण्डकोष ढीले, उनका लटके रहना, आत्महत्या करने की इच्छा, सगम शक्ति का न होना।

जेल्सीमियम ६ या ३०—नसों की कमजोरीके कारण इन्द्रिय का पूर्ण रूप से उत्तेजित ही न होना, इन्द्रिय की शिथिलता।

कल्केरिया कार्ब—गण्डमाला धातु, मोटा और थुलथुला शरीर, जरा सा परिश्रम करते ही हाँफने लगना इत्यादि लक्षणोंवाले पुरुष या स्त्री को यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

नक्सवोमिका ३० या २००—सदा आलसी की तरह पड़े रहना, कोई भी काम करने की इच्छा ही न होना, बहुत कब्जियत इत्यादि लक्षणों के साथ यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

सेवाल सेरुलेटा मदर टिञ्चर—फी खुराक पाँच से लेकर दस बूँद तक सेवन करने पर नपुंसता और कमजोरी में इससे काफी लाभ होता है।

विउफो ३०—अन्यान्य दवाओं से लाभ न होने पर अन्त में इसे आजमाना चाहिये।

इनके अतिरिक्त आर्निका, हाइपेरिकम, क्युप्रम एसेट सेलिनियम, सल्फर, नाइट्रिक एसिड, एनाकार्डियम आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है। धातु दौर्बल्य, स्वप्नदोष आदि रोगों की दवाओं में से भी दवा चुनी जा सकती है।

आवश्यक सूचना—सात्विक भाव से रहना चाहिये। घी, दूध, मक्खन आदि पुष्टिकर चीजें खाना चाहिये। विज्ञापनों के फेर में पड़कर उत्तेजक दवाओं का सेवन भूल कर भी न करना चाहिये। इससे रही सही शक्ति भी नष्ट हो जाती है और रोग असाध्य हो जाता है।

सूजाक या प्रमेह।

(Gonorrhoea)

गोनोकोकस नामक एक विषाक्त जीवाणु इस रोग का मूल कारण है। रोगी पुरुष के संसर्ग से नीरोग स्त्री को और रोगिनी स्त्री के संसर्ग से नीरोग पुरुष को यह रोग हो जाता है। इसका विष जननेन्द्रिय में प्रवेश करने पर एक तरह का प्रदाह सा पैदा होता है, और पीब जैसा स्राव निकलता है। यह रोग दो भागों में बाँट दिया गया है। एक साधारण सा होता है। लोग उसे एकाङ्गीन या अप्रकृत प्रमेह कहते हैं।

कभी जरायु आदि भीतरी प्रजनन अंग भी आक्रान्त होते हैं, परन्तु ऐसा बहुत कम होता है। स्त्रियों को यह रोग होने पर उन्हें भी लक्षणानुसार वही दवाएँ देनी चाहिये जो पुरुषों को दी जाती हैं। नीचे इस रोग की चुनी हुई दवाओं के लक्षण दिये जाते हैं। बीमारी नयी है या पुरानी, इस बात पर ध्यान रखते हुए इस रोग का इलाज करना चाहिये।

चिकित्सा।

नयी बीमारी में—एकोनाइट, अर्जेन्ट नाइट, केनेबिस सेट केन्थरिस, जेल्सीमियम, केप्सीकम, क्युबेबा, मर्क्युरियस सल. कोपेबा, पेट्रोसेलिनम इत्यादि।

पुरानी बीमारी में—मेडोरिनम, कल्केरिया कार्ब, केली बाइक्रोम, केलीम्यूर, क्लिमेटिस, नेट्रमम्यूर, मेजेरियम, हाइड्रेस्टिस, ग्रेफाइटिस, फेरम फ्लूरिक एसिड, केली सल्फ, पेट्रोलियम पल्सेटिला, सीपिया, साइलीसिया, सल्फर, थूजा इत्यादि।

स्त्रियों की बीमारी में—एकोनाइट केनेबिस सेट, आर्से-निक और नेप्थेलीन इत्यादि।

एकोनाइट ३ x या ६—प्रदाह की प्रारम्भिक अवस्था में ज्वर बहुत जलन बहुत स्राव रात में बारम्बार कष्टदायक लिङ्गोत्थान बूंद बूंद पेशाब होना बुखार इत्यादि लक्षण हों तब इसे देना चाहिये।

करने पर पीब जैसी रस्सी निकलती है। कभी कभी मूत्रद्वार में साधारण सूजन मालूम होती है और पेशाब करते समय मूत्रनाली में कुछ गरमी और जलन मालूम होती है। सुबह सोकर उठने पर अथवा कई घण्टे तक पड़े बैठे रहने के बाद मूत्रनाली या जननेन्द्रिय का मुख दबाने पर सफेद सफेद अथवा बिना रंग का पीब जैसा पदार्थ निकलता दिखायी देता है। परन्तु यह इतना कम होता है कि नली से बाहर नहीं निकाला जा सकता, न धोती आदि में इसका दाग ही लगता है।

प्रकृत सूजाक, जीवन में एक बार से अधिक नहीं होता लेकिन फिर भी, जिन लोगों को यह रोग एक बार होता है वे बारम्बार यह रोग होने की शिकायत किया करते हैं। इसका कारण यह है कि उनका रोग पूर्णरूप से आराम न होकर पुराना हो जाता है और उस अवस्था में उन्हें कोई तकलीफ न होने के कारण वे मान लेते हैं कि उनका रोग आराम हो गया। बाद को किसी भी समय अधिक स्त्री संग करने या मिर्च खटाई आदि गरम और उत्तेजक चीजें खाने से उनका रोग फिर उभड़ पड़ता है और वे समझते है कि उन्हें फिर वही बीमारी हो गयी।

पुरुषों की तरह स्त्रियों को भी यह रोग होता है परन्तु उनका मूत्रमार्ग बहुत ही छोटा होनेके कारण पुरुषों की तरह उन्हें अधिक तकलीफ नहीं होती। रोग कठिन होने पर कभी-

कभी जरायु आदि भीतरी प्रजनन अंग भी आक्रान्त होते हैं, परन्तु ऐसा बहुत कम होता है। स्त्रियों को यह रोग होने पर उन्हें भी लक्षणानुसार वही दवाएँ देनी चाहिये जो पुरुषों को दी जाती हैं। नीचे इस रोग की चुनी हुई दवाओं के लक्षण दिये जाते हैं। बीमारी नयी है या पुरानी, इस बात पर ध्यान रखते हुए इस रोग का इलाज करना चाहिये।

चिकित्सा।

नयी बीमारी में—एकोनाइट, अर्जेन्ट नाइट, केनेबिस सेट, केन्थरिस, जेल्सीमियम, केप्सीकम, क्युबेबा, मर्क्युरियस सल. कोपेवा, पेट्रोसेलिनम इत्यादि।

पुरानी बीमारी में—मेडोरिनम, कल्केरिया कार्ब, केली बाइक्रोम, केलीम्यूर, क्लिमेटिस, नेट्रमम्यूर, मेजेरियम, हाइड्रेस्टिस, ग्रेफाइटिस, फेरम फ्लूरिक एसिड, केली सल्फ, पेट्रोलियम पल्सेटिला, सीपिया, साइलीसिया, सल्फर, थूजा इत्यादि।

स्त्रियों की बीमारी में—एकोनाइट, केनेबिस सेट, आर्सेनिक और नेप्थेलीन इत्यादि।

एकोनाइट ३ X या ६—प्रदाह की प्रारम्भिक अवस्था में जब बहुत जलन बहुत स्राव रात में बारम्बार कष्टदायक लिङ्गोत्थान व दर्द पेशाब होना बुखार इत्यादि लक्षण हों तब इसे देना चाहिये।

नक्स वोमिका ३ या ३०—[illegible] जलन, मूत्रनाली में सुरसुराहट [illegible] पेशाब करने की बार-बार इच्छा और थोड़ा थोड़ा [illegible] बूंद बूंद पेशाब, सुजाक के [illegible] का प्रदाह, [illegible] इत्यादि।

मर्क्यूरियस कर ६ या ३०—मूत्रनाली के मुंह में प्रदाह, मूत्रनाली में बहुत दर्द, जल्दी जल्दी पेशाब होना, खून मिला पेशाब इत्यादि।

जेल्सीमियम ६ या ३०—नयी बीमारी में बहुत तेज टीस के साथ थोड़ा थोड़ा पेशाब होना, पेशाब के समय कष्ट, लिङ्गोत्थान, वातरोग, स्राव रुक जाने के कारण अण्डकोष में प्रदाह, मूत्रनाली का संकुचित हो जाना, रुक रुक कर पेशाब होना इत्यादि।

केन्थरिस ६ या ३०—पेशाब के समय बहुत टीस और जलन, बारम्बार बूंद बूंद पेशाब होना, पेशाब के साथ कभी कभी खून निकलना, पीब पीला या खून मिला, कष्टकर लिङ्गोत्थान।

केप्सीकम ६ या ३०—मूत्रनाली में जलन और गर्मी, डंक मारने जैसा दर्द, पेशाब करते समय बिजली जैसी चमक, पीब गाढ़ा और पीला।

सल्फर ३० या २००—गाढ़ा या पानी जैसा पतला

पीव, पेशाब में जलन, मूत्रनाली के मुँह में लाला, सुपारी के आवरण में प्रदाह, मूत्रनाली में खुजली इत्यादि।

अर्जेन्टम नाइट ३ या ६—पेशाव के समय बहुत जलन, कतरने जैसा दर्द, मलद्वार तक दर्द का फैल जाना, पीव मिला स्राव, पेशाव के वाद ऐसा मालूम होना, मानों एक बूंद पेशाब मूत्रनाली में रह गया है इत्यादि। केनेबिस के वाद इस दवा से अधिक लाभ होता है।

केनोबिस सेट १ X या ३ X—नयी बीमारी में प्रदाह घट जाने के वाद पानी जैसा पतला और वदबूदार स्राव, पेशाव करते समय काँखना, दोनो पैर फैला कर चलना इत्यादि लक्षण मौजूद होने पर इसे देना चाहिये।

कोपेवा १ X या ३—मूत्रनालो में जलन, पेशाव में रुकावट और तकलीफ, वारम्बार पेशाब लगना, पेशाव में वदबू, खूनी पेशाव, पीव मिला दूध जैसा स्राव, शरीर में कहीं यह स्राव लग जाने पर वहाँ जख्म हो जाना, इत्यादि लक्षणो मे और एकोनाइट तथा केनेबिस से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

क्युबेवा ३ या ६—कोपेवा से लाभ न होने पर इससे अनेक वार लाभ होता है।

पिट्रोसेलिनम ६—केन्थरिस और केप्सीकम के लक्षण होने पर भी उनसे लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

नेट्रमम्यूर ३० या २००—निर्मल पीले रंगका स्राव, पेशाब करने के बाद कतरने जैसा दर्द।

साइलीसिया ३० या २००—गाढ़ा बदबूदार और पीब मिला स्राव निकलता हो तो इसे देना चाहिये।

हाइड्रेस्टिस ६ या ३०—प्रचुर परिमाण में अनवरत स्राव, पोला या पीली आभायुक्त स्राव इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। इसका १० बूँद मदर टिञ्चर आधी छटाँक पानी में मिलाकर उसकी पिचकारी देनेसे भी लाभ होता है।

ग्रेफाइटिस ३० या २००—गोंद जैसे चिकने स्राव के कारण पेशाब का छेद बन्द हो जाने पर इसे देना चाहिये।

फेरम ३०—दर्द आदि बन्द हो जाने के बाद जब केवल दूध जैसा स्राव निकलता हो तब इसे देना चाहिये।

सीपिया ३०—पुराने सुजाक को यह बहुत बढ़िया दवा है। सफेद या पीली आभायुक्त स्राव, किसी तरह की जलन या दर्द का न होना, रातभर सोनेके बाद सुबह मूत्र नालीका मुँह जुड़ जाना इत्यादि।

थूजा ३० या २००—पुरानी बीमारी में इससे भी बहुत लाभ होता है। बारम्बार रोगका आक्रमण, पेशाब के समय जल जाने जैसी जलन, पेशाब करने के बाद ऐसा मालूम होना मानो एक बूंद पेशाब मूत्रनाली में रह गया है, सुजाक के

सूजाकके अन्यान्य उपसर्ग।

सूजाक का रोग होने पर और भी कई उपसर्ग प्रकट होते हैं, जो स्वतन्त्र रोग होनेपर भी इस रोगके साथ प्रायः दिखायी देते हैं। इनका इलाज भी हम यहाँ लिख देना उचित समझते हैं।

कष्टदायक लिंगोत्थान।

(Chordee)

सूजाक की प्रारम्भिक अवस्था में अनेक बार लिङ्गमें बेतरह उत्तेजना उत्पन्न होकर वह इतना कड़ा हो जाता है, उस कड़ाई के कारण तनाहट, दर्द और बहुत कष्ट होता है। रोगके अन्यान्य लक्षणों पर ध्यान रखते हुए इसकी दवा चुननी चाहिये। साधारणतः निम्नलिखित दवाओं से लाभ होता है,—

एकोनाइट ३ या ६—प्रदाह की प्रथमावस्थामें बार बार कष्टदायक लिङ्गोत्थान होने पर इसे देना चाहिये।

जेल्सीमियम २x—यह भी इस रोग का एक बढ़िया दवा है।

मर्क्यूरियस कर ६ या ३०—प्रदाह के समय कष्टकर लिङ्गोत्थान और रक्तस्राव, बारबार पेशाब लगना।

जख्मों का किनारा ऊंचा नहीं रहता। बीचका भाग एक तरह की रसी से भरा रहता है। इन जख्मों से पानी जैसा पतला और कभी कभी पीली आभा वाला पीब निकलता है। इन जख्मों की कोमलता देखकर ही मालूम हो जाता है कि यह कोमल जाति का उपदंश है।

कठिन क्षत उपदंश का विष प्रायः प्रथम सप्ताह में ही प्रकट होता है। कभी कभी अधिक समय भी लग जाता है। पहले पहल जननेन्द्रिय में एक लाल, कड़ी और दर्दहीन फुन्सी दिखायी देती है। बाद को होंठ, जीभ स्तन की भिटनी, उँगली नाभी, ऊरु मलद्वार आदि स्थानों में भी जख्म दिखायी देते हैं। धीरे धीरे यह विष खून और शरीर के तन्तुओं में प्रवेश कर उन्हें भी दूषित कर डालता है। इस रोग में निम्नलिखित तीन अवस्थाएं दिखायी देती हैं—

(१) प्राथमिक अवस्था Primary stage —इस [illegible]वस्था में जख्म होता है। बाद को पहे वा गाढे दहा और [illegible]ड़ा होकर यहा बाघा पड़ा होता है। महीने डेढ़ महीने बाद [illegible]म धीरे धीरे आराम होने लगता है और बाघी भी बहुत [illegible]ती है। अच्छी तरह इलाज न होने पर और रोग बढ़ने [illegible]पर जननेन्द्रिय का कुछ भाग गल कर इस अवस्था में [illegible]ड़ता है। [illegible] सप्ताह से [illegible] महीने तक [illegible] रह सकता है पहले का घाव और बाघी आराम हो [illegible]र न [illegible] द्वितीयावस्था शुरू होती है।

स्टेलिञ्जिया १X या ६–रोग की द्वितीयावस्था में गले और जननेन्द्रिय में जख्म, वात, जोड़ों में सूजन, लाली और दर्द इत्यादि।

सिफिलिनम ३० या २००–गरमी के कारण चर्म-रोग होने पर, रोग पुराना होने पर और जन्म से यह रोग होने पर इस से विशेष लाभ होता है। अन्यान्य दवाओं का सेवन करते समय भी बीच बीच में इसे सेवन करने से काफी लाभ होता है। यह दवा खाने के दो तीन दिन पहले और पीछे दूसरी दवा न खानी चाहिये।

क्युप्रम सल्फ ६ या ३०–मुँह और गले के अन्दर जख्म, संगम की प्रबल इच्छा, पतला पीब, हाथ पैरकी हड्डियों में दर्द, पेशाब बहुत बदबूदार इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

थूजा ६, ३० या २००–लिङ्ग में जख्म और उनसे खून निकलना, गोल गोल ऊँचे और छुमैले जख्म, जख्मों का किनारा लाल फूल गोभी जैसे मसे इत्यादि। नाइट्रिक एसिड के बाद इसे देने से विशेष लाभ होता है।

वायोला ट्राइकलर ६ या ३०–मुँह तालू और गले में जख्म, गरमी, के कारण स्वर भंग, बगल स्तन और योनिद्वार में फुन्सियाँ इत्यादि।

फोस्फरिक एसिड ३० या २००—जख्म असमान होने के कारण जल्दी अच्छा न होता हो तो इसे देना चाहिये। लाइकोपोडियम से भी इस लक्षण में काफी लाभ होता है।

सल्फर ३० या २००—पारे का अपव्यवहार, जख्म में खुजली और पपड़ी, प्रदाह युक्त, कठिन बाघी, माता पिता से बच्चों को वीरासत में इस रोग का मिलना, चुनी हुई दवा से पूरा लाभ न होना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

बेडिआगा ६ या ३०—बच्चोंकी गरमी, गिल्टियों का बढ़ना, बायीं ओर कठिन बाघी और उसमें जलन।

सिनाबेरिस ३०—शिर और बालोंको जड़ में दर्द मालूम होना, दाहिनी आँखमें प्रदाह, खुजली, दबाने जैसा दर्द, जीभ और तालुमें छोटे-छोटे जख्म, पुरुषाङ्ग और लिङ्ग मुण्डके आवरण में सूजन, लाली और खुजली, कष्टकर लिङ्गोत्थान, अण्डकोष कठिन इत्यादि।

कोनायम ६ या ३०—रोशनी भली न मालूम होना, आँखमें पीलापन, कनपटी को गिल्टी प्रदाह, नाकसे पीब निकलना, चेहरे पर जख्म, मसूढ़ों में सूजन और उनसे रक्तस्राव, अण्डकोष में प्रदाह इत्यादि।

कोरालियम ६ या ३०—जिन लोगों को खाज खुजली करती है, उन्हें इस दवासे विशेष लाभ होता है।

जाने पर उसे खूब साफ रखना चाहिये। ज़ख्म में सड़न दिखायी दे तो उसे गरम पानी से साफ कर आयंडोफार्म की बुकनी छिड़कना चाहिये। बाघी अपने आप न फूटे तो डाक्टर से चिरवा देना चाहिये। शोरवा, रोटी, दूध, पूरी हलुआ आदि सुपथ्य हैं।

१७–चर्म रोग।

(.Diseases of the Skin)

शरीर के अन्दर किसी तरह का विष होने पर वह चर्म रोग के रूप में बाहर प्रकट होता है। ऐसी अवस्था में मलहम आदि लगा कर चर्म रोग को दबा देने का अर्थ उस विष को, फिर शरीर में प्रवेश कराना होता है। इसके अतिरिक्त महात्मा हनीमेन ने बहुत छानबीन के बाद स्पष्ट घोषित किया है कि शरीर के भीतर का कोई विषैला रोग आराम होते समय अनेक बार चर्म रोग हो जाया करता है। इसलिये बाह्य प्रयोग की दवाओं से चर्म रोग का दबा देना ठीक नहीं। खोज करने पर यह भी मालूम हुआ है कि मलद्वार के पास के चर्म रोग दबा देने पर यकृत की वृद्धि लिवरगुड या प्लीहा आवरण के चर्म रोग दबा देने पर नपुंसकता, कान के पास भाग के चर्म रोग दबा देने पर बहिरापन और नेत्र रोग, सिर के चर्म रोग दबा देने पर क्षय रोग, बाहु और हाथ के चर्म रोग

कमी की शिकायत समझना चाहिये। आपही आप अनजान में दस्त हो जाना बहुत ही बुरा लक्षण है। यह अकसर मृत्यु सूचक माना जाता है।

मूत्र।

मल की तरह मूत्र पर भी रोग का प्रभाव पड़ता है। पूरी उम्र के स्वस्थ मनुष्यों को दिन रात में एक सेरसे लेकर डेढ़ सेर तक पेशाब होता है। यकृत की बीमारी होनेपर पेशाब का रंग गहरा पीला होता है और उसमें तली भी जमती है। यदि पेशाब वजन में ज्यादा और साफ हो तो स्नायविक बीमारी समझनी चाहिये। पेशाब में रक्त की मिलावट होने से उसका रंग धुमैला हो जाता है। पेट में कृमि होने से पेशाब करने के बाद दूध की तरह या चूने के पानी की तरह सफेद पेशाब होता है। पेशाब में अम्लत्व या एसिड रहने से उसका रंग गहरा लाल हो जाता है। रोग बहुत बढ़ जाने पर पेशाब का रंग काला पड़ जाता है। बुखार मे जब नाड़ी तेज रहती है, तब पेशाब कम और लाल रंग का होता है। मधुमेह की बीमारी होने पर पेशाब में चीनी जाती है और रोगी जहाँ पेशाब करता है वहाँ चिउँटे लगते है।

स्वस्थ अवस्था में पेशाब का रंग सफेद किन्तु कुछ पीला-पन लिये रहता है। वृद्धावस्था में पेशाब अधिक बार होने पर भी परिणाम में कम, बदबूदार और गदला होता है। स्त्रियो

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—गण्डमाला धातुवाले लोगों को यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

साइलीसिया ३०—बारंबार फुन्सियाँ होने के लक्षण में और आर्निका के बाद इसे देने से विशेष लाभ होता है।

कार्बोवेज ६ या ३०—जवानी में चेहरे पर फुन्सियाँ होने पर इसे देना चाहिये।

सार्सापरीला ३ या ६—बारंबार फुन्सियाँ होने की यह भी अच्छी दवा है।

एसिड फस ३०—यौवनावस्था में हस्तमैथुन या इन्द्रिय सेवा के कारण चेहरे पर फुन्सियाँ निकलती हों तो इसे देना चाहिये।

आवश्यक सूचना—फुन्सीमें बहुत दर्द हो और जल्दी न फूटे तो पुल्टिस चढ़ानी चाहिये। आर्निका मदरटिंक्चर पानी में मिलाकर फुन्सी पर लगाने से वह अपने आप फूट जाती है।

मुँहासे।

(Puberty Boils)

युवावस्था में युवक युवतियों के चेहरे, नाक और कपाल आदि स्थानों में छोटी छोटी फुन्सियाँ निकलती हैं जो मुँहासे कहलाती हैं। फुन्सियाँ पकने पर इनसे कील निकलती है।

मर्क्युरियस सल ६ या ३०—फोड़ा फूटने और बहने पर भी अगर कड़ा बना रहे तो इसे देना चाहिये।

साइलीसिया ३०—फोड़ा बहुत दिनों तक बहता रहे और जख्म जल्दी न भरे तो इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३०—फोड़ा सड़नेके लक्षण, बदबूदार पानी जैसा खून मिला पीब निकलना, बहुत जलन, कमजोरी इत्यादि।

अर्निका ३०—गरमी के दिनों में जो साधारण फोड़े होते हैं, उनमें इसे देना चाहिये।

फोस्फरस ६ या ३०—स्तनके फोड़ा होने पर आरम्भ में ही इसे देने से प्राय पीब नहीं पड़ने पाता।

फाइटोलेका १ या ३०—स्तनके फोड़ेमें इससे भी काफी लाभ होता है।

लेकेसिस ६ या ३०—जख्म सड़ने की संभावना, जख्मका रंग काला हो जाना, उसमें जलन और दर्द होना इत्यादि लक्षणों में और आर्सेनिक से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

सल्फर ३०—पुराने फोड़ेमें या बारंबार फोड़ा होने पर इसे देना चाहिये।

एपिस ६ या ३०—फोड़ेमें जलन और डंक मारने जैसा दर्द इत्यादि।

रसटक्स ६ या ३०—बगल या कर्णमूलकी गिल्टिय का प्रदाहित होकर फोड़ेके रूप में परिणत होजाना, स्पर्श करनेसे दर्दका बढ़ना, खूनमिला पीव, स्राव, डंक मारने या चिबाने जैसा दर्द, सूजन और लाली इत्यादि।

टेरेन्टुला ६ या ३०—फोड़ेमें, दर्द, सड़ने, की सम्भावना, पासकी गिल्टियोंका प्रदाहित हो उठना इत्यादि।

साधारणतः पीव पैदा होनेके पहले एकोनाइट, बेलेडोना और मर्क्युरियस पीव पैदा होनेके समय हिपर सल्फर, साइ-लीसिया और आर्सेनिक,पीव पैदा होने के बाद सल्फर,कल्के-रिया फार्ब, चायना और एसिडफस, गर्दन और कर्णमूलकी गिल्टियां प्रदाहित होने पर मर्क्युरियस, डालेमारा, और कल्केरिया कार्ब आदि दवाओंसे विशेष लाभ होता है। कान की जड़में फोड़ा होने पर मर्क्युरियस पाइयल मलद्वारमें होने पर साइलीसिया और खून खराब हो जाने पर पाइरोजेन व्यवहार किया जाता है।

आवश्यक सूचना—केलेण्डुला मदर टिञ्चर दसगुने गरम पानी में मिलाकर उसका बाह्य प्रयोग करने से पुल्टिस का काम निकलता है। फोड़ा फूटने के बाद केलेण्डुला मलहमका बाह्य प्रयोग किया जा सकता है।

पीठका फोड़ा या कार्बङ्कल।

(Carbuncle)

इसे पृष्ठव्रण या पृष्ठाघात भी कहते हैं। यह फोड़ा कमर पीठ या गर्दन के पिछले भागमें होता है। यह गोल और चिपटा होता है। अन्यान्य फोड़ों की तरह इसमें केवल एकही मुँह नहीं होता। इसमें चलनीकी तरह पास पास बहुत से मुँह या छेद होते हैं, इसलिये यह देखने में मधुमक्खी के छत्ते जैसा दिखायी देता है।

यह रोग प्रायः २५ वर्षसे अधिक उम्रके आदमियों को होता है। मधुमेहकी बीमारीवालोंको यह विशेष रूपसे होता है। खूनकी खराबी और शारीरिक अवस्था भी इसका कारण हो सकती है। वृद्ध और मधुमेहके रोगियों को यह रोग होने पर इसका नतीजा प्राय बुरा होता है।

यह रोग होने पर पहले आक्रान्त स्थानमें बहुत जलन और दर्द होता है। इसके बाद उस स्थानमें प्रदाह आरम्भ होकर वह स्थान फूला हुआ कड़ा और लाल या बैगनी रंगका हो जाता है। फिर इस स्थान में सफेद या पीली पीली फुन्सियाँ दिखायी देती हैं। फुन्सियाँ फूट फूट कर उस स्थान में छेद होते जाते हैं। इन छेदों से लसदार रस निकला करता है। धीरे धीरे यह सूजन चारों और बढ़ती जाती है और

जाना, बोलनेमें कमजोरी मालूम होना, नींद न आना, जख्म किनारे डंक मारने जैसी जलन।

साइलीसिया ३० या २००–मध्यम प्रकार का दर्द और जलन, शिरकी गरमी और अस्थिरता के कारण सो न सकना, शिरमें पसीना, नासूर होने की सम्भावना, जख्मका जल्दी न भरना इत्यादि लक्षण में इसे देना चाहिये।

लेकेसिस ६ या ३०–जख्म पर नीले नीले दाग या फुन्सियाँ, बड़े छेदके आसपास छोटे छोटे छेद, सड़ने वाला कार्बङ्कल इत्यादि।

एन्थ्रासिन ६ या ३०–कार्बङ्कलमें बहुत जलन, सड़कर मांसका गिरना, जख्म पैदा करने वाला पतला पीब निकलना, इत्यादि लक्षणों में और आर्सनिक से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

एपिस ६ या ३०–जहरवात जैसा कार्बङ्कल में जलन और डंक मारने जैसा दर्द।

नाइट्रिक एसिड ६ या ३०–जख्मका सड़ना और उस से रक्तस्राव होना, बहुत कमज़ोरी, रातमें पसीना, उपदंश या पारेका दोष।

म्युरियेटिक एसिड ६ या ३०–जख्मका सड़ना, मसूड़े में जख्म और उससे खून निकलना, गन्दा पेशाबका होना, अधिक

तादादमें साफ पेशाव होना इत्यादि लक्षणोंके साथ कार्वङ्कल होने पर इसे देना चाहिये।

रसटक्स ६ या ३०—कार्वङ्कलके चारों ओर जलन और खुजली, शिरमें चक्कर, चेहरा फीका, वहुत वेचैनी, हिलने डोलनेसे आराम मालूम होना इत्यादि।

कार्वोवेज ६ या ३०—काले या नीले रंगका कार्वङ्कल, उसमें से सड़न जैसी वद्‌वू, चेहरेका विगड़ जाना, खूनका खराव होजाना इत्यादि।

वेलेडोना ३ या ६—फोड़ेका रंग चमकीला लाल, उसमें दपदपी, ज्वरभाव और शिरदर्द अच्छी तरह नींद न आना इत्यादि।

टेरेन्टुला ३०—इसे देनेसे दर्द और तकलीफ कम हो जाती है।

आवश्यक सूचना-फोड़ेमें पीव पड़ने लगे और वहुत दर्द हो तो तीसीकी पुल्टिस चढ़ानी चाहिये। आसानी से न फूटने पर चिरवा देना चाहिये। जख्म पर कोयले का चूरा छिड़क देनेसे उसका सड़ना और उसमें से वद्‌वू का निकलना वन्द हो जाता है। नीमके पत्ते उवाल कर उसी पानी से जख्म धोने और घीमें नीमके पत्ते पकाकर उसे जख्म पर लगाने से लाभ होता है।

खुजली और खसड़ा।

(Itches and Scabies)

खुजली दो तरह की होती है—सूखी और तर। तर खुजली को लोग खसड़ा या कलकल भी कहते हैं। यह दोनों तरह की खुजली एक तरह के जीवाणु के कारण उत्पन्न होती है। जीवाणु की मादा चमड़े के नीचे प्रवेशकर वहाँ अण्डे देती है इसीसे प्रदाह उत्पन्न होता है।

सूखी खुजली में छोटे छोटे दाने पड़ते हैं उनमें बहुत खुजली होती है, खुजलाते खुजलाते उनका मुँह फट जाता और उनमें पानी जैसा या खून मिला रस निकलता है। इस के बाद उन पर पपड़ा पड़ जाता है। अनेक बार इन दानों में पीब पैदा होकर सूखी खुजली तर खुजली के रूप में परिणत हो जाती है। तर खुजली में दाने बड़े बड़े होते हैं [illegible] पीब भरा रहता है अथवा वह [illegible] फफोले पड़ जाते हैं। [illegible] कलाई, अंगुलियों के [illegible] कुहनी, [illegible] और नितम्ब आदि स्थानों में इसका आक्रमण [illegible] है [illegible]

चिकित्सा।

[illegible]

सल्फ्युरिक एसिड ६ या ३०—हरसाल वसन्त ऋतु में खसड़ा होने पर अथवा रोग पूरी तरह आराम न होने के कारण दुबारा होने पर इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३०—टेहुने में खसड़ा, उसमें जलन और खजली, गरम प्रयोग से आराम मालूम होना।

रसटक्स ६ या ३०—लाल रंग के रसभरे दानों में इसे देना चाहिये।

फेगोपाइरम ३ या ६—समूचे वदन में बहुत खुजली होने के कारण रोगी पागल हो उठे तो इसे देना चाहिये।

मेजेरियम ६ या ३०—शरीर के किसी स्थान में बहुत खुजली, खुजलाते खुजलाते वहाँ खून निकाल देना इत्यादि।

डलिकस ३—पीठ या शरीर का अन्य भाग खुजली के कारण दीवार या किंवाड़े आदि कड़ी चीजों से रगड़ना, इसने आराम मालूम होना इत्यादि।

इग्नेशिया ३—वदन में खुजली खुजलाने पर उस स्थान मे मच्छड़ काटने की तरह फूल उठना।

आवश्यक सूचना—खुजली और खसड़ा स्पर्शात्मक रोग है, इसलिये रोगी का कपड़ा, अँगौछा या विछौना आदि चीजें व्यवहार में न लानी चाहिये। नीम के पत्ते उबाल कर

से सट जाना, छोटे बच्चों के चेहरे पर खुजली होना, पीबदार फुन्सियाँ होना, चमड़े पर लाल रंग का प्रदाह होकर उसपर फुन्सियाँ या खुजली होना, बड़ी बड़ी पपड़ी के साथ खुजली होना, रसपूर्ण फुन्सियाँ होना, जाँघ के पट्टे में खुजली सी होना, पैर में पपड़ीदार खुजली होना, हाथ या पैर के तलवे से रूसी या छाल सी निकलना, स्त्रियों के स्तन की घुण्डी या भिटनी में एक तरह का जख्म होना, पसीना या पानी लगने के कारण पैर की उँगलियों के बीच में खुजली और जख्म सा हो जाना आदि सभी रोग एकज़िमा के अन्तर्गत हैं। हमारे यहाँ यह सब रोग भिन्न भिन्न नामों से पहचाने जाते हैं यथा,- शिर में एकज़िमा होने पर गंज और रूसी, हाथ में एकज़िमा होने पर छाजन और अपरस, कान के पीछे होने पर कानचटा पैर की उँगलियों में होने पर पानी लगना या खरवा होना इत्यादि। पाठकों को इस तरह के विभिन्न चर्म रोगों की दवा इसी परिच्छेद की दवाओं से चुनना चाहिये।

कंठमाला धातु, कब्जियत या अजीर्ण रोग, पेशाब में अधिक क्षार रहना, गठिया या वात रोग, अयोग्य आहार, पेट में कृमि होना, अधिक सरदी या गरमी लगना, अधिक पसीना आना, पारे का अपव्यवहार, शरीर में गरमी या सुजाक का विष होना इत्यादि अनेक कारणों से यह रोग होता है। यह शरीर के भिन्न भिन्न स्थानों में भिन्न-भिन्न रूप में प्रकट होता

ग्रेफाइटिस ६—तलहत्थी, कान का पिछला भाग, हाथ की उँगलियाँ, सन्धि स्थान, ठेहुनी और केहुनी आदि स्थान के एकजिमा में इससे लाभ होता है।

हिपर सल्फर ३०—पारे के अपव्यवहार के कारण यह रोग होना, फुन्सियों से पीब या रस निकलना, खुजली इत्यादि।

स्टेफीसेग्रिया ३०—पीब भरी फुन्सियाँ, उनसे रस और पीब निकलना, खुजली शुरू होने पर बहुत देर तक खुजलाने के लिये मजबूर होना, एक स्थान खुजलाते २ दूसरे स्थान का खुजला उठना इत्यादि।

एल्युमीना ३०—सूखा, गरम और लाल रंग का पुराना एकज़िमा, साथ ही गठिया रोग की शिकायत इत्यादि।

पेट्रोलियम ६—फटे हुए खून जैसे रंग के अण्डकोष के एकजिमामें इससे लाभ होता है। अण्डकोष के एकजिमा में हिपर सल्फर भी दिया जाता है।

आर्टिका यूरेन्स ३ X—जलन, डंक मारने जैसा दर्द, बहुत खुजली इत्यादि।

मर्क्युरियस सल ६ या ३०—जरा सा खुजलाते ही उसके चारों ओर प्रदाह जैसा हो जाना, जलन, पीले रंग की पपड़ी पड़ना, कान के पिछले भाग में एकजिमा इत्यादि।

एन्टिमटार्ट ६ या ३०—फुन्सी मे बहुत पोब होने पर इसे देना चाहिये।

वोविष्टा ६—तलहत्थी के पीछले भाग में एकजिमा होने पर इसे देना चाहिये।

गीली पपड़ी पड़ने पर—ग्रेफाइटिस, लाइको, सोरिनम, रसटक्स, रूटा, साइलिसिया, सलफर, हिपर, नेट्रूमम्यूर, थूजा, स्टेफीसाइग्रिया इत्यादि।

गीली और बदबूदार पपड़ी पड़ने पर—ग्रेफाइटिस, लाइकोपोडियम, मर्क्युरियस, नेट्रमम्यूर, ओलियेन्डर, रस टक्स, साइलीसिया।

सूखी पपड़ी पड़ने पर—आर्सेनिक, कल्केरिया, मर्क्युरियस साइलीसिया, सीपिया, सल्फर।

तर एकजिया—कल्केरिया कार्ब, क्लिमेटिस, [illegible] मारा, ग्रैफाइटिस, हिपरसल्फर, लाइकोपोडियम, मर्क्युरियस, मेजेरियम, नेट्रम म्यूर, फाइटोलेका, रसटक्स सीपिया, साइलीसिया, स्टेफीसेग्रिया, सल्फर।

सूखा एकजिमा—आर्सेनिक बेलाइटा, कल्केरिया, [illegible] रिया, फ्लोरिक एसिड, कल्की कार्ब, लाइको, सीपिया, साइलीसिया, सल्फर।

[illegible] घाव होना—आर्सेनिक क्लिमाटिस, [illegible] टिस, आर्निका, नट्रम, सल्फर।

रोगी परीक्षा।

अब हम यहाँ कुछ ऐसी बातें अंकित करना चाहते हैं, जिससे रोग की अवस्था भली भाँति समझी जा सके और रोग के बारीक से बारीक लक्षणों को ध्यान में रख कर दवा का चुनाव किया जा सके। यदि रोगी सामने हो तो चिकित्सक को चाहिये कि स्वयं देख भाल कर तथा रोगी से भली भाँति पूछ कर इन लक्षणों को समझ ले। यदि रोगी एक जगह तथा चिकित्सक दूसरी जगह हो तो रोगी को चाहिये कि निम्नलिखित बातों में से अधिक से अधिक बातों का पता लगाकर वह डाक्टर को लिख भेजे, ताकि उसका इलाज अच्छी तरह हो सके और वह जल्दी आराम हो जाय।

यहाँ चिकित्सक को यह ध्यान में रखना चाहिये, कि सब से पहले रोगी को अपनी अवस्था बतलाने का मौका देना चाहिये। यदि रोगी न बतला सके तो उसके पास रहनेवाला आदमी बतला सकता है। जब वह हाल बतला चुके तब स्वयं चिकित्सक को तरह-तरह के प्रश्न पूछ कर जरूरी बातों का पता लगा लेना चाहिये। रोग के कुछ लक्षण ऐसे होते हैं जिन्हें रोगी ही अनुभव करता है। यदि वह न बतलाये तो चिकित्सक उन्हें नहीं जान सकता। दर्द, मिचली, बेचैनी, मृत्युभय इत्यादि ऐसे ही लक्षण हैं। इन्हें प्रश्नगत या सबजेक्टिव (subjective) लक्षण कहते हैं। ऐसे लक्षणों का पता

ओर अधिक तकलीफ, हाथ और छाती से पित्ती का शुरू होना, खुली हवा में तकलीफ का बढ़ना, तेज और चिड़चिड़े स्वभाव के आदमियों को यह रोग होना।

एलियम सिपा ६ या ३०—जुकाम के साथ यह रोग होना, जाघों में पहले पहल पित्ती का निकलना, खुली हवा में आराम मालुम होना, निद्रालु, डरपोक और उत्कंठित प्रकृति के लोगों की बीमारी।

नक्सवोमिका ३०—शराबियों की बीमारी में इस दवा से विशेष लाभ होता है।

आर्सेनिक ६ या ३०—कच्चे फल खाने के कारण यह रोग होना अथवा बहुत तेज बीमारी, रात में तकलीफ का बढ़ना, क्रुप जैसी खाँसी, रोग का एकायक दब जाना।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—ठंढे पानी से नहाने के बाद तुरन्त ही पित्ती निकले तो इसे देना चाहिये।

स्पिरिट कैम्फर—खट्टे फल या खटाई खाने के बाद यह रोग होने पर इसको एक बूँद चीनी या बतासे पर डाल कर देने से अनेक बार बहुत लाभ होता है।

रसटक्स ६ या ३०—जलन और खुजली, चमड़ा फूला और लाल, पानी में भीगने के कारण यह रोग होना, ठंढी हवा में तकलीफ का बढ़ना, चलने फिरने से आराम, वात रोग के साथ यह रोग होना।

परिणत हो जाता है। खराब ढंग के जख्म देरी से आराम होते हैं।

चिकित्सा।

पारे या गरमी का दोष होने पर—हिपरसल्फर, अरम मेट, लेकेसिस साइलीसिया, केल हाइड्रो नाइट्रिक एसिड।

खराब जख्म—नाइट्रिक एसिड, कस्टीकम, कार्बोवेज आर्सेनिक, लाइकोपोडियम, साइलीसिया।

नासूर जैसे जख्म—साइलीसिया, कल्केरिया, लाइको-पोडियम, फास्फरस, एसिड फस, सल्फर, कार्बोवेज कस्टीकम आर्सेनिक, ग्रेफाइटिस, लेकेसिस, मेजेरियम, हाइड्रैस्टिस, सल्फ्युरिक एसिड, एसिड नाइट्रिक, मर्क्युरि-यससल इत्यादि।

सड़नेवाले जख्म—कार्बोवेज, लेकेसिस, आर्सेनिक, सल्फर, लाइको पोडियम साइलीसिया।

गहरे जख्म—साइलीसिया, सल्फर, आर्सेनिक कल्केरिया रसटक्स, लेकेसिस।

चिपटे जख्म—सल्फर, आर्सेनिक, लाइकोपोडियम कार्बोवेज एसिड फस, नाइट्रिक एसिड।

आवश्यक सूचना—ठंढा और सर्दी से बचना चाहिये। सुसुम पानी से नहाना, हलकी चीजें खाना, नींबू काटकर उससे बदन घिसना और कमली ओढ़ना इस रोग में लाभदायक है।

जख्म या घाव।

(Ulcer)

कट जाना, चोट लगना, जल जाना, प्रदाह होना, गण्डमाला, गरमी या पारे का दोष होना इत्यादि अनेक कारणों से शरीर के किसी भी स्थान में घाव या जख्म हो सकता है। घाव होने पर चमड़ा फट जाता है और वह स्थान पक कर उससे पीव निकलता है। साधारण घाव होने पर वह आसानी से भर जाता है शरीर में कोई विष या दोष होने पर घाव जल्दी नहीं भरता। किसी किसी जख्म में विशेष दर्द या तकलीफ नहीं होती। किसी जख्म में तरह तरह का दर्द, सूजन, लाली गरमी आदि लक्षण दिखायी देते हैं। किसी जख्म का किनारा ऊँचा होता है और उसमें स्पर्श का ज्ञान नहीं होता। कोई जख्म पचन शील होते हैं। इनका मांस सड़ सड़ और गल गल कर पीव के साथ निकलता है या वैसे ही गिरता है। जख्म पुराना हो जाने पर, खास कर उस स्थान का जख्म, जहाँ अधिक मांस नहीं है, नासूर के रूप में

परिणत हो जाता है। खराब ढग के जख्म देरी से आराम होते हैं।

चिकित्सा।

पारे या गरमी का दोष होने पर—हिपरसल्फर, अरम मेट, लेकेसिस, साइलीसिया, केल हाइड्रो नाइट्रिक एसिड।

खराब ज़ख्म—नाइट्रिक एसिड, कस्टीकम कार्वोवेज आर्सेनिक, लाइकोपोडियम, साइलीसिया।

नासूर जैसे जख्म—साइलीसिया, कल्केरिया, लाइको-पोडियम, फास्फरस, एसिड फस, सल्फर, कार्वोवेज कस्टीकम आर्सेनिक, ग्रेफाइटिस, लेकेसिस, मेजेरियम, हाइड्रेस्टिस, सल्फ्युरिक एसिड, एसिड नाइट्रक, मर्क्युरियससल इत्यादि।

सड़नेवाले जख्म—कार्वोवेज, लेकेसिस, आर्सेनिक, सल्फर, लाइको पोडियम, साइलीसिया।

गहरे जख्म—साइलीसिया, सल्फर, आर्सेनिक कल्केरिया, रसटक्स, लेकेसिस।

चिपटे जख्म—सल्फर, आर्सेनिक, लाइकोपोडियम कार्वोवेज एसिड फस, नाइट्रिक एसिड।

फूले हुए जख्म--सल्फर, साइलीसिया, रसटक्स, लाइकोपोडियम, सीपिया।

ऊँचे किनारे का जख्म--सल्फर, कल्केरिया, साइलीसिया, आर्सेनिक, लाइकोपोडियम लेकेसिस, रसटक्स।

जख्म से पीला पीव निकलना—सल्फर, कल्केरिया, साइलीसिया, हिपर सल्फर।

जख्म से पतला पीव निकलना--साइलीसिया, सल्फर आर्सेनिक, कार्बोवेज, लेकेसिस, लाइकोपोडियम।

जख्म से खून निकलना--फोस्फरस, लेकेसिस, सल्फर आर्सेनिक, कार्बोवेज, लाइकोपोडियम, साइलीसिया, हिपर सल्फर।

आर्सेनिक ६ या ३०—जख्म में बहुत जलन, खून बहना, आसपास का स्थान कड़ा हो जाना, गरम मालूम होना, खून मिला या काले रंग का पीव निकलना।

नाइट्रिक एसिड ६—पारे या गर्मी का दोष होने पर इसे देना चाहिये।

हाइड्रेस्टिस १ या ३—नाक, मुंह आदि इत्यादि स्थानों के जख्म में इससे विशेष लाभ होता है। मुँह के जख्म में इसका लोशन बनाकर उससे कुल्ला करना चाहिये।

ग्रेफाइटिस ६—बदबूदार गाढ़ा पीव बहना, जख्म में

खुजली या डंक मारने जैसा दर्द जख्मवाले स्थान का मांस बढ़ना, नासूर जैसा जख्म ।

लेकेसिस ६ या ३०--सड़ने वाला या नासूर जैसा घाव, घाव के चारों ओर छोटी छोटी फुन्सियाँ, बदबूदार पीब निकलना ।

मेज़ेरियम ६ या ३०—तमाहट, ज़रा में ही खून निकलना, रात में तकलीफ का बढ़ना, पीब जमकर पपड़ी पड़ना, उसके नीचे पीब का संचित रहना ।

सल्फ्युरिक एसिड ६—खुजली, टपक या काटने जैसा दर्द, हाथ लगाने से ज़रा में ही खून का निकल पड़ना खून में खट्टी गन्ध, हड्डी तक पहुँचे हुए पचनशील नासूर इत्यादि ।

मर्क्युरियस सल ६—गहरा घाव किनारे ऊंचे, लाल, छूने से दर्द का बढ़ना घाव से खून गिरना इत्यादि ।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—गण्डमाला धातु ज़रा में ही ज़ख्म होना और उसमें पीब का पड़ जाना नासूर जैसा ज़ख्म उसके आसपास लाल ।

हिपर सल्फर ६, ३० या २००—ज़ख्म से बदबूदार पीब निकलना स्पर्श बरदाश्त न होना टपक मारने जैसा दर्द पारे का दोष ज़ख्म के चारों ओर फफोला [illegible] ।

लाइकोपोडियम ६ या ३०—पैर में पुराना ज़ख्म उसमें रात के समय फटने जैसा दर्द, नासूर, ज़ख्म का किनारा कड़ा, लाल और उलटा हुआ, धोने के समय जलन और रक्त-स्राव।

साइलीसिया ३० या २००—गहरा घाव, काले रंग का घाव, उससे खून निकलना, नासूर या सड़नेवाला ज़ख्म, पुराना ज़ख्म, बदबूदार पतला पीब निकलना, घाव भरने में देरी लगना इत्यादि। घाव को जल्दी भरने की और नासूर की यह बढ़िया दवा है।

सल्फर ३० या २००—ज़ख्म का किनारा ऊंचा और फूला हुआ, ज़रा में ही खून बहने लगना, ज़ख्म के चारों ओर फुन्सियाँ, फटने या डंक मारने जैसा दर्द, बदबूदार पीब निकलना, नासूर, शोथ, गाढ़ा और पीला पीब निकलना इत्यादि।

कार्बोवेज ६ या ३०—बदबूदार ज़ख्म, उससे खून या ज्वाला कर बदबूदार स्राव निकलना, जलन के साथ दर्द, कठिनाई से आराम होने वाला पचनशील ज़ख्म इत्यादि।

आर्निका ६ या ३०—नीले रंग का ज़ख्म और ज़रा में ही खून निकलना, चोट लगने के कारण ज़ख्म होना इत्यादि।

कैलेण्डुला मदर टिंचर—ज़ख्मों के लिये बाह्यप्रयोग की यह एक बढ़िया दवा है। इसमें अठगुना जल मिला कर

जख्मों में लगाने से जख्म जल्दी भर जाते है। एक औंस केलेण्डुला मदर टिंचर आधासेर पानी में मिलाने से इसका लोशन या धावन तैयार होता है। इसमें साफ कपड़े की पट्टी भिगोकर सड़ने वाले जख्मों पर चढ़ाने से उनका सड़ना बन्द हो जाता है।

कुछ खास दवाएँ—घाव में यदि जलन हो तो सबसे पहले आर्सेनिक दीजिये जलन के साथ बदबू भी हो तो कार्बोवेज। घाव फैल रहा हो या उसके आस पास छोटी छोटी फुन्सियाँ या जख्म हों तो लेकेसिस। जलने के कारण फफोलेवाले जख्मो में साइलीसिया। जख्मों पर नीले धब्बे हों और गरमी बरदाश्त होती हो तो आर्सेनिक, लेकिन गरमी से दर्द बढ़ता हो तो सिकेली। मसे या घट्टों के आस पास जख्म हों तो एन्टिमक्रूड।

इनके अतिरिक्त फोस्फरस, केली बाइक्रोम, पियोनिया, हेमामेलिस, केली आयोड, क्रोटेलस, कैल्क फ्लोर, थूजा, एन्थ्रासिनम, सार्सापरीला, रसटक्स, सोरिनम, चायना, कल्केरिया फस, और आर्सेनिक आयोड आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—जख्मों को बाहरी चोट से बचाने के लिये उन पर साफ रूई या बोरिक काटन आदि रखकर बाँध रखना चाहिये। दिन में कम से कम एक बार कैलेण्डुला

धावन या नीम के पत्ते उबाल कर उसके पानी से जख्म अच्छी तरह धोकर पोछ देना चाहिये। घी में नीम के पत्ते पका कर उस घी को जख्म पर लगाने से या केलेण्डुला का तेल लगाने से जख्म जल्दी सूख जाते हैं। मांस, मछली, खटाई और मिठाई खाना ठीक नहीं। दाल, रोटी, दूध, हलुवा और शोरवा आदि चीजें सुपथ्य हैं। जख्म को बहुत जल्दी सुखा देने वाले मलहम आदि व्यवहार करने से अनेक बार हानि होती है। विकट जख्मों का इलाज चिकित्सकों से ही कराना अच्छा है।

कैन्सर या कर्कट रोग।

(Cancer)

खून की खराबी, मानसिक चिन्ता और कष्ट, कमजोरी अधिक परिश्रम करना इत्यादि कारणों से यह रोग होता है। यह रोग होने पर शरीर के किसी भी स्थान में किसी भी आकार का अर्बुद उत्पन्न होता है। स्त्रियों के जरायु और स्तन में तथा पुरुषों के पाकाशय, अस्थि और चर्म पर यह रोग विशेष रूप से प्रकट होता है। एकबार कैन्सर होने पर यह उसी स्थान में या दूसरे स्थान में बारंबार हुआ करता है। दर्द, घाव, सूजन इत्यादि इस रोग के स्थानिक लक्षण हैं। वृद्धावस्था में कैन्सर होने पर रोगी की प्रायः मृत्यु हो जाती है।

रोगी से पूछ-पूछ कर चिकित्सक को अवश्य लगा लेना चाहिये। जो लक्षण बाहर से प्रत्यक्ष दिखाई देते हैं और जिनके लिये रोगी से पूछ ताछ करने की जरूरत नहीं रहती, उनको प्रत्यक्ष या आवजेक्टिव (Objective) लक्षण कहते है। चतुर चिकित्सक ऐसे लक्षणों को पहली ही नजर में ताड़ लेता है।

अच्छी तरह इलाज करने के लिये निम्नलिखित बातों की जॉच करनी आवश्यक है:—

(१) रोग का कारण, रोग क्यों हुआ ? सरदी गरमी से हुआ, खान पान के दोष से हुआ या शरीर में किसी रोग का विष प्रविष्ट होने से हुआ ? रोग कितने दिनों से है ? इस रोग के पहले किसी और रोग की शिकायत थी या नहीं ? रोग घट रहा है या बढ़ रहा है ? रोग की मौजूदा हालत क्या है ? ध्यान रहे, अनेक बार केवल रोग का कारण जान कर ही दवा देने से रोग आराम हो जाता है, इसलिये रोग के कारण की जॉच सब से पहले होनी चाहिये।

(२) रोग का कोई इलाज किया गया था या नहीं ? यदि किया गया था तो किसके द्वारा ? वह इलाज डाक्टरी (एलापैथी) था या वैद्यक या हकीमी ? उसमें कौन दवा दी गयी थी ?

(३) रोग होने पर अथवा रोगके पहले कोई टीका या इन्जेकशन तो नहीं दिया गया था ? कोई तेज बीमारी या

चिकित्सा ।

आर्सेनिक ६—कैन्सर की यह एक वढ़िया दवा है। जलन,प्यास, वेचैनी वुखार, शरीर की क्षीणता इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये ।

आर्सेनिक आयोड ३ X—जलन के साथ दर्द रात के समय और शीतलता से दर्द का वढ़ना गरमी में आराम मालूम होना ।

कल्केरिया कार्ब ३०—कैन्सर में सड़न, पीले रंग का वदवूदार पीव निकलना, शरीर का क्षीण होते जाना इत्यादि ।

लेकेसिस ६ या ३०—अर्बुद के स्थान में जख्म, उसके चारों ओर का चमड़ा काला, हाथ लगानेसे जलन और दर्द।

साइलीसिया ६ या ३०—अन्यान्य दवाओं से रोग पूरा पूरा आराम न होने पर इसे देना चाहिये । इसके वाद सल्फर देने से रोग अक्सर अच्छा हो जाता है ।

फाइटोलेका १ X—स्त्रियों के स्तन में कैन्सर, सूजन और कड़ापन इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये ।

एपिस ६—गहरा घाव चारों ओर के किनारे ऊंचे और सड़े हुए सफेद मांस युक्त जलन खुजली, डंक मारने जैसा दर्द, पीला पीव निकलना, प्यास न होना ।

बेलेडोना ६—आक्रान्त स्थान में हाथ रखने से जलन, जख्म पर लाल पपड़ी बुखार और रक्तस्राव इत्यादि।

हाइड्रेस्टिस २ X—दुवला पतला शरीर, फीका और पीला चेहरा, अवसन्नता, कब्जियत इत्यादि लक्षणों में इससे लाभ होता है।

कोनायम ३०—चोट आदि लगने के कारण छाती में अर्बुद होने पर इसे देना चाहिये।

बेराइटाकार्ब ६—बूढ़ोंको बीमारी, अर्बुद का धीरे धीरे बढ़ते जाना इत्यादि।

केलोसियेनेटम ३—जीभ के अर्बुद में इससे लाभ होता है।

कार्बोएनीमेलिस ६—पाकाशय में कैन्सर, अर्बुद कड़ा और वेदना पूर्ण, अर्बुद के वाहरी स्थानमें जख्म, अजीर्णता, पेटमें वायु संचय और पतले दस्त इत्यादि।

इनके अतिरिक्त फोस्फरस, कंडयुरेंगो, एसिड कार्बोलिक, रूटा, आयोडियम, केली ब्रोम, सिकेलो, क्रियोजोट, सल्फर सेङ्गइनेरिया, केल्कआयोड, युफोर्बिया, एकिन्नेसिया और प्लाटिना आदि दवाओंसे भी लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—अर्बुद बराबर बढ़ता जा रहा हो तो चिरवा देना चाहिये, लेकिन यदि समचे शरीरका खून दूषित

पल्सेटिला ६ या ३०—हार्पिस के साथ पाकाशय में गोलमाल, शाम के वक्त तकलीफ का बढ़ना, कोमल और क्रन्दनशील प्रकृति इत्यादि।

स्टेफीसेग्रिया ६ या ३०—जोड़ों के नीचे, हाथ जाँघ, और पैरमें हार्पिस, उसपर सूखी पपड़ी, एक स्थान में खुजलाते खुजलाते दूसरे स्थान में खुजली का शुरू हो जाना इत्यादि।

थूजा ३० या २००—खुजलाने से जलन, शरीर में सुजाकका विष होनेके कारण यह रोग होना।

जिङ्कम ६ या ३०—आक्रान्त स्थान में सुई चुभोने जैसा,,दर्द, फुन्सियों में पीव इत्यादि।

रेननक्युलस बल्बोसस ६ या ३०—हार्पिसके साथ पसलियोंमें शूल वेदना, खुजली, छालोंसे दाह और पतला रस निकलना।

आवश्यक सूचना—कुम्हार के भट्टे की मिट्टी छालों पर लगाने से छाले सूखते हैं। और आक्रान्त स्थान के चारों ओर लगाने से नये छालों का उत्पन्न होना रुकता है। आजमाना चाहिये।

—

हिपर सल्फर ६—बहुत तेज दर्द और पीव पड़ने की सम्भावना दिखायी देने पर इसे देना चाहिये। इससे अगर जरा भी लाभ न हो तो कस्टिकम ६।

साइलीसिया ३०—हिपर से कुछ लाभ होने पर इसे देना चाहिये। इससे सूजन और दर्द आराम हो जाता है।

लेकेसिस ६ या ३०—आक्रान्त स्थान का रंग गहरा लाल या नीली आभायुक्त होने पर इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३०-बहुत जलन, तेज दर्द और आक्रान्त स्थान का रंग काला हो जानेपर इससे लाभ होता है।

एन्थ्रासिनम ६ या ३०—भयंकर जलन के साथ मांस सड़ सड़कर गिरता हो तो इसे देना चाहिये।

एपिस ६ या ३०—जलन के साथ डंक मारने जैसा दर्द होने पर इससे लाभ होता है।

लिडम ६—सुई, कोई नोंकदार चीज या फॉस लगने के बाद यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

आवश्यक सूचना—यदि पीव पड़ने लग जाय तो तीसी की पुल्टिस चढ़ा कर शीघ्र पका देना चाहिये। अपने आप न फूटे तो चीरा लगवा देना चाहिये। इससे तकलीफ घट जाती है। बारंबार यह रोग हो तो सल्फर ३० और साइ-

पाइपर मिथिष्टिकम ६—रोग के आरम्भ में जब छोटे छोटे दाग दिखायी दें, तब इसे देना चाहिये।

हिपर सल्फर ६ या ३०—पारे या गरमी का शरीर में होने पर इसे व्यवहार करना चाहिये।

इनके अतिरिक्त, कार्बोवनी, मर्क्युरियस, अर्जेण्टम सल्फर और साइलीसिया आदि दवाएँ भी व्यवहार की जाती हैं।

उँगली पकना।

(Whitlow)

इस रोग को चलोया निकलना भी कहते हैं। यह रोग होने पर उँगली का अग्रभाग पक जाता है और उसमें बहुत [illegible] जैसा अथवा [illegible] जैसा [illegible] होता है। [illegible] पक जाने पर रोग आराम हो जाता है, [illegible] उँगली का कुछ अंश गल कर नष्ट हो जाता है [illegible] के लिए टेढ़ा हो जाता है।

चिकित्सा।

मर्क्युरियस सोल ६ या ३०—रोग के आरम्भ में [illegible] [illegible] पक नहीं पाता। [illegible] [illegible] पूर्ण रूप से आराम हो जाता है।

कोई चर्मरोग तो नहीं हुआ था? यदि हुआ था तो उसे आराम करनेके लिये कौन दवा काम में लायी गयी थी?

(४) पिता या माता को अथवा पिता माता के कुलमें क्षय, गरमी, सूजाक, गंडमाला आदि बीमारियाँ तो न थीं?

(५) शरीरमें अगर दर्द है तो वह किस स्थानमें और कैसा है? दाहिनी ओर है या बायीं ओर? दर्दका असर कितनी दूर तक है? दर्द में जलन है, बारबार बदलता रहता है, इधर, उधर घूमता है, कनकन, झनझन, टपक, कतरने की तरह, नोचने की तरह, काटने की तरह, चिबानेकी तरह, कसकर पकड़नेकी तरह, सुई भोंकनेकी तरह, खींचने की तरह या किसी दूसरी तरह का है? सदा एक सी हालत बनी रहती है या उसमें परिवर्तन होता है? दर्द एकाएक शुरू होकर धीरे-धीरे बन्द होता है या बन्द ही नहीं होता? दिनमें किसी खास समय दर्द होता है या नियमित रूपसे कुछ घंटों या दिनो के अन्तरसे होता है? शरीर हिलाने डोलाने, सेंकने, रगड़ने, दाबने या कोई और क्रिया करने से दर्द घटता बढ़ता है या ज्योंका त्यों रहता है? अंग संचालन. आराम, सोने, बैठने झुकने, चलने, खड़े रहने, खुली या बन्द हवा लगने, उजाला, हो हल्ला या बातचीत से, खाने पीने से, भय, क्रोध आदि मानसिक विकारों से अथवा किसी और बातसे घटता या बढ़ता है? दर्द वाले स्थान का सम्बन्ध अगर शरीरके किसी दूसरे भाग से है तो किससे? दर्दवाला

हिपर सल्फर ६—बहुत तेज दर्द और पीव पड़ने की सम्भावना दिखायी देने पर इसे देना चाहिये। इससे अगर जरा भी लाभ न हो तो कस्टिकम ६।

साइलीसिया ३०—हिपर से कुछ लाभ होने पर इसे देना चाहिये। इससे सूजन और दर्द आराम हो जाता है।

लेकेसिस ६ या ३०—आक्रान्त स्थान का रंग गहरा लाल या नीली आभायुक्त होने पर इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३०—बहुत जलन, तेज दर्द और आक्रान्त स्थान का रंग काला हो जानेपर इससे लाभ होता है।

एन्थ्रासिनम ६ या ३०—भयंकर जलन के साथ मांस सड़ सड़कर गिरता हो तो इसे देना चाहिये।

एपिस ६ या ३०—जलन के साथ डंक मारने जैसा दर्द होने पर इससे लाभ होता है।

लिडम ६—सुई, कोई नोकदार चीज या फाँस लगने के बाद यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

आवश्यक सूचना—यदि पीव पड़ने लग जाय तो तीसी की पुल्टिस चढ़ा कर शीघ्र पका देना चाहिये। अपने आप न फूटे तो चीरा लगवा देना चाहिये। इससे तकलीफ घट जाती है। बारंबार यह रोग हो तो सल्फर ३० और लाइ-

लीसिया ३० छः या आठ आठ दिन का अन्तर देकर पारी पारी से देना चाहिये।

इससे पुनः रोग होने का भय नहीं रहता।

मसे।

(Warts)

चमड़े पर छोटे वड़े भिन्न-भिन्न आकार के मसे होते हैं। इनके कारण न तो किसी तरह का दर्द होता है न कोई कष्ट। कहीं कहीं के मसे देखने में अवश्य बुरे मालुम होते हैं। मसे कटवा देने से वे अनायास अच्छे हो जा सकते हैं, परन्तु अनेक वार इससे कोई दूसरा रोग हो जाने का डर रहता है।

चिकित्सा।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—चेहरा, गर्दन या हाथ पर पर मसे होना गण्डमाला धातु और वात रोगियों को यह रोग होना।

कस्टिकम ६ या ३०—नाक, चेहरा और उँगली के अगले भाग पर वहुत दिन के पुराने मसे हों तो इसे देना चाहिये।

थूजा ३० या २००—यह मसों को वढ़िया दवा है। इसे सेवन करते समय इसका अथवा रसटक्स का मदर टिंचर वाहर से लगाने पर विशेष लाभ होता है।

रसटक्स ६ या ३०—थूजा से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये ।

एन्टिमक्रूड् ६ या ३०—मसे कड़े हों और आसानी से टूट जाते हों तो इसे देना चाहिये ।

आरमम्यूर ६ या ३०—पारे या गरमी का दोष होने के कारण, जीभ, योनिद्वार या मलद्वार में होने पर इससे लाभ होता है।

लाइकोपोडियम ३०—दो या इससे अधिक भागों में बँटा हुआ मसा, उसके चारों ओर दाद सी हो जाना या उससे छाल निकलना ।

सीपिया ६ या ३०—मसे के मध्य स्थान में नोकदार मांस का बढ़ना, हाथ और चेहरे पर चिपटे, छोटे और कड़े मसे, उनमें खुजली इत्यादि ।

सिनाबेरिस ६ या ३०—जननेन्द्रिय के आवरण पर मसे हों तो इसे देना चाहिये ।

सल्फर ३० या २००—आपक तादाद में मसे होते हों तो इसे देना चाहिये ।

थूजा, कल्केरिया कार्ब और सल्फर इस रोग की प्रधान दवाएं हैं । छोटे मसों में कल्केरिया, डाल्केमारा, एसिड नाइट्र और थूजा, बड़े मसों में कास्टिकम, डाल्केमारा,

एसिड नाइट्र और सीपिया, कड़े मसों में एन्टिमक्रूड कल्केरिया और सल्फर आदि दवाओं से विशेष लाभ होता है। मसे में सदा हाथ लगाते रहना बुरा है। इससे वे बहुत जल्दी बढ़ जाते हैं।

शिर मे दाद।

(Scald Head)

यह रोग साधारणतः बच्चों को ही होता है। बालों की जड़ों में बहुत सी छोटी छोटी लाल फुन्सियाँ निकलना, उनका एक दूसरे से जुड़ कर एक हो जाना उनसे चिकना चिकना [illegible]दार रस निकलना, और उन पर मोटा पपड़ा पड़ जाना इत्यादि इस रोग के प्रधान लक्षण हैं। यह रोग संक्रामक होता है। अनेक बार [illegible] के कारण [illegible] गांठ फूल उठती है और रोग पुराना हो जाने पर [illegible] नष्ट हो जाते हैं।

चिकित्सा।

कल्केरिया कार्ब ३०—[illegible] और [illegible] [illegible] का यह रोग होना, सूखी फुन्सियां [illegible] उनमें बहुत खुजली होना इत्यादि।

बच्चों की फुन्सियाँ।

(Milk Crust)

दुधमुँहे बच्चों को खासकर दाँत निकालने के समय यह रोग होता है। इसमें पहले आक्रान्त स्थान लाल होता है बादको वहाँ छोटी छोटी छाले जैसी सफेद फुन्सियाँ दल बाँध कर प्रकट होती है। चेहरा और कपाल आदि स्थानों में यह फुन्सियाँ विशेष रूपसे निकलती है। इन फुन्सियों में बहुत खुजली होती है, खुजलाने के बाद उनसे रस निकलता है। इसके बाद उनका मुँह सूख कर उनपर पपड़ी पड जाती है। कभी कभी कई छोटी फुन्सियाँ एक साथ मिल कर एक बड़ी फुन्सी हो जाती है।

चिकित्सा।

हाइड्रोकोटाइल X १ या ३ X—यह इस रोगकी सबसे बढ़िया दवा है।

एनाकार्डियम १ X या ३—हाइड्रोकोटाइल से लाभ न हो तो इसे देना चाहिये।

इनके अतिरिक्त साइलीसिया, आर्सेनिक, हाइड्रेस्टिस, मर्क्युरियस सल, फोस्फरस इत्यादि दवाओं से भी लाभ होता है। जख्म हो जाने पर आर्सेनिक, लेकेसिस, साइलीसिया, सलफर, और नसें फूल जाने पर अर्निका, हेमामेलिस, लेकेसिस, पल्सेटिला और सीपिया आदि दवाएँ देनी चाहिये। बुखार और खुजली आदिकी दवाएँ उन्हीं रोगोंकी दवाओं में से चुननी चाहिये।

अन्यान्य चर्मरोग।

हाथ पैर फटना (Chilblain)—जाड़े के दिनों में ठंड लगने के कारण वदन या हाथ पैर फट जाया करते है। दोनों मे कभी कभी दरार या जख्म हो जाता है, जिसे बेवाई कहते है। इसमें बहुत दर्द होता है। जख्म में बहुत जलन हो तो आर्सेनिक ६ या ३०। ठंढ के कारण किसी भी स्थान से जख्म हो जाने पर एगारिकस ६ या ३०। यह इस रोग की बढ़िया

दवा है। हाथ पैर की उँगलियो का फटना और उसमें जख्म, जलन और खुजली हो तो फोस्फरस ६। पैर की उँगली में जख्म और फफोला होने पर सल्फर ३०। पल्सेटिला और रसटक्स से भी काफी लाभ होता है। टैमास, मदर टिञ्चर और ग्लीसरीन दोनों समान भाग में लेकर फटी हुई जगह मे लगाना चाहिये। कैन्थरिस या अर्निका लोशन से आक्रान्त स्थान को धोना लाभदायक है।

उस्तरे का विष (Bardar's Itch) खराब उस्तरे से हजामत वनवाने पर दाढ़ी मे दाद जैसी फुन्सियाँ निकलती हैं और जख्म हो जाते हैं। इन जख्मों से रस भी निकलता है। ग्रेफाइटिस ६ या ३० इस रोग की बढ़िया दवा है। एन्टिम टार्ट ६ से भी काफी लाभ होता है। एन्टिम टार्ट से लाभ न हो तो मर्क्युरियस सल ६। इनके अतिरिक्त नाइट्रिक एसिड, कार्बो एनो और साइलीसिया आदि दवाओं से भी लाभ होता है। फुन्सियाँ पक जायें और उनमें बहुत दर्द हो तो पुल्टिस चढ़ानी चाहिये।

सेहुँआ या सिहुली—यह रोग होने पर चेहरा, गर्दन और छाती आदि स्थानों में सफेद सफेद दाग से पड़ जाते हैं। रोग वाले स्थान में खुजली होती है। धूप लगने से खुजली बढ़ती है। कभी कभी भूसी जैसी छाल निकलती है। रोग साधारण होने पर सल्फर ६ या ३० और तेज होने पर नाइ-

स्थान लाल या सूजा हुआ है? सूजन कड़ी है या मुलायम? वहाँ उँगली से दबाने पर कोई चिह्न (गढ़ा पड़ जाना आदि) बन जाता है या नहीं?

(६) रोगीकी मानसिक अवस्था कैसी है? वह रोग के विषय में अथवा रोग के कारण क्या सोचता या अनुभव करता है? वह सब कुछ धीरता से सह रहा है, रोता है, चिन्ता करता है या डरता है? रोगके कारण उसकी कोई मानसिक-शक्ति (विचारशक्ति स्मरणशक्ति आदि) पर बुरा प्रभाव तो नहीं पड़ा? कोई अंग बेकार तो नहीं हो गया?

(७) रोगीके मनोभाव कैसे हैं? उसे कोई झूठी आशंका तो नहीं होती? गलेमें मानो कुछ अटका है, शरीर पर चिउंटी रेंग रही है आँख बन्द करते ही गिर पड़ूँगा, पैर भीगे हुए हैं इत्यादि झूठी शंकायें तो वह नहीं करता?

(८) शरीरके अन्यान्य अंगों की अवस्था कैसी है? इन्द्रियों की तेजी, शरीरका दुबलापन, किस करवट सोने से आराम मिलता है, किस अंगसे किस अंगमें रोगका आक्रमण होता है—दाहिनेके बाद बायें में या बायेंके बाद दाहिने में?—इत्यादि उपसर्ग भी ध्यान में रखने चाहियें।

(९) किसी जख्म या आँख, नाक, कान, मुह, जननेन्द्रिय आदिसे कोई स्राव निकलता हो—कुछ बहता हो, तो यह देखना चाहिये कि उसकी तादाद कितनी है? उसका रंग कैसा है? कपड़े पर दाग लगता है या नहीं? उसकी

ट्रिक एसिड ६ या ३० देना चाहिये। ग्रेफाइटिस ६ या ३० भी एक अच्छी दवा है। पेट्रोलियम, नेट्रम म्यूर और केन्थरिस ६ भी इस रोग में लाभदायक है।

पानी लगना (Escoriation)—वर्षा के दिन में भीगे पैरों से रहने पर अथवा पानी में खड़े होकर कपड़ा आदि धोने से पैर के तलवे या उँगलियों के बीच में यह रोग होता है। यह रोग होने पर आक्रान्त स्थान का चमड़ा नम हो जाता है, वह स्थान सफेद दिखायी देता है और उसमें बहुत खुजली होती है। गीला कपड़ा पहनने या पसीना लगने के कारण जाँघ आदि स्थानों में भी ऐसी ही शिकायत पैदा हो जाती है। केमोमिला ६ इस रोगकी बढ़िया दवा है। अगर बारम्बार यह रोग हो जाता हो तो लाइकोपोडियम ३० या २०० देना चाहिये। अगर दर्द हो तो मर्क्युरियस ६ या ३०। चलने फिरने की रगड़ और पसीना लग कर जाँघ में चमड़ा छिल जाय तो इग्नेशिया ३ या ६। बच्चों का पाछा छिल जाने पर केमोमिला ६ या ३०। एकजिमा रोग की दवाओं में से भी इसके लिए दवाएँ चुनी जा सकती हैं।

घट्टे—(Corns) जूते की रगड़ या दाब के कारण घट्टे पड़ जाते हैं। कभी कभी इनमें बहुत दर्द होता है। चलाने, या कुएँ से पानी भरने या कुटाई आदि का काम करने से तलहत्थी में भी घट्टे पड़ जाते हैं। कभी कभी घ

सदा मलते रहना चाहिये। सफाई रखने से बहुत लाभ होता है। नारियल का तेल अथवा भूने हुए सुहागे का चूर्ण ग्लीसरिन के साथ मिलाकर लगाना लाभदायक है।

अमौरी—गरमी के दिनों में गरमी के कारण सम्पूर्ण शरीर में जलपूर्ण छोटे छोटे दाने निकलते हैं, इन्हें अमौरी कहते हैं। कभी कभी यह पक कर फुन्सियों के रूप में परिणत हो जाती है। सुसुम पानी में सोडा घोलकर लगाने या चन्दन का लेप करने से लाभ होता है। आवश्यकतानुसार वर्जिम फूड, सल्फर, आर्सेनिक, एपिस, लिडम, एकोनाइट और रसटक्स आदि दवाओं में से कोई दवा भी सेवन की जा सकती है। अमौरी बड़ी बड़ी हों तो हिपर सल्फर ६। बार बार होने पर अर्निका ६ या ३० देना चाहिये।

कुनख (Ingrowing Toe-nail)—अँगूठे के नाखून की नोक कभी कभी बेढंग तौर से बढ़कर मांस में घुस जाती है और वहाँ जख्म हो जाता है। जख्म न होने पर भी उस स्थान में बहुत दर्द होता है। अंगूठे में दर्द, जखम और काँटा चुभने जैसा दर्द हो तो साइलीसिया ६ या ३०। आक्रान्त स्थान में कालापन, बदबू और जलन हो तो आर्सेनिक ६ या ३०। अंगूठा फूलकर बहुत मोटा हो जाय, उसमें सनसनाहट और दर्द हो, पीब पड़ जाय या मांस बढ़ जाय तो ग्रैफाइटिस ३०। मर्क्युरियस और एन्टिम क्रूड से भी लाभ होता है।

अंगूठे में बहुत दर्द और तनाहट हो तो गरम पानी में डुबो रखना चाहिये । नाखून मुलायम हो जाने पर उसे काट देना चाहिये । काटने के बाद फ्लोराइड आफ अयारन विचूर्ण उस स्थान में लगाने से दर्द आदि तकलीफ दूर हो जाती है ।

छोटी फुन्सियाँ (Pimple)—मुहाँसे की तरह छोटी छोटी, नोकदार और कड़ी फुन्सियाँ होने पर कार्बोवेज ६ । पुरानी बीमारी में रेडियम ब्रोम ३० (सप्ताह में एक बार) या केली ब्रोम २ X या सल्फर ३० । कार्बोएनी, हाइड्रो कोटा-इल, रसटक्स, आर्स आयोड आदि दवाओं से भी लक्षणानु-सार लाभ होता है ।

पीली फुन्सियाँ (Impetigo)—यह फुन्सियाँ नाक, कान, कपाल और चेहरा आदि स्थानों में निकलती हैं । यह पहले अलग अलग रहती हैं, बाद को एक दूसरे से जुड़ जाती हैं । इनसे गाढ़ा, पीला और बदबूदार पीव निकलता है । ऊपर पपड़ी जम जाती है पर नीचे का स्थान कोमल और लाल होता है । नयी बीमारी में वायोला ट्राइ ३ और पुरानी बीमारी में एन्टिम टार्ट २ का सेवन कराना चाहिये । बहुत जलन हो तो साइक्यूटा ३, डंक मारने जैसी खुजली हो तो क्रोटनटिग ६, शिर में पपड़ी युक्त फुन्सियाँ हों तो कैल्क-म्यूर १ X । इनके अतिरिक्त आर्सनिक एन्टिमक्रूड, केली ब्राइकोम और मेजेरियम आदि से भी लाभ होता है ।

कार्ब, सल्फर और रसटक्स आदि दवाओं से भी लाभ होता है। आक्रान्त स्थान में सज्जी मिट्टी लगाना लाभदायक है।

शैवालिका (Lichen)—इस रोग में समूचे शरीर में अमौरी की तरह लाल फुन्सियाँ निकलती हैं और वे खुजलाती हैं। बाद को उन पर छिलके जैसी पतली और सफेद पपड़ी पड़ जाती है। सल्फर, एन्टिमक्रूड, एपिस, लिडम और आर्सेनिक इस रोग की अच्छी दवाएँ हैं। आवश्यकतानुसार मेजेरियम, रसटक्स फाइटोलेका, ग्रेफाइटिस और नेट्रमम्यूर आदि दवाएँ भी व्यवहार की जा सकती हैं।

सोराएसिस (Psoriasis)—इस रोग में शरीर के किसी भी स्थान का चमड़ा लाल होकर फूल उठता है और उस स्थान में कुछ ऊँचा तथा कड़ा चकत्ता सा हो जाता है। बाद को इस चकत्ते पर पपड़ी पड़ जाती है। पपड़ी उखाड़ने पर उसके नीचे का समूचा स्थान लाल दिखायी देता है। रेडियम ब्रोम, सल्फर आर्सेनिक फोस्फरस, कल्केरिया सीपिया नाइट्रिक एसिड लाइक्यूटा, ग्रेफाइटिस थूजा और क्रिसोफेनिक एसिड आदि दवाओं से इस रोग में विशेष लाभ होता है।

कुछ खास दवाएँ—टीका लगवाने के बाद कोई भी चर्म रोग हो तो थूजा। चोट लगने या गिर जाने के कारण चर्म रोग हो तो अर्निका। सारा बदन खुजलाये लेकिन कोई

फोड़ा फुन्सी न दिखलाई दे तो डालिकस। समूचे बदन में जलभरी फुन्सियाँ, उनमें खुजली, खुजलाने पर गरमी में कार्बोलिक एसिड। जो चर्मरोग जाड़े में रहें, पर गरमी में गायब हो जायँ, उनमें मेजोरियम। स्पञ्जिया मदर टिंचर दो बूंद दिनमें तीन बार सेवन करने से सभी चर्मरोगों में लाभ होता है।
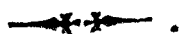
१८—मानसिक रोग।

भय जनित रोग।

(Fright)

अनेक बार डर जाने के कारण तरह तरह की बीमारी हो जाया करती है। स्त्री और बच्चे इस तरह की बीमारियों के शिकार [illegible] होते हैं। इन रोगों में लक्षणानुसार [illegible] इस्तेमाल करनी चाहिये।

चिकित्सा।

एकोनाइट 3 [illegible] या 6 [illegible] डर जाने के कारण [illegible] [illegible] [illegible] देना चाहिये।

बेलेडोना ६ या ३०—डर जानेके कारण खींचन की बीमारी हो जाना, खासकर बच्चोंको, चिल्लाना, हाथ पैरोंका काँपना, शिरमें रक्त-सञ्चय, चेहरा लाल इत्यादि।

कोफिया ६—एकायक डर जाना, बहुत स्नायविक उत्तेजना, कम्पन, मूर्च्छा नींद बिलकुल न आना इत्यादि।

जेल्सीमियम ६—डर जानेके कारण पेटमें गोलमाल हो जाना, शराबियों की तरह सुस्ती इत्यादि।

ओपियम ३ या ६—डर जानेके कारण अंग प्रत्यंग में कम्प या खींचन, अस्वाभाविक निद्रा, सोते समय नाकसे आवाज निकलना, कष्टकर श्वास प्रश्वास, बेहोशी, प्रलाप इत्यादि। डर जानेके बाद तुरन्त यह दवा देनेसे विशेष लाभ होता है। लेकिन अगर एक घन्टा या इससे अधिक समय बीत जाय, तो एकोनाइट देना चाहिये।

डर जानेके बाद रोगी बहुत उदास हो जाय तो इग्नेशिया ६। ओपियम से लाभ न होने पर इग्नेशिया या ग्लोनाइन देना चाहिये। ओपियम डर जानेकी प्रधान दवा है।

आवश्यक सूचना—रोगीकी हालत बहुत खराब हो तो जल्दी-जल्दी दवा देनी चाहिये। रोगीको स्थिर और शान्त रखना चाहिये तथा उससे ऐसी बातें करना चाहिये, ताकि उसका भय दूर हो जाय।

शोक और दुःख जनित रोग

(Grief and sorrow)

शोक और दुःखके कारण मनुष्य की शारीरिक और मानसिक अवस्था खराब हो जाती है। जो शोक या दुःख मनमें ही दबा रहता है और दूसरोंके सामने प्रकट नहीं किया जाता उसका परिणाम और भी बुरा होता है। इसके कारण शारीरिक और मानसिक परिश्रम करने की शक्ति का घट जाना, हृदय और यकृत की खराबी, भूख न लगना, कब्जियत, तन मनकी सुस्ती इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं।

चिकित्सा ।

इग्नेशिया ६ या ३०-मनमें शोक या दुःखका दबा रहना, प्रेममें निराश होना या न भुलायी जा सकने वाली हानि होना, दुःख या शोकका लगातार मनपर असर पड़ना, सभी बातों में उदासीन भाव, शोक या दुःखके कारण [illegible] इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

ककुलस ३ या ६—लगातार खिन्न रहना, रातों जागना, रोगीके पास बैठने के कारण अनिद्रा इत्यादि।

एसिड फास ६ या ३०—बहुत कमजोरी, जीवनके सभी कामोंमें उदासीनता, चुपचाप एकान्त में बैठे रहने की इच्छा, भोजन के बाद पसीना और निद्रालुता इत्यादि।

गन्ध कैसी है? उसके निकलने या दूसरे स्थानमें लगने से जलन या खुजली आदि तो नहीं होती? किस समय या किस अवस्था में स्राव घटता या बढ़ता है?

(१०) रोगी के स्वाभाविक लक्षण, जैसे बिछौने से उठते ही पाखाने की ओर दौड़ पड़ना, प्यास न होना या बहुत पानी पीना, शरीर दबवानेसे आराम मालूम होना, हमेशा लेटे या पड़े रहने की इच्छा, हमेशा अधोवायुका निकलते रहना इत्यादि।

(११) रोगीकी मानसिक अवस्था, वह प्रसन्न रहता है या खिन्न? उसके मनमें शोक, भय, क्रोध, ईर्ष्या, आत्महत्या करने की इच्छा, उदासीनता, निराशा, भ्रान्त विश्वास, प्रतिहिंसा आदि भाव तो नहीं है? उसकी सूरत रोनी तो नहीं है? स्वभाव चिड़चिड़ा तो नहीं है? वह सदा दूसरों से लड़ा तो नहीं करता?

(१२) आँखकी कोई शिकायत तो नहीं? पलक पपनी, पुतली, कोया आदिकी अवस्था और कार्य ठीक है? आँखों के सामने अंधेरा या चिनगारियाँ तो नहीं दिखायी देतीं? देखने की शक्ति में कमी या कोई दोष तो नहीं है?

(१३) कान या श्रवणशक्ति की शिकायत, कानमें भें-भों सों-सों या झनझन आवाज कानके किसी भी भागमें जलन या दर्द बहरापन या साफ न सुनायी देना अथवा ऐसा ही और कोई दोष।

लेकेसिस ३०—सोने या खानेके बाद तबियत खराब मालूम होना, तरह तरह की बेढंगी बातें कहना, बात करते करते बातचीत का विषय बदल देना, सबके सामने अपना दुखड़ा रोना इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—खिन्नता, जरामें हो रो पड़ना या रोनेकी इच्छा होना, सभी बातों में उदासीनता, नम्र-प्रकृति इत्यादि।

हायोसायमस ६ या ३०—प्रेमियों में लड़ाई होती रहे, रोगीका स्वभाव ईर्षालु हो, बहुत बकझक करता हो, रातमें नींद आवे, चेहरा फूला हुआ मालूम हो तो इसे देना चाहिये।

प्रेम में निराशा—प्रेम में निराशा भेटने से, खासकर जब एक गाल लाल हो जाता हो इग्नेशिया। इससे पूरा लाभ न हो और रोगी चुपचाप बैठा रहता हो अथवा उसे धीमा बुखार आ जाता हो या दोनों गाल लाल हो जाते हों तो फसिटफस। दहशत और बदहजमी के लक्षण मौजूद हों तो स्टेफानेग्रिया।

बेहोशी—शोक या दुःख के कारण रोगी बेहोश होजाय तो पहले इग्नेशिया दीजिये। इससे लाभ न हो तो बेहोशी के समय ओपियम और दूसरे दिन फॉसफोरस।

अनिद्रा—शोक या दुःख के कारण अथवा रोगी की सेवा शुश्रूषा करने के कारण नींद न आये साथ ही शिरदर्द और कमजोरी मालूम हो तो कक्कुलस। अगर बहुत कमजोरी हो और रोगी कठिनाई से बोल सकता हो तो एसिड फस। दुःख या शोक अथवा किसी की मृत्यु आदि के कारण कई रात तक जरा भी नींद न आये तो सल्फर।

ऋतुस्राव में गड़बड़ी—शोक, दुःख, चिन्ता या भय आदि के कारण यदि एकायक मासिक स्राव शुरू हो जाय, रुक जाय, बढ़ जाय या कोई नये लक्षण पैदा हो जायँ तो प्लेटिनम देने से लाभ होता है।

क्रोध जनित रोग।

(Anger)

क्रोध के कारण भी अनेक बार बेतरह तबियत खराब हो जाती है और इलाज कराने की जरूरत पड़ती है।

चिकित्सा।

केमोमिला ६ या ३०—बहुत क्रोधी स्वभाव, क्रोध के कारण खाँचन, पेट, और यकृत की खराबी, चेहरा लाल, घूमने फिरने की इच्छा इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। बच्चोंको इस दवासे विशेष लाभ होता है।

अर्निका ६ या ३०—क्रोधी स्वभाव, बच्चोंका सदा ठुनकते रहना, रोना, बारम्बार खाँसना, बातका उत्तर न देना इत्यादि।

ब्रायोनिया ६ या ३०—बहुत क्रोध, सभी बातोंमें चिड़चिड़ाना, शिरमें दर्द, ऐसा मालूम होना मानो शिर फट जायगा, हिलने डोलने से दर्दका बढ़ना, कब्जियत, मैले रंगका गाँठ गाँठ मल इत्यादि।

कोलोसिन्थ ६ या ३०—सदा क्रोध और विरक्ति भाव, बोलने या बातका उत्तर देनेकी इच्छा न होना।

नक्सवोमिका ६ या ३०—बहुत ही क्रोधी और चिड़चिड़ा स्वभाव, क्रोधके बाद तबियत खराब मालूम होना, एकान्त में रहने की इच्छा इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

स्टेफीसेग्रिया ६ या ३०—चिड़चिड़ा स्वभाव, सदा खतरे का डर लगा रहना, अस्थिरता दिनमें निद्रालुता, रात में अनिद्रा शिरके केश झड़ना, आवाज धीमा हो जाना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

प्लेटिनम ६ या ३०—क्रोध, [illegible] [illegible] मूर्च्छाय, उत्कण्ठा या हंसना और रोना इत्यादि।

आवश्यक सूचना—क्रोध बार अथवा [illegible] बारह बार सदा शिरमें खून चढ़ जाता [illegible] ऐसी अवस्थाओं के अतिरि

पर ठंढे पानीकी पट्टी चढ़ानी चाहिये और पैर गरम पानीसे सेंकना चाहिये ।

विषाद वायु रोग ।

(Melancholia)

शारीरिक और मानसिक विकृति तथा अन्यान्य कारणोंसे यह रोग होता है। यह रोग होने पर रोगी सदा दुःखी और खिन्न रहता है, और सभी बातों में उदासीनता दिखाता है। कभी कभी रोगीको आत्महत्या करने की प्रबल इच्छा होती है। किसी काल्पनिक विषय की चिन्ता करते रहना, बुद्धिकी विकृति, भ्रान्त विश्वास, भय उद्वेग, रोना, उदास होकर चुपचाप बैठे रहना, अपने शरीर की रक्षा आदिके लिए कोई यत्न न करना, अस्थिरता, अनिद्रा, भूख न लगना, कब्जियत, इत्यादि अनेक लक्षण प्रकट होते हैं। कभी कभी इस रोगके साथ यकृत, जरायु, मूत्राशय और डिम्बाशय आदिके उपसर्ग भी मौजूद रहते हैं। नयी बीमारी आसानी से आराम हो जाती है। रोग पुराना हो जाने पर और उसके साथ वेहोशी आदि लक्षण मौजूद रहने पर वह शायद ही आराम होता है।

चिकित्सा ।

अरम ६, ३० या २००—आत्महत्या करने की प्रबल इच्छा होने पर इसे ही देना चाहिये। यकृत और अण्डकोष

तकलीफ, रातमें रोगका बढ़ना इत्यादि लक्षणों में भी इससे लाभ होता है।

आर्सेनिक ६ या ३०—खुद ही अपने आपको काटना या अपने शरीर पर कोई अत्याचार करना, भूख न लगना, दुर्बलता, उत्कण्ठा, रोगीको ऐसा मालूम होना मानों सभी उसकी निन्दा कर रहे हैं अथवा उसका रोग आराम न होना इत्यादि।

सिमिसिफिउगा ६ या ३०—इस रोगके साथ जरायु या डिम्बाशय के उपसर्ग होने पर इसे देना चाहिये।

इग्नेशिया ६ या ३०—शोक, दुख और निराशा के कारण यह रोग होना, सदा एकान्त में बैठने और आत्महत्या करने की इच्छा, बहुत सुस्ती, ज़रामें ही चिढ़ उठना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

नेट्रम म्यूर ६ या ३०—नया बीमारी में इससे भी लाभ होता है।

क्राइपस सेरियाना ६—विषाइ वायुके साथ बहुत की खराबी होनेसे इसे देना चाहिये।

प्लेटिना ६ या ३०—स्त्रियोंको यह रोग होना, आत्म-हत्या करने की इच्छा, कामातुरता, उद्धत स्वभाव, अपने को सब बातोंमें बड़ा मानना इत्यादि।

हेलीबोरस ६ या ३०—विषाद वायुके साथ बेहोशीका लक्षण होनेपर इसे देना चाहिये ।

इनके अतिरिक्त लिलियम टिग, आक्‌जेलिक एसिड, ओपियम, विरेट्रम और वेन्टोशिया आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है ।

आवश्यक सूचना—रोगीको अकेले न रहने देना चाहिये और उसका चित्त सदा प्रफुल्लित रखने की चेष्टा करनी चाहिये । नित्य विशुद्ध वायुका सेवन, स्नान और परिमित परिश्रम करना लाभदाक है ।

व्याधि-शंका ।

(Hypochondriasis)

शरीर में किसी प्रकारका रोग न होने पर भी रोगीका अपने मनमें यह सोचते रहना कि उसे कोई रोग हो गया है या होनेवाला है, व्याधि-शंका रोग कहलाता है । बहुत दिनों तक किसी कठिन रोगसे पीड़ित रहना, शोक, दुःख, चिन्ता, उद्वेग, स्नायविकता, अर्थाभाव, आलस्य में दिन बिताना, सदा रोगके विषय में चिन्ता करते रहना इत्यादि अनेक कारणों से यह रोग होता है । पहले पहल रोगी सोचता है

कि उसे पाचनक्रियामें गड़बड़ी, कब्जियत, पेट फूलना, भूख न लगना, अनियमित भूख, पेटमें जलन, बुखार इत्यादि रोग हो गये हैं। यह सोचते सोचते उसे वास्तव में शिरदर्द, शिरमें चक्कर, स्नायुशूल, मूर्च्छा, कलेजा धड़कना, दृष्टिक्षीणता, अनिद्रा, पाकाशय में गोलमाल इत्यादि शिकायतें पैदा हो जाती है और उसका स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है। यह रोग उतना सांघातिक नहीं है, लेकिन अच्छी तरह इलाज न करने पर रोग कठिन हो जाता है और पाकाशय में गोलमाल, शोथ तथा रक्तस्राव आदि कठिन उपसर्ग पैदा हो जाते हैं।

चिकित्सा।

अरम ६ या ३०—सदा खिन्न और निराश रहना, सभी कामों में उदासीन भाव, आत्महत्या करने की इच्छा, शिरमें दर्द इत्यादि। उपदंश दोषवाले रोगीको इससे विशेष लाभ होता है।

एनाकार्डियम ६—स्नायविक दुर्बलता और उत्तेजना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

हायोसायमस ३ या ६—कोई कारण न होने पर भी रोगी अपने मन में यह सोचा करता हो कि उसे गर्मी या कोई दूसरी बीमारी हो गयी है या होने वाली है तो इसे देना चाहिये।

चायना ३०—पाचन क्रिया में गोलमाल, पेट फूलना, शिरमें दर्द, मानसिक कष्ट और स्नायुशूल, भोजन के बाद आलस्य, बुखार या रक्तस्राव आदि रोग होनेके कारण कमजोरी और उस कमजोरी के कारण यह रोग होना।

नक्सवोमिका ३०—कब्जियत, पाकाशय में गोलमाल, खानेकी इच्छा न होना, कामकाज में मन न लगना, बैठे रहने की इच्छा, शिरमें दर्द और चक्कर, अनिद्रा, शारीरिक कमजोरी इत्यादि।

नेट्रम म्यूर ३०—एकान्तप्रियता, जीवन पर प्रेम न होना, पाकाशयकी गड़बड़ी, शिरमें दर्द, भविष्य के विषय में निराशा, मानसिक उपसर्ग इत्यादि।

स्टेफीसेग्रिया ६ या ३०—सभी बातों में उदासीन भाव, जननेन्द्रियकी कोई बीमारी इत्यादि।

लेकेसिस ३०—काम करने की अनिच्छा, सदा स्वास्थ्य के विषय में चिन्ता करते रहना, उत्कण्ठा, सन्दिग्ध स्वभाव दुःखित भाव, सोने के बाद सभी रोग-लक्षणों का बढ़ना इत्यादि।

स्टेनम ६ या ३०—खिन्न और निराश रहना, पेट खाली मालूम होना, पेट में दर्द, शिर गरम और उसमें दर्द मालूम होना, कब्जियत, घूमने फिरने से आराम मालूम होना, विश्राम के समय रोग बढ़ जाना इत्यादि।

सल्फर ३० या २००—उद्वेग, अपने स्वास्थ्य और अपनी रक्षा के लिये सदा चिन्ता करते रहना, शिरकी चाँद में जलन, अस्थिरता, कब्जियत,ववासीरकी शिकायत इत्यादि।

कल्केरिया कार्ब ३० या २००-रोगी को ऐसा मालूम होना मानों उसका इन्द्रिय ज्ञान लोप हो गया है, सदा डरते रहना, मानसिक शान्ति की कमी, थकावट मालूम होना, बेहोश कर देने वाला शिर दर्द, खट्टे पानी की कै होना,कलेजे मे दर्द न होने पर भी रोगी को ऐसा मालूम होना, मानो उसके कलेजे में दर्द हो रहा है इत्यादि।

इनके अतिरिक्त नेट्रम फस, ग्रेटयूला, मस्कस, सीपिया, फोस्फरस, प्लाटिना, टैरेन्टयूला, पल्सेटिला, आर्जनाइ और मर्क्युरियस आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—नियमित परिश्रम, नियमित समय में स्नान और भोजन, सदा प्रसन्न रहना इत्यादि लाभदायक है। पुष्टिकर और आसानी से हजम हों ऐसे पदार्थ खाना चाहिये।

———

बुद्धि वैकल्य।

(Dementia)

शराबखोरी, हस्तमैथुन तथा बुढ़ापा आदि कारणों से यह रोग होता है। यह रोग होने पर बुद्धि का काम कुछ कम हो जाता है या बुद्धि एकदम ही नष्ट हो जाती है। यह रोग ४ भागों में विभक्त है, यथा—(१) नया रोग (Acute) मूर्खता, गन्दे रहना, मौन रहना, कुछ का कुछ सुनायी देना, पुतले की तरह चाल ढाल, चेहरा सूजा और उतरा हुआ इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं। (२) शराबखोरी जनित रोग (Alcoholic)—स्मरण शक्ति में बेहद कमी, इच्छाशक्ति की कमजोरी, अपने शरीर या वेश-भूषा पर बिलकुल खयाल न रखना, क्रोधी स्वभाव, पाकाशय का प्रदाह इत्यादि इसके प्रधान लक्षण है। (३) हस्तमैथुन जनित (Masturbatic) बुद्धि वैकल्य। स्मरण शक्ति की कमी, मानसिक दुर्बलता, उदासीनता, एकटक देखते रहना, शिर झुका कर बैठना, हाथ पैर ठण्डे, चरित्रदोष इत्यादि इस रोग के प्रधान लक्षण हैं। (४) बुढ़ापा जनित (Senile) बुद्धि वैकल्य। यह रोग प्राय· साठ वर्ष की अवस्था के बाद होता है। लोग इसे सठिया जाना कहते हैं। तुरन्त की घटनाएँ भूल जाना, क्रोधी स्वभाव, बेचैनी, अव्यवस्थित मति, बहुत अधिक आत्म·

(१४) नाकमें कोई गोलमाल, नाक से श्लेष्मा या खूनका गिरते रहना, पपड़ी जमना, नाक का वन्द हो जाना, सूँघनेकी शक्ति का लोप हो जाना इत्यादि ।

(१५) दाँतों की अवस्था कैसी है ? मजबूत हैं, ढीले हैं हिलते हैं या गिर गये हैं ? मसूढ़ों की हालत, सूजन या उनसे खून गिरना अथवा कोई दूसरी शिकायत ।

(१६) मुँह और जीभकी अवस्था, लार और थूक कैसे हैं ? घंटीका सुड़सुड़ाना, जीभ साफ है या लेप चढ़ी ? मुँह में वदवू, छाले या जख्म तो नहीं रहते ? वोलने, चिवाने, जीभ हिलाने और निगलने में कोई तकलीफ तो नहीं होती ? चीजों का स्वाद ठीक-ठीक मालूम होता है या वे किसी और तरह की मालूम होती हैं ? कौन चीजें खाने पीनेकी इच्छा होती है ? खाने पीनेके वाद कोई वुराई तो नहीं पैदा होती ?

(१७) खानेके वाद डकारों का आना, डकारों का स्वाद कैसा रहता है ? जो चीजें तुरन्त खायी जाती हैं उन्हीं का स्वाद रहता है या कोई और ? मुँहमें लार या पानी तो नहीं भर-आता ? उसका क्या स्वाद होता है ?

(१८) रोगीको कै तो नहीं होती ? अगर होती है तो किस समय ? कै का स्वाद, रंग और तादाद ? क्या जी मिचलाया करता है ? किस समय ? कै में खून गिरता है या खाये हुए पदार्थ ?

गरिमा, भ्रान्त विश्वास, अवास्तव मूर्ति या वस्तु की कल्पना या अनुभूति, बेढंगे काम या बातें करना इत्यादि इस रोगके प्रधान लक्षण है। (५) यान्त्रिक (Organic) बुद्धि वैकल्य। सन्देही चित्त, स्मरण शक्ति गायब, देखने और सुनने मे भ्रम होना, अर्धाङ्ग में अकड़न या लकवा, खींचन इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं। (६) गौण (Secondary) बुद्धि वैकल्य। मानसिक कमजोरी, इच्छा और स्मरण शक्ति मे गड़बड़ी अथवा मानसिक वृत्तियो का एकदम नाश हो जाना इस रोग के प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा।

एसिडफस ३ X या ६—आस पास की चीजो या मनुष्यो के विषय में उदासीनता, स्मरण शक्ति का कमजोरी, क्रन्दन शीलता, बहुत कमजोरी और दुबलापन, अधिक पेशाब होना इत्यादि।

क्रोटेलस ३ या ६—इन्द्रिय ज्ञान और स्मरण शक्ति में कमी, सहनशीलता का अभाव, भागने की इच्छा, बकझक करना, खिन्न रहना इत्यादि।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—किसी भी विषय में धारणा का न जम सकना, सोचने की शक्ति में कमी, ज़रा में ही रो देना, शिर में चक्कर और भार, गण्डमाला धातु इत्यादि।

एनाकार्डियम ६ या २००—स्मरण शक्ति में कमी, हमेशा कसम खाना, दृढ़ भ्रान्त विश्वास इत्यादि।

कोनायम ६—स्मरण शक्ति की कमी, परिवार या कामकाज के सम्बन्ध में उदासीनता, सोने से शिर चकराना, हस्तमैथुन अथवा वृद्धावस्था के कारण यह रोग होना।

कल्केरिया फस ६ x विस्मृति—चिड़चिड़ा स्वभाव, हाल की बातें भी याद न रहना, आसपास के मनुष्यों को न पहचान सकना, घर में होने पर भी घर जाने को कहना, छोटी उम्र के बच्चों को यह रोग होना इत्यादि।

हेलिबोरस ३ x—उन्माद या विषाद वायु रोग होने बाद बुद्धि का बिगड़ जाना।

लिलियमटिग ६—बहुत मानसिक [illegible]

[illegible]

अव्यवस्थित चित्त--अरममेट, बेराइटा कार्ब।

उत्कण्ठा--एकोनाइट, अरम, फोस्फरस, सल्फर।

ईर्षा--हायोसायमस, लेकेसिस, एपिस।

उद्धत स्वभाव--प्लाटिना, सल्फर, लाइको पोडियम, विरेट्रम एल्ब।

चिड़चिड़ा स्वभाव--अरम, साइना, सल्फर, एल्युमिना, स्टेफी साइग्रिया।

झगड़ालू स्वभाव--हायोसायमस, सल्फर, नक्सवोमिका, इग्नेशिया।

निराशा—आर्जनाइ, अरम, सोरिनम, रसटक्स, कल्केरिया कार्ब।

मानसिक बेचैनी--एकोनाइट, आर्जनाइ, केमोमिला, कोफिया, हायोसायमस, सिमिसिफिउगा, इग्नेशिया, फोस्फरस, स्ट्रेमोनियम।

सन्देही स्वभाव—सल्फर स्ट्रेमोनियम, सिकेलो, केनविस इन्डिका, हायोसायमस, लेकेसिस।

सलज्ज भाव—बेराइटा, इग्नेशिया, स्टेफी साइग्रिया।

स्मरण शक्ति की कमी–एनाकार्डियम, हायोसायमस, एसिड फस, इथ्यूज़ा, बेराइटा कार्ब, हेलिबोरस।

लेकेसिस (बड़बड़ाना या बकबक करना) स्ट्रेमोनियम (बहुत तेज या क्रोध पूर्ण प्रलाप) विरेट्रम एल्ब बेप्टीशिया, जिंकम इत्यादि।

मौन प्रियता-एसिडफस, सल्फर पल्सेटिला विरेट्रम एल्ब।

ईर्षा-हायोसायमस, लेकेसिस, एपिस।

एकायक जोर से चिल्ला उठना—एपिस।

इनके अतिरिक्त और भी अनेक दवाएँ हैं जो भिन्न भिन्न मानसिक अवस्था या रोगों में लाभ करती हैं। स्थानाभाव से उन सबों का वर्णन यहाँ नहीं किया जा सकता। किसी रोग के लिये कोई भी दवा चुनते समय, उसके शारीरिक लक्षणों के साथ-साथ मानसिक लक्षणों को भी मिला लेने से यह दवा मानो रामबाण हो जाती है।

११–जात्युज रोग

(Drug-Diseases)

पारा, क्वीनाइन, आर्सेनिक या संखिया, तम्बाकू, शराब आदि तेज पदार्थ अधिक परिमाण में बहुत दिनों तक सेवन करने पर शरीर में तरह तरह के रोग लक्षण प्रकट होते हैं। यह रोग जात्युज रोग कहलाते हैं। इनका संक्षिप्त इलाज नीचे लिखा जाता है।

पारा।

(Mercury)

पारा अनेक प्रकार से अनेक रोगों में बतौर औषधि के व्यवहार किया जाता है। वैद्य, हकीम और डाक्टर लोग इसके मिश्रण से अनेक दवाएं तयार करते हैं। इन दवाओं में पारा की मात्रा अधिक होने पर या ऐसी दवाएं अधिक दिनों तक सेवन करने पर रात के समय सिर में दर्द, मुंह व नाकों और फुन्सियों, मसूड़ों से खून, मुंह में बदबू, लार गले और बगल आदि की गिल्टियों का फूलना, हड्डियों में [illegible] दर्द, कई प्रकार के [illegible] का [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] होना [illegible] [illegible] और [illegible] हुई [illegible]

में तड़पाहट, कभी कभी खूनी दस्त, [illegible] और [illegible] लाल रंग का पेशाब लाना, [illegible] में [illegible] को [illegible] सूजन [illegible], मसूड़े [illegible] में घाव होना, [illegible] तो खून बहने लगना, दाँतों का [illegible] मुँह में [illegible] ज्यादा [illegible] निकलना और बहुत पसीना इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। कभी-कभी बहुत अधिक मात्रा में पारा व्यवहार करने पर तुरन्त विष के लक्षण प्रकट होते हैं।

चिकित्सा।

यदि पारे का व्यवहार करने पर जहर के लक्षण प्रकट हों तो रोगी को तुरन्त अण्डे की सफेदी, चीनी का शर्बत या पानी मिला दूध सेवन करना चाहिये। इससे तुरन्त लाभ होगा। बाद को लक्षणानुसार दवा चुन कर उसका सेवन कराना चाहिये।

पारे के अपव्यवहार से यदि उपरोक्त लक्षण या शिकायतें प्रकट हों तो सबसे पहले हिपर सल्फर ६ देना चाहिये। छः या आठ दिन तक यह दवा देने के बाद ठहर जाना चाहिये। यदि बहुत मन्द गति से लाभ हो रहा हो तो दो सप्ताह ठहर जाना चाहिये। इसके बाद यदि लाभ होना रुक जाय तो फिर यही दवा देना चाहिये। यदि इससे लाभ तो हो पर वह

अधिक समय न ठहरे तब तीन चार बार हिपर देने के बाद बेलेडोना ६ देना चाहिये।

पारेके कारण मुंह और गले में जख्म आदि शिकायतें हों, गिल्टियाँ फूल जायें या कानों से कम सुनायी दे तो पहले हिपर सल्फर ६, बाद को बेलेडोना ६ देना चाहिये। इससे यदि लाभ न हो तो स्टेफीसेग्रिया ६।

यदि ऋतु या हवा के परिवर्तन से रोगी की तकलीफ बढ़ जाती हो, बहुत दर्द रहता हो खास कर रात के समय छूने से दर्द बढ़ता हो बहुत कमजोरी हो मुंहमें बहुत लार आती हो तो चायना ६ या ३० दीजिये। यदि इससे लाभ न हो और वायु परिवर्तन से तकलीफ बढ़ जाती हो तो कार्बोवेज ६ या ३०।

यदि इन दवाओं के सेवन करने पर भी हड्डियों में दर्द और जोड़ों में सूजन मौजूद रहे तो पहले [illegible] ६ और बाद को एसिड फास ६ या ३० दीजिये। हड्डियों पर गांठ जैसी सूजन हो तो पहले [illegible] ६ या ३० बाद को स्टेफीसेग्रिया ६ या ३०। इन दवाओं के बाद [illegible] देने से [illegible] आराम हो जायगा।

[illegible]

बेलेडोना ६ या ३०—मर्क्युरियस के बाद इसे देने से विशेष लाभ होता है। चेहरा गरम, सिर में रक्त संचार, सिर, चेहरा और दाँतों में दर्द इत्यादि लक्षणों में भी इसका व्यवहार किया जाता है।

कान में दर्द होने पर पल्सेटिला, पेट में सूजन होने पर फेरम। हाथ पैर में जलन, पैरों में सूजन, सूखी खाँसी और श्वास कष्ट होने पर आर्सनिक। शोथ या शरीर में सूजन होने पर रसटक्स। कान में भाँ भाँ आवाज होने पर सिङ्कोना। क्वीनाइन से बुखार छूट जाने पर भी सिर, कान, दाँत और शरीर में दर्द होने पर पल्सेटिला। पल्सेटिला से लाभ न होने पर लेकेसिस या कल्केरिया। बुखार दब जाय पर हिचकियें आती रहें तो नेट्रम म्यूर।

क्वीनाइन से बुखार आराम हो जाने पर भी अन्यान्य शिकायतें मौजूद रहें तो उन शिकायतों की दवा चुननी चाहिये। सल्फर, कल्केरिया, कार्बोवेज, टिपर आर्सनिक, आर्सनिक, साइना, फेरम इपीकाक, लेकेसिस मर्क्युरियस और पल्सेटिला आदि दवाओं से इस हालत में विशेष लाभ होता है।

क्वीनाइन बहुत अधिक तादाद में सेवन करने पर भी यदि बुखार न छूटे, तो पहले इपीकाक दीजिये। बाद को अगर ज़रूरत हो तो आर्सेनिक या कार्बोवेज। इनसे लाभ न होने

(१९) तलपेटमें दर्द, भार, खाली मालूम होना या ऐसी ही कोई और शिकायत तो नहीं है?

(२०) गले में दर्द, सूजन, निगलने में तकलीफ, जलन या और कोई शिकायत?

(२१) पेट या कोठे की हालत, वायु निकल जाती है या पेटमें घूमा करती है? दस्त आसानी से होता है या नहीं? दस्तकी प्रकृति, तादाद और रंग, दस्तके साथ खून या आँव आदिका जाना, दस्तके पहले, दस्तके समय या दस्तके बाद कोई तकलीफ तो नहीं होती? दस्त में छोटे या बड़े क्रिमि तो नहीं रहते? मलद्वार में किसी तरह के जख्म, सूजन भगंदर या बवासीर आदिकी शिकायत तो नहीं है?

(२२) पेशाब कैसा होता है? पेशाब का रंग, पेशाब की तादाद और पेशाब कितनी बार होता है? पेशाब रख छोड़नेसे वह कैसा हो जाता है? उसके नीचे सफेद या लाल अथवा बालू जैसी तली तो नहीं जम जाती? पेशाब करते समय जलन या कोई तकलीफ तो नहीं होती? पेशाब खुलासा होता है या बूँद बूँद? पेशाब में खून, पत्थर के कण या पीप तो नहीं रहता?

(२३) पुरुषेन्द्रिय की कोई शिकायत तो नहीं है? मेह प्रमेह और उसके कारण, इन्द्रिय को ढकनेवाले चमड़े और सुपारी में खाज, इन्द्रिय का प्रदाह, दर्द, सूजन या कोई और

पर लक्षणानुसार विरेट्रम, आर्निका बेलेडोना, मर्क्युरियस, सल्फर, लेकेसिस, पलसेटिला, साइना या कल्केरिया का प्रयोग करना चाहिये। यह दवाएं निम्न या मध्यम क्रम की व्यवहार करना चाहिये।

कोकेन।

(Cocanism)

दक्षिण आफ्रिका के कोको नामक पेड़ के पत्तों का क्षार कोकेन कहलाता है। यह उत्तेजक होता है, इसलिये लोग खाते हैं। अधिक सेवन से भूख न लगना, चेहरे का पीला पड़ जाना, गढ़े में आँखों का धस जाना, नींद न आना, स्मरण शक्ति में कमी, नीति हीनता भ्रान्त या अवास्तव चीजें देखना बारबार कोकेन खाना और पागलपन इत्यादि लक्षण प्रकट होकर अन्त में मृत्यु तक हो जाती है।

चिकित्सा।

कोकेन का खाना एकदम छोड़ देना चाहिये। कोकेन छोड़ देने से शरीर में सुस्ती मालूम होती है, कुछ दिनों तक सारा आल्हादक आदि चीजों का व्यवहार करना चाहिये। इसके बाद बहुत दिनों तक जेलसिमियम ३x या ६x का सेवन करना चाहिये। इससे कोकेन का बुरा असर दूर हो जाता है।

खींचन होनेपर क्लोरोफार्म देना चाहिये। दस्तावर दवाओं के सेवन से भी लाभ होता है।

तम्बाकू।

(Tobacco)

तम्बाकू कई तरह से व्यवहार की जाती है। कोई बीड़ी सिगरेट, पाइप, या हुक्के के रूप में इसे पीता है, कोई चूने या पान के साथ खाता है और कोई नास के रूप में सूंघता है। इस तरह चाहे जिस रूप में इसका अपव्यवहार करते हैं इससे हानि अवश्य होती है। इसका कुफल दूर करने के लिये निम्नलिखित दवाएँ व्यवहार की जाती हैं।

चिकित्सा।

तम्बाकू पीने की आदत न होने के कारण इसके व्यवहार से तबियत खराब हो जाय तो पल्सेटिला। ओरों का [illegible] दर्द और मिचली होने पर एकानाइट, [illegible], [illegible] [illegible], और कै तथा दस्त होने पर कमोमिला। इससे [illegible] लाभ न हो और बहुत जाड़ा लगता हो तो विरेट्रम। इससे भी काफी लाभ न हो तो बारबार कपूर सुंघाना चाहिये। [illegible] की खींचन तथा अन्यान्य शिकायतें दूर करने के लिये क्यूप्रम या कक्यूलस देना चाहिये।

जो लोग तम्बाकू पीने या व्यवहार करने के आदी हैं, उनकी तबियत यदि इसके व्यवहार से खराब हो जाय तो कक्युलस या इग्नेशिया देना चाहिये। तम्बाकू के सेवन से दाँत में दर्द पैदा हो जाय तो ब्रायोनिया या चायना। पाकाशयमें खराबी पैदा हो तो इग्नेशिया या पल्सेटिला। अगर बेचैनी और मिचली हो तो स्टेफीसेग्रिया। तम्बाकू खानेके कारण तकलीफ हो जाने पर भी यही दवाएँ देनी चाहिये। नक्सवोमिका, केमोमिला, पल्सेटिला, कक्युलस और क्युप्रम आदि दवाओं से इस हालत में विशेष लाभ होता है।

बहुत अधिक तादाद में तम्बाकू खाने या पीनेवालों की पुरानी बीमारी आसानी से आराम नहीं होती। नक्सवोमिका या कक्युलस देनेसे स्नायविकता और पाकाशय की दुर्बलता दूर हो जाती है। सदा कब्जियत बनी रहती हो तो नक्सवोमिका, स्टेफीसेग्रिया, या मर्क्युरियस का सेवन करना चाहिये।

जो लोग तम्बाकू के कारखानों में काम करते हैं उनका रोग उसी हालत में अच्छा हो सकता है, जब वे वह काम करना छोड दें। ऐसे आदमियों की बीमारी में आर्सनिक कोलोसिन्थ और क्युप्रम से विशेष लाभ होता है।

तम्बाकू सेवन के कारण बदहजमी हो तो नक्सवोमिका। गलेकी बीमारी हो जाय तो कल्केरिया फस। खाँसने न

दिखायी दे तो फोस्फरस। कलेजा धड़कने लगे तो स्पाइजिलिया। पल्सेटिला से भी इसका बुरा असर दूर होता है। तम्बाकूका त्याग करना या जहाँ तक हो सके कम व्यवहार करना लाभदायक है।

चाय।

(Tea)

अधिक चाय पीने से भी निद्राहीनता, स्नायविकता, शिर में दर्द और चक्कर बदहजमी, कलेजे में धड़कन इत्यादि शिकायतें पैदा हो जाती हैं।

चिकित्सा।

थूजा ३० या २००— अधिक चाय पीने के कारण पेटका फूलना, स्नायविक दुर्बलता इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

चायना ३ या ६—बदहजमी, पेट में ऐंठन कुछ भी हजम न होना इत्यादि लक्षणों में इससे लाभ होता है।

थिया ३X—बहुत दिनों तक चाय पीने के कारण बदहजमी या कलेजे में धड़कन आदि लक्षण उपस्थित होने इसे व्यवहार करना चाहिये।

कोफिया ६ या ३०—चाय पोने के कारण शरीरमें दर्द पैदा हो जाय तो इसे देना चाहिये। इससे लाभ न होनेपर नक्सवोमिका ३०।

पल्सेटिला ६ या ३०—मिचली के और दस्त, पेटमें शूल वेदना या चाय पीनेके कारण मासिक ऋतुस्राव होते समय स्त्रियोंके पेट आदिमें दर्द हो तो इसे देना चाहिये।

इग्नेशिया ६ या ३०—चायके अपव्यवहार के कारण बच्चोंको बेहोशी या खींचन होनेपर इसे देना चाहिये।

एकोनाइट ३ x या ३०—चायका अपव्यवहारके कारण बदनमें दर्द, बुखार, बेचैनी, उत्कंठा इत्यादि।

हो सके तो चाय पीना एकदम छोड़ देना चाहिये या इसका व्यवहार बहुत कम करना चाहिये।

बरफ या बरफकी मलाई।

(Ice or Ice-cream)

अनेक बार बरफ या बरफ की मलाई आदि अधिक तादादमें खाने से पेट फूलना के और दस्त आदि लक्षण प्रकट होते हैं। पसीना के समय गरम शरीर से इन चीजोंका व्यवहार करने पर चेहरा आदि स्थानों पर तरह तरह के दाने या उद्भेद निकल आते हैं।

दिखायी दे तो फोस्फरस। कलेजा धड़कने लगे तो स्पाइजिलिया। पल्सेटिला से भी इसका बुरा असर दूर होता है। तम्बाकूका त्याग करना या जहाँ तक हो सके कम व्यवहार करना लाभदायक है।

चाय।

(Tea)

अधिक चाय पीने से भी निद्राहीनता, स्नायविकता, शिर मे दर्द और चक्कर बदहजमी, कलेजे में धड़कन इत्यादि शिकायतें पैदा हो जाती हैं।

चिकित्सा।

थूजा ३० या २००— अधिक चाय पीने के कारण पेटका फूलना, स्नायविक दुर्बलता इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

चायना ३ या ६—बदहजमी, पेट में ऐंठन कुछ भी हजम न होना इत्यादि लक्षणों में इससे लाभ होता है।

थिया ३X—बहुत दिनों तक चाय पीने के कारण बदहजमी या कलेजे में धड़कन आदि लक्षण उपस्थित होने पर इसे व्यवहार करना चाहिये।

दिखायी दे तो फोस्फरस। कलेजा धड़कने लगे तो स्पाइजिलिया। पलसेटिला से भी इसका बुरा असर दूर होता है। तम्बाकूका त्याग करना या जहाँ तक हो सके कम व्यवहार करना लाभदायक है।

—

चाय।

(Tea)

अधिक चाय पीने से भी निद्राहीनता, स्नायविकता, शिर में दर्द और चक्कर बदहजमी, कलेजे मे धड़कन इत्यादि शिकायतें पेदा हो जाती हैं।

चिकित्सा।

थूजा ३० या २००-- अधिक चाय पीने के कारण पेटका फूलना, स्नायविक दुर्बलता इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

चायना ३ या ६--बदहजमी, पेट में एंठन कुछ भी हजम न होना इत्यादि लक्षणों में इससे लाभ होता है।

थिया ३X--बहुत दिनों तक चाय पीने के कारण बदहजमी या कलेजे में धड़कन आदि लक्षण उपस्थित होने पर इसे व्यवहार करना चाहिये।

पीना छोड़ देने पर भी उसका बुरा असर मोजूद रहे तो नक्स वोमिका या केमोमिला और इनसे लाभ न होनेपर कक्युलस. या इग्नेशिया।

खट्टी चीजें।

(Sour Things)

खट्टी चीजोंमें एसिड या तेजाब, खटाई, आँचार, खट्टे फल इत्यादि चीजोंका शुमार किया जाता है। इनके सेवन से भी तरह तरह की शिकायतें पैदा हो जाती है।

चिकित्सा।

खट्टी चीजें खानेके कारण रातमें दस्त आयें और शिर तथा छाती आदिमे दर्द हो तो नक्सवोमिका। दिनके समय दस्त आयें तो एन्टिम क्रूड। साथ ही आँतो में दर्द हो तो स्टेफोसेग्रिया या बेलेडोना। यदि जाडा भी लगता हो तो विरेट्रम। अगर बुखार आ जाय तो लेकेसिस।

नारंगी या खट्टे फल आदि खानेके कारण लाल लाल दाने निकल आयें तो बेलेडोना या रसटक्स। रोग पुराना हो जाने पर लक्षणानुसार कलकेरिया या कॉस्टिकम।

अन्यान्य लक्षण आर्सेनिक या सल्फर देने से दूर हो सकते हैं। आर्सेनिक उन आदमियों को देना चाहिये जिन्हें

चिकित्सा।

कार्बोवेज ३ या ६–वरफ या वरफका पानी व्यवहार करने के कारण पेट की बीमारी हो जाने पर इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३०–कुलफी मलाई या वरफ की मलाई खानेके कारण कोई शिकायत होनेपर इसे देना चाहिये।

काफी।

(Coffee)

चायकी तरह काफी के अपव्यवहार से भी अनिद्रा कलेजेमें धड़कन, चिड़चिड़ाहट, पाकाशयमें खराबी, शिरदर्द दाँत और पेटमें दर्द इत्यादि शिकायतें पैदा हो जाती है।

चिकित्सा।

अनिद्रा, कलेजमें धडकन और पाकाशय में गड़बड़ी हो तो नक्सवोमिका। शिरके दर्द में लक्षणानुसार नक्सवोमिका इग्नेशिया केमोमिला। दाँतके दर्द में केमोमिला, कोफिया, कक्युलस, बेलेडोना मर्क्युरियस कार्वोवेज, पलसेटिला, रसटक्स। पेट में दर्द होने पर नक्सवोमिका केमोमिला या कक्युलस, कोलोसिन्थ या बेलेडोना। जाँघों में दर्द या हार्निया जसे लक्षण दिखायी देने पर नक्सवोमिका। ...

में कुछ अंगों का परिचय दे देना हम उचित समझते हैं, और बीमारियोंको चिकित्सा करते समय कुछ सहायता मिल सके।

हमारे शरीर में जितने भाग, जितनी नसें या जितनी हड्डियाँ हैं, उन सभों के कुछ न कुछ नाम निश्चित हैं, परन्तु हम अपने पाठकों को मोटी मोटी बातें बताकर ही समझाना चाहते हैं।

हमारा शरीर दो भागों में बटा है,—शिर और धड़। शिर में दिमाग या मस्तिष्क, आँख, नाक, कान, मुख, जीभ आदि अंग हैं। दिमाग शरीर का सर्व श्रेष्ठ अंग है। ईश्वर ने इसकी रक्षा के लिये हड्डियों की मजबूत खोपड़ी बना दी है। मनुष्य की सारी शक्तियाँ और सारे गुणों का स्थान मस्तिष्क ही है। मस्तिष्क एक झिल्ली से ढँका रहता है। उसे मस्तिष्का-वरक झिल्ली कहते हैं। तेज बुखार तथा अन्यान्य कई बीमा-रियों में मस्तिष्क तथा इस झिल्ली पर प्रभाव पड़ता है और इस में प्रदाह आदि उत्पन्न होता है।

शिरका सामनेका भाग चेहरा या मुख मण्डल कहलाता है। चेहरे में सब से ऊपर कपाल रहता है। कपाल के नीचे भौंह और भौंहके नीचे आँखोंके गड्ढे रहते हैं। आँखोंके भिन्न-भिन्न अंग पपनी, पलक, तारा या पुतली और कोया आदि नामसे पुकारे जाते हैं। आँखों के अन्दर का काला भाग पुतली और सफेदभाग कोया कहलाता है। कपालके दोनों सिरेपर आँखके

बहुत भूख लगती है और जा बहुत अधिक खाते है। सल्फर उन्हें देना चाहिये जिन्हे सदा मीठी चीजें खानेकी इच्छा हु करती हो। यदि अम्ल चीजें खानेसे सदा रोग लक्षण ब जाते हों तो बेलेडोना या लेकेसिस देना चाहिये ।

यदि सदा अम्ल और खट्टी चीजें खाने की इच्छा हो हो तो आर्सेनिक, अर्निका, बेलेडोना, चायना या लेकेसि देना चाहिये। यदि केवल खट्टी चीजें खानेपीनेकी इच्छा हो त ब्रायोनिया। खट्टी चीजें खानेके कारण छाती में जलन, औ कै हो तो फेरम। केवल पानी जैसी कै होने पर फोस्फरस पाकाशयमे गड़बड़ी पैदा हो जाय तो आर्सेनिक या लेकेसिस अम्लचीजें और खट्टे फल खानेके कारण दस्त आने लगे त लेकेसिस। केवल खट्टे फल खानेके कारण दस्त आयें ता चायना। यह सभी दवाएँ ६ या ३० क्रमकी व्यवहार करनी चाहिये।

मसाले ।

(Spices)

सोंठ और मिर्च जैसे गरम मसाले अधिक तादाद में व्यवहार करने के कारण जो शिकायत पैदा हो जाती हैं, वे नक्सवामिका देने से दूर हो जाती है। अन्यान्य मसालों के अपव्यवहार में लक्षणानुसार इग्नेशिया, कार्बोवेज या ओपि- यमसे लाभ होता है।

चाहिये और किसी चतुर चिकित्सक की सलाह लेनी चाहिये।

अफ़ीम छोड़ देना बहुत अच्छा है, पर इसे छोड़ते समय बहुत कष्ट होता है। अफीम छोड़ते समय और अफीम छोड़ने के कुछ दिन बाद तक एविना सेटाइवा मदर टिञ्चर पाँच बूँदके हिसाबसे (जलके साथ) दिन में तीनबार सेवन करने पर कोई कष्ट नहीं होता। अफीम एकदम न छोड़ कर धीरे धीरे उसकी मात्रा घटाना चाहिये। एविना से तकलीफ दूर न होने पर कैमोमिला, कोफिया या कैनेबिस इन्डिका देना चाहिये।

संखिया।

(Arsenic)

संखिया भी बहुत दवाओं में मिलायी जाती है और उनके सेवन से तरह तरह की शिकायतें पैदा होती हैं। इन शिकायतों को दूर करनेके लिये सबसे पहले इपीकाक देना चाहिये। इससे लाभ न होनेपर हिपर सल्फर। इन दवाओं से लाभ न होने पर लक्षणानुसार नक्सवोमिका, विरेट्रम, फेरम या चायना आदि दवाओं में से कोई एक दवा व्यवहार करना चाहिये।

कमजोर, निद्रालुता, ठंढ मालूम होना, क्रोध और चिड़चिड़ाहट, नाकसे खून गिरना इत्यादि लक्षण प्रकट हों तो नक्सवोमिका या कार्बोवेज देना चाहिये।

शिरमें धमक और आँखोंपर दबाव मालूम होता हो या ताजी और ठंढी हवा में आराम मालूम हो तो कार्बोवेज, खुली हवामें तकलीफ बढ़ जाती हो तो नक्सवोमिका।

शिरदर्द के समय यदि ऐसा मालूम हो मानो शिरमें काँटी गड़ी हुई है, दर्द एक ही ओर हो, चलते समय पद पद पर और खुली हवामें, सोचने से और हिलने डोलने से दर्द बढ़ता हो तो नक्सवोमिका।

अगर केवल जी मिचलाता हो तो कार्बोवेज। यदि कै करने की इच्छा या कै होता हो तो नक्सवोमिका। फीके रंगका पतला मल निकले तो कार्बोवेज, बहुत काँखने कूँखने और जोर लगाने पर थोड़ासा दस्त हो तो नक्सवोमिका।

बहुत सुस्ती, आँखें लाल, आँख के कोनो में चीपड़, रोशनी भली न मालूम होना, सूखी खाँसी इत्यादि लक्षण हों तो नक्सवोमिका। नक्सवोमिका देने के बाद दो तीन घंटे में शिरदर्द दूर न हो तो कोफिया। यदि मिचली, पाकाशय में दर्द और जीभपर लेप आदि लक्षण दूर न हो तो एन्टिमक्रूड।

बारंबार और बहुत दिनो तक शराब पीने के कारण शिर में जोरो का दर्द, शिर भारी और पूर्ण मालूम होना, पाकाशय

डरना और भागने की इच्छा करना, शिर गरम, चेहरा फूला हुआ, आँखों में चमक लेकिन रोशनी बरदास्त न होना, गले की नसों का जोरों से फड़कना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

हायोसायमस ६ या ३०—काल्पनिक चीजों को देखकर पकड़ने दौड़ना, घबड़ाना, मार पीट या तूफान करना इत्यादि।

स्ट्रैमोनियम ६ या ३०—रोगी के प्रलाप में जब ईश्वर प्रार्थना धर्म चर्चा आदि धार्मिक बातें दिखायी दें तब इसे देना चाहिये।

लेकेसिस ६ या ३०—दोपहर के बाद या सोने के बाद तकलीफ का बढ़ जाना, रोगी का बहुत बातचीत करना, एक विषय को बातें करते करते दूसरे विषय की बातें करने लगना, गले के आस पास कोई भी कपड़ा आदि न रख सकना इत्यादि लक्षणों में और उपरोक्त दवाओं से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

विरेट्रम ६ या ३०—चेहरे पर ठढा पसीना, भागने के लिये उत्कण्ठा, पूर्ण इच्छा, भूत प्रेत दिखायी देना इत्यादि।

आर्सेनिक ६ या ३०—यह इस रोग की बढ़िया दवा है, रोगी को सगे सम्बन्धियों की आवाज सुनायी देना, खास कर शिर के ऊपर, कमरे के कोने में अथवा जीने के नीचे या

ऊपर, बिछौने पर जीव जन्तु रेंगते दिखायी देना, ऐसा मालुम होना मानो घर में चोर या अजनबी आदमी भरे हुए हैं, बिछौने से उठ कर भागना, मृत्युभय इत्यादि लक्षणों में, नयी बीमारी में और ओपियम से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—ओपियम या आर्सेनिक जैसे लक्षणों में इससे भी लाभ होता है. खासकर उन लोगों को जो बहुत स्वेच्छाचारी होते हैं और आजादी के साथ रहते हैं।

आवश्यक सूचना—रोगी को स्थिर और शान्त भाव से रखना चाहिये किसी तरह उसे उत्तेजित न होने देना चाहिये। शराब, चाय, काफी आदि उत्तेजक पदार्थों का एक दम त्याग करना चाहिये। रोगी को हमेशा ठंढा पानी पिलाना चाहिये। खाने के लिये पुष्टिकर और आसानी से हजम होने वाली चीजें देना चाहिये।

२०—आकस्मिक दुर्घटनाएँ ।

(Accidents)

कट जाना ।

(Cuts or Wounds)

चाकू, छुरी, काँच या किसी शस्त्र द्वारा शरीर के कट जाने, खोंचा लगने या काँटी आदि चुभ जाने पर चमड़ा कट कर उस स्थान में जख्म हो जाता है। इसका इलाज करते समय सब से पहले रक्त स्राव बन्द करना चाहिये । जख्म को दबा कर पकड़ रखने से अथवा जख्म पर ठंढे पानी की पट्टी या बरफ चढ़ाने से खून का निकलना बन्द हो जाता है। यदि कोई नस कट गयी हो तो उसे बाँध देने या उस पर टाँके लगाने की जरूरत पड़ती है। जख्म पर केलेण्डुला लोशन (केलेण्डुला मदर टिञ्चर छठगुने पानी में मिलाकर) प्रयोग करने से खून का निकलना बन्द हो जाता है और जख्म में पीब नहीं होता ।

खून बन्द हो जानेपर जख्मको अच्छी तरह साफकर पट्टी आदि बाँध देना चाहिये । बाँधनेके पहले अच्छी तरह देख लेना चाहिये कि जख्म पर मैल, बाल काँचके टुकड़े काँटा या और

बगल में कुछ दबा हुआ एक स्थान रहता है, जिसे रग, गण्ड-स्थल या कनपटी कहते हैं। दोनों आँखों के नीचे दो गाल और गालों के बीच में नाक होती है। नाक के दोनों छिद्रों को नासारन्ध्र या नथुने कहते हैं।

नाक के नीचे दो होठ होते हैं। ऊपर के होठ पर पुरुषों के मूछ निकलती है। दोनों होठों के बीच में मुँह होता है। मुँह में दाँत और जीभ रहती है। दाँत जिस स्थान में लगे रहते हैं, वह मसूढ़ा कहलाता है। जीभ की जड़ के पास गले का छेद रहता है, जहाँ से अन्न और पानी आदि पेट में पहुंचता है। इस छेद के ऊपरी भाग में एक अंकुर सा लटका करता है। इसे घंटी या आल जिह्वा कहते हैं। जब यह बढ़ जाती है, तब गला सुड़सुड़ा कर खाँसी आती है। मुँह और दाँत आदि दो जबड़ों में बंटे रहते हैं। नीचे का जबड़ा हिलता है. ऊपर का स्थिर रहता है। नीचेवाले होठ के नीचे दाढ़ी रहती है। दोनो गालो के किनारे पर कान लगे रहते हैं। कान का बाहरी हिस्सा दिखावे भर का होता है। कान के छेद में एक झिल्ली या पर्दा होता है। उसी से सुनने की क्रिया होती है। कान और जबड़े के नीचे कुछ ग्रन्थियाँ या गोलियाँ रहती हैं। इन्हें अंग्रेजी में ग्लैण्ड कहते हैं। इनमें कभी कभी प्रदाह हो जाया करता है।

शिर और धड़ को जोड़नेवाला भाग कंठ या गर्दन कहलाता है। गर्दन के दोनों ओर दो भुजाएँ और नीचे छाती

कोई चीज न रह जाय। बाँधते समय जख्म के दोनों मुँह मिला देना चाहिये। जख्म वाले स्थान को सदा स्थिर रखना चाहिये और उसे नयी चोट से बचाना चाहिये।

जख्म पर केलेण्डुला तेल (१ भाग केलेण्डुला मदर टिञ्चर और १० भाग आलिव आइल) लगाते रहने से जख्म जल्दी सूख जाता है। एक औंस वेसलीन ३०-४० बूँद केलेण्डुला मदर टिञ्चर और आधा ड्राम बोरिक एसिड-इनका मलहम बना कर लगाने से भी जल्दी भरता है।

इन बाहरी दवाओं के अलावा लक्षणानुसार निम्नलिखित दवाएं खिलाने से भी लाभ होता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ या ६—जख्म के कारण बुखार, भय, उद्वेग, अस्थिरता, प्यास इत्यादि।

बेलेडोना ६—जख्म में बहुत दर्द और सूजन, शिर में दर्द ज्वरभाव इत्यादि।

कैमोमिला ६ या १२—जख्म में बहुत पीर, बहुत दर्द चिडचिडाहट अस्थिरता घाव का जल्दी न सूखना इत्यादि।

आर्निका ६ या ३०—जख्म, चोट जख्म के कारण तकलीफ या तनावट अथवा किसी तरह की भी तकलीफ होने पर इससे लाभ होता है।

चायना ६ या ३०—जख्म से जरा में ही खून बहने लगना, बहुत रक्तस्राव के कारण कमजोरी, मूर्छाभाव, चेहरे का फीका पड़ जाना इत्यादि।

हिपर सल्फर ६ या ३०—जख्म पक जाने के कारण उसमें बहुत पीव हो जाय तो इसे देना चाहिये।

हाइपेरिकम ६ या ३०—सुई, पिन, कॉंटी या कोई नोकदार चीज घुस जाने पर इससे विशेष लाभ होता है।

जख्म में अधिक पीव होने पर चायना, मर्क्युरियस हिपर सल्फर और साइलीसिया। जख्म से जरा में ही खून निकल पड़ता हो तो एकोनाइट, अर्निका, चायना, फोल्फरस और क्रियोजोट। जख्म सड़ सड़ कर बढ़ता जा रहा हो तो आर्सेनिक, चायना, लेकेसिस, साइलीसिया और कार्बोवेज आदि दवाओं से विशेष लाभ होता है। जख्म को रोज एकबार नीम के पानी या हाईड्रोजन पेरोक्साइड आदि से अवश्य साफ कर देना चाहिये।

कुचल जाना।

(Bruises)

रेल का दरवाजा बन्द करते समय या किसी भारी चीज रखते समय अक्सर उँगलियाँ दब जाती हैं। कभी कभी

शरीर के किसी स्थान में कोई भारी चीज गिर जाने से भी वह स्थान कुचल जाता है। ऐसे मामलों में ऊपर का चमड़ा तो नहीं फटता, पर भीतर की छोटी छोटी नसें फट जाती हैं। इससे उस स्थान में नीला दाग पड़ जाता है। चोट अधिक लगने से कभी कभी वहाँ पीव भी पैदा हो जाता है।

चिकित्सा ।

नीला दाग पड़ने पर—चोट लगते ही अर्निका ३ या ६ का सेवन करना और अर्निका लोशन की पट्टी चढ़ाना बहुत लाभदायक है। इससे प्रायः दाग नहीं पड़ता और दर्द तथा सूजन कम हो जाती है। यदि इससे लाभ न हो तो हेमामेलिस की जलपट्टी चढ़ानी चाहिये। इन दवाओं के प्रयोग से प्रायः जख्म व पीव नहीं पड़ता। आवश्यकतानुसार निम्नलिखित दवाओं का सेवन करना चाहिये।

रूटा ६ या ३०—हड्डी तक चोट का असर पहुँचने पर इसे देना चाहिये।

कोनायम ६ या ३०—स्तन अण्डकोष या किसी अन्य ग्रन्थिमें चोट लगने पर इसे देना चाहिये।

हिपर सल्फर ६ या ३०—पकने का उपक्रम दिखायी देने या पीव पड़ने पर इसे प्रयोग करना चाहिये।

हाइपेरिकम ६ या ३०—चोट के कारण धनुष्टंकार जैसे लक्षण उपस्थित होने पर इससे लाभ होता है।

एकोनाइट ३ या ६—कहीं जोरों से उँगलियाँ दब जावे या कुचल जाने के कारण बुखार आ जाय तो इसे देना चाहिये

मोच ।

(Sprains)

अनेक बार कहीं ऊँची या नीची जगह में पैर पड़ जानेसे पैर आदिमें मोच आ जाती है। इसी तरह भारी चीज उठाने से पीठ और कमरमें भी मोच आजाती है। शिर पर बोझा न सधने में गर्दनमें भी मोच आती है। मोच आने पर उस स्थान में बहुत दर्द होता है। कभी कभी वह स्थान बेतरह फूल जाता है और वहाँ बहुत तकलीफ होती है।

चिकित्सा ।

मोचवाले स्थानमें मोच आते ही ठंडे पानीकी पट्टी या बरफ का प्रयोग करने से लाभ होता है। इससे लाभ न होने पर आर्निका लोशन की पट्टी चढ़ाना और आर्निका का सेवन

करना फायदेमन्द है। रसटक्स का लोशन व्यवहार करने से भी बहुत लाभ होता है। तकलीफ घट जाने पर या जहाँ दवाएँ न मिलें, वहाँ गरम पानी का सेंक देना चाहिये और उस स्थानको गरम पानी में डुबो रखना चाहिये। जब तक तकलीफ एकदम दूर न हो जाय, तब तक आक्रान्त स्थानका हिलाना डोलाना ठीक नहीं। अवस्थानुसार निम्नलिखित दवाओं का सेवन करना चाहिये।

आर्निका ३ या ६—कुचल जाने जैसा अथवा किसी तरह का भी दर्द होने पर सबसे पहले इसे ही देना चाहिये।

रसटक्स ६ या ३०—मोच आनेकी यह भी एक प्रधान दवा है, खासकर जब भारी वस्तु उठाने की चेष्टा करते समय मोच आ जाय तब इसे ही प्रयोग करना चाहिये। मोचवाले स्थानमें सूजन बहुत दर्द चुप चाप पड़े रहनेसे दर्दका बढ़ना, हिलने डोलने और शीतलता के प्रयोगसे आराम मालूम होना इत्यादि इसके प्रधान लक्षण है।

आर्जेनिया ६ या ३० रसटक्स से पूरा लाभ न होने पर अथवा रसटक्स देने के बाद कमर में बहुत दर्द होने पर इसे देना चाहिये।

निक्फाइटम ३ या ६—मोच वाले स्थानमें नीलापन अधिक न होकर पीलापन दिखाया दे तब इसे व्यवहार करना चाहिये।

चिकित्सा।

शरीर में कहीं भी चोट लगने पर अर्निका लोशन की पट्टी चढ़ाना बहुत आवश्यक और लाभदायक है। यदि शिर में चोट हो तो रोगीको स्थिर भावसे सुला रखना चाहिये और उसे किसी तरह की मानसिक चिन्ता न करने देना चाहिये। लक्षणानुसार निम्नलिखित दवाएँ सेवन की जा सकती हैं—

अर्निका ३ या ६—चोट लगतेही इसका सेवन आरम्भ कर देनेसे दर्द और तकलीफ बहुत घट जाती है और रोगी शीघ्र आराम हो जाता है।

एकोनाइट ३ या ६—चोट लगने के कारण बुखार आ जाने पर इसे देना चाहिये।

बेलोडोना ६ या ३०—बुखार, शिरमें दर्द, चेहरा और आँखें लाल, मस्तिष्क विकार और प्रलाप इत्यादि लक्षणों में इसके व्यवहार से लाभ होता है।

हायोसायमस ६ या ३०—रोगी बहुत बक झक करता हो तो यह भी दिया जा सकता है।

ओपियम ६ या ३०—चोटके साथ कब्जियत श्वास-कष्ट, गले में घड़घड़ाहट आँखें आधी बन्द और आधी खुली इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

आग में जल जाना।

(Burns)

आग में जल जाने से अनेक बार मृत्यु तक हो जाती है। इसलिये इसका इलाज सावधानी के साथ कराना चाहिये। साधारण रूप से जलने पर विशेष चिन्ता की बात नहीं होती, परन्तु बहुत जल जाने के कारण जब फफोले पड़ जाते हैं तब उन फफोलों से जख्म हो जाने का डर रहता है। कभी कभी यह जख्म सड़ सड़ या गल गल कर चारों ओर बढ़ने लगते हैं। ऐसे जख्म बहुत बुरे होते हैं। कभी कभी हड्डी तक जलने का असर पहुँचता है। बच्चों को जलने के बाद ऐंठन या धनुष्टङ्कार हो जाता है। इससे उनकी मृत्यु तक हो जाती है। बूढ़ों को जलने के बाद कभी कभी विसर्प हो जाता है।

चिकित्सा।

यदि हाथ पैर जल जाय, तो जलने के बाद तुरन्त गुनगुने पानी में ज़रा सा नमक या सोडा डालकर, उसमें जले हुए अंग को डुबो रखना चाहिये। इससे जलन और तकलीफ कम हो जाती है और फफोले नहीं पड़ते।

नारियल का तेल और चूने का पानी दोनों समान समान लेकर, खूब फेंटना चाहिए। फिर पैदा होने पर उसे रुई से भर कर आक्रान्त स्थान में लगाना चाहिए। [illegible]

रहता है। छाती के नीचे पेट, पेट के नीचे तलपेट या पेड़ और उसके नीचे जननेन्द्रिय रहती है। शरीर के अधिकांश महत्त्वपूर्ण यंत्र इसी स्थान में पाये जाते हैं।

छाती में बायीं ओर हृदय या कलेजा नामक यंत्र है। इसी से रक्तसञ्चालन का काम होता है। रक्त सञ्चालन का काम करनेवाली नस को धमनी कहते है। हृदय का आकार सरीफे के फल जैसा होता है और यह मुट्ठी जितना बड़ा होता है। यह दोनों फेफड़ों के बीच में तिर्यक भाव से स्थित रहता है। धमनी द्वारा शुद्ध रक्त समूचे शरीर में पहुंचाने का और शिराओं द्वारा दूषित रक्त को एकत्र कर फेफड़ों से शुद्ध कराने का काम हृदयद्वारा ही सम्पादित होता है। रक्त शुद्ध होने पर वह पुनः धमनीद्वारा समूचे शरीर में संचालित होता है।

छाती में दोनों ओर की पसलियों के नीचे फेफड़ा या फुसफुस होता है। यह भी एक झिल्ली से ढका रहता है। फेफड़े के नीचे दाहिनी ओर यकृत या लीवर और बायीं ओर प्लीहा या तिल्ली होती है। यकृत भी रक्त को शुद्ध करने के कार्य में सहायता पहुँचाता है। प्रधानतः यह पित्त तैयार करता है। पित्त खाये हुए पदार्थ में मिलने से वह पचता है और पेट साफ रहता है। तिल्ली में बहुत सा खून जमा रहता है जो आवश्यकतानुसार यकृत, पाकस्थली तथा अन्यान्य स्थानों में पहुँचता है। यकृत और प्लीहा बढ़ जाने पर

गन्दी हो जाय, तब तब नया फाहा चढ़ा देना चाहिये। इससे जख्म जल्दी आराम हो जाता है।

कोई स्थान जल जाने पर, कोई दूसरी दवा न मिले तो तुरन्त उस स्थान मे नारियल का तेल डाल कर, ऊपर से खूब मैदा छिड़क कर उस स्थान को एकदम ढँक देना चाहिये। इससे बहुत लाभ होता है।

जले हुए स्थानमें फफोला पड़ने के पहले आल्कोहल का फाहा चढ़ाने से जलन शान्त होती है।

जले हुए स्थान पर साधारण सोडा फैला कर ऊपर से ठंढे पानी की पट्टी चढ़ानी चाहिये और बारम्बार उस पट्टी को तर रखना चाहिये। जख्म बहुत गहरे न होने पर इससे काफी लाभ होता है।

होमियोपैथिक दवाओं में केन्थरिस जलने की सर्वोत्कृष्ट दवा है। इसका मदर टिञ्चर १० गुने पानी में मिलाकर उसकी पट्टी दिन में कम से कम तीन बार चढ़ाने से चाहे थोड़ा जला हो या बहुत, आश्चर्य जनक लाभ होता है। आवश्यकता हो तो दर्द बढ़ने पर बीच में भी पट्टी बदली जा सकती है। इसका बाह्य प्रयोग करते समय केन्थरिस ६ या ३० का सेवन करने से दूना लाभ होता है। केन्थरिसके बदले आर्टिका-युरेन्स का लोशन भी व्यवहार किया जा सकता है। यह भी न मिले तो कास्टिकम ३ या ६ का लोशन बना कर उसी की

पट्टी चढ़ानी चाहिये। इससे भी दर्द घट जाता है और ज़
जल्दी भर जाता है।

बहुत गरम चीजें खाने, से कभी कभी मुँह, गला या
पाकाशय जल जाता है। मलद्वार में बहुत गरम पानी की
पिचकारी लेने से आँत भी कभी कभी जल जाती है। ऐसे
मामलों में ग्लीसरीन और पानी समान भाग में लेकर उसमें
कुल्ला करना चाहिये। अथवा केन्थरिस लोशन थोड़ी थोड़ी
देर के बाद एक एक चम्मच लेकर मुँह में थोडी थोड़ी देर
रखना चाहिये। आँत जल जाने पर केन्थरिस लोशन की
पिचकारी लेने से भी लाभ होता है। आर्टिका युरेन्स १X
दो घण्टे के अन्तर से सेवन करना भी बहुत लाभदायक है।
लक्षणानुसार आर्सेनिक, कस्टिकम, रसटक्स या कार्बोवेज
आदि दवाओं का भी सेवन किया जा सकता है।

सल्फ्यूरिक एसिड या किसी दूसरे एसिड से जल जाने
पर चूने का पानी या खड़ी मिट्टी (चाक) पानी में मिलाकर
उसकी पट्टी चढ़ानी चाहिये। फास्फरस से जल जाने पर
तिल्ली के तेल की पट्टी चढ़ानी चाहिये।

जलने के बाद अगर ज़ख्म न भरता हो और उसमें से
दुर्गन्ध आने लगे तो क्लोराइड आफ लाइम (चूना) और
तिल्ली का तेल एक में मिला कर, उसमें फेना पैदा करना
चाहिये और उसी को ज़ख्मों पर लगाना चाहिये।

जल जाने के बाद बुखार आदि,उपसर्गों के लिये निम्न-लिखित दवाएँ प्रयोग करनी चाहिये।

एकोनाइट ३ या ६-जाड़ा देकर तेज़ बुखार आना, भय, अस्थिरता, उद्वेग, प्यास, इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

केमोमिला १२ या ३०-बहुत जल जानेके बाद खींचन या आक्षेप उपस्थित होनेपर इसे देना चाहिये। बहुत दर्द, दर्द के कारण पागलों की तरह घूमना, चिड़चिड़ाहट इत्यादि लक्षणों में भी इससे लाभ होता है।

हिपर सल्फर ६ या ३०-बहुत पीब निकलने पर इसे देना चाहिये।

पल्सेटिला ६ या ३०—जल जाने के बाद पेटमें दर्द और पतले दस्त आवें तो इसे देना चाहिये। इससे लाभ न होने पर सल्फर ३०। दोपहर से आधी रात तक दस्त अधिक आते हों तो कल्केरिया। सुबह और दोपहर के पहले अधिक दस्त आवें तो आर्सेनिक।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०-जलने के बाद हाथ पैर तथा अन्यान्य अङ्गों में शोथ दिखायी देने पर इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३०-बुखार तेज प्यास होकिन एक साथ अधिक पानी न पीना अस्थिरता उद्वेग, कमजोरी, बहुत दुबला हो जाना इत्यादि।

कस्टिकम ३०—पुराने जख्मोंमें इसे व्यवहार करना चाहिये।

साइलीसिया ६ या ३०—जख्म जल्दी न सूखते हों तब या जख्म जिस समय सूखने लगे उस समय इसे देना चाहिये।

सल्फर ३०—जख्म में कहीं कहीं मांसका न होना, जख्म के चारों ओर जलन, प्रदाह, खुजली इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

आवश्यक सूचना—जले हुए जख्मों की तकलीफ दूर करने के लिये अर्निका का प्रयोग करना ठीक नहीं। जले हुए स्थान में हवा न लगने देना चाहिये। हवासे बचानेके लिये दवाके फाहे या पट्टियाँ भी बारंबार न बदलना चाहिये और उन्हे बदलते समय जरूरत से ज्यादा समय तक जख्मों को खुला न रखना चाहिये। यदि फफोले पड़ जायँ तो उन्हें सुई से फोड़कर जहाँतक हो सके उनका चमड़ा निकाल देना चाहिये और तब लोशन आदिका प्रयोग करना चाहिये।

डंक मारना।

(Stinging)

मधुमक्खी, भौंरा, बर्रे, बिच्छू आदि अनेक कीट पतङ्ग डंक मारते हैं। चिउटे, मकड़े, कानखजूरे आदि काटते हैं।

इनके काटने या डंक मारने पर आक्रान्त स्थानमें लाली, फूलन, जलन, खुजली, पीड़ा आदि लक्षण प्रकट होते हैं। इनकी चिकित्सा नीचे लिखी जाती है।

चिकित्सा।

यदि किसी कीट पतंग ने डंक मारा हो तो सुई, चाकू, कैंची या चिमटी आदिके सहारे पहले डंकको निकाल देना चाहिये। इसके बाद उस स्थानमें स्पिरिट कैम्फर, अथवा लहसुन या प्याजका रस या चूने का पानी लगाने पर जलन कम हो जाती है। अर्निका या लिडमके लोशनका बाह्य प्रयोग और एपिस या लिडमके सेवन से भी काफी लाभ होता है।

बिच्छूके डंक पर परमैंगनेट आफ पोटाश पानीमें मिलाकर रगड़ने से तकलीफ दूर हो जाती है। यदि उँगली आदि में बिच्छूने डंक मारा हो, तो पानीमें परमैंगनेट आफ पोटाश घोलकर उसमें उँगली डुबा रखनी चाहिये।

किसी भी कीट पतंग के काटने या डंक मारने पर आँचसे उसे सेंकना बहुत लाभदायक है। इसके लिये आक्रान्त स्थानको या तो आँचके पास ले जाना चाहिये या आग में लोहा ईंट का रोड़ा आदि गरम कर या लाल अंगारेको चिमटेमें दबा कर आक्रान्त स्थानके जितना नज़दीक हो सके ले जाना चाहिये और जब तक दर्द दूर न हो जाय, इसी तरह सेंकना चाहिये। मकड़े, बिच्छू, बर्रे आदि

सभी के काटने या डंक मारने पर इस तरह सेंकने से बहुत लाभ होता है।

मधुमक्खी के काटने पर कार्बोलिक एसिड ३ X या १ सेवन कराना चाहिये। इससे तुरन्त लाभ होता है। एपिस के सेवन से खुजली तथा कमजोरी दूर होती है। एपिस के बाद अर्निका या नेट्रम म्यूर देना चाहिये।

मच्छड़ों के काटने पर चकत्ते आदि पड़ जायें तो वहां लेमनजूस या एमोनिया रगड़ना चाहिये।

कभी कभी किसी फल के अन्दर भौंरे आदि छिपे रहते हैं। इन फलों को दाँत से काटकर खाते समय बच्चों के मुँह, होठ या जीभ पर वे डंक मार देते हैं। ऐसी अवस्था में नमक मिले पानी से कुल्ला करना चाहिये और एपिस खाना चाहिये। इससे लाभ न होने पर बेलेडोना या लेकेसिस। जीभके अगले भाग में डंक होने पर बेलेडोना और पिछले भागमें होने पर लेकेसिस से विशेष लाभ होता है।

चूहा काटने पर लेडम ६ का सेवन कराना चाहिये। कान-खजूरा काटने या चिपट जाने पर पानी या घी में नमक मिलाकर वहाँ लगाना चाहिये।

कुत्ते आदि का काटना।

(Bites)

अनेक बार पागल कुत्ते, सियार या लोमड़ी आदि जानवर काट खाते हैं. इससे विष चढ़ता है और जलातंक रोग हो जाता है।

ऐसे जानवर के काटने पर तुरन्त उस स्थान को गरम लोहे या कास्टिकसे जला देना चाहिये अथवा मुँहसे चूसकर या सिंगी लगवाकर उसका विष बाहर निकाल देना चाहिये। जख्म चूसनेवालेके मुँह में घाव या छाले आदि न होने चाहिये। बेहतर है कि वह जख्मको चूसते समय अपने मुँहमें नमक या लहसुन रख लिया करे।

इसके बाद कुछ दिनों तक बेलेडोना ६ का सेवन कराने से अनिष्ट होने की सम्भावना नहीं रहती। जलातङ्क के लक्षण प्रकट होने पर उसी रोगकी दवाएं प्रयोग करनी चाहिये।

सांपका काटना।

(Snake Bites)

विषैला सर्प काटने पर उसका इलाज बड़ी शीघ्रता के साथ करना चाहिये क्योंकि इसमें प्राणनाश होने में देर नहीं लगती। सांपके काटने पर पहले वह स्थान कुछ सुन्न रहता है बादको फूलकर नीला हो जाता है। धीरे धीरे ऊपर चढ़ता

साँप काटते ही जख्मको चूस चूसकर उसका विष निकाल देना बहुत अच्छा उपाय है। जख्मके पास गरम लोहा ले जाकर उसको आँचसे सेंकना भी बहुत लाभदायक है। इसके लिये लोहेके कई टुकड़े आगमें डालकर उन्हें तपाना चाहिये और एक के बाद एक, सेंकनेके काममें लाना चाहिये ताकि बीचमें रुकावट न पड़े। विष चूसनेके बाद इस तरहका सेंक बहुत फायदा करता है।

साँप काटने के बाद रोगी को किसी तालाब या नदी के किनारे ले जाकर, उसे इस तरह सुलाना चाहिये, ताकि उसका धड़ पानी में और शिर सूखे स्थान में रहे। इसके बाद शिर पर ठंढे जल की अनवरत धार देना चाहिये। जब तक रोगी पूर्णरूप से होश में न आ जाय, तब तक क्रिया जारी रखनी चाहिये। इससे अनेक बार रोगी के प्राण बच जाते हैं।

वैद्यों के मतानुसार रोगी को इमली, अमलतास और नीब् आदि चीजें खिलाने से विषकी मारक-शक्ति कम हो जाती है।

आवश्यक सूचना-सर्प विष का इलाज करते समय रोगी को सोने न देना चाहिये। सोने से उसकी मृत्यु हो सकती है।

विष खाना।

(Poisoning)

जान या अनजान में किसी भी तरह पेट में विष पर मृत्यु हो सकती है। हमारे देश में साधारणतः और संखिया इन्हीं दो विषों का अधिक प्रयोग होता लोग आत्महत्या करने के लिये अफीम खाते हैं और का प्राण लेने के लिये उन्हें संखिया खिलाते हैं। सुशिक्षित युवक आत्महत्या के लिये पेखिटों का भी करने लगे हैं। कई विषों का इलाक नीचे लिखा जाता है।

चिकित्सा।

अफीम—अफीम के विषका इलाज करते समय चि त्सकको सबसे अधिक इस बात पर ध्यान रखना चाहिये कि रोगी सो न जाये। इसके लिये रोगी को पकड़ कर चला पड़ता है, उसे बातों में लगाना पड़ता है। और मार मार काट काट कर जागरित रखना पड़ता है। रोगी को जाने पर यह निद्रा ही उसकी महानिद्रा हो जाती है। इस साधारण सूचना पर ध्यान रखते हुए उसका इलाज करना चाहिये। यह मालूम होते ही, कि रोगी ने अफीम खा ली है, उसे नमक मिला गरम पानी या कै करने वाली किसी अन्य दवा का सेवन कराकर खूब कै करानी चाहिये या स्टमक पम्प से

पाकस्थली और आँतों में भी विकार पैदा हो जाता है और रोगी का शरीर पीला पड़ जाता है।

मुख से लेकर गुह्य द्वार तक एक नली बनी हुई है, जिसे आँत कहते हैं। इस नली का एक अंश फूला हुआ रहता है और वही पाकस्थली या पाकाशय कहलाता है । पाकाशय के नीचे और ऊपर दोनों ओर आँत जुड़ी रहती है। इस आँत के अलावा एक छोटी आँत भी होती है। इसका सिरा बड़ी आँत के सिरे से जुड़ा रहता है।

खायी हुई चीजें लार के साथ मिल कर गलनाली क मार्ग से पाकाशय में पहुँचती हैं । पाकाशय में गेस्ट्रिक जूस नामक एक पदार्थ निकलता है, जिससे पाचन क्रिया में बड़ी सहायता मिलती है। खायी हुई चीजों का एक अंश यहाँ रक्त के रूप में परिणत होता है, जो यकृत, फेफड़ा आदि स्थानो में शुद्ध होने के बाद शरीर के शुद्ध रक्त में मिल जाता है। रक्त बनने के बाद भुक्त द्रव्यों का जो अंश शेष रहता है, उस पर और भी कई प्रक्रियाएं होकर कई तरह के रस तैयार होते हैं, जो अन्त में रक्त बन जाते हैं। सब से अन्त में जो निःसार भाग बच जाता है, वह पित्त की मिलावट से पीला होकर मल द्वार से मल के रूप में तथा इसका तरल अंश पेशाब और पसीने के रूप में बाहर निकलता है।

तलपेट में मूत्राशय आदि यंत्र हैं जहाँ मूत्र तैयार और संचित होता है। इसे बाहर निकालने का काम मूत्र नाली

पहारे पेट का विष बाहर निकाल देना चाहिये । इस तरह विष निकल जाने पर रोगी को बेलेडोना मदर टिञ्चर एक एक बूंद घण्टे में चार पाँच बार खिलाना चाहिये और रोगी जब तक पूर्ण स्वस्थ न हो जाय तब तक उसे जागरित अवस्था में ही रखना चाहिये । गत परिच्छेद में "अफीम" देखिये ।

संखिया-संखिया खाने पर मनुष्य को कै दस्त आदि होने लगते हैं। इसका विष भी स्टमक पम्प या कै करानेवाली दवाएँ खिलाकर पहले पेट से निकाल देना चाहिये । इसके बाद पेरोक्साइड ऑफ आयरन या लोहे का मोरचा (जंग) शर्बत में मिलाकर पिलाना चाहिये । कच्चा अण्डा, दूध, बार्ली या पानी में आँटा घोल कर पिलाने से भी रोगी को तबियत कुछ ठिकाने आ जाती है। इसके बाद किसी होमियो-पैथिक दवा का प्रयोग करना चाहिये। सबसे पहली इपोकाक। इपोकाक से लाभ न हो, चिड़चिड़ाहट और रात में तकलीफ यह लक्षण मौजूद हों तो चायना। चिकना चिकना पतला दस्त और सुबह के वक्त तकलीफ बढ़ जाने पर नक्सवोमिका। मिचली और कै तथा उसके साथ जाड़ा और जलन मौजूद होने पर विरेट्रम एल्बकी व्यवस्था करनी चाहिये ।

स्ट्रिकनाइन-स्ट्रिक्नाइन का विष पेट से निकालने के लिये स्टमक पम्प और कै करानेवाली दवाएँ व्यवहार करनी चाहिये। इसके बाद रोगी को अफीम खिला देनी चाहिये

जाती है। यदि इनके व्यवहार से शरीर में कोई विष के लक्षण प्रकट हों तो कपूर का सेवन करना चाहिये। जिस विषके कारण प्रदाह उत्पन्न होता है या रोगी को कै दस्त आरम्भ होकर दिमाग़ और बेहोशी आदि लक्षण प्रकट होते हैं, उसमें इससे काफी लाभ होता है। जब इसका पता न लगे कि रोगी ने कौन विष खाया है, तब भी कपूर ही देना चाहिये।

इनके अतिरिक्त और भी अनेक प्रकार के विष हैं, जिनके खाने पर शरीर में विष-क्रिया प्रकट होती है। ऐसे मामलों में किसी चिकित्सक की सलाह लेनी चाहिये। कॉफी भी विष दूर करने की अच्छी दवा है। विष का नाम आदि न मालूम होने पर गाढ़ी कॉफी कई बार पिलाने से बहुत लाभ होता है और कै होकर विष शरीर से निकल जाता है।

कुछ प्रतिषेधक दवाएँ—गरम दवाओं के अपव्यवहार में नक्सवोमिका ६ या ३०। लोहे से बनी हुई दवाओं के अपव्यवहार में हिपर सल्फर ६ या पल्सेटिला ६। नमक के अपव्यवहार में नाइट्रिक स्पिरिट डालसिस, मदर टिंचर या आर्सेनिक ३। धतूरे के अपव्यवहार में टेबेकम ३। चीनी के अपव्यवहार में नेट्रम फस ६ X विचूर्ण। छोटी उम्र में बीड़ी आदि के अपव्यवहार में आर्जनाइ ३, आर्सेनिक ६, विरेट्रम एल्ब ६। आयोडाइड ऑफ पाटाश के अपव्यवहार में हिपर

फाँसी लगना।

बहुत लोग फाँसी लगाकर आत्महत्या करने को चेष्टा करते हैं। यदि ऐसा रोगी बेहोश होकर मृतप्राय हो जाय, तो उसे होश में लाने के लिये भी उपरोक्त ही क्रिया करनी पड़ती है। होश में आने पर लक्षणानुसार ओपियम या टार्टर एमिटिक का सेवन कराना चाहिये।

वज्रपात।

(Lightning)

बिजली गिरने के कारण अनेक बार मनुष्य की साँस रुक जाती है और वह मृतवत् हो जाता है। ऐसे रोगी को जमीन मे एक गढ़ा खोद, उसमें ठेस देकर इस तरह बैठाना चाहिये, ताकि उसका मुँह सूर्य को ओर रहे। इसके बाद उसके गले तक का भाग मिट्टी से तोप देना चाहिये। होश आने पर उसे गढ़े से बाहर निकाल लेना चाहिये और उसका बदन गरम कपड़े से ढक देना चाहिये। किसी किसी का कथन है कि रोगी के कपड़े निकाल कर उसके बदन पर ठंढे पानी के छींटे देना चाहिये। इससे वह शीघ्र होश में आ जाता है। यदि रोगी का बदन गरम हो उठे, पर श्वास न चले, तो उसे चलाने के लिये उपरोक्त विधि से कृत्रिम श्वास क्रिया करनी चाहिये। रोगी को होश आने पर उसे सबसे पहले नक्स-

सल्फर ६ या २०० । तांबे या पीतल के बर्तन में भोजन बना कर खाने से विष की क्रिया प्रकट हो तो हिपर सल्फर ३०।

पानी में डूबना ।

पानी में डूबने पर आदमी के पेट में पानी भर जाता है और वह मृतप्राय हो जाता है। ऐसे रोगी का शिर नीचे और पैर ऊपर, इस तरह रखकर पहले उसके पेट का पानी निकाल देना चाहिये। इसके बाद उसके कन्धे के नीचे एक तकिया रख, चित सुलाना चाहिये। और रोगी के हाथ तथा केहुनी पकड़ कर एक बार ऊपर ले जाना चाहिये और कुछ सेकण्ड के बाद फिर नीचे लाना चाहिये। इस प्रक्रिया से रोगी साँस लेने लगता है।

कभी कभी रोगी को गरम पानी के कुण्ड में गले तक डुबो कर चेहरे पर ठण्डे जल का छींटा देने से उसे होश आ जाता है और वह साँस लेने लगता है। कभी कभी रोगी की जीभ बाहर ~ कर और उसकी नाक बन्द कर १०-१५ बार ँकने से साँस चलने लगती है।

हुए रोगी का इलाज करते समय घबड़ाना । अनेक बार ४-५ घण्टे के बाद भी रोगी होश में है। बीच बीच में रोगी को ओपियम ३० और इससे लाभ न हो तो लैकेसिस ६ या एन्टिम टार्ट ३० खिलाना चाहिये।

फाँसी लगना।

बहुत लोग फाँसी लगाकर आत्महत्या करने की चेष्टा करते हैं। यदि ऐसा रोगी बेहोश होकर मृतप्राय हो जाय, तो उसे होश में लाने के लिये भी उपरोक्त ही क्रिया करनी पड़ती है। होश में आने पर लक्षणानुसार ओपियम या टार्टर एमिटिक का सेवन कराना चाहिये।

वज्रपात।

(Lightning)

बिजली गिरने के कारण अनेक बार मनुष्य की साँस रुक जाती है और वह मृतवत् हो जाता है। ऐसे रोगी को जमीन मे एक गढ़ा खोद, उसमे ठेस देकर इस तरह बैठाना चाहिये, ताकि उसका मुँह सूर्य की ओर रहे। इसके बाद उसके गले तक का भाग मिट्टी से तोप देना चाहिये। होश आने पर उसे गढ़े से बाहर निकाल लेना चाहिये और उसका बदन गरम कपड़े से ढक देना चाहिये। किसी किसी का कथन है कि रोगी के कपड़े निकाल कर उसके बदन पर ठंढे पानी के छींटे देना चाहिये। इससे वह शीघ्र होश में आ जाता है। यदि रोगी का बदन गरम हो उठे पर श्वास न चले, तो उसे चलाने के लिये उपरोक्त विधि से कृत्रिम श्वास क्रिया करनी चाहिये। रोगी को होश आने पर उसे सबसे पहले नक्स

घोमिका ६ या ३० देना चाहिये। इसके बाद फोस्फरस ३० देना चाहिये।

जीवनी शक्ति की अवसन्नता।

(Shock)

एकायक मानसिक उत्तेजना या प्रबल आघात लगने के कारण अनेक बार मनुष्य मृतवत् हो जाता है। हाथ पैर ठंढे हो जाना, शरीर का रंग बदल जाना, चेहरा मुर्दे का सा हो जाना इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं।

चिकित्सा।

आर्सेनिक ६ या ३०—स्नायुओं की अस्वाभाविक उत्तेजना के कारण मृतवत् अवस्था होने पर इसे देना चाहिये।

कार्बोवेज ३ या ३०—रोगी का शरीर नीला पड़ जाय तो इसे देना चाहिये।

कैम्फर—शरीर ठंढा हो जाय तो इसे देना चाहिये।

विरेट्रम एल्बम ६ या ३०—कपाल पर ठंढा पसीना, और हृदय की अवसन्नता इत्यादि लक्षणों में इससे लाभ होता है।

आँख और कान में कीड़े आदि का घुसना ।

आँख में कोई चीज गिरने पर उसे रगड़ना न चाहिये । आँख खोल कर पानी में डुवा रखने से अनेक वार गिरी हुई चीज निकल जाती है एसिड या कास्टिक आँख में गिरने पर आँख में मीठा तेल डालना चाहिये । धातुका चूरा, कोई कड़ी चीज या रंग गिरने पर अण्डे की सफेदी से लाभ होता है । राख गिरने पर मक्खन या मट्ठा लाभदायक है । चूना गिरे तो भूलकर भी पानी से न धोना चाहिये । सिरका पानी में मिलाकर उससे आँख धोने पर चूना निकल जाता है और कोई तकलीफ नहीं होती । कोई ऐसी चीज गिर जाय जो आसानी से न निकले तो पपुटे को उलट कर ब्लाटिङ्ग पेपर की सलाई वना कर उसके सहारे उसे निकाल देना चाहिये । कोई तकलीफ हो तो उसे दूर करने के लिये केलेण्डुला लोशन की पट्टी चढ़ानी चाहिये और एकानाइट का सेवन करना चाहिये । कान मे कीड़ा घुस जाने पर गरम तेल डालना चाहिये । कोई चीज, कौड़ी या दाना नाक या कान में घुस जाने पर चिमटी से सावधानी के साथ वाहर निकाल लेना चाहिये ।

द्वारा सम्पादित होता है, जिसका सिरा लिंगेन्द्रियके सिरेपर जाकर निकलता है। लिंगेन्द्रिय तीन मांस पेशियों से बनती है। सबसे ऊपरके टुकड़े को लिंगमुण्ड या सुपारी कहते हैं। इस पर एक झिल्ली चढ़ी रहती है, जिसमें स्पर्श शक्ति बहुत ज्यादा होती है। सुपारी को ढकनेवाला चमड़ा छुल्ला कहलाता है। यह ऊपर चढ़ाने से सिमट जाता है और नीचे उतारने से फैल कर सुपारी को ढक लेता है। सुपारी में एक छिद्र रहता है। इसमें वीर्यनली और मूत्रनली के सिरे मिले रहते हैं। संगम के समय वीर्य और पेशाब करते समय पेशाब यहीं से बाहर निकलता है। लिंगेन्द्रिय के नीचे एक थैली में दो अण्डकोश रहते हैं, जो नसों के सहारे थैली के अन्दर लटका करते हैं। मैथुन के समय वीर्य प्रस्तुत करने का काम इन अण्डकोशों द्वारा ही सम्पादित होता है। लिंगेन्द्रिय की दोनों बगल दोनों पुट्ठो में कुछ गोलियाँ या ग्लैण्ड रहते हैं। निम्नांग में जाँघ, घुटने, घुट्टी, पंजा, उँगली आदि साधारण अंग हैं, जिनके विशेष परिचय की कोई आवश्यकता नहीं।

स्त्रियों के स्तन तथा प्रजनन अंगों को छोड़ कर अन्यान्य अंगों की बनावट पुरुषो के ही समान होती है। स्त्रियों के स्तन में कुछ ग्रन्थियाँ होती हैं जो बच्चे का जन्म होने पर दूध तैयार करती हैं। तलपेट में जरायु, डिम्बकोष, डिम्ब वाहक नली और जननेन्द्रिय आदि अंग होते हैं।

इस तरह एक बार ऋतुस्राव आरम्भ होने पर, वह ४०-४५ वर्ष की अवस्था पर्यन्त बराबर जारी रहता है। इसके बाद कुछ खास बातें प्रकट होकर वह बन्द हो जाता है। बीच में जब स्त्रियाँ गर्भवती होती हैं, तब ऋतुस्राव बन्द रहता है। प्रसव होने के ६ या ८ महीने बाद और कभी कभी इससे भी अधिक समय के बाद पुनः ऋतुस्राव आरम्भ होता है।

ऋतुस्राव स्त्रियों के शरीर की एक स्वाभाविक क्रिया है और वह बिना किसी कष्ट के स्वाभाविक रूप से ही सम्पन्न होनी चाहिये। परन्तु स्वास्थ्य हीनता तथा अन्यान्य अनेक कारणों से इसमें तरह तरह की गड़बड़ी दिखायी देती है। निश्चित समय के पहले या बाद को ऋतुस्राव होना बहुत तकलीफ के साथ ऋतुस्राव होना, बहुत कम या बहुत अधिक तादाद में खून निकलना, खून का रूप रंग ठीक न होना, ऋतुस्राव बन्द होकर नाक या मुंह से खून निकलना आदि सभी बातें गोलमाल की परिचायक हैं।

ऋतु विषयक रोगों का इलाज करते समय यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि ऋतु के समय होमियोपैथिक दवा खाना मना है। यदि ऋतु में कोई शिकायत हो तो ऋतु-स्राव हो जाने के बाद दवा शुरू करनी चाहिये और आवश्यक हो तो दुबारा ऋतुस्राव होने के बाद फिर इसी तरह इलाज करना चाहिये।

इसके अतिरिक्त यह भी ध्यान में रखना आवश्यक है कि ऋतु विषयक समस्त रोगों की पल्सेटिला और सीपिया—यह दो प्रधान दवाएँ हैं। पल्सेटिला साँवले या काले रंग की तथा जो औरतें ज़रा में ही रो देती हैं उनके लिये मुफीद है। सीपिया गोरी और सुन्दर औरतों की बीमारी में अधिक लाभदायक है। ऋतु विषयक ही क्यों, बल्कि सभी तरह के स्त्री रोगों में इनसे थोड़ा बहुत लाभ होता है। जब किसी दूसरी दवा के लक्षण स्पष्ट न दिखायी दें, अथवा रोग अच्छी तरह समझ में न आये, तब आरम्भ से ही यह दवाएँ आज-मानी चाहिये। ऐसा करने पर या तो यह रोग आराम ही हो जाता है या लक्षण स्पष्ट हो जाने के कारण दूसरी दवा चुनने में सहायता मिलती है।

प्रथम रजस्राव में विलम्ब।

(Delayed Menstruation)

शारीरिक अस्वस्थता, डिम्बकोष की कोई बीमारी, योनि के पर्दे में छेद का न होना, आलसी स्वभाव, किसी तरह का शारीरिक परिश्रम न करना इत्यादि अनेक कारणों से प्रथम रजस्राव में विलम्ब हो सकता है। यदि विलम्ब होने पर भी कोई तकलीफ न हो तो इसका इलाज न करना चाहिये।

परन्तु शरीर में यौवन के चिह्न प्रकट हो जाने पर भी यदि ऋतुस्राव न हो, साथ ही यदि कमर मे दर्द और तनाहट, तबियत अनमनी सी रहना, शिर दर्द, तलपेट भरा हुआ और उसमें तनाव इत्यादि रजोदर्शन के लक्षण प्रकट होने पर भी रजोदर्शन न हो और कुछ समय के बाद यह लक्षण भी गायब हो जायें तो इसका इलाज अवश्य करना चाहिये।

चिकित्सा।

पल्सेटिला ६ या ३०—यह इस रोग की प्रधान दवा है। पेट और पीठ में दर्द, शिर में दर्द, अरुचि, हमेशा ठंढ मालूम होना, आलस्य, मिचली, छातीका धड़कना, खूनकी कमी इत्यादि लक्षणो में इसे देना चाहिये। यदि इन लक्षणों के साथ श्वेत प्रदर की भी शिकायत हो तो सीपिया देना चाहिये।

सल्फर ३०—कमर में दर्द, शिर मे दर्द या चक्कर, अजीर्ण, बवासीर के साथ कब्जियत, चिड़चिड़ा स्वभाव या मौन रहना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

सिनिसिओ १X—पहली बारके ऋतुस्रावमें विलम्ब या एक दो बार ऋतु होकर उसका बन्द हो जाना, कष्ट के साथ थोड़ा और अनियमित ऋतु।

एकोनाइट ३—एकबार ऋतुस्राव होने के बाद सर्दी या डरसे ऋतुस्राव का बन्द हो जाना।

बेलेडोना ६ या ३०—शिर में रक्ताधिक्य, शिरमें चक्कर या दपदपी, शिर गरम, चेहरा लाल, तलपेटमें दर्द, दर्दका एकायक शुरू होना और एकायक गायब हो जाना, नाकसे खून निकलना, डिम्बकोष में प्रदाह और तन्नाहट इत्यादि।

ब्रायोनिया ६ या ३०—ऋतुस्राव के बदले नाकसे खून निकलना, चिड़चिड़ा और क्रोधी स्वभाव, चुपचाप बैठे रहने की इच्छा, कब्जियत इत्यादि।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—गण्डमाला धातु, मोटे और थुलथुले शरीरकी बालिकाओं को यह रोग होना, हमेशा शिर गरम रहना और शिरमें चक्कर आना इत्यादि।

फोस्फरस ३०—यदि दुबली पतली और कमजोर बालिकाओं को यह रोग हो अथवा ऋतुस्राव बन्द होकर नाक, मुँह, पेशाब तथा दस्तके रास्ते से खून निकले तो इसे देना चाहिये।

सिमिसिफिउगा ६—डिम्बकोषके स्नायुओंकी कमजोरी के कारण ऋतुका न होना, शिरमें दर्द, खूनकी कमी, बायें अंग या बायें स्तनमें दर्द इत्यादि।

नेट्रमम्यूर १२ X विचूर्ण—पैर ठंढे, कब्जियत, हमेशा जाड़ा लगना, कमजोरी और रक्तस्वल्पता इत्यादि लक्षणों में दुबली पतली स्त्रियों को देना चाहिये।

फेरम ३०—रक्तस्वल्पता, सदा पड़े रहने की इच्छा, शिरमें रक्तसञ्चय और दपदपी, लेटने पर चेहरे का फीका हो जाना और उठ बैठने पर पुनः उसका लाल हो उठना इत्यादि ।

इनके अतिरिक्त विरेट्रम एल्ब, वेसिलिनम, लाइको, केल्क फस, आयोड, चायना और नक्स आदि दवाओं से भी लाभ होता है । ऋतुविषयक अन्यान्य रोगों की दवाओं से भी दवा चुनी जा सकती है ।

आवश्यक सूचना—सरदीसे बचना चाहिये । आलस्य और विलासिता से दूर रहना चाहिये । गरम मसाले या उत्तेजक पदार्थ न खाने चाहिये । गरम पानी में कमर तक डुबोकर बैठना, पेटमें गरम कपड़ा या फ्लानेल बाँध रखना, नियमित परिश्रम करना इत्यादि लाभदायक है ।

स्वल्परज या रजोरोध ।

(Amenorrhoea)

साधारणतः गर्भ रहने पर ऋतुस्राव बन्द हो जाता है, इस लिये ऋतुस्राव बन्द होने पर पहले इसका निश्चय कर लेना चाहिये । यदि गर्भ न होने पर भी ऋतुस्राव बन्द हो जाय और उसके कारण कष्टकर लक्षण प्रकट हों तो इसका इलाज करना चाहिये ।

ही देना चाहिये। इससे अस्थायी या थोड़ा लाभ होने पर ओपियम या विरेट्रम देना चाहिये।

पल्सेटिला ६ या ३०–यह इस रोगकी बढ़िया दवा है। सरदी या ठंढ लगने के कारण यह रोग होना, आधे शिरमें दर्द, चेहरा कान और दाँतोतक दर्दका बढ़ना, कलेजे में धड़कन, श्वासकष्ट, बदनमें दाह, मिचली या कै, पतले दस्त, तलपेटमें दर्द, शामके वक्त तकलीफ का बढ़ना इत्यादि।

विरेट्रम ६ या ३०–शिरमें स्नायुशूल, हिस्टीरिया जैसे लक्षण, बहुत मिचली और के, चेहरा फीका, हाथ पेर या नाक ठंढी, बहुत कमजोरी, जब तब बेहोश हो जाना इत्यादि।

बेलेडोना ६ या ३०–शिरमें रक्त सञ्चय या दर्द, नाकसे खून बहना, चेहरा लाल इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। एकोनाइटके बाद इसे देनेसे विशेष लाभ होता है।

ब्रायोनिया ६ या ३०–ऋतुस्रावके बदले नाकसे खून गिरना कपाल में दर्द, कब्जियत, हिलने डोलनेसे दर्दका बढ़ना पेट और कमर में दर्द इत्यादि लक्षणों में और अविवाहिता स्त्रियों को यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

सल्फर ३०–शिरके पिछले भाग में या आधे शिरमें अथवा आँखके ऊपर दर्द शिर गरम, शिरमें भार, आँख के अथवा आँखके ऊपर दर्द, शिर गरम, शिरमें भार मालूम

होना, कब्जियत, श्वासकष्ट, कमजोरी चिड़चिड़ा स्वभाव इत्यादि।

आर्सेनिक ६ या ३०—कमजोरी, खिन्नता, वदनमें दाह, शोथ, ठंढ मालूम होना, चेहरा फीका, प्यास, लेकिन एक साथ अधिक पानी न पीना, आधी रातके बाद उपसर्गों का बढ़ना।

नक्सवोमिका ६ या ३०—स्वाभाविक कब्जियत, कभी बदहजमी और कभी पतले दस्त, सुबहके वक्त शिरमें दर्द इत्यादि।

इग्नेशिया ६—मानसिक कष्टके कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

कोनायम ६ या ३०—ऋतुके समय स्तनो में दर्द और तन्नाहट, पेशाब करने में कष्ट, शिरमे चक्कर, कमजोरी इत्यादि।

जेल्सीमियम १x या ३०—जरायुमें भार और बहुतदर्द, ऐसा मालूम होना मानों ऋतुस्राव होगा, शिरमें दर्द, आँखोंके सामने अँधेरा दिखायी देना।

सिमिसिफिउगा ३ या ६—शिरमें दर्द,बायें पार्श्व और बायें स्तनके नीचे दर्द, हिस्टीरिया इत्यादि।

सीपिया ६ या ३०—हिस्टीरिया, स्नायविक शिरदर्द

निःसारक धमनी में रक्ताधिक्य आदि कई कारणों से यह रोग होता है। यह रोग होने पर पीठ, कमर, जाँघ, डिम्बकोष और जरायु आदि स्थानो में दर्द और तलपेट में प्रसव वेदना मालूम होती है। यह शिकायतें ऋतुस्राव के पहले या ऋतु-स्राव के समय से शुरू होती हैं और दो एक दिन या ऋतुस्राव बन्द होने तक मौजूद रहती हैं। इनके साथ शिर में दर्द, कलेजे में धड़कन, अल्प रक्तस्राव इत्यादि लक्षण भी प्रकट होते हैं। जब तक यह रोग रहता है, तब तक स्त्रियों को प्रायः बच्चे नहीं होते।

चिकित्सा।

बेलेडोना ६ या ३०—पीठ में भयंकर दर्द, तलपेट में ऐसा मालूम होना मानो भीतर की सभी चीजें बाहर निकल पड़ेंगी, साथ ही शिर में रक्त सञ्चय, चेहरा लाल, डरावनी चीजें दिखायी देना इत्यादि।

केमोमिला १२ या ३०—प्रसव जैसा दर्द, पीठ की ओर से तलपेट और नीचे की ओर दर्द का बढ़ना इत्त, काला काला थक्का जैसा रक्तस्राव।

विरेट्रम ६ या ३०—शिर में चक्कर, पेट में दर्द मिचली और कै, हाथ पैर या नाक ठंढी, बहुत कमजोरी, जब तब बेहोश हो जाना और पतले दस्त।

बूँद काला खून निकलना, ऋतुस्राव के समय दुर्बलता, हिस्टीरिया इत्यादि ।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—ढीले या थुलथुले शरीर की युवतियों को यह रोग होना, पानी में काम करनेके कारण यह रोग होना, शरीर में शोथ इत्यादि ।

इनके अतिरिक्त लाइकोपोडियम, फेरम, सिनिसिओ, कोलिन्सोनिया, फोस्फरस, नेट्रम म्यूर, लेकेसिस, हेमामेलिस ग्रेफाइटिस, डिजिटेलिस, क्युप्रम, चायना, कस्टिकम, कार्बो वेज और एपोसाइनम आदि दवाओं से भी लाभ होता है ।

आवश्यक सूचना—सर्दी लगने के कारण यह रोग हुआ हो तो पैर गरम पानी में डुबो रखना चाहिये । दर्द होने पर तलपेट में गरम पानी का सेंक देना चाहिये । पथ्य पर विशेष ध्यान रखना चाहिये । हलके और पौष्टिक पदार्थ खाने चाहिये । यदि कमजोरी या रक्त स्वल्पता के कारण यह रोग हुआ हो, तो पुष्टिकर चीजें खानी चाहिये ।

ऋतुशूल या बाधक वेदना ।

(Dysmenorroea)

ऋतुस्राव के समय बहुत दर्द होने को ऋतुशूल कहते हैं । सर्दी लगना, जरायु का प्रदाह, डिम्बकोष की बीमारी, ...[illegible]जयन, जरायुग्रीवा के पथ का संकुचित होना, जरायु का

विषय — पृष्ठ

स्त्रियों की जननेन्द्रिय पुरुषों की तरह बाहर निकली हुई नहीं होती। उसकी बनावट एक प्रनाली के समान होती है। इसमें बाहर की ओर दोनों तरफ से दो होंठ जैसे होते हैं। इन्हें भगोष्ठ कहते हैं। योनि के दूसरे सिरे पर, तलपेट में जरायु नामक अंग होता है। जरायु का आकार नासपाती या अमरूद के समान होता है। यह भीतर से पोला होता है इसका आकार घट बढ़ सकता है। पुरुष का संयोग होने पर जब स्त्री गर्भवती होती है, तब जरायु में ही गर्भ रहता है। जरायु के दोनो ओर दो डिम्बकोष रहते हैं। इनका आकार बादाम के सदृश होता है। डिम्बवाहक नली डिम्बकोष और जरायु के बीच में रहती है। प्रतिमास ऋतुस्राव के समय डिम्बकोष से एक डिम्ब निकल कर इस नली में होकर जरायु में पहुंचता है और वहाँ पुरुष के शुक्रकीट से संयोग होने पर वह भ्रूण के रूप में परिवर्तित हो जाता है। जरायु के निचले भाग में एक छिद्र रहता है। इसे जरायु का मुख कहते हैं। यहीं से पुरुष का वीर्य जरायु मे पहुंचता है, यहीं से मासिक स्राव बाहर निकलता है और यहीं से बच्चे का जन्म होता है। यह बतलाना अनावश्यक है कि बच्चे के जन्म के समय जरायु का मुख और योनिमार्ग रबर की तरह फैलकर काफी बड़ा हो जाता है।

योनिद्वार और मलद्वार के बीच का स्थान बैठक कह-लाता है। बच्चा होते समय कभी-कभी यह फट जाता है।

तन्द्रा और आलस्य इत्यादि। इसके साथ कोलोफाइलम १X पर्यायक्रम में देने से विशेष लाभ होता है।

जेन्थकसाइलम ३X—यह इस रोग की बढ़िया दवा है। तलपेट से लेकर जाँघो तक तेज दर्द, अधिक रजस्राव और बुखार इत्यादि लक्षणों मे तथा अन्यान्य दवाओसे लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

सीपिया ६ या ३०—आँखो के चारों ओर काला दाग, बदन पीला, सुबह रोग का बढ़ना इत्यादि लक्षणों में और पित्त प्रधान प्रकृतिवाली स्त्रियों को इसे देना चाहिये।

कोलिन्सोनिया ३ या ६—स्राव के साथ झिल्ली के टुकड़े जैसा पदार्थ निकलना, उसके साथ जोरों का दर्द और कब्जियत।

मिर्क्रेली ६—नियमित समय के बहुत पहले मैला, बदबूदार आ दाने दाने जैसा स्राव तलपेट में बहुत दर्द, ऐसा मालूम होना मानो योनिद्वार से सब कुछ बाहर निकल पड़ेगा समूचे शरीर में खास कर हाथ पेर में ठंडा पसीना मूत्राशय और मलाशयमें कतरनेजैसा दर्द कमजोरी इत्यादि।

एपिस ३ या ६—पेट मे डङ्क मारने जैसा दर्द थोड़ा पेशाब बहुत दर्द, अस्थिरता, दर्द के कारण रोगी का छटपटाना इत्यादि।

कोफिया ६ या ३०—बहुत स्नायविक उत्तेजना, शूल जैसा दर्द, तलपेट भरा और भारी मालूम होना, आक्षेप, प्रलाप, दाँत किड़मिड़ाना, श्वास कष्ट, गले में घड़घड़ाहट, समूचा शरीर ठंढा, इत्यादि।

ककुलस ६ या ३०—तलपेट में आक्षेप, छाती में तनाव, जी मिचलाना, बेहोशी, शूल जैसा दर्द।

पल्सेटिला ६ या ३०—तलपेट में ऐसा मालूम होना मानो पत्थर रक्खा हुआ है, जाँघों तक खींचन जैसा दर्द, बैठने पर दर्द का बढ़ना, दस्त का वेग होने पर भी दस्त न होना इत्यादि।

नक्सवोमिका ३०—तलपेट या कमर और जाँघों में दर्द, मिचली, तलपेट में आक्षेप, बारंबार पेशाब करने की इच्छा, कब्जियत, खुलासा दस्त न होना इत्यादि।

सिमिसिफिउगा ३ या ६—ऋतु के समय प्रसव वेदना जैसा दर्द, ऋतु के पहले शिर में दर्द, तलपेट और जांघ में दर्द, पाकस्थली के ऊपर जोरों का दर्द, मैले रंग का थोड़ा या थक्का थक्का बहुत सा रक्तस्राव होना।

जेल्सीमियम ३X या ३०—रक्तसञ्चय के कारण जरायु में ऐंठन, योनिद्वार और जाँघों में अकड़न, पेट में दर्द, कमर और पीठ तक दर्द का फैल जाना, दर्द बन्द हो जाने पर

अतिरजः।

(Menorrhagia)

ऋतु के समय बहुत खून निकलना, चार दिनो की अपेक्षा अधिक समय तक ऋतुस्राव होते रहना या महीने में दो तीन बार ऋतुस्राव होना अतिरज. कहलाता है। यह रोग अधिक सहवास, बहुत पुष्टिकर भोजन खाना, जरायु की बीमारी, डिम्बकोष की खराबी, स्नायविक उत्तेजना, बारंबार गर्भ सञ्चार, ऋतुकाल में स्वामी सहवास, अधिक मानसिक चिन्ता आदि कारणो से होता है। इसमें किसी भी रूप में अधिक ऋतुस्राव होने के अतिरिक्त आलस्य, बदन में दर्द, जम्हाई आना, शिर में भार और दर्द, पीठ और कमर में दर्द, अरुचि. पैर के तलवे ठंढे, और जाड़ा मालूम होना इत्यादि लक्षण भी प्रकट होते हैं।

चिकित्सा ।

इपीकाक ६ या ३०—बहुत अधिक स्राव होना, खास कर चमकीले लाल रंग का खून निकलना।

क्रोकस ६ या ३०—यह इस रोग की एक बढ़िया दवा है। जब काले रंग का गॉठ गॉठ जैसा बहुत सा स्राव होता हो और नियमित समय के बहुत पहले या जल्दी जल्दी ऋतु स्राव होता हो, तब इसे देना चाहिये ।

वाइवर्नम 1X या 3X—ऋतुस्राव के पहले तलपेट में बहुत दर्द, ऋतु के समय जो मिचलाना, श्वास कष्ट, बहुत ऋतुस्राव इत्यादि ।

लिलियम 3 या 6—तलपेट से लेकर पैर तक दर्द का बढ़ना, खोंचा मारने जैसा दर्द, जरायु में प्रसव वेदना जैसी वेदना, स्तन में दर्द इत्यादि ।

वेरेक्स 3 X या 6—पेट में बायीं ओर अधिक दर्द, जरायु में आक्षेप और ऋतुशूल के साथ वन्ध्यत्व होने पर इससे विशेष लाभ होता है ।

इनके अतिरिक्त केक्टस, कोनायम, कल्चाकम, हेलोनियस, मेग्नेशिया फस, कोलिन्सोनिया, मस्कस, प्लेटिना, क्युप्रम, हेमामेलिस, नाइट्रिक एसिड, फोस्फरस, फाइटोलेक्का, सेवाइना, सिनिसिओ, ग्रेफाइटिस ओर फेरम आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है ।

आवश्यक सूचना—दर्द के कारण बहुत तकलीफ हो तो गरम पानी या चोकर की पोटली से सेंक करना चाहिये ।

सेशइना ६ या ३०—जल्दी जल्दी और अधिक तादाद में ऋतुस्राव होना, शूल और प्रसव के समय जैसा दर्द, पीछे से लेकर सामने तक दर्द, हिलने डोलने से दर्द का बढ़ना इत्यादि।

सल्फर ३० या २००—चुनी हुई दवा से पूरा लाभ न होने पर उस दवा को बन्द न कर' प्रति सप्ताह इसकी एक खुराक देने से विशेष लाभ होता है।

क्लकेरिया कार्ब ६ या ३०—सल्फर को तरह इसे भी बीच बीच में देने से बहुत लाभ होता है।

हाइड्रेसिस १ X-यह भी इस रोग की बढ़िया दवा है।

बोरेक्स ६—जल्दी जल्दी ऋतु होना, अधिक परिमाण मे स्राव, पेट में दर्द और जी मिचलाना।

इरिजिरन ३X—मूत्रनाली और गुह्यद्वार में प्रदाह, रह रह कर अधिक परिमाण में चमकीले लाल रंग का रक्तस्राव खास कर गर्भस्राव के बाद, इत्यादि।

आर्सेनिक ६ या ३०-शारीरिक दुर्बलता और गर्भाशय की खराबी के कारण अधिक समय तक ठहरने वाला अधिक रक्तस्राव।

सिकेली ३X या ६X—पतला काले रंग का बदबूदार बिना दर्द का स्राव, जरायु में अकड़न जैसा दर्द, काँखना, बहुत दिनों तक ठहरने वाला अत्यन्त स्राव इत्यादि।

प्लेटिना ६—बहुत अधिक ऋतुस्राव होना, काले रंग का खून निकलना, पेट में दर्द, ऐसा मालूम होना मानो पेट से सब कुछ बाहर निकल पड़ेगा, कामोन्माद या इन्द्रिय की उत्तेजना इत्यादि।

केमोमिला १२या ३०—काले रंग का गाँठ गाँठ जैसा स्राव, पीठसे लेकर सामने की ओर तलपेट तक दर्द, प्यास, बाहर से ठंढ मालुम होना, प्यास, कभी कभी बेहोश हो जाना इत्यादि।

नक्सवोमिका ६ या ३०—नियमित समय के पहले ऋतुस्राव होना, बहुत दिनों तक स्राव जारी रहना, अथवा एक बार बन्द होकर फिर स्रावका शुरू होना, नशेखोर स्त्रियों को यह रोग होना इत्यादि।

इग्नेशिया ६ या ३०—हिस्टीरिया जैसे लक्षणों के साथ कई दिनों तक रक्तस्राव जारी रहे तो इसे देना चाहिये।

चायना ६ या ३०—बहुत दिनों तक बहुत अधिक तादाद में ऋतुस्राव होने के कारण बहुत कमजोरी के लक्षणों में इसे देना चाहिये। अन्यान्य दवाओं से रोग दूर हो जाने पर भी यदि कमजोरी रहे तो उस अवस्था में इसे ही देना चाहिये।

सेबाइना ६ या ३०—जल्दी जल्दी और अधिक तादाद मे ऋतुस्राव होना, शूल और प्रसव के समय जैसा दर्द, पीछे से लेकर सामने तक दर्द, हिलने डोलने से दर्द का बढ़ना इत्यादि।

सल्फर ३० या २००—चुनी हुई दवा से पूरा लाभ न होने पर उस दवा को बन्द न कर' प्रति सप्ताह इसको एक खुराक देने से विशेष लाभ होता है।

क्लकेरिया कार्ब ६ या ३०—सल्फर की तरह इसे भी बीच बीच में देने से बहुत लाभ होता है।

हाइड्रेसिस १ X-यह भी इस रोग की बढ़िया दवा है।

बोरेक्स ६—जल्दी जल्दी ऋतु होना, अधिक परिमाण मे स्राव, पेट में दर्द और जी मिचलाना।

इरिजिरन ३X—मूत्रनाली और गुह्यद्वार में प्रदाह, रह रह कर अधिक परिमाण में चमकीले लाल रंग का रक्त-स्राव, खास कर गर्भस्राव के बाद, इत्यादि।

आर्सेनिक ६ या ३०—शारीरिक दुर्बलता और गर्भाशय की खराबी के कारण अधिक समय तक ठहरने वाला अधिक रक्तस्राव।

सिकेलो ३X या ६X—पतला काले रंग का बदबूदार बिना दर्द का स्राव, जरायु में अकड़न जैसा दर्द, कॉखना, बहुत दिनों तक ठहरने वाला अत्यन्त स्राव इत्यादि।

ट्रिलियम ३ या ६—बहुत रक्तस्राव, कमजोरी, ऋतु बन्द हो जानेके १०—१५ दिन बाद किसी दिन अचानक बहुत सा खून निकल पड़ना, बहुत रक्तस्राव इत्यादि।

आस्टिलेगो ३ या ६—पुरानी बीमारी, जरायु से रक्तस्राव, रजस्राव बन्द होनेके समय बहुत और बहुत दिन स्थायी रक्तस्राव, शिर में भार और चक्कर।

मिलिफोलियम १ या ३—वेग के साथ साफ खून निकलना, कई दिनोंतक रक्तस्राव का जारी रहना इत्यादि।

इनके अतिरिक्त सिमिसिफिउगा, हाइड्रेस्टिनाइन, प्लौ, फेरम, नाइट्रिक एसिड, एम्ब्रा और हेलोनियस आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—रक्तस्राव बन्द करने के लिये रोग के समय रोग की तेजी के अनुसार एक से लेकर तीन चार घण्टे के अन्तर से दवा देना चाहिये। रक्तस्राव बन्द हो जाने पर कमजोरी दूर करने के लिये फेरम, आर्सेनिक, एलेट्रिस या चायना का सेवन कराना चाहिये। रोगिणी को रोग के समय बिस्तर पर चित सुलाना चाहिये। अधिक रक्तस्राव होता हो, तो तलपेट पर ठण्ढे पानी की पट्टी चढ़ाना चाहिये। हामामेलिस, मदर टिंचर अठगुने पानी में मिलाकर, योनिमार्ग में इसकी पिचकारी देना चाहिये या कपड़ा भिगोकर रखना चाहिये। इससे रक्तस्राव बन्द होता है। शारीरिक व मानसिक परिश्रम न करना चाहिये।

योनि में सतीच्छद या हाइमन नामक चन्द्राकार एक पर्दा रहता है। यह पतली झिल्ली का बना होता है। प्रथम संयोग के समय यह फट जाता है। कभी कभी मजबूत होने के कारण और इसका कुछ भी अंश कटा न होने के कारण संयोग और ऋतु स्राव में बाधा पड़ती है। उस अवस्था में अस्त्र चिकित्सा कराने की जरूरत पड़ती है।

स्वास्थ्यरक्षा के कुछ नियम।

कोई रोग हो जाने पर दवा करना उचित है, किन्तु यदि स्वास्थ्यरक्षा के नियमों का पालन किया जाय और रोग होने ही न दिया जाय तो और भी अच्छा है। नीचे खान पान और रहन सहन के कुछ ऐसे नियम दिये जा रहे हैं, जिनके पालन से स्वास्थ्य को ठीक रखने में बहुत सहायता मिल सकती है।

आहार-मनुष्य को अपने स्वास्थ्य की रक्षा करने के लिये सब से पहले अपने आहार पर ध्यान रखना चाहिये। बहुत लोगों की यह धारणा होती है कि हृष्ट पुष्ट बने रहने के लिये सदा माल खाते रहना चाहिये, पर यह धारणा ठीक नहीं। केवल नमक रोटी खाकर भी स्वास्थ्य अच्छा रक्खा जा सकता है और ताकत बढ़ायी जा सकती है। ताकत खाने की चीजों में नहीं पर उनके हजम हो जाने में है। यदि एक मनुष्य रात दिन बैठा रहता है, कोई परिश्रम नहीं करता,

चिकित्सा।

हेमामेलिस१X या ३X–नाक, मुँह, मलद्वार या कहीं से भी खून का निकलना, खून की कै, पेट का टटाना, छाती में दर्द, खाँसी इत्यादि।

आयोनिया ६ या ३०–नाक या मलद्वार से खून निकलने की यह भी एक अच्छी दवा है। इससे लाभ न हो तो फेरम फस ६X।

इपीकाक ३ या ६–चमकीले लाल रंग का खून निकलने पर या खूनकी कै होने पर इसे देना चाहिये।

पल्सेटिला ६ या ३०–नाक, मुँह या आंख से खून निकलना, स्तन और पेट में दर्द, कानसे खून निकलना, बदन का गरम मालूम होना इत्यादि।

सिनिसिओ ३X या ६–खाँसते—खाँसते रक्तस्राव, कमजोरी, चेहरे में खून की कमी, साथ ही यक्ष्मा रोग के लक्षण दिखायी देना इत्यादि।

कोलिन्सोनिया ६–केवल मलद्वार से रक्तस्राव होने पर

इनके अतिरिक्त, ऋतुविषयक अन्यान्य रोगों की दवाओं में से भी लक्षणानुसार दवा चुनी जा सकती है। ऋतुस्राव के बदले श्वेतप्रदर दिखायी दे तो लक्षणानुसार कल्केरिया-कार्ब, फेरम, चायना, बोरेक्स, मेग्नेशिया सल्फ या कोक्कस, की व्यवस्था करना चाहिये।

इत्यादि इस रोग के प्रधान कारण है। यह रोग होने पर जाड़ा लगकर बुखार आना, नाड़ी पूर्ण और तेज, बहुत प्यास, मिचली और कै, कभी-कभी दस्त, मलत्याग के समय कांखना, जरायु का फूल जाना और उसमें दर्द होना, हिलने-डोलने से दर्द का बढ़ना, पड़े रहने से आराम, उठ बैठने से तकलीफ, पेशाब का आसानी से न उतरना इत्यादि लक्षण प्रकट होते है। रोग पुराना हो जाने पर योनि के पास जख्म होकर उनसे पीब निकलता है और श्वेत प्रदर का स्राव होता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट३ X या ६-तेज बुखार, बहुत अस्थिरता, प्यास, व्याकुलता, मृत्युभय, नींद न आना, पेट में खोंचा मारने जैसा दर्द पेट पर हाथ रखने से दर्द मालूम होना इत्यादि।

बेलेडोना ६ या ३०-दर्द का एकाएक शुरू होना और एकाएक गायब हो जाना। शिर में दपदपी, रोगी का बहुत बक-झक करना, चेहरा और आँखें लाल, पेट गरम, स्पर्श बरदाश्त न होना, करवट बदलने से भी दर्द का बढ़ जाना, पेट में भार के कारण ऐसा मालूम होना, मानो सब चीजें बाहर निकल पड़ेंगी, बहुत रजस्राव या रजोरोध इत्यादि।

कैमोमिला १२ या ३०-बहुत चिड़चिड़ा और क्रोधी स्वभाव, किसी के साथ भी अच्छा व्यवहार न करना, क्रोध के बाद उपसर्गों का बढ़ जाना, प्रसव के बाद यह रोग होना

कोलोसिन्थ ३X या ६-शूल जैसा दर्द, दबाने या सामने की ओर झुक जाने से आराम मालूम होना।

मर्क्युरियस ६ या ३०--जीभ गीली और मोटी, उस पर दाँतके दाग पड़ना, बहुत प्यास, बहुत पसीना, परन्तु उससे कोई आराम न मालुम होना, रात में रोग-लक्षणों का का बढ़ना।

पल्सेटिला ६ या ३०—शान्त और दुःखी स्वभाव, दूसरों की बात आसानी से मान लेना, जरा में ही रो देना, पैर भीगने के कारण रजस्राव का बन्द हो जाना, प्रसव के बाद स्राव का बन्द हो जाना, सदा जाड़ा मालूम होना, प्यास का न होना, स्तनों का दूध सूख जाना इत्यादि।

लेकेसिस ६ या ३०—जरायु में बहुत तनाहट, उसके कारण बदन में कपड़ा न रख सकना, उद्वेग, जरायु का मुख खुला हुआ, पेट में दर्द, रज-निवृत्ति के समय यह रोग होना।

हायोसायमस ६ या ३ —जरायु प्रदाह के साथ विकार के लक्षण होने पर इसे देना चाहिये। भ्रमपूर्ण बातें बोलना, बेहोशी, बदन के कपड़े फेंक देना मानसिक उत्तेजना और अचलन्नता इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं।

नक्सवोमिका ६—जरायु में जलन और भार मालूम होना, बारबार पेशाब का वेग, मूत्रस्थली और मूत्रनाली में दर्द जलन, हाजमा, पूर्ण निद्रा, कब्जियत, कमर में दर्द इत्यादि।

साधारण रोटी दाल भी नहीं पचा सकता और आधी रोटी अधिक खा जाने पर बदहजमी की शिकायत करता है तो यह कब सम्भव है कि आप उसे हलुआ पूड़ी और माल मलीदा खिला कर मोटा ताजा बना दें। शहर में रहनेवाले और सदा माल ही खानेवाले धनिकों की अपेक्षा देहात के वे किसान जो रूखी सूखी रोटी खाते हैं, अधिक स्वस्थ और बलवान होते हैं। इसका कारण स्पष्ट है। पहली श्रेणी के लोग अच्छा भोजन करने पर भी उसे पचा नहीं सकते। उन्हें बदहजमी, कब्जियत, आँव, पतले दस्त की शिकायत बनी रहती है। देहाती अच्छा भोजन नहीं पाता, पर जो कुछ खाता है, उसे ठीक से पचा सकता है। पाचन शक्ति ठीक होने के कारण भोजन उसके शरीर में लगता है और कोई रोग भी उसके पास फटकने नहीं पाता। तात्पर्य यह, कि भोजन ऐसा होना चाहिये, जो हजम हो सके। आहार साधारण से साधारण होने पर भी यदि वह अच्छी तरह हजम होगा, तो उससे शरीर पुष्ट हुए बिना न रहेगा।

जिस तरह केवल माल मलीदा खाने से ही शरीर पुष्ट नहीं हो सकता उसी तरह यह धारणा भी गलत है कि अधिक खाने से शरीर का अधिक उपकार होता है। भोजन की मात्रा अपनी पाचन शक्ति के ही अनुसार निश्चित करनी चाहिये और यह कहावत सदा स्मरण रखनी चाहिये कि खाने के लिये जिया नहीं जाता बल्कि जीने के लिये खाया जाता है।

का बढ़ना तथा चित्त होकर सोने पर कुछ आराम इत्यादि उपसर्ग प्रकट होते हैं।

चिकित्सा।

सीपिया ६ या ३०—यह इस रोग की सर्वोत्कृष्ट और सर्वप्रधान दवा है। प्रसव वेदना जैसा दर्द, जरायु में दबाव मालूम होना, उसके कारण श्वास प्रश्वास में कष्ट, ऐसा मालूम होना मानो योनि मार्ग से सब कुछ बाहर निकल पड़ेगा, इसके कारण तलपेट को हाथ से पकड़ रखना, जरायु और योनिद्वार का नीचे लटक पड़ना, कमर के पिछले भाग में दर्द और जलन, गरमी मालूम होना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

वेलेडोना ३ या ६—ऐसा मालूम होना मानो योनि-मार्ग से सब कुछ बाहर निकल पड़ेगा, योनिद्वार सूखा और गरम, पीठ में दर्द, ऐसा मालूम होना मानो हड्डी टूट जायेगी, तलपेट में दर्द, दर्द का एकायक शुरू होना और एकायक गायब हो जाना इत्यादि।

अरममेट ६ या ३०—पुरानी बीमारी, जरायु में कड़ा-पन, टनक जेसा दर्द, भारी चीज़ उठाने या जरायु में रक्त सञ्चय होने के कारण यह रोग होना, ऋतु के समय दर्द का बढ़ना, श्वेत प्रदर, कमर में दर्द, आत्महत्या करने की इच्छा।

पल्सेटिला ६ या ३०–जरायु का कठिन हो जाना और वाहर निकल पड़ना, शूल जैसा दर्द, वैठने पर भी योनि में दर्द मालूम होना, समूचा शरीर ठंढा, कलेजे में धड़कन इत्यादि।

नक्सवोमिका ३० या २००–अधिक शारीरिक परिश्रम करने या कोई भारी चीज उठाने के कारण अथवा गर्भस्राव के वाद यह रोग होना, वारंवार रोग का पुनराक्रमण, कमर में दर्द, श्वेत प्रदर और कब्जियत इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

एसाफिटिडा ६ या ३०–ऐसा मालूम होना मानो योनिमार्ग से पेट की सब चीजें या जरायु वाहर निकल पड़ेगा, जरायु में ज़ख्म, हिस्टीरिया, कामोन्माद इत्यादि।

आर्निका ६ या ३०–किसी तरह की चोट लगने के कारण यह रोग होना, दो ऋतुओं के वोच में खून का गिरना, सीधे होकर चल न सकना, संगम के वाद रक्तस्राव।

कोनायम ३ या ६–जरायु का टल जाना और उसका मुख कड़ा हो जाना, ऋतुस्राव के पहले स्तन में दर्द और कड़ापन, शिर में चक्कर इत्यादि।

ल्येकेसिस ६ या ३०—जरायु में दर्द और सूजन, अन्तिम ऋतुरोध के समय यह रोग होना, पट्टे में दर्द और फूलन, साने के वाद रोग लक्षणों का वढ़ जाना।

सल्फर ३ या ६-योनिद्वार में जलन, उसके कारण छटपटाना, बारम्बार अवसन्नता, चाँद में जलन और गरमी मालूम होना, पैरों में जलन इत्यादि।

लिलियम ६ या ३०-गर्भस्राव या प्रसव के बाद यह रोग होना, प्रसव वेदना जैसी वेदना, स्तनों में दर्द, योनिद्वार को हाथ से दबा रखने पर आराम मालूम होना।

एलेट्रिस ३ या ६-नसों की कमजोरी के कारण जरायु का टल जाना, जरायु की कमजोरी के कारण वन्ध्यत्व, कमजोरी, कब्जियत और अजीर्णता।

रसटक्स ६ या ३०-अधिक परिश्रम करने या कोई भारी चीज उठाने के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

सिपिया ६ या ३०-पेशाब के बाद जरायु का नीचे उतरना, दुबली पतली स्त्रियों को यह रोग होना, जरायु में जख्म, पदबूदार स्राव, श्वेत प्रदर इत्यादि।

हाइड्रेस्टिस ३ या ६-जरायु-मुख का लटक पड़ना जरायु-मुख तथा योनिद्वार में जख्म, पीले रंग का चिकना चिकना प्रदरस्राव योनि में खुजली, सहवास की प्रबल इच्छा।

हेलोनियस ३ या ६—जोरों का दर्द, जरायु-मुखका लटक पड़ना, दबानेसे दर्द का बढ़ना, योनि के ऊपरी भाग में कनकनी, जख्म करनेवाला बदबूदार प्रदर स्राव इत्यादि।

चिकत्सा।

अर्निका ६—प्रसव के बाद चलने फिरने या ऋतु के समय अधिक परिश्रम करने के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

सिमिसिफिउगा ३ X या ६—तलपेट में बहुत दर्द, साथ ही अनियमित और स्वल्प ऋतु इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

ब्रायोनिया ६ या ३०—तलपेट में दर्द, दबाने से दर्द का बढ़ना हाथ न लगा सकना इत्यादि।

केमोमिला १२ या ३०—प्रसव जैसा दर्द, तलपेट में हाथ न लगा सकना, अस्थिरता इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—आधे कपाल में दर्द, तलपेटमें खींचन जैसा दर्द मालूम होना मानो ऋतु होगा, जरायु-ग्रीवा में दर्द, जी मिचलाना इत्यादि।

नक्सवोमिका ३०—पाकाशय में गोलमाल, जरायु-मुख का फूल उठना, कमर में दर्द तलपेट में दाब पड़ना इत्यादि।

जरायु में वायु-सञ्चय।

(Physometra)

प्रदाह आदि कारणों से जरायु में वायु सञ्चित होता है। इसके कारण जरायु फूल उठता है, फलतः पेट बड़ा मालूम होता है। किसी तरह जरायु पर दबाव पड़ने से यह वायु आवाज के साथ बाहर निकलता है।

चिकित्सा।

ब्रोमाइन ३ या ६—योनिद्वार से जोर और आवाज के साथ वायु का निकलना, रात और विश्राम के समय रोग का बढ़ना, चलने फिरने से आराम मालूम होना इत्यादि।

बेलेडोना ६ या ३०—प्रसव के बाद रक्तस्राव बन्द हो जाने के कारण या प्रदाह हो जाने के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

लाइकोपोडियम ३०—योनिद्वार में शुष्कता, योनि से आवाज के साथ वायु का निकलना, संगम के समय तकलीफ इत्यादि।

फोस्फरिक एसिड ६—जरायु का ढकन की तरह फूल उठना कमजोरी, बहुत पेशाब होना इत्यादि।

एपिस ६–जरायु का फूल जाना साथ ही तरह तरह का दर्द इत्यादि।

आवश्यक सूचना–जरायु में दूपित पदार्थ होने पर गरम पानी की पिचकारी से धुलाई करते रहना चाहिये।

जरायु में रक्त-सञ्चय।

(Hemato-metra)

जन्म से ही अथवा प्रदाह या जख्म आदि सूखने के कारण किसी किसी का जरायु-मुख वन्द हो जाता है। जरायु-मुख वन्द हो जाने पर उसको आवरक झिल्ली से खून झर झर कर उसमें इकट्ठा होता है, फलतः जरायु वड़ा हो जाता है। जरायु वढ़ जाने पर गर्भ का भ्रम होता है और पीड़ा आदि लक्षण उपस्थित होते हैं।

चिकित्सा।

कल्केरिया कार्व ६ या ३०–यह इस रोग की एक अच्छी दवा है।

कार्वोवेज ६ या ३०– जरायु में रक्तसञ्चय, साथ ही जननेन्द्रिय का वढ़ जाना इत्यादि।

वेलेडोना ६ या ३०–जरायु में रक्त सञ्चय, ऐसा मालूम होना, मानो जरायु में गरम खून भरा हुआ है इत्यादि।

जरायु में जल-सञ्चय।

(Hydrometra)

जिस कारण से और जिस तरह जरायु में रक्तसञ्चय होता है उसी तरह उसमें जलसञ्चय भी होता है। इसमें निम्नलिखित दवाओं से लाभ होता है—

चिकित्सा।

सीपिया ६ या ३०—यह इस रोग की प्रधान दवा है। जरायु में जल संजय, रक्त हीनता, दुबलापन इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

एपिस ६—जरायु फूला हुआ और उसमें जल सञ्चय, तलपेट में तनाव और दर्द।

लेकेसिस ६ या ३०—जरायु फूला हुआ, स्पर्श बरदाश्त न होना इत्यादि।

जरायु में अर्बुद।

(Uterine Tumour)

यह रोग होने पर जरायु के भीतरी या बाहरी भाग में भिन्न भिन्न आकार की गाँठड़ियां उत्पन्न होती हैं। इनका आकार उड़द या मटर से लेकर आधमन तक और इनकी संख्या एक से लेकर पचास तक हो सकती है। कभी कभी

आवश्यक सूचना—योग्य चिकित्सक द्वारा अर्बुद कटवा कर उस स्थान को नाइट्रिक एसिड से जलवा देना चाहिये।

जरायु में कैन्सर।

(Uterine Cancer)

जरायुके दूषित या विषाक्त ज़ख्म को कैन्सर कहते हैं। पुनः पुनः प्रसव या गर्भस्राव, बहुत संगम या कृत्रिम मैथुन, ऋतुस्राव में गोलमाल, प्रदर स्राव और गरमी इत्यादि इस रोगके उद्दीपक कारण माने जाते हैं। यह रोग होनेपर बहुतही बदबूदार पानी जैसा प्रदर स्राव होता है। साथ ही जरायु-ग्रीवा में सूजन और कठिनता, हाथ लगाने से दर्द मालूम होना, जलन, बहुत रक्तस्राव, तरह तरह की वेदना, कमर और पट्ठे में अधिक दर्द, जरायु का बढ़ जाना और उससे खून तथा पीब निकलना इत्यादि लक्षण भी प्रकट होते हैं। ज्यों ज्यों ज़ख्म बढ़ता जाता है, त्यों त्यों स्राव की बदबू भी बढ़ती जाती है। अन्त में क्षय, शोथ या उदरामय आदि उपसर्ग प्रकट होकर रोगिनी की मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सा।

आर्सेनिक आयोड ६ या ३०—कैन्सर की प्रथमावस्था में बहुत जलन और कठिनता के लक्षण में इसे देना चाहिये।

भोजन के लिये हमारे देश में जो चीजें काम में लायी जाती हैं, उनके गुण भिन्न भिन्न हैं। किसी पदार्थ में किसी तरह की शक्ति है तो किसी पदार्थ में किसी तरह की। साधारणतः हमारे यहाँ दाल, चावल, आटा, तरकारी, घी, दूध, मांस और मछली यही चीजें खायी जाती हैं। यह सभी चीजें अपने-अपने ढंग की निराली और अच्छी हैं। खयाल केवल इस बात का रखना चाहिये, कि इनको पकाते समय इनमें गरम मसाला, मिर्च, घी, तेल, खटाई, मिठाई या प्याज आदि चीजें इस तरह न मिला दी जायें, जिससे इनका गुण बदल जाय और इन्हें हजम होने में देर लगे।

मांस में बकरे का मांस सब से अच्छा होता है और यदि इसमें घी या मसाला अधिक तादाद में नहीं मिलाया जाता, तो आसानी से हजम हो जाता है। इसके पकाने में कसर न रहनी चाहिये। प्रति दिन खाने की अपेक्षा सप्ताह में एक या दो दिन मांस खाना अच्छा है।

खाने की समस्त चीजों में दूध और अण्डे का स्थान अधिक ऊँचा है। इसका कारण यह है कि इन चीजों में वे सभी सत्व पाये जाते हैं, जिनकी शरीर-पोषण के लिये आवश्यकता पड़ती है। और किसी चीज में सब गुण एक साथ नहीं पाये जाते। निरामिष भोजियों के लिये अण्डा बेकार है। दूध को जहाँ तक अपना सकें, अपनायें। यह जल्दी हजम भी होता है और ताकत भी देता है। मनुष्य चाहे तो केवल दूध

म्युरेक्स और सल्फर आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है ।

आवश्यक सूचना—बदबू दूर करने के लिये गरम पानी या हाइड्रेस्टिस लोशन से धुलाई करनी चाहिये। बहुत रक्तस्राव हो तो हेमामेलिस मदरटिञ्चर व्यवहार करना चाहिये। मांस मछली और सभी तरह के उत्तेजक पदार्थों का त्याग करना चाहिये।

डिम्बकोष का प्रदाह।

(Ovaritis)

ठण्ड या सर्दी लगना, ऋतुकाल में स्वामी सहवास, पैर के पंजों का पानी में भीगना, किसी तरह की चोट लगना, हस्तमैथुन करना इत्यादि कारणों से डिम्बकोष का प्रदाह होता है। यह रोग होने पर पट्ठे के कुछ ऊपर थोड़ा थोड़ा दर्द, जलन, डिम्बकोष का फूल उठना, हिलने डोलने या हाथ लगाने से दर्द मालुम होना, बुखार, मिचली, कै, कभी कभी आक्षेप, स्वामी सहवास की इच्छा तथा अन्यान्य स्नायविक लक्षण प्रकट होते हैं।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ x या ६—ठण्डी हवा या सर्दी लगने अथवा डर जाने के कारण यह रोग होना, ऋतु के समय

स्राव वन्द हो जाने के कारण नाक से रक्तस्राव होना इत्यादि।

केन्थरिस ६ या ३०–डिम्बकोष में वहुत जलन बारंबार पेशाव का वेग होना, परन्तु कष्ट के साथ खून मिला वूँद वूँद पेशाव होना, पेशाव में जलन इत्यादि।

हेमामेलिस ३ या ६–चोट लगने के कारण डिम्बकोष का प्रदाह, समूचे पेट में फोड़े जैसा दर्द, शिराओं में अधिक रक्तसञ्चार इत्यादि लक्षणों मे इसे देना चाहिये।

पल्सेटिला ६ या ३०–सरदी लगने के कारण ऋतुका रुक जाना, वहुत दर्द के कारण रोगिणी का छटपटाना, रोना और चिल्लाना, सदा ठण्ढ लगने की शिकायत करते रहना।

लेकेसिस ६ या ३०–वायें डिम्बकोष में प्रदाह और सूजन, कसकर पकड़ रखने जैसा दर्द, सोने के वाद उपसर्गों का बढ़ना इत्यादि।

सिमिसिफिउगा ३X–यह भी अच्छी दवा है। डिम्बकोष में वहुत दर्द, दर्द के कारण रोगी का अस्थिर हो पड़ना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

प्लाटिना ६ या ३०–सगम की प्रवल इच्छा, ऐसा मालूम होना मानो योनिद्वारा से ढेले जैसी कोई चीज वाहर

एमनम्यूर ३—बायीं ओर मोच जैसा दर्द, पेट फूलना, कब्जियत, स्पर्श बरदाश्त न होना प्रदर स्राव इत्यादि।

एट्रोपिया ३X—यह एक अच्छी दवा है। रोगके समय इसे, और विश्राम के समय जिंकम वेलेरियाना ३X विचूर्ण देने से आश्चर्यजनक लाभ होता है।

स्टेफीसेग्रिया ६—डिम्बाशय प्रदेशमें चिलक जैसा दर्द, दवाव वरदाश्त न होना।

केन्थरिस ६—बायीं ओर दर्द, दर्द के कारण आगे की ओर झुक जाना इत्यादि।

मग्नेशिया फस ३X या ६X—गरम पानी के साथ इसे सेवन करने से दर्द शीघ्र घट जाता है।

सिमिसिफिउगा ६ या ३०—वात रोग के साथ यह रोग होना, वन्ध्यत्व, जरायु में दर्द इत्यादि।

लिलियम ६ या ३०—डिम्बकोष के दोनो ओर खूब कसकर पकड़ रखने जैसा दर्द हो तो इसे देना चाहिये।

डिम्बकोष में शोथ।

(Ovarian Dropsy)

सरदी या ठंढ लगना, प्रसव के समय चोट लगना, ऋतु-लोप इत्यादि इस रोग के उत्तेजक कारण माने जाते हैं। यह

से सब कुछ बाहर निकल पड़ेगा, बायां डिम्बकोष फूला हुआ और उसमें दर्द, पेशाब में तकलीफ इत्यादि।

आर्सेनिक ६ या ३०—जलन, अस्थिरता, व्याकुलता, निस्तेजता, बहुत प्यास लेकिन एक साथ अधिक पानी न पीना, समूचे शरीर में शोथ इत्यादि।

लाइकोपोडियम १२ या ३०—दाहिने डिम्बकोष में टनक जैसा दर्द, बैठी हुई हालत से खड़े होने पर दर्द का बढ़ना, पेशाब में बालु जैसी लाल तली जमना, जननेन्द्रिय निम्नाङ्ग की नसें फूली हुई इत्यादि।

आयोडियम ३—दाहिने डिम्बाशय में कांटी गड़ने जैसा दर्द, जरायु तक उस दर्द का फैल जाना, जख्म करने वाला प्रदर स्राव, ऐसा मालूम होना मानो योनिमार्ग से सब कुछ बाहर निकल पड़ेगा, स्तनों का सूख जाना इत्यादि।

केलीब्रोम ६—डिम्बाशय में शोथ के साथ रक्तस्राव कामातुरता, अस्थिरता, निद्राहीनता, कमजोरी इत्यादि।

प्लेटिना ३०—पुरानी बीमारी, कष्टरजः, स्पर्श बरदाश्त न होना, तनाहट, अनियमित ऋतु इत्यादि।

आवश्यक सूचना—स्वामी सहवास और उत्तेजक पदार्थों का सेवन एकदम मना है। हलकी चीजें खाने को देना चाहिये।

ही पीकर जीता रह सकता है। गाय का दूध सबसे अच्छा माना गया है। खाँसी और क्षय की बीमारीवालों को बकरी का दूध फायदा करता है। बच्चों के लिये माता का दूध ही सब से अच्छा खाद्य है। जिन लोगों को दूध हजम न हो, वे दही और मठा खा सकते हैं।

खाना अच्छी तरह चबाकर धीरे २ खाना चाहिये। बड़ी उम्रवालों को खाने की तादाद घटा देना चाहिये, ताकि बद-हजमी की शिकायत न हो। जाड़े में घी आदि अधिक खाया जा सकता है। भोजन की मात्रा भी जाड़े में कुछ बढ़ जाने से कोई हानि नहीं होती। गरमी के दिनों में सीधा सादा भोजन कुछ कम परिमाण में खाना अच्छा है। तरकारी जब तब बदलते रहना चाहिये। साग सब्जी अधिक खाना ठीक नहीं। भोजन के बाद ठंडा पानी पीने से जठराग्नि मन्द पड़ जाती है। अजीर्ण रोगवालों को भोजन के बाद सुसुम पानी पीने से लाभ होता है। भोजन के बाद कुछ देर आराम करना अच्छा है परन्तु ठूँस ठूँस कर खाने के बाद तुरन्त ही सो जाना ठीक नहीं। ऐसा भोजन सोने के एक घण्टा पहले होना चाहिये। बहुत देर तक भूखे रहने से भी हानि होती है। दिन की अपेक्षा रात का भोजन अधिक सादा और हलका होना चाहिये।

दोपहर और रात को भर पेट भोजन करना चाहिये। सुबह और तीसरे पहर कुछ हलकी चीजें खाकर जलपान कर लेना

चिकित्सा।

एकोनाइट ३x या ६–योनिप्रदाह के साथ ज्वरभाव, अस्थिरता, प्यास, सिर में चक्कर, नींद न आना इत्यादि।

आर्निका ३ या ६–अधिक स्वामी सहवास, या किसी तरह को चोट लगने के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

केन्थरिस ३ या ६–स्वामी सहवास की प्रबल इच्छा, योनिद्वार सूखा हुआ, पेशाब मे तकलीफ इत्यादि।

सीपिया ६ या ३०–योनिद्वार सूखा हुआ और उसमे दर्द, गंदला पेशाब और उसमें लाल तली जमना, सुजाक के दोष से यह रोग होना।

बेलेडोना ३ या ६–योनिप्रदाह, टपक जैसा दर्द, ऐसा मालूम होना मानो भीतर से कुछ बाहर निकल रहा है, अनजान मे पेशाब शिर में दर्द, प्यास इत्यादि।

मर्क्युरियस ३ या ६–नयी या पुरानी दोनो तरह की बीमारी में इससे काफी लाभ होता है।

पल्सटिला ३ या ६–योनिप्रदाह साथ ही दूध की मलाई जैसा गाढ़ा श्वेत प्रदर, सरदी लगने के कारण थोड़ा थोड़ा ऋतुस्राव इत्यादि।

बोरेक्स २ X विचूर्ण—बहुत अधिक पीव निकलने पर इसे देना चाहिये।

नाइट्रिक एसिड ६—पीव, जलन, जख्म, फुन्सियाँ इत्यादि लक्षणों में और गरम या पारे का दोष होने पर इसे देना चाहिये।

इनके अतिरिक्त ब्रायोनिया, चायना, क्रियोजोट, कोनायम, आयोडियम प्लेटिनम, हायोसायमस, सेपाइना, सल्फर, इग्नेशिया और कल्केरिया कार्ब आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—रोगिनी को सुला रखना चाहिये और बीच बीच में गरम पानी का सेंक देना चाहिये। बुखार होने पर सावदाना और वार्ली आदि हलकी चीजें खाने को देना चाहिये।

योनि-भ्रंश।

(Prolapsus Vaginoe)

जरायु का स्थान-च्युति के साथ कभी-कभी योनि भी अपने स्थान से विचलित होकर बाहर निकल पड़ती है। योनि की शिथिलता के कारण भी यह रोग हो सकता है। यह रोग होने पर तलपेट और योनिदेश में भार मालूम होना, योनिदेश में फूलन, पेशाब करने और चलने में तकलीफ, प्रदरस्राव, इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं।

चिकित्सा।

स्टेनम ६—यह इस रोग की एक अच्छी दवा है। मल-त्याग के समय योनि का बाहर निकल पड़ना, ऋतु के समय योनि दर्द इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

क्रियोजोट ६—स्टेनम से लाभ न होने पर इसे आज़माना चाहिये। योनि के भीतर जलन करनेवाला दर्द, योनि-देश का फूल उठना, बदबूदार स्राव इत्यादि।

आर्निका ३ x या ६—चोट लगने, अधिक सहवास करने या बारम्बार प्रसव होने के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

सीपिया ३०—जलन के साथ कतरने जैसा दर्द, मल-द्वार में भार मालूम होना, ऐसा मालूम होना मानो पेट की सब चीजें बाहर निकल पड़ेंगी, इस कारण से पैर को पर से दबा रखना इत्यादि।

[illegible]ना ६—[illegible] [illegible] और सीधे होकर बैठने पर आराम मालूम होना इत्यादि।

इनके अतिरिक्त [illegible] लैकेसिस, सल्फर और [illegible] आदि दवाएं भी लक्षणानुसार व्यवहार की जाती हैं।

आवश्यक सूचना—इस रोग में [illegible] पानी के टब में बैठने से अनेक बार [illegible] अपने आप भीतर घुस

जाती है। योनि बाहर निकलने पर उसे दबा कर भीतर कर देना चाहिये और ठेस देकर अर्धशायित अवस्था में सोना चाहिये। इससे कुछ दिनों में रोग आराम हो जाता है।

योनि में खुजली।

(Praritis Vulvoe)

जरायु की कोई बीमारी, गर्भावस्था अथवा योनि में काँटे जैसे केश निकलने के कारण यह रोग होता है। यह रोग होने पर खुजली की तरह छोटे-छोटे दाने निकलते हैं और उनमें बहुत खुजली होती है।

चिकित्सा।

सल्फर ३०—योनिदेश में फुन्सियाँ, उनमें जलन के साथ असह्य खुजली, गरम मालूम होना बवासीर इत्यादि।

कलिकम ६—रात के समय बेहद खुजली होने पर इसे देना चाहिये।

ग्रेफाइटिस ६—खुजली के साथ चिलक मारने जैसा दर्द, जाँघ में छोटी-छोटी फुन्सियाँ, उनसे चिकना-चिकना रस निकलना।

सीपिया ३०—असह्य खुजली योनि का भीतरी भाग फूला हुआ इत्यादि।

आर्सेनिक ३०—जलभरी फुन्सियाँ, ज्वालाकर खुजली, रात के समय खुजली का बढ़ना, गरमी में आराम मालूम होना इत्यादि।

मर्क्युरियस ६—खुजलाने से जलन और दर्द, जख्म, हरे रंग का प्रदर स्राव इत्यादि।

इनके अतिरिक्त केलाडियम, नाइट्रिक एसिड, लाइको-पोडियम, कार्बोवेज, नेट्रमम्यूर, नक्सवोमिका और पेट्रोलियम आदि दवाओं से भी लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—मर्क्युरियस कर, हाइड्रेस्टिस या केलेण्डुला का लोशन तैयार कर उससे दिन में दो तीन बार योनि को धोना चाहिये और यही दवाएँ मीठे तेल या ग्लीस-रिन में मिलाकर लगाना चाहिए। यदि योनि में काँटे जैसे केश हों, तो उन्हें नष्ट करने के बाद ही औषधोपचार करना चाहिये।

योनि का आक्षेप।

(Vaginismus)

योनिद्वार का सकोचन जरायु प्रदाह, योनि प्रदाह, योनिद्वार का बहुत तंग होना, योनि के पर्दे में अनुभव शक्ति की अधिकता इत्यादि कारणों से यह रोग होता है। इसके

अवरुद्ध योनि।

(Imperforate Hymen)

योनि के भीतरी भाग में एक चन्द्राकार पर्दा रहता है। इसे कुमारीच्छद कहते हैं। साधारणतः पुरुष का संग होने पर यह पर्दा फट जाता है परन्तु कभी कभी यह पर्दा बहुत कड़ा होने के कारण अथवा योनिद्वार भीतर से अवरुद्ध होने के कारण पुरुषेन्द्रिय भीतर प्रवेश नहीं कर पाती। इस शिकायत में औषधियों का सेवन कोई लाभ नहीं करता। उँगली या पुरुषेन्द्रिय के प्रवेश से कोई लाभ न हो, तो चिकित्सक द्वारा चीरा लगवा देना चाहिये। यही इसका सर्वोत्तम उपाय है।

योनि के अन्यान्य रोग।

योनि में अर्बुद या बतौड़ी होने पर कार्बोएनी कार्बोवेज, आर्सेनिक और क्रियोजोट। योनि से वायु निकलने पर ब्रोमियम। योनि में जलन होने पर आर्सेनिक बेलेडोना और लेकेसिस। योनि कड़ी होने पर बेलडोना कोनायम। संगम के समय बहुत कष्ट होने पर स्टेफीसाइग्रिया। योनि में रक्ताधिक्य होने पर एल्यूमेन।

स्तनों में फोड़ा।

(Mammary Abscess)

स्तनों में चोट लगने या दूध जम जाने के कारण फोड़ा हो जाता है। यह बहुत ही कष्टदायक रोग है। अनेक बार यह आसानी से आराम न होने पर इसीसे नासूर हो जाता है।

चिकित्सा।

बेलेडोना ३x या ६—स्तन कड़े, लाल, फूले और दर्द भरे होने पर या फोड़ा होने का लक्षण दिखायी देने पर सर्व प्रथम इसे ही देना चाहिये।

ब्रायोनिया ६—स्तन में बहुत कड़ापन और बहुत दर्द होने पर इसे देना चाहिये।

फाइटोलेक्का १x या ३x—यह इस रोग की एक बढ़िया दवा है। ब्रायोनिया से दो दिन में लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

हिपरसल्फर ६ या २००—इसका निम्नक्रम देनेसे फोड़ा पककर फूटता है और उच्चक्रम देने से बैठने योग्य होता है तो बैठ जाता है।

साइलीसिया ३० या २००—फोड़ा फूट जाने के बाद इसे देने से जख्म जल्दी सूख जाता है। नासूर हो जाने पर भी इसे ही देना चाहिये।

आवश्यक सूचना—फोड़ा पकने लगे तो तीसी की पुल्टिस चढ़ाकर जल्दी पका देना चाहिये। फूट जाने के बाद आलिव आइल में कैलेण्डुला मदर टिञ्चर मिला कर, जख्म पर लगाने से ज़ख्म जल्दी सूख जाता है। नयी बिमारी में फाइटो लेक्का लोशन के बाह्य प्रयोग से भी काफी लाभ होता है।

स्तनों के अन्यान्य रोग।

स्तनों मे दर्द—ऋतु के पहले दोनों स्तनों में दर्द होने पर कोनाइम। दाहिने स्तन में असह्य दर्द होने पर लेक्टनेरिया। अविवाहिता बालिकाओं में बायें स्तन में बहुत दर्द होने पर सिमिसिफिउगा। ऋतु के एक सप्ताह पहले स्तनों में दर्द तथा अधिक रज होने पर कल्केरिया कार्ब। दर्द के साथ स्वल्प-रज हो तो पल्सेटिला। दर्द के साथ प्रदर हो तो सिपानाथस।

स्तनों में [illegible] फाइटोलेक्का [illegible] और फाइटोलेक्का लोशन का बाह्य प्रयोग करने पर इस रोग में बहुत लाभ होता है।

स्तन में [illegible] [illegible] पर [illegible] [illegible] [illegible]

सीपिया ६ या ३०—ज़ोरों का शिर दर्द, जरायुप्रदेश में दर्द, स्वल्प रजः या रजोरोध, बहुत दिनों के बाद ऋतु होना, पीले या हरे रंग का प्रदर, कब्जियत, अधकपारी, बकरी की लेंडी जेसा दस्त।

वेलेरियाना १ X—हिस्टोरिया के साथ हरित रोग होने पर इसे देना चाहिये।

सल्फर ३०—चाँद और हाथ पैर के तलवे गरम मालूम होना, कब्जियत, रात में बेचेनो, प्रदर, पुराना रोग।

नेट्रम म्यूर ३०—पुरानो बीमारी की यह भी एक अच्छी दवा है। तलपेट मे भार, शोथ, कब्जियत, ऋतु वन्द, परन्तु बीच-बीच में कपड़े मे दाग लगना, उत्कंठा इत्यादि लक्षणों में इसे व्यवहार करना चाहिये।

एन्टिम क्रड ६ या ३०—जीभ पर सफेद गाढ़ा लेप, भूख, डकार में खायो हुई चीजो की गन्ध मालूम होना इत्यादि।

अर्जेन्टम नाइट्रिकम ६—कै, पेट में दर्द, कलेजे का धड़कना, बेहोशी इत्यादि।

आवश्यक सूचना—ठंढे पानी या समुद्र में नहाना, विशुद्ध वायु का सेवन, दूध पीना, मोटे आटे को हाथ की बनी हुई रोटी खाना, सूर्य की रोशनी में इधर उधर घूमना, तरकारी,

चिकित्सा ।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०–मोटे और थुलथुले शरीर की स्त्रियों को इससे विशेष लाभ होता है। जल्दी-जल्दी बहुत सा रजस्राव होना, दूध जैसा प्रदर, पेशाब के साथ प्रदर का निकलना, बोझ उठाने पर या मासिक स्राव के बाद रोग का बढ़ना, साथ ही जलन या खुजली, तलपेट में दर्द, जरायु का विचलित होना, छोटी बालिकाओं को यह रोग होना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये ।

पल्सेटिला ६ या ३०—ऋतुस्राव के पहले, ऋतु-स्राव के समय या ऋतुस्राव के बाद रोग का बढ़ना, भय के कारण प्रदर होना, ऋतुस्राव आरम्भ होने के पहले ही बालिकाओं को यह रोग होना, मलाई जैसा गाढ़ा स्राव, सिर में चक्कर, सदा जाड़ा लगना, अजीर्णता, योनिदेश कुछ फूला हुआ इत्यादि लक्षणों मे इसे देना चाहिये ।

ककुलस ६ या ३०—गर्भावस्था मे खून मिला प्रदर-स्राव अथवा माँस के भोजन जैसा स्राव, शूल जैसा दर्द मासिक स्राव के पहले और पीछे रोग का बढ़ना ।

नेट्रमम्यूर ३० या २००—सफेद सफेद गाढ़ा और कफ मिला बहुत अधिक स्राव, चेहरा पीला, शिर में दर्द, पतले दस्त, शूल जैसा दर्द इत्यादि ।

सीपिया ३० या २००—मक्खन जैसा गाढ़ा या बदबूदार पीला स्राव, बहुत थोड़ा रजस्राव, प्रसव जैसा दर्द, बारम्बार पेशाब का वेग, योनि में खुजली, संगमेच्छा का अभाव इत्यादि।

नाइट्रिक एसिड ६ या ३०—पहले गाढ़ा, बाद को पानी जैसा पतला या माँस के धोवन जैसा बदबूदार स्राव, पारे या गरमी का दोष होने के कारण यह रोग होना।

आर्सेनिक ६ या ३०—जलन और जख्म करने वाला पीले रंग का गाढ़ा स्राव, उद्वेग, अस्थिरता, कमजोरी, खड़े होने पर या अधोवायु निकलने के समय स्राव का बूँद टपकना इत्यादि।

बोविस्टा ६—पुरानी बीमारी, अण्डे की सफेदी जैसा स्राव, रोगिनी को अपना शिर बड़ा मालूम होना इत्यादि।

नक्सवोमिका ६ या ३०—जरायु में दर्द, अनियमित ऋतु, आलसी स्वभाव, उत्तेजक पदार्थ खाने पीने के कारण यह रोग होना।

ग्रेफाइटिस ६ या ३०—मोटे शरीर की स्त्रियों को यह रोग होना, कमर में दर्द, बहुत सा ज्वालाकर स्राव, चर्म रोग।

कल्केरिया कार्ब, पल्सेटिला, लाइकोपोडियम और फेरम। खून मिले स्राव में क्रियोजोट, लाइकोपोडियम और चायना। स्राव में बदबू होने पर कार्बोवेज, कल्केरिया कार्ब, सीपिया, पल्सेटिला। गाढ़े स्राव में सीपिया, मेजेरियम, जिङ्कम। केवल दिन में स्राव होने पर एल्युमिना। केवल रात में स्राव होने पर एम्ब्राग्रिसिया या कस्टिकम। सुबह बिछौने से उठते ही स्राव होने पर कार्बोवेज।

आवश्यक सूचना—दवा बीच बीच में बन्द रखनी चाहिये, जननेन्द्रिय को हमेशा धोते रहना चाहिये। बबूल की छाल उबाल कर उसी पानी की पिचकारी से जननेन्द्रिय को धोना लाभदायक है। अधिक परिश्रम, स्वामी सहवास, मानसिक उत्तेजना, गरम मसाले या घी तेल मिले अथवा उत्तेजक पदार्थ आदि खाना मना है।

वन्ध्यत्व।

(Sterility)

स्त्रियों को सन्तान न होना वन्ध्यत्व या बाँझपन कहलाता है। शारीरिक दुर्बलता, बहुत स्थूलता, शरीर में चरबी का बहुत बढ़ जाना, जरायु में अर्बुद, ऋतुस्राव में गोलमाल, प्रदर स्राव, हद से ज्यादा सगम, योनि की सकीर्णता, प्रजनन अंगों की खराबी इत्यादि अनेक कारणों से यह रोग होता है।

होता, परन्तु वर्षा में वह गन्दा हो जाता है इसलिये उन दिनों में उसे भी साफ किये विना काम में न लाना चाहिये। कुएँ का पानी अच्छा होता है, परन्तु उसमें खड़ पतवार न गिरना चाहिये। जिस कुएँ का पानी पिया जाता हो, उस कुएँ पर नहाना, कपड़े धोना और वर्तन मलना ठीक नहीं। इससे कुएँ का पानी गन्दा हो सकता है। जिस समय कोई बीमारी फैली हुई हो, उस समय कुएँ का पानी भी गरम करके ही काम में लाना चाहिये। तालाब, पोखरे, चौबच्चे आदि साल में एक बार साफ करवा देने चाहियें।

वायु—जल और भोजन के विना तो हम लोग कुछ समय तक जीते रह भी सकते हैं, परन्तु वायु के विना एक क्षण के लिये भी हमारा काम नहीं चल सकता। हम सदा साँस लेते हैं। साँस लेने के लिये शुद्ध वायु की जरूरत पड़ती है। किसी स्थान में जीव जन्तु या घास फूस सड़ने तथा मल मूत्र पड़ा रहने से वहाँ की हवा खराब हो जाती है। हम लोग साँस से जो हवा छोड़ते हैं, हवा भी गन्दी रहती है। जहाँ छोटे स्थान में बहुत आदमी रहते हैं और किवाड़े बन्द करके सो जाते हैं, वहाँ भी हवा इसी कारण से गन्दी हो जाती है। ऐसी हवा से हमेशा बचना चाहिये। छोटी जगह में बहुत आदमियों का रहना या सोना ठीक नहीं। सोने के कमरे में दो एक खिड़कियाँ अवश्य खुली रखनी चाहिये। ऊँचे खिड़कियों से अधिक हवा आती है और खराब हवा आ जाती

के सहवास से कन्या की उत्पत्ति मानते हैं। इनमें से कौन मत ठीक है, इसका अभी निर्णय नहीं हुआ और शायद हो भी नहीं सकता।

गर्भ-सञ्चार होने पर स्त्रियों का मासिक स्राव रुक जाता है, स्तन बढ़ने लगते हैं, भिटनी के चारों ओर काला दाग पड़ जाता है और धीरे धीरे पेट भी बड़ा होने लगता है। यह सब गर्भ रहने के प्रधान चिन्ह हैं, परन्तु अनेक बार भिन्न भिन्न प्रकार की बीमारियों के कारण भी यह लक्षण प्रकट होते हैं, इसलिये गर्भ का पूर्ण निश्चय उस समय होता है, जब दूसरे से लेकर पाँचवें महीने तक, गर्भ का बालक हिलने डोलने या फड़कने लगता है। यह लक्षण प्रकट होने पर गर्भ के विषय में फिर कोई सन्देह नहीं रह जाता।

गर्भ का स्वाभाविक काल ४० सप्ताह १० चन्द्रमास या २८० दिन है। अधिकांश बच्चों का जन्म २७० से लेकर २८० दिन के बीच में होता है। कभी कभी इसमें कुछ कमी बेशी भी हो जाती है। यह समय अन्तिम ऋतुस्राव के दिन से गिना जाता है।

गर्भावस्था में स्त्रियों के शिर जैसा गुरुतर भार रहता है, वैसा और किसी भी समय नहीं रहता। गर्भावस्था के दिनों में स्त्रियाँ जो कुछ सोचती है जो कुछ करती है जो कुछ खाती पीती या देखती है—उन सबका प्रभाव गर्भस्थ बालक

पर पड़ता है। माता के ही इन दिनों के आचार विचार उसे देवता या राक्षस बना देते हैं।

इस विषय पर यहाँ कुछ अधिक लिखना अप्रासंगिक होगा। हम संक्षेप में केवल इतना ही बतला देना चाहते हैं कि गर्भावस्था में माता को अपनी ज़िम्मेदारी का ख्याल रख ऐसा आचरण न करना चाहिये, जिससे गर्भस्थ बालक का अनिष्ट हो। गर्भावस्था में हलकी और पुष्टिकर चीजें खानी चाहिये। अधिक खाना या उपवास करना हानिकारक है। दस्त लानेवाली चीजें खाने से गर्भपात का भय रहता है। गर्भावस्था में तरह तरह की चीजें खाने की इच्छा होती है। अनेक स्त्रियाँ मिट्टी और खपड़ आदि खाती हैं, परन्तु यह ठीक नहीं। ऐसी चीजें [illegible] खाना जा सकता है जिनसे गर्भ का अकल्याण न हो।

गर्भावस्था में कपड़े ढीले ढाले पहनने चाहिये। कसे कपड़े पहनने से गर्भ की [illegible] और [illegible] में बाधा पड़ती है। [illegible] घूमना और थोड़ा परिश्रम करना लाभदायक और आवश्यक है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

यदि किसी मामले में ऐसा हो और अधिक स्राव होने के कारण कमजोरी तथा कष्ट अनुभव हो, तो क्रोकस, प्लेटिनम, ककुलस या फोस्फरस देना चाहिये अथवा ऋतुविषयक रोगों की दवाओं में से कोई उपयुक्त दवा चुन लेनी चाहिये।

शिर में दर्द और चक्कर।

(Headache and Verti[illegible])

अनेक बार स्त्रियों को गर्भ रहने के तीसरे या चौथे सप्ताह से शिर में दर्द और चक्कर आदि शिकायतें पैदा हो जाती हैं। साथ ही शिर में पूर्णता, तन्द्रालुता, सुस्ती, कभी निद्रालुता, कभी अनिद्रा, धुंधला दिखायी देना, आंख के सामने चिनगारियों का उड़ना, खड़े होने या झुकने पर गिर पड़ने का उपक्रम, शिर और गर्दन के पिछले हिस्से में भार, कलेजे का धड़कन, कमजोरी इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं।

चिकित्सा।

[illegible]

पल्सेटिला ६ या ३०-समूचे या आधे शिर में दर्द, एक एक दिन के अन्तर से शिर दुखना, दोपहर या शाम के वक्त तकलीफ का बढ़ना, सुबह आराम मालूम होना, नम्र प्रकृति की स्त्रियों का यह रोग होना इत्यादि।

सल्फर ६ या ३०--शिर में दर्द और रक्तसंचय, शिर चकराना, चाँद में गरमी मालूम होना, बैठने पर या भोजन के बाद तकलीफ का बढ़ना, कभी कभी मिचली, बेहोशी, कमजोरी, नाक से खून बहना, सुबह या शाम के वक्त तकलीफ का बढ़ना, अधकपारी या शिर के ऊपरी भाग में दर्द, आँखों से कम दिखाई देना, हिलने डोलने, चलने फिरने, या खुली हवा में रहने से शिरदर्द का बढ़ना।

कक्कुलस ६ या ३०--लेटने के बाद सीधे होकर बैठने पर शिर का चकराना, भोजन के बाद रोग का बढ़ना।

सीपिया ६ या ३०-शाम के वक्त शिर में दपदपी, शिरदर्द, कब्जियत, पेट का खाली मालूम होना इत्यादि।

ब्रायोनिया ६ या ३०--दर्द के कारण ऐसा मालूम होना मानो माथा फट जायगा साथ ही बहुत कब्जियत, चिड़चिड़ा स्वभाव इत्यादि।

मिचली और कै।

(Morning Sickness)

गर्भावस्था के पाँचवें या छठे सप्ताह में अधिकांश स्त्रियों को मिचली या कै की शिकायत पैदा होती है। इसके कारण उन्हें

आर्सेनिक ६ या ३०—बहुत अधिक कै, खासकर कुछ खाने या पीने के बाद, साथ ही बेहोशी या बहुत कमजोरी इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—भोजन के बाद जी मिचलाना, खाये हुए पदार्थों को कै, खट्टी या कड़वी डकारें, अथवा डकारों में खाई हुई चीजों का स्वाद, खट्टी चीजें खाने की इच्छा, जीभ पर सफेद लेप।

नेट्रमम्यूर ३० या २००—भूख का न होना, किसी चीज का स्वाद न मालूम होना, मुँह में पानी भर आना, तथा बहुत पानी घूटना, पाकाशय में अम्ल और दर्द इत्यादि।

फोस्फरस ६ या ३०—आर्सनिक के जैसे लक्षणों में आर्सनिक से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

एन्टिम क्रड ६ या ३०—डकार मे खायी हुई चीजों की गन्ध, अधिक खाने के बाद कै, जी मिचलाना और शिर चकराना।

सिम्फारि कार्पस ६ या ३०—सदा मिचली और कै, पेट मे गोलमाल, मुँह में पानी भर आना, भोजन में कभी रुचि कभी अरुचि, मुँह मे तीता स्वाद, कोई भी चीज खाने की इच्छा न होना, कब्जियत इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

चायना ६ या ३०—पीले रंग के विना दर्द के पतले अजीर्ण पदार्थ मिले दस्त, पेट का फूलना, पेट में दर्द, गरमी के दिनों में गरमी के कारण या फलमूल खाने के कारण दस्त, कमज़ोरी लानेवाला पसीना इत्यादि ।

आर्सेनिक ६ या ३०—अजीर्ण पदार्थ मिले दस्त, दस्तों के कारण बहुत कमज़ोरी, अस्थिरता, बदन में दाह, प्यास, थोड़ा थोड़ा पानी पीना खाने पीने के बाद कै ।

नक्सवोमिका ३०—पेट में अम्ल खरोंचने जैसा दर्द, बारम्बार दस्त का वेग लेकिन खुलासा दस्त न होना ।

पल्सेटिला ६ या ३० आंव मिले दस्त, हमेशा दस्तों का रंग रूप बदलते रहना रात में रोग का बढ़ना, घी तेल या चर्बी वाली चीज़ें खाने के कारण दस्त आना ।

[illegible] ६ या ३०—पाकाशय में गड़बड़ी [illegible] [illegible] खाने के कारण दस्त आना।

[illegible] ६ या ३०— [illegible] रात में [illegible]

चायना ६ या ३०—पीले रंग के बिना दर्द के पतले अजीर्ण पदार्थ मिले दस्त, पेट का फूलना, पेट में दर्द, गरमी के दिनों में गरमी के कारण या फलमूल खाने के कारण दस्त, कमज़ोरी लानेवाला पसीना इत्यादि।

आर्सेनिक ६ या ३०—अजीर्ण पदार्थ मिले दस्त, दस्तों के कारण बहुत कमज़ोरी, अस्थिरता, बदन में दाह, प्यास, थोड़ा थोड़ा पानी पीना, खाने पीने के बाद कै।

नक्सवोमिका ३०—पेट में अम्ल, खोंचने जैसा दर्द, बारम्बार दस्त का वेग लेकिन खुलासा दस्त न होना।

पल्सेटिला ६ या ३०—आंव मिले दस्त, हमेशा दस्तों का रंग रूप बदलते रहना, रात में रोग का बढ़ना, घी तेल की पकी चीजें खाने के कारण दस्त आना।

एन्टिमक्रूड ६ या ३० पाकाशय में गड़बड़ी पानी जैसा बहुत दस्त [illegible] जीभ सफेद, खट्टी चीजें खाने के कारण दस्त आना।

पोडोफिल्लम ६ या ३० सुबह या पिछली रात में पेट गड़गड़ा कर [illegible] पीले रंग के पतले दस्त, बिना दर्द के दस्त इत्यादि

लाइकोपोडियम ३०—कब्जियत के साथ पेट फूलना।

कोलिन्सोनिया ३ या ६—कब्जियत और बवासीर साथ ही जरायु की बीमारी हो तो इसे देना चाहिये।

प्लम्बम ६ या ३०—बहुत तेज कब्जियत, बकरी की लेंड़ी जैसा मल, पेट में दर्द इत्यादि।

हाइड्रेस्टिस १X—साधारण कब्जियत में इससे भी लाभ होता है।

अतिसार।

(Diarrhoea)

गर्भावस्था में कब्जियत की तरह अनेक बार पतले दस्त की भी शिकायत पैदा होती है। इसमें तकलीफ भले ही अधिक न हो पर गर्भिणियों के लिये यह विशेष खतरनाक बीमारी है। पतले दस्तों के कारण शीघ्र ही वह कमजोर हो जाती और अनेक बार गर्भपात तक हो जाता है। इसलिये दस्त बन्द करने के लिये तुरन्त कोई दवा देनी चाहिये।

चिकित्सा।

एलोज ३०—सुबह दस्त, पेट में कल कल आवाज, दस्त के साथ वायुका निकलना, जल्दी जल्दी पाखाने दौड़ना।

ग्रेफाइटिस ६–योनिद्वार में खुजली और गीलापन, खुजलाने से फूल उठना, शहद जैसा चिकना पदार्थ निकलना इत्यादि ।

पल्सेटिला ६ या ३०–योनिके अन्दर और बाहर बहुत खुजली, डंक मारने जैसी जलन इत्यादि ।

लाइकोपोडियम ६ या ३०–योनिद्वार से सफेद कीचड़ निकलना और उसके कारण बहुत खुजली तथा जलन होना ।

सल्फर ३०–योनिके चारों ओर फुन्सियाँ उनमें जलन तथा खुजली इत्यादि ।

बोरेक्स ३ या ६–योनि में खुजली होने की यह भी एक बढ़िया दवा है ।

इनके अतिरिक्त एम्ब्राग्रीसिया, सिपिया, ब्रायोनिया, रसटक्स तथा साइलीसिया आदि दवाओं से भी काफी लाभ होता है ।

आवश्यक सूचना—सुहागे का चूर्ण पानी में मिला, कर, उसमें एक कपड़ा भिगोकर योनि में रखने से लाभ होता है । योनिद्वार को ठंडे पानी से धोते रहना भी बहुत लाभदायक है ।

—

गर्भावस्था में मूर्च्छा।

(Fainting during Pregnancy)

गर्भावस्था में स्नायविकता और शारीरिक दुर्बलता, कस कर कपड़े पहनना, गरम स्थान में रहना इत्यादि कारणों से मूर्च्छा आ जाती है और हिस्टीरिया रोगके से लक्षण प्रकट होते हैं। कुछ दिनों के बाद अपने आप यह शिकायत दूर हो जाती है। यदि रोग साधारण हो तो खानपान के विषय में सावधानी रखने से वह आराम हो जाता है। रोग कठिन हो तो उसका इलाज करना चाहिये। मूर्च्छा आने पर रोगिनी को खुली हवामें सुलाने, उसके कपड़े ढीले कर देने और उसके मुँह पर ठंडे पानी के छींटे देने से वह होश में आ जाता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ X या ६–भयके कारण मूर्च्छा आने पर या रोगका पुनराक्रमण रोकने के लिये इसे देना चाहिये।

कोफिया ६–स्नायविक प्रकृति की स्त्रियों को यह रोग होना, बहुत उत्तेजना, तलपेट में खींचन, श्वासकष्ट, ठंडा, पसीना इत्यादि।

चायना ६ या ३०–रक्तस्राव जनित कमजोरी के कारण यह रोग होने पर इसे देना चाहिये।

कैमोमिला १२ या ३०–क्रोधके कारण मूर्च्छा आने पर इसे देना चाहिये।

नक्सवोमिका ६ या ३०—बहुत कब्जियत, पाकाशयमें गोलमाल, उत्तेजक पदार्थ खाने पीने के कारण मूर्च्छा आना ।

बेलेडोना ६ या ३०—एकोनाइट के बाद, खासकर शिरमें रक्तसञ्चय होने पर इसे देना चाहिये ।

पल्सेटिला ६ या ३०—नम्र प्रकृति की क्रन्दनशील स्त्रियों को यह रोग होने पर इसे देना चाहिये ।

इग्नेशिया ६ या ३०—सिरमें जोरों का दर्द, ऐसा मालूम होना, मानो वहाँ काँटी ठोंक दी गयी है, विषाद वायु या सदा उदास और दुःखित रहना ।

डिजिटेलिस ६—हृदयकी कमजोरी के कारण मूर्च्छा आनेपर इसे देना चाहिये ।

एसिड फस ६ या ३०—स्नायविक दुर्बलता के कारण मूर्च्छा आने पर इससे भी काफी लाभ होता है ।

गर्भावस्था मे दाँत में दर्द ।

(Toothache during Pregnancy)

गर्भावस्था मे किसी भी समय यह शिकायत पैदा हो सकती है । अनेक बार गर्भावस्था के आरम्भ से लेकर अन्त तक यह मौजूद रहती है ।

चिकित्सा।

केमोमिला १२ या ३०—असह्य वेदना, किसी खुडे दाँत से दर्द का शुरू होना और एक ओर के समस्त दाँतों में दर्द का फैल जाना दर्द के कारण चौंह या गालका फूल उठना।

कोफ़िया ३ या ६—वहुत दर्दके कारण अस्थिरता, रह रह कर दर्दका आक्रमण।

पल्सेटिला ६ या ३०—एक ओरको समूची चौंहका आक्रान्त होना, संचरण शील वेदना, शामके समय दर्द का बढ़ना।

वेलेडोना ६ या ३०—प्रदाह और दपदपी होने पर इसे देना चाहिये।

प्लन्टेगो मेजर १X—दाँतके दर्दमें, खासकर क्षय प्राप्त दाँतके दर्द में इससे विशेष लाभ होता है।

नक्सवोमिका ३०—खुडे दाँतके दर्दकी यह भी एक अच्छी दवा है। इससे या केमोमिला से लाभ न होने पर स्टेफीसेग्रिया ६ या ३० देना चाहिये।

इनके अतिरिक्त एकोनाइट, कल्केरिया कार्व और पल्सि आदि दवाएँ भी आजमायी जा सकती हैं।

गरम कपड़ों के हो चल सकता है। उन्हें केवल शौकके लिये गरम कपड़े न लाद रखने चाहियें।

हमारे देश का जल वायु ऐसा है कि कमसे कम कपड़ों में गुजारा हो सकता है, न यहाँ विलायत की तरह जाड़ा पड़ता है, न अफ्रिकाकी तरह गरमी। ऐसी अवस्था में हमारे कपड़े भी ऐसे ही होने चाहियें जो हमारी जरूरत को तो रफा कर सकें पर हमारे लिये भार रूप न हो पड़े। विलायतवालों की तरह गंजी, कमीज, वास्कट और कोट आदि कपड़ों की कई तहसे शरीर को ढक रखना अनावश्यक और अनुचित है। इससे शरीर की सहनशक्ति कम हो जाती है और जरा में ही सर्दी गरमी लग जाया करती है। तंग कपड़ों से रक्तसंचा-लन को क्रिया में वाधा पड़ती है, इस लिये ऐसे कपड़ो से भी दूर रहना चाहिये। कपड़े थोड़े होने चाहियें, ढीले होने चाहियें, जरूरत से ज्यादा गरम न होने चाहियें और हर वक्त साफ रहने चाहियें। साधारण सूती कपड़े पहने जॉयें और वे प्रतिदिन हाथ से धोकर सुखा लिये जायें तो वहुत ही अच्छा है।

रहने का स्थान—रहनेका स्थान वहुत साफ सुथरा होना चाहिये। जिस स्थान में हवा, उजाला और धूपका आवागमन होता है, वह स्थान रहने के लिये अच्छा होता है। गन्दे और सर्दी वाले स्थान मे रहने से वाई,खाँसी, सर्दी और मलेरिया हो जाता है। जिस स्थान में रोशनी या धूप नहीं जाती,

नसों का फूलना।

(Varicose Veins)

गर्भावस्था में अनेक बार पैर आदि अंगोंकी नसें फूल जाती हैं और वहाँ सूजन सी चढ़ आती है। फूली हुई नसें गाँठ-गाँठ जैसी और नीले रंग की हो जाती है। गर्भ के कारण रक्त सञ्चालन की क्रिया में बाधा पड़ने से ही यह रोग होता है। प्रसव के बाद यह अपने आपही ठीक हो जाता है। रोगके समय ठंढे पानी से खूब नहाने और पट्टी या मोज़ों का व्यवहार करने से लाभ होता है।

चिकित्सा।

पल्सेटिला ६ या ३०—नसों के साथ समूचे अंगों का फूल जाना, आक्रान्त स्थान में दर्द, उस स्थान की नसों का रंग नीला हो जाना।

आर्निका ६ या ३०—पल्सेटिला जैसे लक्षणों में इससे भी लाभ होता है।

लेकेसिस ६ या ३०—पल्सेटिला से दर्द और सूजन कम हो जाने पर भी यदि नसों का नीलापन दूर न हो तो इसे देना चाहिये।

नक्सवोमिका ३०—कब्ज़ियत, बवासीर, चिड़चिड़ा स्वभाव इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

में एकोनाइट, केमोमिला, पल्सेटिला या फोस्फरस से विशेष लाभ होता है।

बेलेडोना ६ या ३०—एकायक दर्द का शुरू होना और एकायक गायब हो जाना, हिलने डोलने से दर्द का बढ़ना।

अर्निका ३ या ६—मोच आने या छिल जाने जैसा दर्द हो तो इसे देना चाहिये।

ब्रायोनिया ६ या ३०—सुई चुभोने जैसा दर्द, खास कर बायीं ओर हिलने डोलने से दर्द का बढ़ना, स्थिर रहने पर आराम इत्यादि।

नक्सवोमिका ६ या ३०—कब्जियत, आलसी की तरह सदा घर में बैठे रहना, चाय,काफी आदि, उत्तेजक पदार्थों का व्यवहार करना इत्यादि लक्षणवाले रोगियों को इससे विशेष लाभ होता है।

पल्सेटिला ६ या ३०—नम्र या क्रन्दशील प्रकृति की स्त्रियों को यह रोग होना, दर्द के कारण स्थिर होकर बैठ न सकना, आराम के लिये इधर उधर घूमना इत्यादि।

नक्सवोमिका ३०—पैरोंमें अकड़न, शिरमें दर्द, कब्ज़ियत, बदहज़मी और मिचली इत्यादि।

अनजान में पेशाब।

(Incontinence of Urine)

मूत्रयन्त्रों पर गर्भका दबाव पड़ने से स्त्रियों को पेशाब की शिकायत पैदा होती है। कभी कभी उनकी पेशाब रोकने की शक्ति कम हो जाती है, कभी बूँद-बूँद पेशाब होता है और कभी अनजान में पेशाब हो जाता है।

चिकित्सा।

पल्सेटिला ६ या ३०—बारंबार पेशाब का वेग, घूमने या बैठने पर अनजान मे पेशाब, पेटमें तनाहट इत्यादि।

बेलेडोना ६ या ३०—बहुत कष्टके साथ थोड़ा पेशाब होना, पतली धारमें पेशाब होना, पेशाब रोकने की शक्ति बिलकुल न होना, सदा अनजानमें बूँद-बूँद पेशाब होते रहना।

साइना २००—पेटमें कृमि होनेके कारण यह शिकायत हो तो इसे देना चाहिये।

सल्फर ३०—दिनमें बारंबार पेशाब करना, रातके समय अनजान में पेशाब।

पल्सेटिला ६ या ३०—उदास रहना और रोना, पाकाशयमें गड़बड़ी, अनिद्रा, बात करने की इच्छा न होना, शिरदर्द और कलेजे में जलन ।

सल्फर ३०—भूत व्याधि, धार्मिक विषयों में बहुत उत्कण्ठा, अपनी मुक्तिके लिये चिन्तित रहना, बातचीत करते समय खास-खास नाम या शब्द भूल जाना, क्रोधी स्वभाव इत्यादि ।

आवश्यक सूचना—इस तरह की शिकायत पैदा होने पर लोग ओझाओं से झाड़फूक करवाते हैं या गण्डा ताबीज बनवाते हैं । इन कामों में समय और शक्ति व्यय न कर, तुरन्त किसी चिकित्सक की सलाह लेनी चाहिये ।

गर्भावस्था में अनिद्रा ।

(Sleeplessness during Pregnancy)

गर्भमें बच्चे के हिलने डोलने और स्नायविक उत्तेजना के कारण गर्भावस्था में अनेक बार स्त्रियों को यह रोग हो जाता है ।

चिकित्सा ।

बेलेडोना ६—निद्रालुता होने पर भी नींदका न आना, नींद लगते ही चौंक पड़ना इत्यादि ।

चिकित्सा ।

आर्निका ३ या ६—ऐसा मालूम होना मानो पेटमें बच्चा आड़ा पड़ा हुआ है. पेटका टटाना, जी मिचलाना और कै होना ।

ओपियम ६—बच्चा बड़े वेग से हिलता डोलता हो तो इसे देना चाहिये ।

लाइकोपोडियम ६ या ३०—यह भी एक अच्छी दवा है।

कोनायस ६—भ्रूणके हिलने डोलने से नींद न आती हो तो इसे देना चाहिये ।

सोरिनम ६—गर्भ में बच्चे का हिलना डोलना, साथ ही पेटका फूलना ।

सीपिया ६ या ३०—गर्भ में बच्चे का हिलना डोलना-इसके कारण पेटका टटाना, स्पर्शानुभवता ।

थूजा ३०—भ्रूण-सञ्चालन के कारण नींदका न आना मूत्रस्थली में दर्द, बारंबार पेशाब का वेग इत्यादि ।

आर्निका ६—इस दवासे भी अनेक बार बहुत लाभ होता है ।

गर्भावस्था के अन्यान्य उपसर्ग।

खाँसी—गर्भावस्था में स्त्रियों को अनेक बार सूखी खाँसी आती है इसका इलाज तुरन्त करना चाहिये, क्योंकि अनेक बार इसके कारण गर्भ पात तक हो जाता है। खाँसी के साथ ज्वरभाव, गलेमें सुरसुराहट और दर्द होने पर एकोनाइट ६। गलेमें दर्द, सिरमें चक्कर, सूखी और कष्टकर खाँसी, शामके समय और रातमें खाँसी का बढ़ना—बेलाडोना ६। नाक सुड़सुड़ाकर अनवरत खाँसी आने पर रियुमेक्स ६। सूखी खाँसी, छातीमें दर्द और भार मालूम होना, शूक जैसा सफेद कफ निकलना—फोस्फरस ६। अनवरत सूखी खाँसी, लेटने पर खाँसीका बढ़ना, उठ बैठने पर आराम मालूम होना आदि लक्षणोंमें हायोसायमस ६। इनके अतिरिक्त इपीकाक, पल्सेटिला, सीपिया, स्टिक्टा और कस्टीकम आदि दवाओं से भी काफी लाभ होता है। "खाँसी" देखिये।

अरुचि—गर्भावस्था में अनेक बार साधारण भोजन पर अरुचि हो जाती है और खड़ी मिट्टी, खपड़े, खटाई तथा चटपटी चीजें खाने की इच्छा होती है। खड़ी मिट्टी खानेकी इच्छा हो तो कल्केरिया कार्ब ६ या ३०। जली हुई मिट्टी, या खपड़े या सोंधी चीजें खाने को इच्छा हो तो कर्बोवेज ६ या ३०। कब्जियत, साथ ही तीती चीजें खाने को प्रबल इच्छा हो तो नक्सवोमिका ३०।

स्नान करते समय बदनको तौलिये या अंगोछे से खूब रगड़ना चाहिये। नहाने के वक्त पहले शिरपर तथा बादको दूसरे अंगों पर पानी डालना चाहिये। नहानेके पहले जिन्हें कसरत करनेकी आदत हो उन्हें अच्छी तरह ठंढानेके बाद नहाना चाहिये। परिश्रम करने से पसीना आ गया हो तो पसीना सूखने के बाद ही नहाना चाहिये। भोजन के बाद नहाना ठीक नहीं। यदि किसी कारण से नहाना ही पड़े तो एक घण्टे ठहर कर नहाना चाहिये। समुद्र के पानी में या और पानी में, थोड़ा सा नमक मिलाकर नहाना लाभदायक है। [illegible] मनुष्यों को वृद्ध और कमजोर मनुष्योंको कुछ [illegible]) नहाना चाहिये।

कसरत—कसरत करते रहने से शरीर सबल, फुर्तीला और [illegible] होता है। भूख लगती है और शरीर के समस्त [illegible] मनुष्य दीर्घ-[illegible] आलस्य मानव-शरीरका शत्रु है। इससे [illegible] आता है। शरीर के [illegible] नाना प्रकार की व्याधियों के कारण [illegible] कारण उनका आलस्य ही [illegible]

[illegible]

मुँहमें जख्म—पाकाशय के गोलमाल या आहारादि की अनियमितता के कारण, मुँह में जख्म हो जाते हैं। साथही मुँहमें जलन, अरुचि, लारका, वहना, निगलने में तकलीफ इत्यादि लक्षण प्रकट होते है। बोरेक्स ६ इसकी अच्छी दवा है, परन्तु गर्भावस्था में इसका अधिक सेवन न करना चाहिये। जख्म के साथ मुँहमें वदबू और बहुत लार वहे तो मर्क्युरियस सल या मर्क्युरियस वाइवस ६। मुँह और जीभ में जख्म, निगलने मे तकलीफ इत्यादि लक्षणों में नाइट्रिक एसिड ६। पेट गरम, पाचन क्रिया में गड़बड़ी, मुँह में जख्म तथा कब्जियत होने पर नक्सवोमिका ३०। सुहागा भून कर उसका चूर्ण शहद में मिला कर लगाने से लाभ होता है।

कलेजे में धड़कन—डिजिटेलिस ३ या ६ इस रोग की प्रधान दवा है। लक्षणानुसार नक्सवोमिका, मस्कस, एकोनाइट, आर्सेनिक, वेलेडोना पल्सेटिला और सल्फर आदि दवाएं भी व्यवहार की जाती है।

श्वास कष्ट—खाँसी, अधिक घूमना, अजीर्ण, स्नायविक दुर्बलता आदि कारणों से गर्भावस्था में श्वास कष्ट होता है। एकोनाइट आर्सेनिक, इपीकाक, मस्कस, फोस्फरस, नक्सवोमिका और ब्रायोनिया आदि दवाओं से इस रोग में लाभ होता है।

चोट में जख्म हो जाने या सड़न पैदा हो जाने पर हाइड्रेस्टिस ३ का सेवन और हाइड्रेस्टिस लोशन का बाह्य प्रयोग करना चाहिये। स्तन बढ़ जाने के कारण शूल जैसा दर्द हो तो कोनायम ३। मवाद के कारण तकलीफ होने पर बेलेडोना ३ X या ब्रायोनिया ३।

मानसिक कष्ट—गर्भिणी हमेशा विषण्ण रहती हो तो लिलियम टिग्रिनम ६। शोक या दुख से अधीर हो उठने पर इग्नेशिया ६। सदा डर लगा करे तो एकोनाइट ३। क्रोधी स्वभाव होने पर केमोमिला १२। जरासी बात में रो पड़े तो पलसेटिला ६ या ३०।

सूचना—इनके अतिरिक्त गर्भावस्था में बुखार मृगी, सन्यास, कमला या पाण्डु, प्रदर इत्यादि और भी अनेक उप-सर्ग प्रकट होते हैं। इनकी दवाएं जहां इन रोगों का वर्णन है, वहां देखनी चाहिये। गर्भपात, रक्तस्राव, मूत्र प्रवाह रुकना आदि कई कठिन उपसर्गों का इलाज आगे दिया जाता है।

गर्भस्राव या गर्भपात।

(Abortion)

तीन महीने तक का गर्भ गिरना गर्भस्राव और तीन महीने से अधिक समय का गर्भ गिरना, गर्भपात कहलाता

होती है। चलने फिरने या काम करने की इच्छा न होना, विपन्नता, रक्तस्राव का उत्तरोत्तर बढ़ते जाना, कमर और पेट में कतरने जैसा दर्द, उत्तरोत्तर दर्द का बढ़ते जाना इत्यादि लक्षण प्रकट होकर अन्त मे दर्द बहुत बढ़ जाता है और पानी की थैली फटकर भ्रूण बाहर निकल पड़ता है।

तीन महीने के आस पास गर्भस्राव होने पर अधिक भय नहीं रहता परन्तु गर्भ पुष्ट हो जाने के बाद गर्भपात होने पर अनेक बार गर्भिणी के प्राण पर आ बनती है। गर्भपात के समय भी रोगिनी की उसी तरह परिचर्या करनी चाहिये, जिस प्रकार एक प्रसूती की सेवा सुश्रुपा की जाती है।

चिकित्सा ।

एकोनाइट ३X या ६—डर जाने के कारण गर्भस्राव, ज्वरभाव, अस्थिरता,, उद्वेग, मृत्युभय, साथ ही रक्तस्राव इत्यादि ।

आर्निका ६ या ३०–गिरने, चोट लगने, धक्का लगने भारी बोझ उठाने या अधिक परिश्रम करने के कारण यह शिकायत हो तो इसे तुरन्त देना चाहिये।

कैमोमिला १२ या ३०–रह रहकर प्रसव वेदना जैसा दर्द, दर्द के बाद दरबार काले रंग का चमकीला खून अथवा खून और कफ मिला स्राव निकलना, तलपेट में जोरों का दर्द

दर्द, नीचे की ओर दवाव सा मालूम होना, मिचली या के, ऐसा मालूम होना मानो रोगिनी वेहोश हो जायगी, जाड़ा और वुखार इत्यादि ।

वेलेडोना ६ या ३०—तलपेट और जाँघो मे असह्य वेदना, ऐसा मालूम होना मानो पेटकी सव चीज़ें वाहर निकल पड़ेंगी, कमर में टूट जाने जैसा दर्द, फीका या फूला हुआ चेहरा, वहुत रक्तस्राव, खून का रंग न वहुत चमकीला न काला ।

हायोसायमस ६ या ३०—समूचे शरीर मे आक्षेप या खींचन के साथ गर्भस्राव, वेहोश हो जाना, हलके लाल रंग का खून निकलना, रात के समय रोग लक्षणो का वढ़ जाना ।

प्लेटिना ६ या ३०—गाढ़ा, काला और गाँठ गाँठ जैसा खून निकलना, कमर मे दर्द, भीतर से योनिद्वार की ओर दवाव पड़ना इत्यादि लक्षणो में और इपीकाक के वाद इससे विशेष लाभ होता है ।

चायना ६ या ३०—दुर्वल और कमज़ोर स्त्रियों को गर्भस्राव होना, रह रहकर रक्तस्राव, प्रसव वेदना जैसा दर्द अथवा जरायु मे आक्षेप जैसा दर्द, सुस्ती तन्द्रालुता, वेहोशी, शरीर का ठंढा पड़ जाना इत्यादि लक्षणों में इसे

सिनापस ३ या ६—पर फिसलने या कमर मुड़क जाने के कारण गर्भस्राव का उपक्रम, नाक खुजलाना, निद्राहीनता रातमें अस्थिरता इत्यादि।

केन्थरिस ३ या ६—गर्भस्राव के बाद फूल का न निकलना, बारंबार पेशाब का वेग, मूत्रनाली में जलन।

सीपिया ६ या ३०—गोरे रंग की दुबली पतली स्त्रियों को यह रोग होना, श्वेत प्रदर के साथ योनि में दर्द और खुजली, नियमित समय के पहले ऋतुस्राव, साधारण परिश्रम में ही पसीना आ जाना इत्यादि।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—मोटे और थुलथुले शरीर की स्त्रियों को यह शिकायत होना, अधिक रक्तस्राव, श्वेत प्रदर, स्तन में दर्द, कमर में दर्द, शिर में चक्कर इत्यादि।

रसटक्स ६ या ३०—भारी चीज उठाने के कारण गर्भस्राव होने का भय मालूम हो तो इसे ही देना चाहिये।

पहले महीने के गर्भस्राव में एपिस और वाइबर्नम, दूसरे महीने के गर्भस्राव में एपिस और केलीकार्ब, तीसरे या चौथे महीने के गर्भस्राव में क्रोकस, सेबाइना, सिकेली और थूजा, तथा पाँचवें से लेकर सातवें मास तक के गर्भपात में सीपिया से विशेष लाभ होता है। लाल रंग के रक्तस्राव में आर्सेनिक
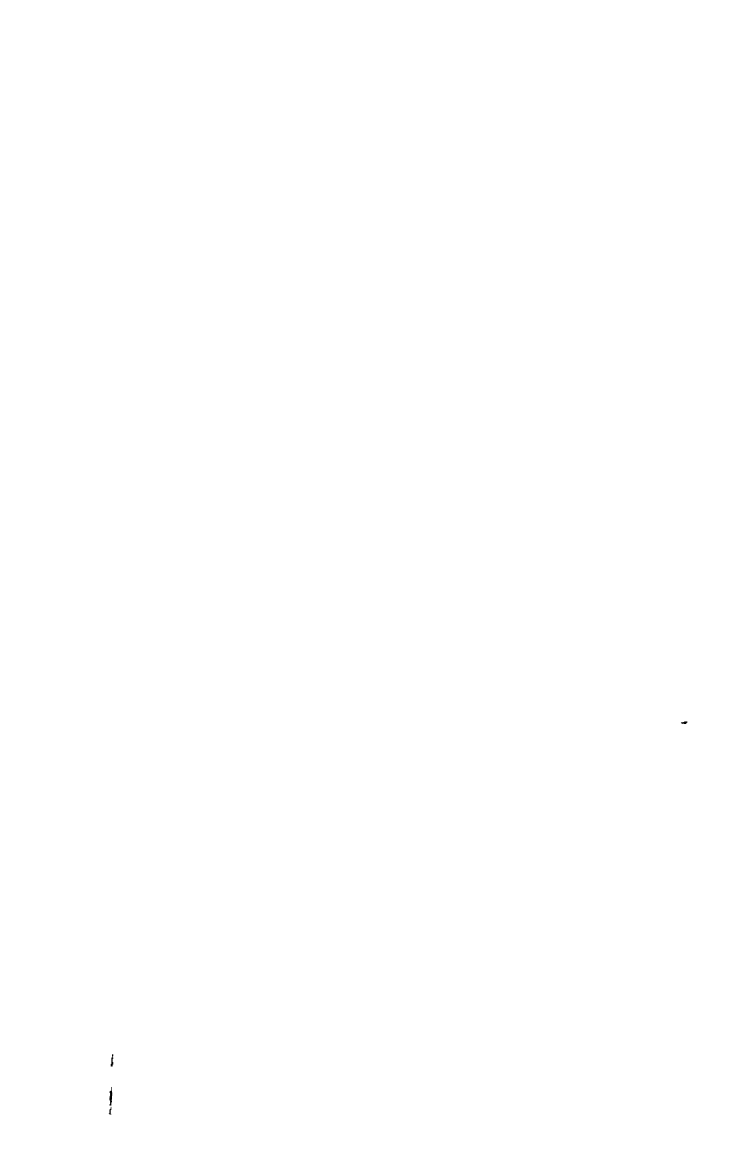
चाहिये। दंड, वैठक, मुद्गर की जोड़ी हिलाना, कुस्ती लड़ना आदि ऐसी कसरतें स्वास्थ्य के लिये वहुत अच्छी हैं। वेनेट और मेकफेडन आदि पाश्चात्य व्यायाम शास्त्रियो की कसरतें भी की जा सकती है। खुली हवामें अपनी शक्तिके अनुसार अथवा जब तक कपाल पर पसीना न आजाय तब तक कसरत करना चाहिये। जिन्हें ऐसी कसरत करने में कोई असुविधा हो, उन्हें सुबह शाम खुली हवामें घूमने का ही अभ्यास करना चाहिये। घूमने की कसरत भी वहुत अच्छी कसरत है। इसमे भी शरीर के समस्त अंगों को कसरत हो जाती है। घूमते समय सीना निकाल कर जवाँ-मर्दकी तरह तेजी से चलना चाहिये। वृद्धो के लिये भी घूमने की ही कसरत सबसे अच्छी है। जो रोगी हों या बिलकुल ही न चल सकते हों वे गाड़ी में वैठकर घूम सकते है। कई योगासन भी व्यायाम का काम देते हैं। कसरत चाहे जिस तरह की हो अपनी शक्ति देखकर ही करनी चाहिये। जिस तरह अधिक परिश्रम से हानि होती है, उसी तरह अधिक व्यायाम से भी हानि होती है।

मल मूत्र—मल मूत्र तथा छींक, प्यास, भूख आदि शरीर के अन्यान्य वेगों पर उचित ध्यान देना चाहिये। सुबह निद्रा से उठते ही मल त्याग से निवृत्त हो जाना चाहिये। सुबह मल त्यागकी आदत न डालने से असमय में इसके लिये दौड़ना पड़ता है या वेग को रोकना पड़ता है, जिससे या तो कामना

आवश्यक सूचना—रक्तस्राव आरम्भ होते ही रोगिनी को चित सुलाकर योनिद्वार और तलपेट पर ठण्डे पानी का पट्टी या बरफ चढ़ाने से रक्तस्राव और गर्भस्राव होना रुक जाता है। दवाएँ अवस्थानुसार घण्टे में तीन बार देनी चाहिये।

गर्भावस्था में रक्तस्राव।

(Bleeding during Pregnancy)

गर्भावस्था में अनेक बार नाक, फेफड़ा, पाकाशय और जरायु आदि स्थानों से रक्तस्राव होता है। इनमें जरायु से रक्तस्राव होना बहुत ही सांघातिक होता है और अनेक बार इसके कारण गर्भस्राव तक हो जाता है। जिन कारणों से गर्भपात होता है, उन्हीं कारणों से जरायु से रक्तस्राव भी होता है। यदि शीघ्र रक्तस्राव न बन्द हो जाय और रक्त का परिमाण तथा दर्द उत्तरोत्तर बढ़ता जाय, तो गर्भस्राव की ही दवाएँ देनी चाहिये। रक्तस्रावमें साधारणतः निम्नलिखित दवाएँ व्यवहार की जाती हैं:—

चिकित्सा।

आर्निका ६ या ३०—गिरने, चोट लगने, भारी चीज उठाने या ऊँचे नीचे पैर पड़ने के कारण रक्तस्राव आरम्भ होने पर इसे देना चाहिये।

इपीकाक ६ या ३०—नाभी के चारों ओर काटने जैसा दर्द और अनवरत रक्तस्राव, बहुत मिचली, प्रसव की तरह दबाव, जाड़ा मालूम होना शरीर ठंढा ऐसा मालूम होना मानो शिर में गरमी चढ़ रही है, बहुत कमजोरी, पड़े रहने की इच्छा इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

केमोमिला १२ या ३०—इपीकाक से बहुत कम या बिलकुल लाभ न होने पर अथवा प्रसव वेदना जैसी वेदना होने पर इसे देना चाहिये।

ब्रायोनिया ६ या ३०—कमर में जोरों का दर्द, साथही गहरे लाल रंगका बहुत सा खून निकलना, शिर में दर्द, ऐसा मालूम होना मानो माथा फट जायगा कब्जियत, नाक से रक्त स्राव होना इत्यादि।

चायना ६ या ३०—कमजोरी, शिर भारी, सुस्ती तन्द्रालुता, बेहोशी, चेहरा फीका, हाथ और चेहरे का नीला पड़ जाना, प्रसव वेदना जैसा दर्द हर बार दर्द के साथ रक्तस्रावका बढ़ना इत्यादि लक्षणों में और रक्तस्राव के बाद की कमजोरी दूर करने के लिये इसे देना चाहिये।

हायोसायमस ६ या ३—प्रसव, वेदना जैसा दर्द, बेचेनी, बेहोशी, आँखों के सामने अँधेरा, प्रलाप इत्यादि।

हैमेमेलिस ६ या ३०—खून का रंग न तो गहरा न फीका-ऐसा मालूम होना मानो योनिद्वार से सब कुछ बाहर निकल पड़ेगा, कमर में असह्य वेदना, ऐसा मालूम होना मानो कमर टूट जायेगी, फीका या फूला हुआ चेहरा, शिर में गरमी, कलेजे में धड़कन, प्यास इत्यादि।

प्लेटिना ६ या ३०—खूनका रंग गहरा लाल और गाढ़ा होने पर भी उसका गाँठ गाँठ सा न होना, प्रसव वेदना जैसा दर्द इत्यादि। किसी तरहकी मानसिक चिन्ता या परिश्रम के कारण रक्तस्राव होने पर इससे विशेष लाभ होता है।

फेरम ६ या ३०—खून कभी गाढ़ा और गाँठ गाँठ जैसा और कभी पतला, प्रसव वेदना जैसा दर्द, चेहरा लाल इत्यादि। फेरम के बाद चायना देने से विशेष लाभ होता है।

सेबाइना ६—जरायु से लाल रंग का बहुत रक्तस्राव होना, हिलने डोलने से रक्तस्रावका बढ़ना, रह रह कर रक्तस्राव होना, गर्भस्रावकी आशंका।

इनके अतिरिक्त क्रोकस, कल्केरिया कार्ब, ... तथा गर्भस्रावकी दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—रोगिनी को पतली और हल्की चीज़ें खाने को देना चाहिये। ... और योनिद्वार में ...

वरफ चढ़ाने से लाभ होता है। रोगिनी को स्थिर और शान्त भाव से सुला रखना चाहिये। जाँघ और हाथों के ऊपरी भाग को रूमाल से कसकर बाँध देने पर भी लाभ होता है।

झूठी प्रसव-वेदना

(False Labor Pain)

प्रसव के कुछ दिन पहले स्त्रियों को प्रसव वेदना जैसी झूठी वेदना होती है और इसके कारण उन्हें बहुत कष्ट होता है। यह दर्द वास्तविक प्रसव वेदना की तरह अनवरत बना नहीं रहता। प्रकृत प्रसव वेदना आरम्भ होने के बाद उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है, झूठी प्रसव वेदना नाभी के नीचे आरम्भ होकर वहीं लोप हो जाती है। प्रकृत प्रसव वेदना की तरह इस वेदना के साथ किसी तरह का स्राव भी मौजूद नहीं रहता।

चिकित्सा।

बेलेडोना ६ या ३०—एकाएक दर्द का आरम्भ होना और एकाएक गायब हो जाना, आवाज़ और रोशनी बरदाश्त न होना, पीठ और पेट में दर्द ऐसा मालूम होना मानो पेट से कुछ बाहर निकल पड़ेगा।

कोलोफाइलम ३ या ६—यह एक बढ़िया दवा है। रोज रात के समय पेट के ऊपरी हिस्से से लेकर हाथ पैर तक दर्द फैल जाने पर इसे देना चाहिये।

केमोमिला १२ या ३०—पेट में शूल जैसा असह्य दर्द, साथ ही अधिक पेशाब होना, बेचैनी, दर्द के कारण चिल्लाना इत्यादि।

कोफिया ६ या ३०—पेट में असह्य दर्द, दर्द के कारण पागल सा हो जाना और नींद न आना।

पल्सेटिला ६ या ३०—दर्द के कारण अधिक समय तक लेट या बैठ न सकना, चलने फिरने से और खुली हवा में आराम मालूम होना।

नक्सवोमिका ६ या ३०—सदा कब्जियत, चिड़चिड़ा स्वभाव, हर बार दर्द के साथ मल मूत्र का वेग मालूम होना।

सिमिसिफिउगा ६ या ३०—पेट की पेशियों में रह रह कर दर्द, बायें स्तन में दर्द, मानसिक विकार इत्यादि।

जेल्सीमियम ३०—प्रसव वेदना जैसी वेदना, दर्द का ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर जाना, शारीरिक और मानसिक दुर्बलता।

सीपिया ६ या ३०—पेट और पीठ में बारंबार प्रसव जैसा दर्द, पैर से पैर को दबा रखने पर आराम मालूम होना, पेट खाली मालूम होना इत्यादि।

होना और गायब हो जाना, हर बार दर्द के साथ जरायु का मुँह थोड़ा थोड़ा खुलते जाना और उससे पानी निकलने लगना आदि प्रकृत प्रसव वेदना के लक्षण है। यह दर्द पहले अधिक समय के अन्तर से होता है, बाद को जल्दी जल्दी और अधिक जोर से होने लगता है। दर्द अगर जल्दी जल्दी होने लगे तो समझना चाहिये, कि प्रसव काल समीप आ गया है।

प्रसव वेदना।
(Labor Pain)

प्रसव वेदना आरम्भ होने के बाद अधिक से अधिक छः घण्टे के अन्दर बच्चे का जन्म हो जाना चाहिये। यही स्वाभाविक नियम है। इसमें प्रसूती को विशेष कष्ट भी न होना चाहिये, परन्तु अनियमित जीवनचर्या, कसकर कपड़े पहनना, आलस्यमय जीवन व्यतीत करना आदि अनेक कारणों से प्रसव के समय स्त्रियों के प्राण पर आ बनती है। ग्रामीण और जंगली जाति की रमणियाँ, जो सभ्यता के दलदल में नहीं फसीं, उन्हें प्रसव के समय शायद ही किसी दुर्घटना का सामना करना पड़ता है। अस्तु।

प्रसव वेदना आरम्भ होने के बाद यदि बच्चे का जन्म होने में विलम्ब हो और प्रसूती को कष्ट हो रहा हो, तो निम्नलिखित दवाओं का प्रयोग करना चाहिये।

मालूम होना मानो प्रसव न होगा, पीठ और जाँघों में कसकर पकड़ रखने जैसा दर्द।

नक्स मस्केटा ६ या ३०—अनियमित, धीमा और अकड़न जैसा दर्द, प्रसूती को सरदी लग जाना, सूखा और ठंढा चमड़ा।

ओपियम ६ या ३०—दर्द का एकाएक रुक जाना, शिर मे रक्त सञ्चय, चेहरा लाल, तन्द्रालुता इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—बहुत धीमा और बहुत समय का अन्तर दे देकर दर्द का होना, उत्तरोत्तर दर्द के कारण हृदय का कॉपना और श्वास रोध का भाव, खुली हवा में जाने की इच्छा इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। यह शीघ्र प्रसव कराने की अच्छी दवा है। इसको दो तीन खुराकें देने से प्रसव वेदना का जोर बढ़कर शीघ्र प्रसव हो जाता है। २०० क्रमकी दवा देने से यदि गर्भ में बच्चा टेढ़ा या अस्वाभाविक अवस्था में होता है तो वह सीधा हो जाता है।

सिकेली ६ या ३०—पल्सेटिला जैसे लक्षण, लेकिन पल्सेटिला देने पर काफी लाभ न हो तो इसे देना चाहिये।

जेल्सीमियम २ या ६—जरायु का मुँह बहुत कड़ा होने या छाती पीठ और ऊपर की ओर दर्द फैलने पर इसे देना चाहिये।

इग्नेशिया ६ या ३०—शोक, दुःख या चिन्ता [illegible] पीड़ित प्रसूता को कष्टकर प्रसव होना, [illegible] अकड़न, कतरने जैसा दर्द, पेट का भारी मालूम होना इत्यादि।

आनुषंगिक व्यवस्था—प्रसव वेदना आरम्भ होने पर [illegible] पर तेल और पानी की मालिश करना चाहिए और [illegible] तथा उसके आस पास का स्थान नारियल का तेल लगाकर मुलायम कर देना चाहिये। दर्द आरम्भ होने से लेकर प्रसव के समय तक प्रसूता को दूध या पानी आदि जो कुछ खाने को दिया जाय, वह गरम होना चाहिये। ठंडी चीजें खाने पीने से प्रसव वेदना बन्द हो जा सकती है।

आक्षेप, अकड़न और मूर्छा

(Spasmodic Pains, Cramps, Convulsions and Fainting)

प्रसव के, समय अनेक बार स्त्रियों को खींचन या अकड़न की शिकायत पैदा होती है, और कभी-कभी उन्हें मूर्छा भी आ जाती है।

चिकित्सा।

केमोमिला १२ या ३०—कतरने जैसा दर्द और खींचन, एक गाल लाल, चिड़चिड़ा स्वभाव, अस्थिरता और मानसिक उत्तेजना।

बेलेडोना ६ या ३०—पेट में दर्द मानो सब कुछ बाहर निकल पड़ेगा, शरीर में खींचन, चेहरा लाल, बहुत पसीना, अर्धअचेतनावस्था, मुँह से फेन निकलना, अनजान में मलमूत्र त्याग, पास के आदमियों को मारने या काटने दौड़ना।

हायोसायमस ६ या ३०—बेहोशी के साथ बहुत खींचन, भागने की चेष्टा, श्वासकष्ट, छाती में तकलीफ मालूम होना, विकार लक्षण।

स्ट्रेमोनियम ६ या ३०—हाथ पैर में खींचन, प्रलाप तोतला कर बातें कहना, दीर्घ निश्वास, पागलों की तरह हँसना और गाना।

इग्नेशिया ६ या ३०—बहुत उदासी, [illegible] और अकड़न ऐसा मालूम होना मानो साँस रुक जायगा इत्यादि।

ककुलस ६ या ३०—अंगों में खींचन या स्पन्दन तल-पेट में अकड़न, चेहरा लाल और गरम।

ओपियम ६—भय के कारण रोग, समूचे शरीर में आक्षेपिक स्पन्दन, बेहोशी, चेहरा नीला [illegible] श्वास प्रश्वास में घरघराहट।

क्युप्रममेट और साइक्यूटा ६—यह दोनों भी इस रोग की अच्छी दवाएँ हैं।

मूर्च्छा या वेहोशी—प्रसूती मूर्च्छित हो जाने पर लक्षणानुसार एकोनाइट, अर्निका, चायना, आर्सेनिक, कैम्फर स्ट्रेमोनियम और इग्नेशिया आदि दवाएँ व्यवहार की जाती है। "मूर्च्छा" देखिये।

प्रसव।

(Labor)

भिन्न-भिन्न स्थानों में भिन्न भिन्न प्रकार से प्रसव कराने की प्रथा है। अनेक स्थानो में प्रसूती को उकड़ू बैठाल कर प्रसव कराते है। बंगाल में टेहुने और हाथो के बल उकड़ू बैठाने की प्रथा है। विलायत में बायीं करवट सुलाकर, दोनों पैरो के बीच में तकिया लगाकर प्रसव कराया जाता है। चित लेटा कर प्रसव कराने से प्रसूती को कष्ट नहीं होता, परन्तु प्रसव कार्य में अधिक समय लग जाता है।

स्वाभाविक प्रसव में बच्चे का शिर पहले निकलता है। यदि हाथ पैर, चूतड़ आदि पहिले निकलते हैं, तो प्रसूती को बड़ा कष्ट होता है और अनेक बार दाई डाक्टरों की सहायता लेने पर भी बच्चे या प्रसूती का प्राण संकट में पड़ जाता है।

यदि बच्चे का शिर निकलने पर उसका चेहरा नोला पड़ जाय, तो उसकी बगल में उँगली डालकर जरा बाहर खींच लेना चाहिए, ताकि उसका कन्धा बाहर निकल आये। शिर पकड़ कर भूल में भी न खींचना चाहिये। इससे बच्चे की गर्दन टूट जा सकती है। कन्धे निकल आने पर बच्चे का शेष शरीर अपने आप बाहर निकल आता है।

प्रसव हो जाने पर खून में सने हुए कपड़े आदि बाहर कर देना चाहिये और बच्चे के मुँह में लार या श्लेष्मा आदि भरा हो, तो उँगली डाल कर उसे साफ कर देना चाहिये।

स्वाभाविक प्रसव में प्रसव के बाद करीब आधे घण्टे में फूल अपने आप गिर जाता है। उसे निकालने के लिये खींचा तानी न करनी चाहिये। अगर आधे घण्टे में फूल न गिर जाय तो पन्द्रह पन्द्रह मिनट के अन्तर से पल्सेटिला ३० या सिकेली ३० का सेवन कराना चाहिये।

प्रसूति-परिचर्या।

(Treatment of the Delivery)

प्रसव के बाद प्रसूती को शान्त भाव से सुला रखना चाहिये और उसे किसी तरह भी उत्तेजित न होने देना चाहिये। आवाज, तेज रोशनी, जोर से बात-चीत करना,

गाना बजाना आदि सुनने सुनाने से उसकी मानसिक शान्ति में बाधा पड़ सकती है।

यदि प्रसूती को प्रसव के समय बहुत कष्ट हुआ हो और उसके स्तनों में सूजन तथा दर्द हो तो आर्निका ६ या ३० शक्ति में तीन बार, तीन चार दिन तक पिला देने से तकलीफ दूर हो जाती है। इस दवा का सेवन करते समय इसी का लोशन (मदर टिन्चर एक भाग पानी १०) तैयार कर स्तनों पर पट्टी चढ़ाने से दर्द और सूजन शीघ्र आराम हो जाती है। यदि प्रसव के समय योनिमुख और उसके आस पास का स्थान फट गया हो तो आर्निका लोशन के बदले केलेन्डुला लोशन व्यवहार करना चाहिये। इससे जख्म शीघ्र भर जाते हैं।

प्रसव के बाद प्रसूती को नींद आ जाने से उसकी तकलीफ बहुत कुछ घट जाती है। यदि मानसिक उत्तेजना के कारण उसे नींद न आये, तो एक दो बूंद काफिया दे देना चाहिये। यदि इससे भी लाभ न हो तो एकोनाइट।

प्रसव के दो तीन दिन बाद तक या जब तक स्तन में दूध न हो तब तक उसे केवल दूध या बार्ली, साबूदाना, आरारोट आदि हलकी चीजें खाने को देनी चाहिये। बुखार न हो तो चौथे दिन से रोटी दी जा सकती है। प्रसूती को अधिक तादाद में घी या मसाले न खिलाना चाहिये। इससे दस्त की बीमारी हो सकती है।

चिकित्सा।

बेलेडोना ३ या ६—लाल रंग का बहुत सा गरम रक्तस्राव, कमर में जोरों का दर्द, मानों कमर टूट जायगी, पेट में दर्द, मानों पेट की सब चीजें योनिमार्ग से बाहर निकल पड़ेंगी इत्यादि।

क्रोकस ६ या ३०—काले रंग का चमकीला रक्तस्राव, साथ ही ऐसा मालूम होना मानों तलपेट में गर्भ अड़ रहा है इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—जरायु की क्रिया में गड़बड़ी थोड़ा थोड़ा दर्द, एक बार रक्तस्राव का बन्द होकर दुबारा फिर आरम्भ होना, श्वासकष्ट, हृदय का काँपना इत्यादि।

केमोमिला ३०—चिड़चिड़ा स्वभाव, दोनों पेरों में फट जाने जेसा दर्द, काले रंग का चमकीला रक्तस्राव।

इपीकाक ६ या ३०—उज्वल लाल रंग का अनवरत रक्तस्राव, नाभी के पास कतरने जैसा दर्द, हवा खाने की इच्छा, जी मिचलाना, कमजोर हो जाना इत्यादि।

हेमामेलिस १X—रक्तस्राव बन्द करने की यह भी अच्छी दवा है।

चायना ६ या ३०—बहुत अधिक तादाद में काले रंग का चमकीला रक्तस्राव, रक्तस्राव के कारण प्रसूती का

केमोमिला ६ या १२—बहुत उत्तेजना, बेचैनी, असह्य वेदना, दर्द के कारण छटपटाना और चिल्लाना, चिड़चिड़ा स्वभाव इत्यादि लक्षणों में और अर्निका से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

नक्सवोमिका ३०—तलपेट में शूल जैसा दर्द, दर्द के साथ पाखाने का वेग, दर्द के कारण हिलने डोलने में डर मालूम होना इत्यादि। केमोमिला के बाद इससे विशेष लाभ होता है।

काफिया ६—स्नायविक उत्तेजना, बहुत जोरों का दर्द अथवा दर्द के बाद खींचन, समूचे शरीर का ठण्ढा पड़ जाना इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—नम्र प्रकृति की स्त्रियों का रोग, जल्दी जल्दी दर्द न होने पर भी कई दिनों तक दर्द का मौजूद रहना।

बेलेडोना ६ या ३०—एकायक दर्द का शुरू होना और एकाएक गायब होजाना, दर्द के कारण ऐसा मालूम होना मानो पेट से सब कुछ बाहर निकल पड़ेगा, शिर पूर्ण मालूम होना, नींद न आना, तलपेट भरा हुआ मालूम होना और टटाना।

सिकेली ६ या ३०—बदन में बहुत दाह, गरमी बर्दाश्त न कर सकना, बहुत समय तक दर्द मौजूद रहना,

यह स्राव निकल कर, अन्त में बन्द हो जाता है। तब किसी को बहुत थोड़े दिन और किसी को अधिक दिनों तक हो सकता है।

यह स्राव स्वाभाविक रूप में होता हो, तो औषधोपचार की कोई आवश्यकता नहीं, परन्तु यदि स्राव बहुत दिनों तक जारी रहे या बहुत अधिक तादाद में हो या एकायक रुक जाय अथवा सर्दी, खानपान के दोष या किसी अन्य कारण से उसके निकलने में बाधा पड़ जाय तो किसी उपयुक्त औषधि का सेवन करना चाहिये।

चिकित्सा।

क्रोकस ६ या ३०—बहुत अधिक तादाद में बहुत दिनों तक स्रावका जारी रहना, काला काला खून निकलना।

एकोनाइट ३x या ६—गहरे लाल रङ्गका बहुत रक्तस्राव होने पर इससे भी बहुत लाभ होता है। इसे दो तीन दिन सेवन करनेसे प्राय रक्तस्राव बन्द हो जाता है।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—एकोनाइट से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये। जरायु में खुजली होने पर इससे विशेष लाभ होता है।

ब्रायोनिया ६ या ३०—किसी कारण से स्रावका रुक जाना, साथ ही शिरदर्द, शिरमें भार और पूर्णता, कमर में दर्द,

होना पड़ता है। दुर्व्यसन सभी बुरे है। हर हालत में, हर निगाह में बुरे हैं। स्वास्थ्य की सच्ची कामना रखनेवालों को इनके प्रलोभन में भूल कर भी न फसना चाहिये।

सावधान! स्वास्थ्य रक्षा के लिये इनके अतिरिक्त और भी अनेक बातों में सतर्क रहने की आवश्यकता है। बाजार से आनेवाली चीजों के साथ अनेक बार बड़े बड़े रोगों के बीज घर में घुस आते है, इसलिये सभी चीजें धोनेके बादही काम में लाओ। धोबी के यहां से आये हुए कपड़े भी घर में एक बार धो लेना लाभदायक है। जिस स्थान में प्लेग, हैजा, चेचक आदि संक्रामक बीमारियाँ फैली हो, वहाँ के लोगों से कोई सम्बन्ध मत रक्खो। उनके यहाँ की कोई भी चीज घर में मत आने दो। क्षय और गरमी की बीमारीवालों से कोसों दूर रहो। उनका कोई भी कपड़ा या कोई भी वस्तु अपने काम मे मत लाओ। अपने हृदय से सदा स्वस्थ रहने की कामना रक्खो और स्वास्थ्य रक्षा के नियमों का दृढ़ता से पालन करो। ऐसी अवस्था मे स्वास्थ्य के लिये हानिकर बातो का पता आपको अपने आपही लग जाया करेगा और आप उनसे दूर रह सकेंगे।

संक्रामक और स्पर्शाक्रमक रोग—जो रोग जल वायु दूध मक्खी मच्छर खटमल रुपये-पैसे, चिट्ठी-पत्री धूलिकण आदि पदार्थों द्वारा एक व्यक्ति के शरीर से दूसरे व्यक्ति के शरीर में एकस्थान से दूसरे स्थान में पहुच जाते है वे संक्रामक

थोड़ा पेशाब इत्यादि लक्षणों में या जरायु मे ज्वालाकर वेदना के साथ गहरे लाल रङ्गका बहुत रक्तस्राव होने पर इसे देना चाहिये।

पल्सेटिला ६ या ३०—मानसिक अवस्था की खराबी या सर्दी लगने या किसी दूसरे कारण से अचानक स्रावका रुक जाना, साथ ही बुखार प्यास का होना अथवा न होना आधे शिरमें दर्द, पैर ठंडे, पेशाब करने की प्रबल इच्छा, शामके वक्त तकलीफ का बढ़ जाना, सुबह आराम मालूम होना इत्यादि लक्षणों में या बहुत कम स्राव होने पर इससे लाभ होता है।

डाल्केमारा ६—सर्दी लगने या पानीमें भीगने के कारण स्राव रुक जाय तो इसे देना चाहिये। पल्सटिला के बाद इसे देनेसे काफी लाभ होता है।

बेलेडोना ६ या ३०—बहुत दिनों तक पतला और बदबूदार स्राव होना, स्राव लगने के कारण जख्म हो जाना, इन्हीं लक्षणों में सिकेली भी दिया जाता है।

कौलोफाइलम ६ या ३०—बहुत दिनों तक अनजानमें रक्तस्राव होता रहे तो इसे देना चाहिये।

रसटक्स ६ या ३०—बहुत दिनों तक पानी जैसा पतला काले रङ्गका बदबूदार क्लेदस्राव, शिरमें दर्द, दर्दका

बढ़ना और हिलने डोलने या चलने फिरने पर आर[ाम] मालूम होना।

ओपियम ६—भयके कारण स्रावका रुक जाना साथ[ही] शिरमें रक्तसञ्चार आदि लक्षणों में इससे लाभ होता है। एकोनाइट भी इन लक्षणों में दिया जा सकता है।

आवश्यक सूचना—अधिकांश स्त्रियों का यह स्राव [illegible] दिन के आसपास रुक जाता है। इसके बहुत पहले स्राव [illegible] जाने पर या इसके बहुत दिन बाद तक स्राव जारी रहने पर [illegible] खाना चाहिये।

दुग्ध—ज्वर।

(Milk Fever)

[illegible]

चिकित्सा ।

आर्निका ६ या ३०—स्तनों में कड़ापन, सूजन और तनाहट होने पर इसे देना चाहिये । साथ ही इसका लोशन तैयार कर दिन में दो बार स्तनो पर चढ़ाना चाहिये ।

एकोनाइट २x या ६—तेज बुखार, सूखा और गरम चमड़ा, चेहरा लाल, स्तन कड़े और गांठ भरे अस्थिरता, उत्कण्ठा और निरुत्साहिता ।

ब्रायोनिया ६ या ३०—स्तनों में तनाहट, छाती जकड़ी हुई, शिर में जोरों का दर्द, कब्जियत इत्यादि लक्षणों मे और एकोनाइट से पूरा लाभ न होने पर इसे देना चाहिये ।

बेलेडोना ६ या ३०—ब्रायोनिया से सब शिकायत पूर्ण रूप से दूर न होने पर इसे देना चाहिये । स्तन कड़े, लाल और भारी, ज्वर भाव, दपदपी, शिर मे दर्द, चेहरा और आंखें लाल, आवाज और रोशनी बरदाश्त न होना इत्यादि लक्षणों मे इससे विशेष लाभ होता है ।

केमोमिला ६ या १२—बहुत स्नायविक उत्तेजना, बेचेनी, स्तनों का टटाना, बोंट में सूजन, चिड़चिड़ा स्वभाव इत्यादि ।

पल्सेटिला ६ या ३०—तेज बीमारी, स्तनों मे बहुत तनाहट, सूजन, वात जैसा दर्द, छाती से कन्धे और बगल तक दर्द का पहुंचना इत्यादि ।

बेलेडोना ३ या ६—बारंबार पेशाब का वेग, थोड़ा, पेशाब होना या बिल्कुल ही पेशाब का न होना, मूत्राशय में तनाहट, पीठकी ओर दर्द इत्यादि।

इक्विसेटम १५—बेलेडोना के लक्षण में और उससे लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

पल्सेटिला ६ या ३०—पेशाब बन्द, तलपेटमें जलन, टटाना, लाली और गरमी, हिलने डोलने या खाँसने से अनजान में पेशाब इत्यादि।

केन्थरिस ६ या ३०—बारंबार पेशाब का वेग और जलन होने पर इसे देना चाहिये।

नक्सवोमिका ६ या ३०—पेशाब का वेग, लेकिन जोर लगने पर भी पेशाब का न होना, मूत्राशय में दर्द, कब्जियत इत्यादि।

ओपियम ६ या ३०—पेशाब और दस्त दोनों का बन्द हो जाना, दो में से किसी का भी वेग न होना इत्यादि।

हायोसायमस—मूत्राशय के पक्षाघात या लकवे के कारण पेशाब बन्द हो जाने पर इसे देना चाहिये।

आवश्यक सूचना—गरम पानी का सेंक दिया जा सकता है, परन्तु जलन होने पर सेंक देना ठीक नहीं। दवा के सेवन से लाभ न होने पर किसी चतुर चिकित्सक द्वारा सलाई डलवा कर पेशाब कराया जा सकता है।

प्रसव के बाद दस्त।

(Diarrhoea after Delivery)

प्रसव के पहले पतले दस्त आने से अनेक बार प्रसव के बाद तक इनकी शिकायत बनी रहती है। कभी कभी प्रसूती को अधिक घी या मसाले आदि खिलाने से उसे दस्त आने लगते हैं। यह रोग बहुत ही बुरा है। इसे जितनी जल्दी हो सके, दूर करने की चेष्टा करनी चाहिये।

चिकित्सा।

चायना ३०—बहुत कमजोरी और रसरक्त स्राव के कारण दस्त, मल के साथ अजीर्ण पदार्थ निकलना इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—बहुत ज़ोर लगाना, मलद्वारका फूल उठना, अथवा मलद्वारमें दर्द और केवल श्लेष्मा निकलना, ठंढ मालूम होना, रात के समय या तड़के दस्त होना, घी या घी की पकी चीजें खाने के कारण अतिसार।

डाल्केमारा ६—पसीना रुक जाने और ठंढ या सरदी लगने के कारण दस्त आना, दोपहर के बाद या रात के समय रोग का बढ़ना, पेट में दर्द, दस्त हो जाने पर दर्द का बन्द हो जाना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

रिउम ६ या ३०—मल मे खट्टी गन्ध, दस्त के बाद भी काँखना और दर्द का मौजूद रहना, रात के समय कष्ट का बढ़ना, बहुत कमज़ोरी और मृत्युभय इत्यादि ।

एन्टिमक्रूड ६ या ३०—सुबह तड़के या रात के समय अधिक दस्त आना, जीभपर सफेद लेप, पाकाशय का गोल॰ माल इत्यादि ।

सिकेली ६ या ३०—बदबूदार और बहुत कमज़ोरी लाने वाले दस्त हो तो इसे देना चाहिये ।

एसिड फस ६ या ३०—तेज़ बीमारी, पानी जैसे पतले दस्त, बिना दर्द के दस्त अथवा अनजान में दस्त हो जाना इत्यादि ।

अन्यान्य दवाओं के लिये "अतिसार या सग्रहणी" देखिये ।

प्रसव के बाद कब्जियत ।

(Constipation after Delivery)

प्रसव के बाद कई दिनो तक दस्त का न होना स्वाभाविक है। इस अवस्था मे कोई दवा देने की जरूरत नहीं। यह एक अच्छा लक्षण है और इससे प्रसूता की ताकत बढ़ती है। जुलाब या दस्तावर दवाएं तो किसी हालत में भी न देनी चाहिये

क्योंकि उनसे लाभ के बदले प्रायः हानि ही होती है। यदि पाँच छः दिन के बाद प्रसूती पेट में दर्द या शिर भारी होने की शिकायत करे तो एक दो खुराक ब्रायोनिया देने से प्राय दस्त हो जाता है और तकलीफ दूर हो जाती है, यदि इससे लाभ न हो तो नक्सवोमिका, सल्फर या कब्जियत की दवाओं में से कोई दवा चुनकर देनी चाहिये। एक या दो दिन में इससे भी दस्त न आयें, तो मलद्वार में सुसुम पानी को पिचकारी देनी चाहिये। इससे तुरन्त दस्त हो जायगा और रोगिनी को कोई हानि न होगी।

सूतिका ज्वर।

(Pueıperal Fever)

यह एक बहुत ही खराब और भयानक बीमारी है। इस का मूल कारण एक तरह का विष या जीवाणु है। परन्तु किसी तरह प्रसूती की जननेन्द्रिय का दूषित होना प्रसव के बाद गन्दा खून या सड़ा हुआ स्राव जरायु और योनिद्वार में जमा रहना, कष्टकर प्रसव, चीरफाड की सहायता से प्रसव करना, मूत्रस्थली का अच्छी तरह न फैलना जरायु और योनि में जखम या प्रदाह, जरायु के अन्दर फूलका टुकड़ा रह जाना और उसका वहाँ सड़ना, प्रसव के बाद खून बन्द

रोग कहलाते हैं। जिन रोगों का विष स्पर्श से ही दूसरे शरीर में प्रवेश करता है, वे स्पर्शाक्रमक या लरहुन रोग कहलाते हैं। हूपिंग खाँसी और कर्णमूल प्रदाह आदि ऐसे ही रोग हैं। इसके अलावा कुष्ठ, क्षय, आन्त्रिक या टायफाइड ज्वर, चेचक, आरक्त ज्वर, न्युमोनिया, हैजा, रक्तामाशय, इन्फ्लुएञ्जा आदि बीमारियाँ ऐसी हैं जिनका विष उड़ कर भी फैलता है और छूने से भी, इसलिये यह स्पर्शाक्रमक और संक्रामक-उभयाक्रमक बीमारियाँ मानी जाती हैं। जिस समय ये बीमारियाँ फैल रही हों, उस समय इनसे बचने के लिये विशेष सावधानी रखने की जरूरत रहती है।

इन रोगों से बचने के लिये नाक में रुई आदि लगाकर धूलिके कण साँस में जाने से रोकना चाहिये। इन रोगों से आक्रान्त रोगियों और उनके परिवारवालों से दूर रहना चाहिये। हैजा के रोगी की कै या दस्त तथा क्षयके रोगी का थूक यदि किसी तरह शरीर में लग जाय, तो उस स्थान को तुरन्त धो डालना चाहिये। रोगी के कमरे में खाने-पीने का कोई सामान या दवा न रखनी चाहिये। रोगी के कमरे में धूप, गन्धक, कपूर आदि डालना और फिनाइल छिड़कना चाहिये। हलवाई या बनिये को यह रोग हुआ हो तो उसके यहाँ से कोई चीज न खरीदनी चाहिये और जिस स्थान में ये रोग, जोरों से फैल रहे हों, वहाँ से आनेवाली सभी चीजें धोकर या गरम पानी में उबाल कर काम में लानी चाहिये। वहाँ

करने के लिये लौह संयुक्त दवाएं या बरफ का प्रयोग करना, प्रसव के बाद दस्तावर दवाएं खाना इत्यादि इसके उत्तेजक कारण माने जाते है।

इस ज्वर की पहचान बहुत सहज है। प्रसव के तीन चार दिन बाद बुखार का होना और दिनों दिन उसका तेज होते जाना इसका प्रधान लक्षण है। बुखार आने के पहले शरीर और हाथ पैरमें ऐंठन, नाड़ी बहुत तेज़, जाडा लगकर बुखार आना, बहुत तेज बुखार, प्यास, पेट में बहुत दर्द और टटाना, समूचे शरीर में तकलीफ, पेट फूला हुआ, क्षुधाहीनता, मिचली और के, स्राव का एकायक बन्द हो जाना या बदबूदार स्राव होना, स्तन का दूध सूख जाना इत्यादि लक्षण भी प्रकट होते हैं।

यह बहुत ही तेज बीमारी है। इसकी वृद्धि इतनी तेजी से होती है कि अनेक बार कुछ घण्टों में ही रोगिनी का प्राणान्त हो जाता है। ७-८ दिन से अधिक शायद ही कोई रोगिनी जीती है। जरायु से पीब जैसा बदबूदार स्राव निकलना बहुत ही बुरा लक्षण माना जाता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ x या ६—रोग के आरम्भ में बहुत तेज बुखार जाड़ा, थपथपी, नाडी तेज और कठिन, शरीर

क्योंकि उनसे लाभ के बदले प्रायः हानि ही होती है। यदि पाँच छः दिन के बाद प्रसूती पेट में दर्द या शिर भारी होने की शिकायत करे तो एक दो खुराक ब्रायोनिया देने से प्रायः दस्त हो जाता है और तकलीफ दूर हो जाती है. यदि इससे लाभ न हो तो नक्सवोमिका, सल्फर या कब्जियत की दवाओं में से कोई दवा चुनकर देनी चाहिये। एक या दो दिन में इससे भी दस्त न आयें, तो मलद्वार में सुसुम पानी की पिचकारी देनी चाहिये। इससे तुरन्त दस्त हो जायगा और रोगिनी को कोई हानि न होगी।

सूतिका ज्वर।

(Puerperal Fever)

यह एक बहुत ही खराब और भयानक बीमारी है। इस का मूल कारण एक तरह का विष या जीवाणु है। परन्तु किसी तरह प्रसूती की जननेन्द्रिय का दूषित होना प्रसव के बाद गन्दा खून या सड़ा हुआ स्राव जरायु और योनिद्वार में जमा रहना, कष्टकर प्रसव, चीरफाड़ की सहायता से प्रसव करना, मूत्रस्थली का अच्छी तरह न फैलना जरायु और योनि में जख्म या प्रदाह, जरायु के अन्दर फूलका टुकड़ा रह जाना और उसका वहाँ सड़ना, प्रसव के बाद खून बन्द,

करने के लिये लौह संयुक्त दवाएं या वरफ का प्रयोग करना, प्रसव के वाद दस्तावर दवाएं खाना इत्यादि इसके उत्तेजक कारण माने जाते है।

इस ज्वर की पहचान वहुत सहज है। प्रसव के तीन चार दिन वाद बुखार का होना और दिनों दिन उसका तेज होते जाना इसका प्रधान लक्षण है। बुखार आने के पहले शरीर और हाथ पैरमें ऐंठन, नाड़ी वहुत तेज़, जाड़ा लगकर बुखार आना, बहुत तेज बुखार, प्यास, पेट में वहुत दर्द और टटाना, समूचे शरीर मे तकलीफ, पेट फूला हुआ, क्षुधाहीनता, मिचली और कै, स्राव का एकायक वन्द हो जाना या वदवूदार स्राव होना, स्तन का दूध सूख जाना इत्यादि लक्षण भी प्रकट होने हैं।

यह वहुत ही तेज वीमारी है। इसकी वृद्धि इतनी तेजी से होती है कि अनेक वार कुछ घण्टो में ही रोगिनी का प्राणान्त हो जाता है। ७-८ दिन से अधिक शायद ही कोई रोगिनी जीती है। जरायु से पीव जैसा वदवूदार स्राव निकलना वहुत ही बुरा लक्षण माना जाता है।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३ x या ६—रोग के आरम्भ में वहुत तेज बुखार, जाड़ा, कपकपी, नाड़ी तेज और कठिन, शरीर

सूखा, पेट फूला और दर्द भरा, बहुत प्यास, जरायु में दर्द तेज श्वासप्रश्वास, स्तन ढीले, दूध का सूख जाना, स्राव के बन्द हो जाना इत्यादि।

विरेट्रम विरिडि १—यह इस रोग की एक बढ़िया दवा है। खींचन या आक्षेप के कारण यदि ऐसा मालूम हो कि रोगिनी का प्राण शीघ्र ही निकल जायगा तो इसे पाँच पाँच मिनटके अन्तर से देना चाहिये। खींचन कम हो जाने पर दवा देने का समय भी बढ़ा देना चाहिये।

एपिस ६ या ३०—डंक मारने जैसा दर्द, जरायु में प्रसव वेदना जैसी वेदना, प्यास का न होना, थोड़ा पेशाब [illegible] कष्ट, नाड़ी तेज और कोमल शरीर बहुत गरम, हाथ पैर ठंडे, स्राव का बन्द हो जाना और दूध सूख जाना।

आर्निका ३ या ६ कष्टकर प्रसव [illegible] प्रसव कराना, गर्भ में फूलका अटक रहना, [illegible] शरीर और हाथ पर ठंढे माथा गरम, बदन में ऐंठन, पेट में दर्द, बहुत थकावट मालूम होना, जी मिचलाना, [illegible] पेशाब का न होना इत्यादि।

आर्सेनिक ६ या ३०—सूतिका ज्वर, [illegible] [illegible] शरीर पर [illegible], अधिक परिमाण में [illegible] स्राव बन्द हो जाना, सिर दर्द, [illegible]

फट जायगा. हिलने डोलने से दर्द का बढ़ना, मिचली, मूर्च्छा, अधिक प्यास, कब्जियत, मल सूखा और कठिन ।

कोफिया ६ या ३०—मानसिक उत्तेजना के कारण सूतिकाज्वर. जीभ गीली प्यास का न होना. प्रलाप. अनिद्रा निराशा. पेट मे दर्द. स्पर्श बरदाश्त न होना ।

बेलेडोना ६ या ३०—जाड़ा, ताप और पसीना, पेटमें बहुत दर्द और तपाहट, दर्द का एकायक गायब होना, स्राव का बन्द हो जाना या थोड़ी तादाद में बहुत बदबूदार स्राव होना, प्रलाप सिर मे दर्द. शिर में रक्ताधिक्य, चेहरा और आंखे लाल शोरगुल और रोशनी बरदाश्त न होना, नींद से चौंक चौंक पड़ना ।

रसटक्स ६—जरायु में प्रदाह, निचले अंग में झनझन करनेवाला दर्द. बहुत बदबूदार स्राव टायफाइड बुखार जैसे लक्षण इत्यादि ।

मर्क्युरियस कर ६—पेट में कतरने जैसा दर्द दर्द के कारण पेटपर हाथ न रखने देना. बहुत अधिक प्यास, खून और आंव मिला दस्त इत्यादि ।

आर्सेनिक ६ या ३०—पेट मे जलन और दर्द अस्थि-रता, अनिद्रा, [illegible] थोड़ी देर के बाद करवटें बदलना शरीर बहुत गरम, प्यास थोड़ा थोड़ा पानी पीना मिचली

और कै, शिर में दर्द और चक्कर, प्रलाप, नाड़ी क्षुद्र, तीव्र और सविराम, बदन में दाह, आधीरात के बाद तकलीफ का बढ़ना ।

बेप्टीशिया ३x या ६—सूतिका ज्वर के साथ टायफाइड जैसे लक्षण, बदबूदार स्राव, बहुत कमजोरी, पेशाब में बदबू, कमजोरी लाने वाले बदबूदार दस्त ।

कोलोसिन्थ ६—पेटका फूलना, पेटमें शूल जैसा दर्द, जोर से दबाने या सामने की ओर झुक जाने पर आराम मालूम होना ।

नक्सवोमिका ६ या ३०—बारंबार मल त्याग करने की इच्छा, पेशाब का कष्टदायक वेग, बदबूदार क्लेदस्राव स्राव का बहुत अधिक होना या बन्द हो जाना, मिचली और कै ।

ओपियम ६ या ३०—डर जाने के कारण यह रोग होना, बकझक या प्रलाप, चेहरा लाल और भराया हुआ, आँखें फूली हुईं, बहुत बेहोशी, श्वास में घड़घड़ाहट इत्यादि ।

चायना ६ या ३०—रोगी की अन्तिम अवस्था में रोगिनी के बहुत कमजोर हो जाने पर या बहुत रक्तस्राव होने पर इससे लाभ होता है ।

एसिडफस ६ या ३०—सूतिका विकार, अवसन्नता, बहुत परिमाण में पसीना, समस्त विषयों में उदासीनता, शिर में भार, प्रलाप. हाथ पैर ठण्डे इत्यादि।

किनिनम आर्स ६ या ३०—बहुत सुस्ती, बेहोशी में बुदबुदाना. मलद्वार में सदा हाथ लगाना, अनजान में दस्त हो जाना इत्यादि।

एसिडम्यूर ६ या ३०—सूतिका ज्वर, विकार लक्षण, चायना और किनिनम आर्स से लाभ न होना इत्यादि।

लेकेसिस ३०—अचैतन्य भाव, बदबूदार स्राव, पेशाब बन्द, पेट फूला हुआ और वेदना युक्त, कमर में कपड़ा न रख सकना, कब्ज़ियत, नींद के बाद समस्त रोग लक्षणों का बढ़ जाना इत्यादि।

सिकेली ६ या ३०—जरायु में सड़न, बदबूदार स्राव, तेज बुखार और कम्प, पेट में दर्द, पेशाब बन्द, बदबूदार दस्त, प्रलाप, प्रसव के बाद भी प्रसव जैसा दर्द जारी रहना।

स्ट्रैमोनियम ६ या ३०—मानसिक उत्तेजना तेज प्रलाप, ऐसा मालूम होना, मानो सिर नीचे गिरा पड़ता है, जरायुप्रदाह इत्यादि।

ग्रावोवेज ३०—जरायु में सड़न पैदा होने के पूर्व लक्षण, बदबूदार स्राव, सूतिका ज्वर की अन्तिम अवस्था में अवसन्नता।

केलीफस 3X विचूर्ण—इस दवा से भी अनेक बार बहुत लाभ होता है ।

पाइरोजन ६ या ३०—पीब होने के कारण खून खराब हो जाय तो इसे देना चाहिये ।

सिमिसिफिउगा ६ या ३०—सरदी या मानसिक अवस्था के कारण क्लेदस्राव का बन्द हो जाना, साथ ही पेटमें दर्द, शिरमें तेज दर्द, प्रलाप, चेहरा नीला, बहुत कमजोरी, स्तनमें डंक मारने जैसा दर्द इत्यादि ।

आवश्यक सूचना—रोगिनी का शरीर और वासस्थान खूब साफ रखना चाहिये । जब तक तेज बुखार रहे, तब तक साबूदाना और वार्ली आदि हलकी चीजें खाने को देनी चाहिये । बुखार घट जाने पर मूंग की दाल और फुलके आदि दिये जा सकते हैं । मांस मछली खाना मना है ।

प्रसूत ।

(Pernicios Anoemia)

इस रोगको पुराना सूतिकाज्वर भी कहते हैं, परन्तु वास्तव में यह एक दूसरा ही रोग है । सूतिका ज्वर कभी पुराना होता ही नहीं । उसका रोगी या तो ८-१० दिन में मर जाता है या इसके बाद अच्छा हो जाता है । इसके विपरीत

प्रसूत रोग नयी अवस्था में शायद ही अच्छा होता है। अधिकांश स्थानों में यह पुराना हो जाता है और उस अवस्था में या तो अच्छा हो जाता है या रोगीकी मृत्यु हो जाती है।

प्रसूत का मूल कारण कोई विष या जीवाणु नहीं है। वास्तवमें यह एक तरहकी तेज रक्तस्वल्पता है। प्रसवके समय प्रसूती की उचित सेवा सुश्रुषा न होने पर उसका स्वास्थ्य नष्ट हो जाता है और उसे यह रोग हो जाता है। रोगके आरम्भ में अनेक वार सूतिका ज्वर जैसे लक्षण प्रकट होते हैं, परन्तु साधारणतः इसका बुखार बहुत धीमा होता है और रात दिन बना रहता है। कभी कभी दोपहरके बाद कुछ बढ़ जाया करता है, धीरे धीरे रोगिनी कमजोर हो जाती है, उसके शरीर में रक्तस्वल्पता के चिह्न दिखायी देते हैं और पतले दस्त, शोथ, खाँसी, बेचैनी, शिरके केशोंका झड़ जाना, अरुचि अक्षुधा. शिरमें चक्कर, रतौंधी, इत्यादि उपसर्ग प्रकट होकर अन्तमें रोगिनी की मृत्यु हो जाती है। यह रोग बहुत ही मन्दगति से बढ़ता है। कभी रोगिनी चार ही छः महीने में मर जाती है और कभी कभी इससे वरसों तक भुगता करती है।

चिकित्सा।

नेट्रमम्यूर ३० या २००—खूनकी कमी, शरीर सूखा और पीला, कलेजे का धड़कना, पाकाशय फूला हुआ कब्जियत, सदा उदास या खिन्न रहना।

के मनुष्यों से ही नहीं बल्कि बिल्ली, कुत्ते, चूहे और गाय बैल आदि जानवरों से भी दूर रहना चाहिये। यदि कभी इन रोगों के रोगियों की सेवा सुश्रूषा करनी पड़े तो बहुत ही सावधान रहना चाहिये और खाने पीने की कोई चीज छूनी हो तो पहले साबुन लगाकर हाथ अच्छी तरह धो डालने चाहियें। रोगी के कपड़े आदि जहाँ तक हो सके जला देना ही अच्छा है, क्योंकि अनेक बार ऐसे कपड़े किसी तालाब या कुएं पर धोने से उसका पानी दूषित हो जाता है और उसे व्यवहार करनेवाले समूचे गाँव में भयंकर रूप से यह बीमारी फैल जाती है।

साधारण रोग।

ज्वर या बुखार।

यह पहलेही बतलाया जा चुका है. कि शरीर की गरमी ९७-९८ डिग्री रहती है। जब किसी की यह गरमी इस से अधिक बढ़ जाती है, तब हम लोग कहते है कि उसे ज्वर या बुखार आया है।

बुखार अनेक कारणों से आता है। सरदी गरमी, पेटकी गड़बड़ी, अधिक परिश्रम जागरण, ऋतु परिवर्तन किसी अंगमें प्रदाह या कष्टकर बीमारी का होना, शरीर में किसी प्रकार का विष घुस जाना आदि इसके कारण माने जाते है।

क्रन्दनशील प्रकृति, भूख न लगना, प्यास बिल्कुल न होना, लोह संयुक्त दवाएँ या क्वींनाइन खानेका कुफल इत्यादि ।

नक्सवोमिका ६ या ३०—बहुत चिड़चिड़ा स्वभाव, बदहज़मी, अम्ल या पित्तकी के, शिरमें दर्द, सुबह रोगका बढ़ना, मुँहमें खट्टा स्वाद, कब्जियत, बारंबार पाखाने का वेग लेकिन दस्त साफ न होना, सदा जाड़ा मालूम होना इत्यादि ।

चायना ६ या ३०—दस्त, अधिक, रज, खून या दूध निकलने के कारण कमजोरी और उस कमजोरी के कारण यह रोग होना, आँखों से कम दिखायी देना, कानमें भां भां आवाज, नींद न आना इत्यादि ।

फास्फरस ३० या २००—प्रसूत के साथ क्षय रोगका कोई दोष मौजूद रहना, खेद, निराशा, रक्तस्राव, पतले दस्त, रातमें पसीना, आँखोंके चारो ओर फूलन और श्यामता, सूखी खाँसी, दुर्बलता, सफेद, पतला और चिकना प्रदर, ऋतुके समय प्रदर स्राव इत्यादि ।

इनके अतिरिक्त फेर्लीकार्ब, हाइड्रेस्टिस, ग्रेफाइटिस और हेलोनियम आदि दवाओं से भी लाभ होता है । कल्केरिया फस, ३ और फेरमफास ३० इस रोग की बढ़िया दवाएँ है । इनके प्रयोग से अनेक रोगिनियाँ आराम हो चुकी है ।

आवश्यक सूचना—हलका और पुष्टिकर खाना खाना चाहिये। मोटे मसूड़ों का शोरवा खाने और नारायणी तेल बदनमें मालिश करने से विशेष लाभ होता है।

सूतिकोन्माद।

(Puerperal Mania)

यह रोग सांघातिक न होने पर भी बहुत ही कष्टदायक है। गर्भावस्था में या प्रसव के बाद किसी भी समय यह रोग हो सकता है, इसका वास्तविक कारण अभी तक ज्ञात नहीं हो सका। किन्तु कष्टकर प्रसव, अस्त्रोंकी सहायता से प्रसव कराते समय जननेन्द्रियमें चोट लगना या रक्तस्राव, बहुत बच्चे होने के कारण रक्तस्वल्पता और अवसन्नता, जननेन्द्रिय की उत्तेजना, सूतिकावस्था में आक्षेप और सूतिकाज्वर, वंशगत उन्मादरोग, भय, शोक, दुःख और आनन्द का आवेग इत्यादि इसके उद्दीपक कारण माने जाते हैं।

यह रोग होनेपर अनिद्रा, चेहरा और शिरमें रक्ताधिक्य, शिरमें भार मालूम होना, आँखों से धुँधला दिखायी देना, टकटकी लगाकर देखते रहना, ज्ञान, बुद्धि और स्मरण शक्ति का लोप, स्तन मे दूध की कमी या बिलकुल ही दूध का न होना, कभी क्रुद्ध होकर सबको मारने दौड़ना, कभी,

उदास रहना, कभी आत्महत्या करने की प्रवृत्ति, पति और बच्चों पर श्रद्धा का न रहना, सदा हल्ला गुल्ला मचाये रहना इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं।

चिकित्सा।

अरममेट ३ या ६—सदा आत्महत्या करने की इच्छा, अनिद्रा, ज्ञान और बुद्धि का लोप हो जाना इत्यादि।

बेलेडोना ६ या ३०—भागने या छिप रहने की इच्छा, भूत का भय, जब तब क्रोधित हो उठना, रात में नींद न आना, शिर में दर्द, चेहरा और आँखे लाल, इत्यादि।

हायोसायमस ६ या ३०—बहुत क्रोध करना, मनमे दुखी होना, बुद्धि लोप, सगे सम्बन्धियों को पहचान न सकना निर्लज्जता, नंगे हो जाने की इच्छा, सदा मन में यह सोचना कि उसे कोई विष खिला देगा इत्यादि।

प्लेटिनम ६ या ३०—जननेन्द्रिय में खुजली, योनि-द्वार से काले रक्त का पतला स्राव, सब लोगों पर विरक्त अनेक विषयों की चिन्ता करना इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—शान्त और नम्र प्रकृति की स्त्रियों को यह रोग होना निस्तब्ध और विमर्ष भाव, आँखें बन्द करने पर तरह तरह की सुन्दर मूर्तियाँ दिखायी देना, गायन वादन सुनायी देना, रात के आरम्भिक भाग में अनिद्रा;

स्ट्रैमोनियम ३ या ६—बहुत पागलपन, क्रोध, काटने दौड़ना, अकेले या चुप रहने की इच्छा न होना, निर्लज्जता, इत्यादि।

केनेबिस इन्डिका ६—तेज भावपूर्ण प्रलाप ऐसी बातें कहना मानो सोच समझ कर या किसी देवता की प्रेरणा से कह रहा है, अकेले और अन्धेरे में रहने की इच्छा, रह रह कर रोगिनी की शारीरिक और मानसिक क्रिया का निस्तब्ध भाव इत्यादि।

सल्फर ३०—धार्मिक विषयों की बातें सोचना, अपनी मुक्ति के लिये चिन्ता करना, बहुत गरमी मालूम होना, अनिद्रा, पैर ठण्ढे इत्यादि।

विरेट्रम ६ या ३०—प्रत्येक वस्तु, जड़ और चेतन सभी को आलिङ्गन करने की इच्छा, ठण्ढा पानी पीने और ठण्ढी तथा स्निग्ध चीजें खाने की इच्छा।

इनके अतिरिक्त सिमिसिफिउगा, एग्नस केक्टस, पेट्रोलियम, केली कार्ब आदि दवाओं से भी लक्षणानुसार लाभ होता है।

स्तन में दूध न होना।

(Agalactia)

शारीरिक दुर्बलता या खान पान के दोष से प्रसव होने के बाद अनेक स्त्रियों के स्तन में दूध या तो होता ही नहीं या बहुत कम होता है या होकर कुछ दिनों में एकाएक सूख जाता है। इन शिकायतों में निम्नलिखित दवाएं व्यवहार की जाती है।

पल्सेटिला ६ या ३०—अचानक दूध का सूख जाना, या दूध भरने में विलम्ब, साथ ही आधे कपाल में दर्द शिर में चक्कर, शिर में रक्तसञ्चय इत्यादि लक्षण दिखायी देते हो इसका सेवन कराना चाहिये इससे रोग बढ़ने नहीं पाता और काफी दूध होने लगता है।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—पल्सेटिला से थोड़ा लाभ हो और कुछ शिकायतें ज्योंकी त्यों मौजूद हों तो इसे देना चाहिये।

एकोनाइट ३x या ६—बुखार, चमड़ा सूखा और गरम नाड़ी कठिन और तेज इत्यादि लक्षण होने पर जब तक यह लक्षण बदल न जायें तब तक इसे देना चाहिये।

रसटक्स ६—भूख न लगना, मानसिक उद्वेग दोर्घकाल स्थायी बदबूदार स्राव इत्यादि।

बहुत दूध निकलने के कारण रोगिनी का कमजोर हो जाना, बदहजमी शिर में दर्द, शिर में चक्कर इत्यादि शिकायतें पैदा हो जाती है।

चिकित्सा।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—यह इस रोग की बढ़िया दवा है। प्रायः इसी के व्यवहार से सभी शिकायतें दूर हो जाती हैं।

फास्फरस ३० या २००—कल्केरिया कार्ब से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

रसटक्स ६ या ३०—स्तनों में बहुत दूध भरना, दूध के कारण स्तनो का फूल जाना, शरीर में स्थान स्थान में दर्द, चलने फिरने या हिलने डोलने से आराम मालूम होना इत्यादि।

नेट्रमसल्फ १२X विचर्ण—एकाएक स्तनों में बहुत दूध भर आवे तो इसे देना चाहिये।

सल्फर ६ या ३०—बहुत दूध निकलने के कारण तबियत खराब हो जाना, भूख न लगना, बहुत कमजोरी, रात में पसीना इत्यादि।

चायना ६ या ३०—बहुत दूध निकलने या बहुत रक्त स्राव होने के कारण कमजोरी, कमजोरी के कारण अपने आप दूध का निकलते रहना।

आर्निका ६ या ३०—कुचलना, मार न लगना खाने पर जो मिचलाना, होंठ और मुँह सूखा हुआ इत्यादि।

बेलेडोना ६ या ३०—स्तन भारी और कड़े हो जाना शिर में दर्द, निद्रा न आना, चेहरा और आँखें लाल, शिर में रक्तसंचय इत्यादि।

इनके अतिरिक्त क्रोध के कारण दूध सूख जाने पर कैमो मिला ६ या १२। लाल रंग का पानी जैसा दूध निकले और बच्चा उसे पीते ही कै करदे, तो कैलकेरिया ३०। दूषित दूध, बच्चा पीना पसन्द न करे या पीते ही कै कर दे तो साइलीसिया ३०। बहुत थोड़ा दूध होना या सर्दी के कारण दूध का सूख जाना इत्यादि लक्षणों में डलकेमारा ६। रक्तस्रावके कारण सुस्ती, स्तन में दूध न होने पर भी उनका चरचराना-सिकेली ६ या ३०। एसिडफस, एसाफिटिडा, आर्सनिक और सल्फर आदि दवाओं से भी लाभ होता है।

स्तन में अधिक दूध होना।

(Galaccorrhoea)

शारीरिक अस्वस्थता के कारण किसी किसी प्रसूती के स्तनों में अधिक दूध होता है। इसके कारण स्तनों का फूल उठना, उनमें दर्द होना, अपने आप दूध का निकलते रहना,

बहुत दूध निकलने के कारण रोगिनी का कमजोर हो जाना, बदहजमी शिर में दर्द, शिर में चक्कर इत्यादि शिकायतें पैदा हो जाती है।

चिकित्सा।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—यह इस रोग की बढ़िया दवा है। प्रायः इसी के व्यवहार से सभी शिकायतें दूर हो जाती हैं।

फास्फरस ३० या २००—कल्केरिया कार्ब से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

रसटक्स ६ या ३०—स्तनों में बहुत दूध भरना, दूध के कारण स्तनो का फूल जाना, शरीर में स्थान स्थान में दर्द, चलने फिरने या हिलने डोलने से आराम मालूम होना इत्यादि।

नेट्रमसल्फ १२X विचूर्ण—एकाएक स्तनो में बहुत दूध भर आवे तो इसे देना चाहिये।

सल्फर ६ या ३०—बहुत दूध निकलने के कारण तबियत खराब हो जाना, भूख न लगना, बहुत कमजोरी, रात में पसीना इत्यादि।

चायना ६ या ३०—बहुत दूध निकलने या बहुत रक्त स्राव होने के कारण कमजोरी, कमजोरी के कारण अपने आप दूध का निकलते रहना।

बुखार आने पर शरीर के चमड़े का [illegible] जाना, मुँह सूखना, प्यास [illegible], [illegible], नाड़ी की गति में परिवर्तन, [illegible] [illegible] आना, कमजोरी, अनिद्रा, बेचैनी, [illegible], और पसीना आना इत्यादि लक्षण दिखाई देते हैं।

भिन्न भिन्न बुखारों की प्रकृति भी भिन्न भिन्न होती है। कुछ बुखार एक बार चढ़ने के बाद तीन चार या पांच चार दिन तक चढ़े ही रहते हैं। ऐसे बुखार अविराम या कन्टीन्युअस फिवर (Continued Fever) कहलाते हैं। कुछ बुखार अच्छी तरह उतरने न उतरने फिर चढ़ जाते हैं। ऐसे बुखार स्वल्प विराम (Remittent Fever) कहलाते हैं। जो बुखार एक बार पूर्ण रूपसे उतर कर दो चार घण्टे, एक या दो दिन अथवा इससे अधिक समय का अन्तर देकर फिर आ जाते हैं, वे सविराम (Intermittent Fever) ज्वर कहलाते हैं। कुछ ज्वरों में शरीर के चमड़े पर दाने आदि निकल आते हैं। यह ज्वर अंग्रेजी में Eruptive Fever कहलाते हैं। चेचक आदि इसीके अन्तर्गत हैं। भिन्न-भिन्न ज्वरोंके भिन्न-भिन्न नाम हैं, जैसे कि मैलेरिया, टायफाइड, टायफस, माल्टा-फिवर, लाल बुखार, पीला बुखार, काला बुखार, डेंगू, चेचक, प्लेग इत्यादि, परन्तु चढ़ाव और उतार के हिसाब से इन सबोंकी प्रकृति उपरोक्त तीन प्रकृतियों में से किसी एक से मिलती जुलती होती है।

एकोनाइट ३X या ६—स्तन में बहुत दूध निकलने के साथ बुखार, अस्थिरता और प्यास आदि की शिकायत हो तो इसे देना चाहिये ।

ब्रायोनिया ६ या ३०—अधिक दूध भरने के कारण स्तनों का फूल उठना और उनका टटाना इत्यादि ।

आवश्यक सूचना—पतली चीज़ों का खाना पीना कम कर देने से थोड़ा बहुत लाभ होता है ।

स्तन की भिटनी में जख्म ।

(Sore Nipples)

छोटी उम्र में बच्चा होने, बच्चे को बराबर दूध पिलाने या किसी प्रकार का चर्म रोग बैठ जाने के कारण यह रोग होता है और भिटनी में दर्द, तनाहट, जख्म, उससे खून निकलना आदि लक्षण प्रकट होते हैं ।

चिकित्सा ।

कल्केरिया कार्ब ६ या ३०—स्तन की भिटनी में जख्म, और दर्द, साधारण जख्म होकर उसमें पीब पड़ना, भिटनी फटी, फटीसी दिखायी देना इत्यादि ।

ग्रेफाइटिस ६—भिटनी में जख्म ग्रौर दर्द बहुत तन्ना-हट ग्रौर जलन, लाल लाल फुन्सियोंका निकलना।

हिपर सल्फर ६ या ३०—भिटनी में जख्म ग्रौर तन्ना-हट, पीव बढ़ जाना या पीव पड़ने के लक्षण दिखायी देना, जख्म में जलन ग्रौर काँटा लगने जैसा दर्द, जख्म से जरा में ही खून निकलना इत्यादि।

सल्फर ३०—भिटनी में तन्नाहट, जख्म, देखने में फटी फटी, जलन, जरा में ही खून निकलना इत्यादि।

आवश्यक सूचना—कैलेण्डुला या अर्निका लोशन से दिन मे तीन चार बार स्तन को धो देने या स्तन पर इनकी पट्टी चढ़ाने से लाभ होता है। पानी में फिटकरी या सुहागा घिसकर भिटनी पर लगाने से भी तकलीफ घटजाती है।

स्तन प्रदाह।

(Mastitis)

स्तन में अधिक दूध सञ्चित होना, सर्दी या ठण्ड लगना किसी तरह की चोट लगना, स्तन मे दूध का जम जाना इत्यादि कारणों से प्रायः प्रसव के दो तीन सप्ताह बाद स्तन प्रदाह होता है। यह रोग होने पर स्तन का फूलना दर्द,

जाड़ा लगना, बुखार, स्तन में तनाहट इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं और कभी कभी स्तन पक भी जाते हैं ।

चिकित्सा ।

फाइटोलेका ३X या ६-स्तन प्रदाह की, खास कर स्तन बहुत कड़े होने पर यह बढ़िया दवा है। इसका सेवन करते समय इसी का लोशन तैयार कर स्तन पर पट्टी चढ़ाने से दूना लाभ होता है ।

एकोनाइट ३X या ६—सरदी लगने के कारण यह रोग होने पर या इसके साथ तेज बुखार होने पर इसे देना चाहिये इसके साथ पर्यायक्रम में ब्रायोनिया देने से विशेष लाभ होता है।

बेलेडोना ३ या ६—स्तन प्रदाह, स्तन का रंग चमकीला लाल, जलन के साथ दर्द स्तन कड़ा और फूला हुआ भार मालूम होना इत्यादि लक्षण में इसे देना चाहिये। रोग का आरम्भ होते ही इसे और इसके साथ ब्रायोनिया पर्यायक्रम में देने से रोग आगे नहीं बढ़ने पाता और तकलीफ घट जाती है।

आर्निका ३ या ६—किसी तरह की चोट लगने के कारण यह रोग होना स्तन में बहुत दर्द और तनाहट, किसी हालत में भी आराम न मालूम होना इत्यादि ।

ब्रायोनिया ६ या ३०—स्तन कड़े, फूले और भारी, ज्वर भाव, हिलने डोलने से तकलीफ, स्थिर बैठने से आराम मालूम होना इत्यादि इसके प्रधान लक्षण हैं। रोग के आरम्भ में बेलेडोना के साथ और बुखार होने पर एकोनाइट के साथ इसे पर्यायक्रम में देने से काफी लाभ होता है।

मर्क्युरियस सल ६—यदि सूजन बढ़ती ही जाये और पीब पड़ने का डर मालूम हो तो इसे देना चाहिये।

हिपर सल्फर ६—मर्क्युरियस देने पर भी यदि पीब पड़ जाय, और टपक जैसा दर्द हो तो इसे देना चाहिये। इससे फटकर पीब निकल जाता है।

फोस्फरस ६—जिस समय फोड़े से बहुत पीब बह रहा हो उस समय इसे देने से लाभ होता है।

साइलीसिया ३०—पानी जैसा बदबूदार पीब निकलना, नासूर हो जाना इत्यादि लक्षणों में इसे देने से जख्म जल्दी सूख जाता है।

आवश्यक सूचना—जरूरत हो तो चीरा लगाया जा सकता है। स्तनों को लटकने न रखना चाहिये। यदि यह मालूम हो जाय कि स्तन में पीब पड़े बिना न रहेगा, तो उसे बैठाने की चेष्टा न कर तीसी की पुल्टिस आदि चढ़ाकर शीघ्र पका देना अच्छा है।

पैर में दूध उतरना ।

(Milk Leg-Phlegmasia Alba Dolens)

प्रसव के दो तीन दिन और कभी कभी आठ दस दिन बाद प्रसूती के पैरों की नसें प्रदाहित हो उठती हैं और वहाँ दर्द होकर शोथ जैसी शिकायत पैदा हो जाती है। आक्रान्त स्थान का कठिन हो जाना, उसे झुका न सकना, उस स्थान में उँगली गड़ाने से वहाँ गढ़ा हो जाना, बहुत दर्द होना इत्यादि इस रोग के प्रधान लक्षण हैं। अनेक बार यह शोथ समूचे बदन में फैल जाता है। उस हालत में दर्द कम हो जाता है। साधारण अवस्था में एक सप्ताह तक और कभी कभी बहुत दिनों तक रोगिनी इससे पीड़ित रहती है।

चिकित्सा ।

पल्सेटिला, हेमामेलिस, एपिस और रसटक्स इसकी प्रधान दवाएँ हैं। लक्षणानुसार एकोनाइट, अर्निका, बेलेडोना ब्रायोनिया, लेकेसिस, आर्सेनिक, कल्केरिया कार्ब, केलीकार्ब नक्सवोमिका, लाइकोपोडियम और सल्फर आदि दवाएं भी व्यवहार की जा सकती हैं।

वस्तिकोटर में फोड़ा।

(Pelvic Abscess)

कष्टकर प्रसव के बाद कभी कभी वस्तिकोटरमे फोड़ा हो जाता है। यह रोग होने पर कम्पके साथ बुखार, वस्ति प्रदेश में तन्नाहट, सूई चुभोने जैसा दर्द, जलन, पाखाना पेशाव में कष्ट, जननेन्द्रिय प्रदेश का फूल उठना, और वहाँ पीब पड़ जाना इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं।

चिकित्सा।

प्रथमावस्था में एकोनाइट या ब्रायोनिया से विशेष लाभ होता है। प्रसव के समय चोट लगने के कारण यह रोग होने पर आर्निका। अचानक रोग का आक्रमण होने पर कोनायम। रोग को द्वितीयावस्था में एपिस, बेलेडोना या एन्टिम टार्ट। फोड़े में पीब पैदा हो जाने पर हिपर सल्फर ६ हिपर सल्फर के बाद बहुत बदबूदार पीब निकलता हो तब साइलीसिया ३०।

कई अन्यान्य उपसर्ग।

स्तन में दर्द—बच्चे के दूध खींचते ही स्तन में दर्द हो तो फेलान्ड्रनम ३X। स्तन से लेकर कन्धे तक शूल जैसा दर्द होने पर क्रोटन टिग्लियम ३। स्तन खाला मालूम होने

और बच्चों को दूध पिलाते समय बहुत तकलीफ होने पर बोरेक्स ६ या ३०।

दूध पिलाने से कमजोरी—अनेक स्त्रियों को बच्चे को दूध पिलाने के कारण बहुत कमजोरी मालूम होती है और रात में अच्छी तरह नींद न आना, सुबह तबियत [illegible] मालूम होना, भूख न लगना बहुत पसीना आना खाँसी आदि लक्षण प्रकट होते हैं। चायना ६ या ३० इसकी बढ़िया दवा है। एसिडफस से भी कमजोरी दूर होती है। हरारत मालूम हो तो साबूदाना और बार्ली आदि खाना चाहिये। बच्चे को सारी रात स्तन में लगा कर सुलाना ठीक नहीं। उसे निर्दिष्ट समय के अन्तर से दूध पिलाना चाहिये।

शिर के केश झड़ना—प्रसव के बाद बहुत दिनों तक अनेक स्त्रियों के केश झड़ा करते हैं। सल्फर, लाइकोपोडियम या कल्केरिया कार्ब देने से इस रोग में लाभ होता है।

अपने आप दूध निकलना—अनेक बार स्तन की खराबी या दूध की अधिकता के कारण अपने आप दूध निकला करता है और इससे रोगिनी के कपड़े भीग जाया करते हैं। बोरेक्स ३ X, कल्केरिया कार्ब ६, पल्सेटिला ६ रसटक्स ६ या चायना ३ इस रोग में देने से लाभ होता है।

बारंबार अस्त्र प्रयोग का कुफल—अनेक स्त्रियों का प्रसव मार्ग संकीर्ण होने के कारण, उनके पेट में चीरा लगा

कर पेट से बच्चा बाहर निकालना पड़ता है। ऐसी घटना कई बार होने पर उनका स्वास्थ्य नष्ट हो जाता है। फेरम फस, केलो फस या मेग्नशिया फस(२००क्रम) बहुत दिनो तक सेवन करने से स्वास्थ्य को खराबी दूर हो जाती है। दुबारा गर्भ रहने पर प्रसव के तीन चार मास पहले से ही कल्केरिया फ्लोर १२ X विचूर्ण बीच बीच में सेवन कराना चाहिये ताकि बिना अस्त्रक्रिया के प्रसव हो सके।

---

२२ बाल-रोग ।

जन्म के समय बच्चे का यत्न ।

बच्चे का जन्म होते ही, उसे खून खराबी से जरा दूर हटा देना चाहिये. ताकि वह अच्छी तरह साँस ले सके। यदि जन्म के समय बच्चे के गले मे नाल के फन्दे पड़े हो, तो उन्हें तुरन्त छुड़ा देना चाहिये, ताकि बच्चे को साँस लेने में कोई तकलीफ न हो। बच्चा जब तक स्वयं साँस नहीं लेता, तब तक इस नाल के मार्ग से ही उसे दवा आदि जीवनोपयोगी उपादान मिलते हैं। नालो के कस या दब जाने पर उसकी गति बन्द हो जा सकती है और इससे बच्चे का जीवन खतरे मे पड़ सकता है।

जन्म होने के समय बच्चे के मुँह और नासिका छिद्रों में कफ और लार भरी रहती है। उँगली में एक बारीक कपड़ा लपेट कर उससे तुरन्त इन्हें साफ कर देना चाहिये। इतना काम हो जाने पर बच्चा आसानी से साँस लेने लगता है। बच्चे का बड़े जोर से रोना ही उसका साँस लेना है। यदि इसके साथ ही बच्चे के बदन में लाली दिखायी देने लगे, तो समझ लेना चाहिये कि अब उसके लिये खतरे की कोई बात नहीं है।

बच्चे का न रोना।

(Asphyscia)

यह ऊपर बतलाया जा चुका है कि बच्चे का रोना ही उसका साँस लेना है। जन्म होने पर यदि बच्चा न रोये तो समझना चाहिये कि उसकी साँस बन्द है। इस अवस्था में बच्चा मुर्दे की तरह पड़ा रहता है और तुरन्त इलाज न करने पर उसका प्राण निकल जाता है। यदि बच्चे की ऐसी अवस्था हो तो उसका बदन तुरन्त गरम कपड़े से ढक देना चाहिये और छाती तथा मुँह पर ठण्ढे पानी के छींटे देना चाहिये। यदि इससे भी बच्चे को श्वास-क्रिया चालू न हो तो बच्चे के दोनों नासिका छिद्र बन्द कर उसके मुँह में फूँक

बुखार साधारण से साधारण और कठिन से कठिन रोग है। इसका इलाज बहुत मुश्किल है। शुरू शुरूमें जब यह नहीं मालूम होता कि यह कौनसा बुखार है, तब यह काम और भी मुश्किल हो जाता है। हम आगेके पृष्ठोंमें सहज से सहज ढगसे भिन्न-भिन्न ज्वरों की पहचान, उनके कारण और उनका इलाज लिख रहे हैं। आशा है कि इससे इस कामकी कठिनाइयाँ बहुत कुछ हल हो जायंगी।

साधारण अविराम ज्वर।

Simple Continued Fever.

निदान—जो ज्वर लगातार चढ़ा ही रहता है और दो चार या पांच सात दिन तक उतरने का नाम नहीं लेता, उसे अविराम ज्वर कहते हैं। शुरू शुरू में बुखार आने पर जब वह पहचाना न जा सके तब तक उसे अविराम ज्वर मानकर ही लक्षणों के अनुसार उसकी चिकित्सा करनी चाहिये। दो तीन दिन में यदि बुखार के अन्यान्य लक्षण स्पष्ट हो जायें और यह मालूम पड़ जाय कि यह अमुक बुखार है अथवा अमुक कारण से आया है तो इलाज का ढग बदल कर उसीका इलाज करना चाहिये।

कारण—बहुत सरदी या गरमी लगना, बहुत परिश्रम करना, खान-पानकी अनियमितता, रातको जागते रहना, पेटमें कृमि, किसी कारण से पसीने का एकाएक रुक जाना, पानीमें

मारनी चाहिये। इससे उसके फेफड़े मे हवा भर जायगी। फूँक मारने के बाद तुरन्त छाती को कुछ दबा देने से यह हवा बाहर निकल जायगा। कुछ क्षणो के बाद फिर इसी तरह फूँक मारनी चाहिये। और छाती दबा कर हवा निकाल देनी चाहिये। कई बार यह प्रक्रिया करने पर अनेक बार बच्चा साँस लेने लगता है और उसके हृदय आदि की गति चालू हो जाती है। बच्चे को एक बार गरम पानी में और एक बार ठंडे पानी में-इस तरह कई बार दोनों तरह के पानी में बारी बारी से गले तक डुबोने पर भी वह साँस लेने लगता है। इनके अतिरिक्त और भी कई उपाय हैं जिनकी सहायता से बच्चो की श्वास-क्रिया चालू की जा सकती है। खेद है, कि हमारे देश की अज्ञान दाइयों को इतना ज्ञान न होने के कारण बच्चों की एक बहुत बड़ी संख्या इस तरह जन्म लेते ही काल के गाल में समा जाती है। यहाँ पर यह भी ध्यान में रखना चाहिये कि अनेक बार बच्चे दो दो तीन तीन घण्टे के बाद भी साँस लेते देखे गये हैं, इसलिए इस प्रक्रिया में शीघ्र सफलता न मिले तो घबड़ाना न चाहिये।

के पहले लगाया जा सकता है। नहलाने के लिये कुसुम पानी काम में लाना चाहिये। नहलाने के बाद सूखे कपड़े से बच्चे का बदन अच्छी तरह पोछ देना चाहिए और उसे गरम कपड़ा ओढ़ा देना चाहिए। जन्म होने के बाद रोज एकबार बच्चे को नहला देना अच्छा है। आरम्भ में कुछ सप्ताह तक कुसुम पानी और बाद को उसे ठंढा करते करते कई सप्ताह के बाद ठंढा पानी नहलाने के काम में लाना चाहिये। इससे बच्चों का स्वास्थ्य अच्छा रहता है और उन्हें सरदी या खाँसी आसानी से नहीं होती।

बच्चे की नाल बांधना।

(Dressing the Navel)

स्नान कराने के बाद बच्चे की नाभी पर पतले और साफ कपड़े की एक गद्दी रख, नाल को उसी के बीचसे निकाल कर एक फीते से बांध देना चाहिये और उस फीते को कमर बन्द से या तो बांध देना चाहिये या जनेऊ की तरह गले में पहना देना चाहिये। इस तरह नाभी जल्दी सूख जाता है। नाभी पर तेल या पट्टी रखकर भी बांधने की प्रथा है। इस तरह नाभी पर जो कपड़ा या पट्टी रक्खा जाय वह जब तक नाभी सूख न जाय रोज एक दो बार बदल देना चाहिए।

नाभी पकना ।

नाल अच्छी तरह न काटने, काटते समय चोट लगने या कुन्द छुरी से नाल काटने पर अनेक वार वच्चों की नाभी पक उठती है और उन्हें वुखार तथा दर्द आदि की शिकायत पैदा हो जाती है।

चिकित्सा ।

नाभी में तन्नाहट और वुखार हो आने पर एकानाइट 3X या आर्निका ३ देना चाहिए। यदि पीव पैदा हो जाय तो साइलीसिया ३० देना चाहिये। अनेक वार आर्सेनिक ३० देने से भी लाभ होता है। यदि पित्ती जैसे लाल चकत्तों के साथ ज्वर हो आये तो वेलेडोना ३० देना चाहिए। गरम पानी से रोज धोना और कैलेण्डुला तेल (१ भाग कैलेण्डुला मदर टिञ्चर ८ भाग आलिव आइल) की पट्टी चढ़ाना भी वहुत लाभदायक है।

वच्चे की ढोंढी निकलना ।

नाल सूख जाने पर भी कभी-कभी वच्चों की नाभी कुछ कुछ ऊँची या वाहर निकली वनी रहती है। प्रायः वच्चे के अधिक रोने या अधिक कॉखनें के कारण ही ऐसा होता है। नाभी पर कपड़े की एक गद्दी या पेड रखकर उसे वॉध देने और नक्सवोमिका या कल्केरिया कार्व का सेवन कराने से यह शिकायत दूर हो जाती है।

बच्चे का प्रथम मल त्याग ।

(Meconium)

बच्चे को पहले पहल जो दस्त होता है, वह चिकना और गहरे हरे काले रंग का होता है। इसमें पित्त और कफ मिला रहता है अधिकांश बच्चों को जन्म होने के कुछ देर बाद अपने आप ही दस्त हो जाया करता है। यदि शीघ्र दस्त न हो तो बच्चे को माता का दूध पिलाना चाहिये। माता का नया दूध सद्यजात बच्चे के लिये जुलाब का काम करता है। यदि वह दूध पिलाने पर भी दस्त न हो और बेचैनी, पेट में दर्द के कारण बच्चे का रोना आदि लक्षण प्रकट हों, तो उसे गरम पानी में दो चार चम्मच चीनी डालकर पिलानी चाहिये। यदि इससे भी लाभ न हो तो एक दो खुराक नक्सवोमिका देना चाहिये। ब्रायोनिया या सल्फर देने से भी काम चल सकता है। यह खयाल रखना चाहिये, कि बच्चों को दस्त कराने के लिये कोई जुलाब या दस्तावर दवा देनी ठीक नहीं। इससे उनके भावी जीवन में सङ्कट आ सकता है।

यदि इसी तरह बच्चे को पेशाब होने में देरी हो तो केन्थरिस या आर्सेनिक की दो एक खुराकें देनी चाहिये।

अन्यान्य कारणों से भी रोते हैं। केवल दूध पिलाना ही सब शिकायतों का इलाज नहीं हो सकता। बल्कि अनेक बार इस तरह दूध पिलाने से बच्चों की पाचन-क्रिया में गोलमाल हो जाता है और वे कै, दस्त, पेट में दर्द, बुखार आदि बीमारियों से पीड़ित रहने लगते हैं।

आहार की तरह बच्चों की निद्रा पर भी काफी ध्यान रखना चाहिये। छोटे बच्चे जितना अधिक सोते हैं उतनी ही शीघ्रता से बढ़ते हैं। इसलिये सोते हुए बच्चों को कभी न जगाना चाहिये। नींद से जगाकर उन्हें दूध पिलाना और भी बुरा है। इस तरह जगाने से उन्हें जितनी हानि हो सकती है उतनी हानि दूध न पिलाने से नहीं हो सकती। बच्चे के अभि-भावकों को खासकर बच्चे की माता को इन सूचनाओं पर अवश्य ध्यान देना चाहिए।

बच्चे का नील रोग।

(Still Born Child—Blue Stage)

श्वासयन्त्र और हृदय की क्रिया अच्छी तरह न होने के कारण बच्चों को यह रोग हो जाता है। यह रोग होने पर बच्चे के होंठ और गला बदरंग हो जाते हैं, समूचा शरीर नीला पड़ जाता है और शरीर की गरमी का कम हो जाना नील-

पेशियों का अकड़ जाना, नाड़ी स्पन्दन और हृद्स्पन्दन का कम हो जाना इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं।

चिकित्सा।

डिजिटेलिस ३ या ६—यह इस रोग की सर्वप्रधान दवा है। चेहरा, मुख, होंठ, जीभ, नख और समूचे शरीर का नीला पड़ जाना, बच्चे को जरा भी हिलाने से उसका बेहोश हो जाना, कलेजे का धड़कना इत्यादि।

आर्निका ३ या ६—शरीर नीला, साँस बन्द, नाक और मुँह से रक्तस्राव होना इत्यादि।

आर्सेनिक ६—समूचा शरीर नीला और बरफ सा ठंढा हो जाने पर इसे देना चाहिये।

फ़ास्फ़रस ६—फेंफड़ों का फूल जाना, साथ ही श्वास बन्द होना इत्यादि।

एकोनाइट ६—शरीर साधारण गरम, नाड़ी [illegible], थोड़ा श्वास प्रश्वास, शरीर नीला इत्यादि।

[illegible] ६—[illegible] श्वास और नाड़ी की [illegible] [illegible] हो जाना इत्यादि।

[illegible]—शरीर नीला, [illegible] हो जाना इत्यादि।

भीगना, ऋतु परिवर्तन, डर जाना, कोष्ठबद्ध, पेटमें [illegible] आदि कारणों से साधारण ज्वर बुखार आता है।

लक्षण—बुखार आनेके कुछ पहले [illegible] [illegible] लगना, हाथ पैरों या शरीर में दर्द आदि लक्षण प्रकट होते है। बादको कुछ जाड़ा सा लगकर १०२ या १०४ डिग्री तक बुखार चढ़ जाता है। नाड़ी पूर्ण और तेज, गति फी मिनट १०० से १२० तक होती है। कभी-कभी कुछ पसीना सा हो आ जानेके कारण कुछ समय के लिये इसकी तेजी मन्द जाती है। बुखार के समय चमड़ा रूखा, छटपटाहट, प्यास, जीभ सूखी, साँस तेज, पेशाब परिमाण में थोड़ा और लाल, जीभ पर सफेद लेप, कमर तथा शिरमें दर्द, आँखें लाल, कभी कब्जियत और कभी साधारण पित्तमिला दस्त, भूख न लगना अरुचि इत्यादि लक्षण दिखायी देते है। पेटमें कृमि होने से कै, पेटमें दर्द,नाक खुजलाना, दाँत किड़मिड़ाना, सोते में बड़-बड़ाना और बेचैनी आदि लक्षण मोजूद रहते हैं।

चिकित्सा।

एकोनाइट ३×या ३—हाथ पैरमें ऐंठन, कभी-कभी जाड़ा सा मालूम होना, नाड़ी पूर्ण, कठिन और तेज, प्यास, बेचैनी, पेशाब लाल, रातमें रोगका बढ़ना, सरमें दर्द, छींकें आना, रोगीको मर जानेका भय लगना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। अनेक बार केवल इसीकी कुछ खुराकें देने से पसीना आकर बुखार उतर जाता है।

कार्बोवेज ६—शरीर की समस्त नसें नीली हो जाने पर इसे देना चाहिये।

इनके अतिरिक्त रसटक्स, हाइड्रोसियानिक एसिड और सल्फर आदि दवाओं से भी लाभ होता है।

आवश्यक सूचना—यह रोग बच्चों को प्रायः सौरी घर में ही होता है। इसे भूत व्याधि मानकर झाड़ फूंक के फेर में न पड़ना चाहिये और चतुर चिकित्सक द्वारा तुरन्त इलाज कराना चाहिये। बच्चे को सरदी से बचाना और दाहिनी करवट सुलाना लाभदायक है। सौरी घर में धुआँ या गन्दगी न होने देना चाहिये।

बच्चे के शिर में बतौड़ी।

([illegible] L[illegible] H[illegible])

अनेक बार जन्म के समय बच्चों के शिर में कुछ फूलन या बतौड़ी सी उठी रहती है कभी कभी यह बतौड़ी इतनी बड़ी होती है कि बच्चे के दो शिर मालूम होते हैं। जन्म के बाद कुछ दिनों में धीरे धीरे यह बतौड़ी अपने आप सूख जाती है। यदि बहुत दिनों तक न सूखे तो दिन में कई बार ठण्डे पानी से धो [illegible] लेकिन [illegible] एक गिलास पानी में ८-१० बूंद मदर टिंचर [illegible] धोना चाहिये। इसस

पेशियों का अकड़ जाना, नाड़ी स्पन्दन और हृत्स्पन्दन कम हो जाना इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं।

चिकित्सा।

डिजिटेलिस ३ या ६—यह इस रोग की [illegible]

भी दो तीन दिन में कोई लाभ न हो तो रसटक्स का से
करना चाहिये।

बच्चे का धनुष्टङ्कार।

(Infantile Tetanus)

गन्दे स्थान में रहना, अनियमित खान पान, नाभ का पकना, दूषित वायु का साँस में जाना इत्यादि कारणों से प्रायः सौरी घर में ही बच्चों को यह रोग होता है। यह एक बहुत ही बुरा और सांघातिक रोग है। लोग इसे यमुआ या एक प्रकार की भूत व्याधि मानते हैं और झाड़ फूँक या गण्डा तावीज के फेर में पड़कर समुचित इलाज नहीं करते, परन्तु यह ठीक नहीं। नाल काटने के दोष या गन्दगी के कारण नाभी के जख्म से एक तरह का विष बच्चे के शरीर में प्रवेश करने से ही उसे यह रोग होता है। कभी कभी सौरी घर में बहुत धुआँ होने या बच्चे को सरदी लगने के कारण भी यह रोग हो जाता है।

यह रोग होने पर बच्चे के बदन में ऐंठन आरम्भ होकर उसका समूचा शरीर अकड़ कर धनुष की तरह टेढ़ा हो जाता है, इसीलिये इस रोग का नाम धनुष्टङ्कार पड़ा है। बच्चे का रोना, दूध न पीना, शरीर का कठिन हो जाना इत्यादि

केमोमिला ६ या १२—पपटो का सूजना, उनसे खून निकलना, पलकों का जुड़ जाना और सुवह उनसे पीला पीला पीव निकलना इत्यादि।

पल्सेटिला ६ या ३०—आँख से पीव जैसा वहुत स्राव निकलना, समूची आँख और पपटों के भीतरी भाग में वहुत लाली इत्यादि।

अर्जेन्टम नाइट्रिकम ३ या ६—पपटो में वहुत सूजन और आँख से मलाई जैसा पीव निकलने की यह वढ़िया दवा है।

युफ्रेशिया ६—आँख में पीव जमा होना और रोशनी वरदाश्त न होना।

एपिस ६ या ३०—आँख के पपटे और उनके ऊपर सूजन, जलन, जखम, पीव पड़ना इत्यादि।

कल्केरिया कार्व ६ या ३०—आँख के पपटों में सूजन और लाली रात में पलकों का जुड़ जाना, गण्डमाला धातु, मोटा और थुलथुला शरीर इत्यादि।

सल्फर ३०—चुनी हुई दवा से पूरा लाभ न होने पर बीच बीच में इसे देना चाहिये।

आवश्यक सूचना—बच्चे की आँखें दिन में तीन चार बार या जब जब उनमें पीव भर जाय धो देना चाहिये। धोने

बेलेडोना ३, ६ या ३०—मुँह और आँखें लाल, शिरमें दर्द, कनपटी की नसका दपदप होना, नींद न आना, तेज बुखार प्यास जीभमें काँटे, बड़बड़ाना या बक-झक करना, पसीना न आना या बहुत कम आना इत्यादि लक्षणों में इसे देना चाहिये। एकोनाइट से लाभ न होने पर यह अच्छा काम करता है। कुछ लोग एकोनाइट और बेलेडोना पारी-पारी से भी देते हैं।

ब्रायोनिया ६ या ३०—हाथ पैर में ऐंठन, सर भारी, बदनमें दर्द, हिलने डोलने में तकलीफ, कब्जियत सूखी खाँसी, प्यास जीभ पीली या मैली, चिड़चिड़ा स्वभाव कफ या पित्तकी कै, बुखार कभी तेज और कभी धीमा, मुँहका स्वाद तीता, अरुचि, श्वास कष्ट, डकार आना इत्यादि। एकोनाइट और बेलेडोना से लाभ न होने पर बेलेडोना और ब्रायोनिया पारी-पारी या पर्याय क्रम से भी देते हैं।

जेलसिमियम १×या३—अविराम या साधारण विराम-वाले ज्वर में इससे भी काफी लाभ होता है। बहुत कमज़ोरी इसकी खास लक्षण है। कमजोरीके कारण हाथ पैरका काँपना, बोल न सकना, आँखों का बन्द हो जाना, सर न उठा सकना तन्द्रा भाव, चुपचाप पड़े रहना इत्यादि लक्षण दिखायी देते हैं। इसमें प्यास नहीं रहती। नाड़ी कोमल होती है। रोगी को सब चीजें धुँधली दिखायी देती है। बच्चों को इस दवासे अधिक लाभ होता है।

देते हैं। रोग बढ़ने पर गला और पाकाशय तक यह जख्म बढ़ जाते हैं। इसके कारण बच्चा दूध नहीं पी सकता और मुँह से अनवरत लार टपका करती है।

चिकित्सा।

मर्क्युरियस सल ६ या ३०—यह इस रोग की बढ़िया दवा है। रोग दिखायी देते ही या मुँह से बहुत लार निकलने और मुँह में जख्म हो जाने पर इसे देना चाहिये।

सल्फर ३०—मर्क्युरियस से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये।

आर्सेनिक ६ या ३० —तेज बीमारी में उपरोक्त दोनों दवाओं से लाभ न होने पर या मुँहमें प्रदाह, प्रदाहित स्थान में नीलापन, मुँह में बदबू बदबूदार पतले दस्त, अस्थिरता, बहुत कमजोरी और प्यास आदि लक्षणों में इसे देना चाहिये।

बोरेक्स ६ या ३०—मुँह में जख्म, दूध पीने के समय बच्चे का रोना, दर्द के कारण बारंबार स्तन को छोड़ देना इत्यादि।

नाइट्रिक एसिड ६—लम्बे मुँह में बदबूदार जख्म,मुँह से बदबू निकलना मसूढ़ों से खून निकलना, मुँह से हमेशा जलन करनेवाली लार बहने रहना इत्यादि। मातापिता के गर्मी या दोष होने के कारण बच्चों को यह रोग होने पर इससे विशेष लाभ होता है।

दस्त लानेवाली तेज दवाएँ बच्चों को बहुत नुकसान कर सकती हैं।

बच्चों को दस्त आना।

(Diarrhoea)

स्वस्थ बच्चे, जब तक माता का दूध पीते हैं, २४ घण्टे में तीन से लेकर छ बार मलत्याग करते हैं। जब दस्तों की संख्या और उनका रूपरंग बदल जाय या हरे, पानी जैसे, पीले, भूरे, सफेद, फटे फटे, खून या आँव मिले दस्त आने लगें और इनके कारण बच्चे को कष्ट होता दिखायी दे तब किसी दवा का सेवन अवश्य करना चाहिये।

बच्चे को यह रोग अनेक कारणों से हो सकता है। माता का अनियमित खान पान, माता के दूध न होने के कारण गाय आदि का दूध पीना, खराब चीजें खाना, सर्दी लगना, पेट में कृमि होना, दाँत निकलना आदि इसके प्रधान कारण है।

नयी बीमारी आराम न होने पर अनेक बार यह रोग पुराना हो जाता है। उस अवस्था में बच्चे को अजीर्ण पदार्थ मिले दस्त आते हैं और कमजोरी, रक्तहीनता, गला पतला, पेट और माथा बड़ा, हाथ पैर में सूजन इत्यादि लक्षण प्रकट होते हैं। रोग आराम न होने पर कठिन उपसर्ग उपस्थित होकर अन्त में रोगी की मृत्यु हो जाती है।

मर्क्युरियस ६ या ३०—गहरे हरे रङ्ग के आँव मिले या या फेना फेना जैसे खून मिले दस्त, मल त्याग के समय और मल त्याग के बाद काँखना, मुँह में जखम, जीभ पर सफेद लेप, रात के समय और गरमी के दिनों में रोग का बढ़ना।

कोलोसिन्थ ६ या ३०—पेट में बहुत दर्द, पेट दबाने से आराम मालुम होना, बारम्बार छिबड़ा-छिबड़ा, फेना फेना पीले रङ्ग का थोड़ा दस्त, दूध पीते ही दस्त होना।

पल्सेटिला ६ या ३०—पेट में दर्द के साथ दस्त, हमेशा दस्त का रङ्ग रूप बदलते रहना, दो बार का दस्त भी एक समान न होना, रात में दस्तों का बढ़ना, ठण्ढी हवा में आराम मालुम होना।

[illegible] ३०—बहुत लड़के हरे या लाल रङ्ग के दस्त [illegible] मलद्वार का चमड़ा गल जाना इत्यादि।

आर्सेनिक ६ या ३०—पेट में दर्द [illegible] प्यास, बारम्बार थोड़ा थोड़ा पानी पीना [illegible]

[illegible]

मर्क्युरियस ६ या ३०—गहरे हरे रङ्ग के आँव मिले या या फेना फेना जैसे खून मिले दस्त, मल त्याग के समय और मल त्याग के बाद काँखना, मुँह में जखम, जीभ पर सफेद लेप, रात के समय और गरमी के दिनों में रोग का बढ़ना।

कोलोसिन्थ ६ या ३०—पेट में बहुत दर्द, पेट दबाने से आराम मालूम होना, बारम्बार छिबड़ा-छिबड़ा, फेना फेना पीले रङ्ग का थोड़ा दस्त, दूध पीते ही दस्त होना।

पल्सेटिला ६ या ३०—पेट में दर्द के साथ दस्त, हमेशा दस्त का रङ्ग रूप बदलते रहना, दो बार का दस्त भी एक समान न होना, रात में दस्तों का बढ़ना, खुली हवा में आराम मालुम होना।

सल्फर ३०—बहुत तड़के हरे या पीले रङ्ग के दस्त, परिवर्तनशील मल, मलद्वार का चमड़ा गल जाना इत्यादि।

आर्सेनिक ६ या ३०—पेट में दर्द, पेट का फूलना, पानी जैसे दस्त, प्यास, बारम्बार थोड़ा थोड़ा पानी पीना, के, अस्थिरता, बहुत कमजोरी, रक्तहीनता, हाथ पैर का फूल जाना और ठण्डे बने रहना, आधी रात के बाद और खाने के बाद रोग का बढ़ना।

सादना ६ या ३००—पेट में कृमि होने के कारण यह रोग होना, नाक खुजलाना, सोते में दाँत किड़मिड़ाना और चाकना।

बच्चे का स्तन प्रदाह।

(Swelling of the Breasts)

अनेक बार बच्चों के स्तन फूल कर कड़े हो जाते हैं और कभी-कभी उनमें पीब भी पड़ जाता है।

चिकित्सा।

स्तनों में सूजन और कड़ापन दिखायी देते ही उन पर मीठे तेल की पट्टी चढ़ा देने से अनेक बार कोई दवा देने की जरूरत नहीं पड़ती और वे इसी से आराम हो जाते हैं। यदि सूजन बढ़ जाय और लाली, तमतमाहट आदि प्रदाह के लक्षण दिखाई दें तो पहले कैमोमिला और कैमोमिला के बाद बेलेडोना देना चाहिये। तेज बीमारी हो तो पुल्टिस चढ़ा कर पका देना चाहिये। यदि पीब पैदा हो जाय तो दो तीन दिन हिपर सल्फर ६ और इसके बाद साइलीसिया ३० देना चाहिये। यदि स्तन दबाने या उनमें किसी तरह की चोट लगने के कारण यह रोग हो तो आर्निका ६ या ३० देना चाहिये।

बच्चे का बहुत रोना।

(Crying of Infants)

रोना छोटे बच्चों की भाषा है। वे अपनी सभी आवश्यकताएं रोकर ही प्रकट करते हैं। भूख लगने पर दूध पीने के लिए एक ही करवट बहुत देर तक लेटने पर करवट बदलने के लिये या ऐसी ही कोई भी शिकायत होने पर वे रोया करते हैं, इसलिये जब वे रोयें, पहले उनकी साधारण आवश्यकताओं पर ध्यान देना चाहिये। यदि वे बहुत रोयें और कोई कारण स्पष्ट न दिखायी दे तो समझना चाहिये कि उनके शरीर में कहीं दर्द आदि हो रहा है। अनेक बार चिउंटी आदि काटने पर भी बच्चे रो उठते हैं, इसलिये उनका कपड़ा निकाल इसकी भी जॉच कर लेनी चाहिये।

बच्चों को चुप रखने के लिये अनेक माताएं या दाइयां उन्हें अफीम खिलाकर सुला देती हैं। यह बहुत ही बुरा है इससे उनका स्वास्थ्य सदा के लिये नष्ट हो जाता है।

यदि बच्चे बिना किसी कारण के बहुत समय तक रोते रहें तो निम्नलिखित दवाएं व्यवहार करनी चाहिये।

चिकित्सा।

बेलडोना ६—इस दवा से अनेक बार बहुत लाभ होता है। यदि बच्चे चौंक कर नींद से उठ बैठें और जोर से रोने लगें तो उस अवस्था में भी यही दवा देनी चाहिये।

एकोनाइट या कोफिया ६—बेलेडोना से लाभ न होने पर इसे देना चाहिये। खासकर जब रोने के साथ बेचैनी और बुखार भी मौजूद हो।

केमोमिला ६ या १२—यदि कान में या शिर में दर्द होने के कारण बच्चा रोता हुआ मालूम हो तो इसे देना चाहिये।

एन्टिम क्रुड ६—शरीर में हाथ लगाने या बहलाने से बच्चे का रोना, चिड़चिड़ा स्वभाव इत्यादि।

कोलोसिन्थ ६—पेट में दर्द के कारण बच्चे का रोना, पैर मोड़कर पेट पर रखना, पेट दबाने से चुप रहना इत्यादि।

साइना ३० या २००—पेट में कृमि दोष, हाथ लगाने से डर कर रोना, अस्थिरता, सबको मारने दौड़ना इत्यादि।

आवश्यक सूचना—अनेक बार बच्चों को नहला देने से उनका रोना बन्द हो जाता है।

बच्चों की अनिद्रा और अस्थिरता।

[illegible]

अधिक [illegible]

[illegible]
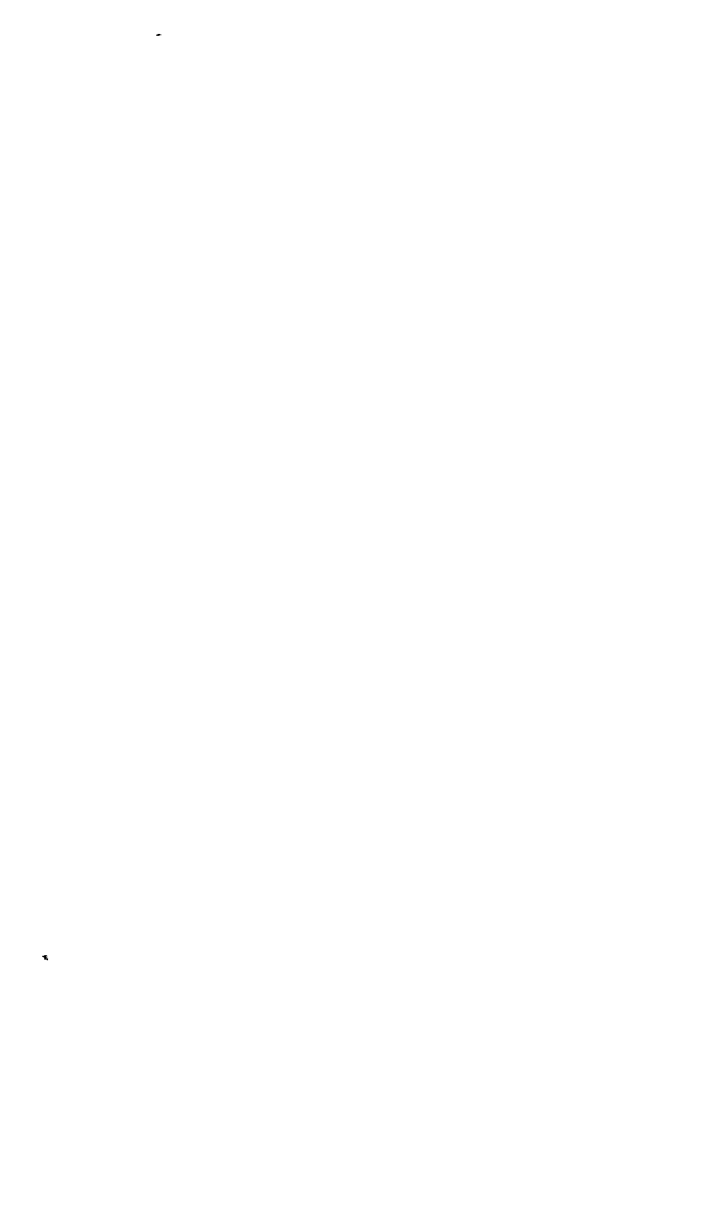
दायक है। जब तक काफी लाभ न हो तब तक यह प्रक्रिया करनी चाहिये।

तोतलाना—यदि बच्चे बोलते समय तोतलाते हों तो उन्हें कुछ दिनों तक स्ट्रेमोनियम ३ या हायोसायमस ३ का सेवन कराना चाहिये। बोलते समय जीभ पर मार्बल गोली या पत्थर का टुकड़ा रख लेना चाहिये। गुड़ या मिठाई खाना, क्रोध करना और हड़बड़ा कर बोलना मना है।

धातु गत रोग—क्षय, गण्डमाला, और गरमी—यह तीन रोग मातापिता को होने से बच्चों को भी वीरासत में मिलते हैं फोस्फरस ६ क्षय (गुटिका) दोष की प्रधान दवा है। लक्षणानुसार कल्केरिया फस, फेरमफस, आर्सेनिक, साइली-सिया, सल्फर, लाइकोपोडियम और आयोडियम आदि दवाओं से भी लाभ होता है। गण्डमाला धातुकी प्रधान दवाएँ कल्केरिया कार्ब, आयोडियम और नेट्रम सल्फ हैं। उपदंश धातु की सर्वप्रधान दवा मर्क्युरियस सल है। सोरा धातु में सल्फर और प्रमेह धातु में थूजा प्रधान रूप से व्यवहार किया जाता है। पारेका अपव्यवहार करने के कारण स्वास्थ्य नष्ट हो गया हो तो केली आयोड या आरम देना चाहिये। पुरानी बीमारी के बाद बारम्बार सरदी या पतले दस्त की शिकायत पैदा हो जाती हो तो सलिट नाइ। सूखे और दुबले